विश्वरूप जयादित्य जय विष्णो जयाच्युत। जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते।। जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल। जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते।।

श्रीसूर्याय नमः

श्रीसरस्वत्यै नमः

श्रीगणेशाय नमः

श्रीविष्णवे नमः

श्रीशंकराय नमः

श्रीसूर्यसिद्धान्त पर आधारित जयपुर से प्रकाशित राजस्थान का एकमात्र

श्रीसर्वेश्वर
जयादित्य पञ्चाङ्गम्

गणितकर्ताः आचार्य विनय झा   प्रधान सम्पादकः पं. अमित शर्मा

युधिष्ठिर संवत्-5162
कलि संवत्-5127
विक्रम संवत्-2082
शक संवत्-1947
निम्बार्काब्द-5120-21
ईस्वी सन्-2025-26

संवत्सर - सिद्धार्थ
राजा - सूर्य
मन्त्री - सूर्य
अक्षांश रेखांश
26/55 उत्तर तथा
75/48 पूर्व जयपुर

प्रकाशक
श्रीनिम्बार्कपरिषद्
मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी कलवाड़ा,
तह. सांगानेर, जयपुर

मार्गदर्शक
अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्
वाराणसी

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः।।

ठाकुर श्रीसरसबिहारी जी महाराज

रुक्मिणीसत्यभामाव्रजस्त्री विशिष्टः श्रीभगवान्
पुरुषोत्तम वासुदेवः सम्प्रदायिभिर्वैष्णवैः सदोपासनीयः

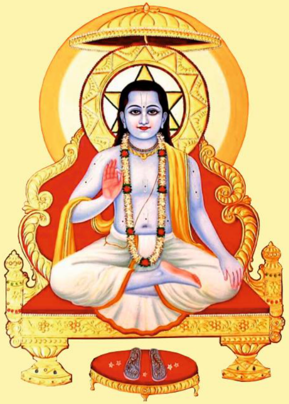

सुदर्शन चक्रावतार जगद्गुरु
भगवान श्रीनिम्बार्काचार्य

श्रीनिम्बार्क परिषद्

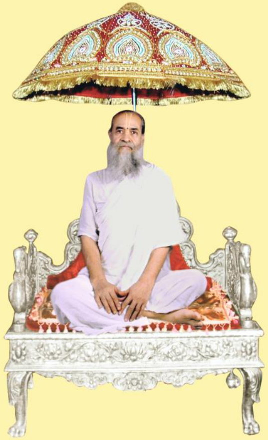

अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज

सर्वज्ञो जगतः कर्ता भक्ताभीष्टप्रदो विभुः। यः केशवो नमामस्तं शरण्यं भक्तवत्सलम् ।।
ॐ जय जयेङ्गितज्ञाता नियमानन्द आत्मवान्। नियमेन वशे कुर्वन्भगवन्मार्गदर्शकः ।।

हे आचार्यशिरोमणे!
आपश्री के आश्रित "श्रीनिम्बार्क परिषद्" द्वारा समस्त शास्त्रवचन पोषित आर्ष
सूर्यसिद्धान्तीय गणना आधारित भारतवर्ष के मान्य आचार्यों द्वारा प्राप्त
सम्मति एवं विद्वानों के परिश्रम से निर्मित यह

"श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग"

आपश्री को ही समर्पित है।

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

विषयानुक्रमणिका

क्रं.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	विषयसूची	01.
2.	नम्र निवेदन	03.
3.	संवत् 2082 के व्रत पर्व निर्णय	04.
4.	सिद्धार्थ संवत्सरारम्भ 2082	06.
5.	वर्षलग्न, जगल्लग्न, सूर्यआर्द्राप्रवेश फल	08.
6.	वर्षप्रवेश कुण्डली का सामान्यफल 2082	09.
7.	द्वादश संक्रान्ति का स्वरूप व फल	11.
8.	गोचर-उदयास्त-वक्रीमार्गी नक्षत्रचार 2082	14.
9.	2082 के व्रत पर्वों की सूची, पंचक योग सूची	16.
10.	ग्रहण निर्णय 2082	18.
11.	सूर्यसिद्धान्तीय दीपावली पूरे देश में स्वीकार	20.
12.	मंगली कुण्डली विचार एवं परिहार	22.
13.	शनि साढ़ेसाती विचार	22.
14.	नाड़ीदोष विचार एवं परिहार	23.
15.	वर-वधु मेलापक सारणी	24.
16.	वैवाहिक अष्टकूट मेलापक चक्र	26.
17.	विवाह संस्कार मुहूर्त्त 2082	27.
18.	उपनयन संस्कार मुहूर्त्त	32.
19.	गृहारम्भ मुहूर्त्त	33.
20.	गृहप्रवेश मुहूर्त्त	36.
21.	मुण्डन संस्कार मुहूर्त्त	41.
22.	कर्णविध संस्कार मुहूर्त्त	42.
23.	अन्नप्राशन संस्कार मुहूर्त्त	43.
24.	देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त	44.
25.	प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त	46.
26.	नामकरण संस्कार मुहूर्त्त	48.
27.	वाहन क्रय मुहूर्त्त	50.
28.	विपणि व्यापार मुहूर्त्त	54.
29.	आवश्यक मुहूर्त्तों का परिचय	58.
30.	**चैत्र शुक्लपक्ष 2082**	60.
31.	मासकृत्य एवं नवरात्र मुहूर्त्त	61.
32.	**वैशाख कृष्णपक्ष 2082**	62.
33.	मासकृत्य एवं नागशाप शान्तिप्रयोग	63.
34.	**वैशाख शुक्लपक्ष 2082**	64.
35.	नृसिंह मन्त्र एवं द्वादशाक्षर मन्त्र जपविधि	65.
36.	**ज्येष्ठ कृष्णपक्ष 2082**	66.
37.	मासकृत्य एवं शनि-ग्रह शान्ति के उपाय	67.
38.	**ज्येष्ठ शुक्लपक्ष 2082**	68.
39.	मासकृत्य एवं ज्येष्ठत्रय विचार	69.
40.	**आषाढ़ कृष्णपक्ष 2082**	70.
41.	मासकृत्य, विभिन्न दिशाओं में ढ़लान का फल	71.
42.	**आषाढ़ शुक्लपक्ष 2082**	72.
43.	मासकृत्य, प्रश्नलग्न से मृत्युज्ञान	73.
44.	**श्रावण कृष्णपक्ष 2082**	74.
45.	मासकृत्य, सर्पस्तोत्र एवं वर्षा शकुन विचार	75.
46.	**श्रावण शुक्लपक्ष 2082**	76.
47.	मासकृत्य एवं सदन्त शिशुजन्म शान्ति	77.
48.	**भाद्रपद कृष्णपक्ष 2082**	78.
49.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का कृत्य	79.
50.	**भाद्रपद शुक्लपक्ष 2082**	80.
51.	मासकृत्य	81.
52.	**आश्विन कृष्णपक्ष 2082**	82.
53.	श्राद्ध की महत्ता एवं सांकल्पिक श्राद्धविधि	83.
54.	**आश्विन शुक्लपक्ष 2082**	84.
55.	मासकृत्य एवं नवरात्र मुहूर्त्त	85.
56.	**कार्तिक कृष्णपक्ष 2082**	86.
57.	मासकृत्य एवं दीपावली मुहूर्त्त	87.
58.	**कार्तिक शुक्लपक्ष 2082**	88.
59.	मासकृत्य	89.
60.	**मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष 2082**	90.
61.	आठ महाद्वादशियाँ	91.
62.	**मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष 2082**	92.
63.	वारों में करणीय कृत्य, नजरदोष निवारण	93.
64.	**पौष कृष्णपक्ष 2082**	94.
65.	मलमास, व्रत परिभाषा, प्राणायाम विधि	95.
66.	**पौष शुक्लपक्ष 2082**	96.
67.	भूमि अवरोध निवारक दुर्लभ प्रयोग	97.
68.	**माघ कृष्णपक्ष 2082**	98.
69.	मकरसंक्रान्ति कृत्य एवं माघमास नियम	99.
70.	**माघ शुक्लपक्ष 2082**	100.
71.	सरस्वती पूजन मन्त्र एवं स्तोत्रादि	101.
72.	**फाल्गुन कृष्णपक्ष 2082**	102.
73.	मासकृत्य एवं शिव पंचाक्षर मन्त्र जपविधि	103.
74.	**फाल्गुन शुक्लपक्ष 2082**	104.
75.	होलिका मुहूर्त्त, जयन्ती विवेचन	105.
76.	**चैत्र कृष्णपक्ष 2082**	106.
77.	वास्तुखण्ड जीर्णोद्धार विधि एवं नवरात्र मुहूर्त्त	107.
78.	2082 के बच्चों नामाक्षर, नक्षत्र व पाया	108.
79.	द्वादश भावस्थ ग्रह फलादेश	118.
80.	जयपुर से अन्य नगर-लग्नप्रवेश संस्कार सारणी	119.
81.	प्रमुख नगरों की अक्षांश रेखांश सारणी	120.
82.	प्रमुख शहरों के सूर्योदय-सूर्यास्त की सारणी	126.
83.	व्रतादि में सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चाङ्ग ही शास्त्रीय	130.
84.	अवकहड़ा चक्र	132.
85.	नवग्रह स्तोत्र एवं नवग्रह पीड़ाहर स्तोत्र	132.
86.	दिन व रात्रि की चौघड़िया सारणी	132.
87.	नवग्रहों के वैदिक मन्त्र एवं स्तोत्रादि	133.
88.	श्रीसुदर्शन कवच प्रयोगविधि	134.
89.	गृहारम्भ मुहूर्त्त में भूमि गर्भ स्थापन की महत्ता	135.
90.	श्रीमहालक्ष्मी पूजन आरती एवं श्रीसूक्त विधान	136.
91.	द्वादश राशि फल 2082	137.
92.	यात्रा मुहूर्त्त हेतु गोरखपतरा	138.
93.	श्रीराम शलाका प्रश्नावली	139.
94.	श्रीनिम्बार्क परिषद् के प्रकाशन	139.
95.	अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् के प्रकाशन	139.
96.	ISRO में PM मोदी ने की सूर्यसिद्धान्त की बात	140.
97.	पर्व-निर्णय में सूर्यसिद्धान्त की अनिवार्यता	140.

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

जयपुर, राजस्थान 7425824413, 7976006514

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

विश्वरूप **जयादित्य** जय विष्णो जयाच्युत ।
जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते ॥- *व.पु.*

जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल।
जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते ॥- *स्क.पु.*

सिद्धार्थ नाम संवत्सर 2082, 2025-26 ई.

श्रीसूर्यसिद्धान्त पर आधारित
राजस्थान का एकमात्र पञ्चांग

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

✻ संरक्षक ✻

श्रीमहन्त श्रीवृन्दावनबिहारीदास जी महाराज
'काठिया बाबा' सुखचर कोलकाता

महन्त श्रीबनवारीशरण जी महाराज
प्रन्यासी अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठ जूसरी मकराना

महन्त श्रीवृन्दावनदास जी महाराज
महामंत्री अ.भा. श्रीनिम्बार्क महासभा वृन्दावन

आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त
स्वामी श्रीपद्मनाभशरणदेवाचार्य जी महाराज
श्रीसर्वेश्वर सेवाधाम, जयपुर, परमाध्यक्ष श्रीनिम्बार्क परिषद्

डॉ. कामेश्वर उपाध्याय
महासचिव, अखिल भारतीय विद्वत्परिषद् वाराणसी

✻ मार्गदर्शक ✻

पं. आदित्यमोहन शर्मा 'विद्वद्भूषण'
प्रधान सम्पादक, जयविनोदी जयपुर पञ्चांग

पं. गङ्गाधर पाठक
मुख्याचार्य श्रीरामजन्मभूमि शिलापूजन अयोध्या

अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, काशी
देवतायन, 96, जानकीनगर, वाराणसी, उत्तरप्रदेश

✻ पञ्चाङ्ग गणितकर्ता ✻

आचार्य विनय झा
संरक्षक, अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, वाराणसी

✻ प्रधान सम्पादक ✻

पं. अमित शर्मा
ज्योतिष-धर्मशास्त्र मर्मज्ञ, महामंत्री श्रीनिम्बार्कपरिषद् जयपुर

✻ प्रबन्ध सम्पादक ✻

मुदित मित्तल
ज्योतिषाचार्य, संयोजक राज०प्रान्त अ.भा.विद्वत्परिषद् जयपुर

✻ सह सम्पादक ✻

पं. पुरुषोत्तम शर्मा
राजज्योतिषी, कलवाड़ा जयपुर

डॉ. गोविन्दचन्द्र द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, मीरजापुर उ.प्र.

✻ नवग्रह चित्रांकन ✻

श्री दृढ़व्रत गॉरिक
Drdha Vrata Gorrick - Website: www.divyakala.com

✻ प्रकाशक ✻

श्रीनिम्बार्क परिषद्

मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी गढ़ के सामने,
कलवाड़ा, जयपुर, राजस्थान - 302037
7425824413, 7976006514
Email- ssjayadityapanchang@gmail.com
Website- www.nimbarkparishad.com

✻ आशीर्वाद ✻

स्वामी श्रीसियारामदास जी महाराज नैयायिक
श्रीमहन्त, सर्वेश्वर श्रीरघुनाथ जी मंदिर माउंट आबू

महन्त श्री अवधेशदास जी महाराज
महन्त, श्रीसिद्धेश्वर हनुमान जी मंदिर सोडाला जयपुर

श्री हरिप्रियदास जी महाराज 'विद्याभूषण'
श्रीमद्भागवत मर्मज्ञ, पराभक्तिपीठम् वृन्दावन

स्वामी श्री राघवेन्द्रदास जी महाराज
धर्मशास्त्रमर्मज्ञ हृषीकेश

✻ परामर्शदातृ समिति ✻

प्रो. सतीशचन्द्र शास्त्री
वरिष्ठ ज्योतिषाचार्य एवं शास्त्र चूड़ामणि जयपुर

प्रो. अर्कनाथ चौधरी
पूर्व निदेशक, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर

प्रो. मोहनलाल शर्मा
पूर्व प्राचार्य रा.महा.आ.सं.म.वि, प्रदेशाध्यक्ष अ.भा.विद्वत्परिषद्

डॉ. पारसनाथ ओझा
प्रधान संपादक, आदित्य पञ्चाङ्ग काशी

प्रो. कैलाश चन्द्र शर्मा
ज्योतिष विभागाध्यक्ष जगद्गुरु रामानन्दाचार्य रा.सं.वि.वि.जयपुर

प्रो. कृष्णा शर्मा
धर्मशास्त्र विभागाध्यक्ष केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर

डॉ. विजेन्द्र शर्मा
सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर

✻ विशिष्ट सहयोग ✻

डॉ. नमिता मित्तल सहा.आचार्य के.सं.वि.वि. जयपुर
पं. रमाकान्त शर्मा ज्योतिषाचार्य जयपुर
पं. मोहित शर्मा ज्योतिषाचार्य जयपुर
डॉ. सिद्धार्थ माहेश्वरी, पं. साकेत झा,पं.गोविन्द झा

✻ नम्र निवेदन ✻

सम्मानीय धर्मानुरागी जन !

'**श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग**' का पञ्चम पुष्प विक्रम संवत् 2082 के समस्त व्रतपर्वोत्सवों हेतु आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। **''धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः।''**

मनु महाराज के वचन के अनुसार 'धर्म की जिज्ञासा करने वालों के लिए श्रुति (वेद) सर्वोच्च प्रमाण है।' इससे यह सिद्ध होता है कि धर्माचरण के बिना सुख संभव नहीं है और धर्माचरण काल-ज्ञान के बिना संभव नहीं है। शास्त्रों में विभिन्न कर्मों के काल निर्धारित है जिनका विधिवत अनुष्ठान नियत काल में ही संभव है जिस प्रकार ऋतु अनुसार बोया बीज ही उत्पन्न होता है उसी प्रकार निर्धारित काल में किया गया शास्त्रोक्त कर्म ही फलदायक होता है अन्यथा वह निष्फल ही है।

इन धर्मकृत्यों के व्यवस्थित पालन हेतु पञ्चाङ्ग नामक साधन का प्रणयन ऋषियों ने किया। विगत कुछ समय से पञ्चाङ्ग निर्माण की विधि को लेकर मतभेद प्रकट हुए हैं तथा भिन्न भिन्न गणना विधि से पञ्चाङ्ग बनने से सामान्य जन में व्रतोपवास एवं पर्वों को लेकर सतत् संशय की स्थिति निर्मित हो गयी है।

समस्त शास्त्रों, सिद्धांत-ग्रंथों और पुराणों के अनुसार सूर्यसिद्धांत के अनुसार ही ग्रह साधन और तिथ्यादि का निर्धारण करना चाहिए। व्यास जी का स्पष्ट वचन है (विष्णुधर्मोत्तर पुराण) कि ग्रहण आदि घटनाओं में जहाँ दर्शन की आवश्यकता हो वहाँ ग्रहस्पष्ट आदि को दृक्कर्म संस्कार द्वारा दर्शन योग्य बनाना चाहिए, किंतु तिथ्यादि में उनका प्रयोग कभी भी नहीं करना चाहिए।

अन्य सभी पुराणों में गणना के लिये सूर्यसिद्धान्त का ही प्रयोग किया गया है। धर्मसम्राट स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज ने ने अपने कुम्भ तिथ्यादि निर्णय में स्कन्दपुराण के कलिमाहात्म्य से उद्धृत करते हुए लिखा है-

दृक्सिद्धखेटग्रहसाधितासु कुर्वन्ति केचित्तिथिषु प्रमादात् ।
श्राद्धादिकं तत्पितृशापतस्ते पुण्यक्षयं दुर्गतिमाप्नुवन्ति ।।
तथापि सन्तो बहवोऽत्र धार्मिकाः पुरातनाचारमथाजहन्तः ।
सूर्यांशजोक्तार्जितकाल एव कर्माणि कुर्वन्ति सुखं लभन्ते ।।

कुछ लोग प्रमाद के कारण दृक् सिद्धग्रह गणित के द्वारा निर्धारित तिथियों के अनुसार श्राद्धादि वैदिक कर्म करते हैं, वे पितृशाप के कारण पुण्यक्षीण होने से दुर्गति को प्राप्त होते हैं। फिर भी यहां बहुत से ऐसे धार्मिक हैं, जो पुरातन आचारपद्धति को न छोड़ते हुए सूर्यपुत्र मय के द्वारा कहे गये सूर्यसिद्धान्त द्वारा निर्धारित काल में ही श्राद्धादि-कर्म करते हैं, व सुख प्राप्त करते हैं।

अदृष्ट-फल-सिध्यर्थ यथार्कगणितं कुरु । गणितं यदि दृष्टार्थ तद्दृष्ट्युद्भव तस्सदा ।। -निर्णयसिन्धु ''अदृष्ट (प्रारब्ध) फल की सिद्धि हेतु सूर्यसिद्धान्त (अर्क-गणित) का प्रयोग करें, दृष्ट प्रयोजन यदि हो तो उसके लिए दृष्ट से उद्भूत गणित सदा प्रयुक्त करें।

कालिदास ज्योतिर्विदाभरण में लिखते हैं कि पञ्चाङ्ग में अधिकमास, क्षयमास, ग्रहों की संक्रान्ति आदि सूर्यसिद्धान्तीय गणना से ही लेनी चाहिए-

श्रीसूर्यसिद्धान्तमतोद्भवार्कात् साध्यौ तदा तावधिकक्षयौ।
मासौ तदा संक्रमकाल एव साध्यः सदा हौरिकशास्त्रविद्भिः।।

परम् आश्चर्य का विषय है कि सभी व्रत पर्वों के निर्धारण में सर्वमान्य एवं सर्वाधिक प्रतिष्ठित ग्रन्थ निर्णयसिन्धु है। उत्तरभारत के प्रायः सभी पञ्चाङ्ग निर्णयसिन्धु का अवलम्बन लेते हैं। इसी निर्णयसिन्धु के कर्ता सिद्धान्ततत्त्वविवेककार आचार्य कमलाकर भट्ट ने धर्मकृत्य निर्णय एवं फलादेश में दृश्यपक्ष को नकारकर सूर्यसिद्धान्त को ही परम प्रामाणिक मानते हुए इसे वेदवत कहा है, '**प्रमाणं श्रुतिवद् ग्राह्यम्।**'

ग्रहगणना सिद्धान्त का विवाद तो एक ओर रहा परन्तु वर्तमान में दृक्पक्षीय पञ्चाङ्गकर्ताओं की मनमानी पर्वों के निर्धारण में भी हतप्रभ कर देने वाली है। गतवर्ष संवत 2081 में अत्यन्त दुर्भाग्यशाली विवाद दीपावली महापर्व को लेकर उत्पन्न किया गया, परन्तु सम्पूर्ण भारत की जनता द्वारा ऐसे वितण्डावादियों के मायाजाल में ना उलझकर शास्त्र द्वारा सिद्ध दिन को ही दीपावली मनाई गई। जिसका विशेष विवरण 'दीपावली निर्णय' नामक लेख में पृष्ट 20 पर दिया गया है।

अस्तु यह विषय इतना जटिल हो चुका है की इसका निराकरण सहज सम्भव नहीं लगने पर भी अगम्य नहीं है। बीज रूप में ही सही पर सिद्धान्त की रक्षा अवश्य ही हो, इस पावन उद्देश्य को लेकर संवत् 2078 से इस '**श्रीसर्वेश्वर-जयादित्य-पञ्चाङ्ग**' का प्रकाशन आरंभ हुआ है, जिसपर आरम्भ से ही विद्वद्विभूतियों का आशीर्वाद रहा है। पञ्चांग के प्रथम प्रकाशन से ही आशीर्वाद प्रदाता ऐसी ही एक जयपुर की महान विभूति, महामहोपाध्याय प्रो. दयानंद भार्गव जी के कार्तिक मास 2082 में ब्रह्मलीन होने से भारतीय वेदविद्या और सारस्वत परंपरा में एक गहरी शून्यता उत्पन्न हो गई है। वे वेदसमुद्र पण्डित श्री मधुसूदन ओझा जी की परंपरा के प्रमुख वाहक और राष्ट्रपति सम्मानित विद्वान थे। श्रीनिम्बार्क परिषद् की ओर से श्रद्धांजलि यशः शेष दिव्यात्मन् आचार्य को शतं प्रणामाः। हंसपुरुषाय ते नमः।

'**सम्वत्सर एव प्रजापतिः**' (शतपथ, 1।6।3।5)। संवत्सर ही प्रजापति है, काल ही सर्वेश्वर है और प्रजापति का भी पिता है। '**कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत् प्रजापतेः**'(अथर्व0 19.53.8)। भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं को गीता में अक्षय काल '**अहमेवाक्षयः कालः**' कहा है। कालरूपी सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण का यह पञ्चाङ्ग जयपुर के धर्माकाश में भगवान् भुवनभास्कर आदित्य की भाँति उदित हुआ है। ऐसा यह '**श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग**' धार्मिकों के समक्ष प्रस्तुत है। समस्त धर्मानुरागी जन धर्मफल की शाश्वत सिद्धि हेतु धर्मशास्त्रानुमोदित इस 'श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग' के अनुसार व्रतपर्वोत्सवों का पालन करें।

श्रीसूर्यसिद्धान्तीय गणितज्ञ व त्रिस्कन्धज्योतिर्विद् आचार्य श्री विनय झा जी ने जयपुर के आराध्यदेव ठाकुर श्रीगोविन्ददेवजी मन्दिर के अक्षांश रेखांशों पर इस पञ्चाङ्ग हेतु सूर्यसिद्धान्तीय सूक्ष्मगणितसाधन किया है। पञ्चाङ्ग के प्रबन्ध सम्पादक श्री मुदित मित्तल का अनथक परिश्रम इस प्रकल्प की सिद्धि में प्रमुख है तथा इस पञ्चाङ्ग में जो कुछ भी श्रेष्ठ है वह सब श्रीसर्वेश्वर प्रभु के कृपाप्रसाद स्वरुप सन्तों, विद्वानों का अवदान है तथा प्रमादवश जो कुछ भी त्रुटि दृश्य हो, वह सब श्रीनिम्बार्क परिषद् की है जिनका परिमार्जन आप सभी के सहयोग एवं श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा से ही सम्भव हो सकेगा। श्रीसर्वेश्वर प्रभु हम सभी पर सदा कृपा रखें!

- पं. अमित शर्मा
महामंत्री, श्रीनिम्बार्क परिषद्, जयपुर
प्रधान सम्पादक, श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग

✻ संवत् 2082 के व्रत पर्व निर्णय (30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)✻

✻ वर्षारम्भ तथा नवरात्र स्थापना- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत 2082 रविवार दिनांक 30 मार्च 2025 सिद्धार्थ नाम संवत्सर का प्रारम्भ होगा इस दिन प्रत्येक घर में ध्वजारोहण नवीन निम्बदल भक्षण, पञ्चांग श्रवण करना चाहिए इसी दिन वासंतिक नवरात्र प्रारम्भ होंगे। इस वर्ष चित्रा नक्षत्र एवं वैधृति योग नहीं है। चौघड़िया देखकर स्थापना करना अशास्त्रीय है। घटस्थापना मुहूर्त-

सूर्योदय से 10 घटी पर्यन्त श्रेष्ठ -07:02-10:38 **अभिजित** -12:11-12:59

✻ श्रीराम नवमी - चैत्र शुक्ल नवमी के मध्याह्न में पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क लग्न में प्रभु श्रीराम का जन्म हुआ था। व्रतपूर्वक श्रीरामजी का जन्माभिषेक कर श्रीरामचरितमानस, श्रीरामरक्षास्तोत्र का पाठ करे। इस वर्ष श्रीरामनवमी 6 अप्रैल 2025 को है।

✻ श्रीपरशुराम जयंती, अक्षय तृतीया - वैशाख शुक्ल तृतीया पूर्वाह्न व्यापिनी ग्रहण करनी चाहिये, रोहिणी नक्षत्र सहित तृतीया बुधवार से युक्त होने पर भी द्वितीया से विद्धा हो तो वर्जित है, यह तृतीया युगादि भी है और शुक्ल पक्ष की युगादि में पूजन श्राद्ध पूर्वाह्न में ही ग्राह्य है, दोनों दिन पूर्वाह्न व्यापिनी हो तो अगली ही लेनी चाहिए, शुक्ल पक्ष की युगादी तथा मन्वादि तिथियों में उदयव्यापिनी लिथि ही ग्राह्य है। 30 अप्रैल 2025 को उदयकाल व्यापिनी तृतीया और रोहिणी नक्षत्र है, अतः इसी दिन अक्षय तृतीया है। भगवद् जयंती व्रतोपवास में उदयकाल व्यापिनी तिथि लेनी चाहिये, अतः **श्रीपरशुराम जयन्ती भी 30 अप्रैल को मनाई जाएगी।** इस दिन श्रीपरशुराम जयंती व चन्दनोत्सव का प्रमाण पहले देकर स्वधर्मामृतसिन्धु में स्पष्ट किया गया है,

'अथ तद्दिनं निर्णीयते। द्वयोरपि उत्सवनिमित्त सा विद्धाधिके तु परेद्युरेव। तदुक्तं स्कन्दपुराणे -
वैशाखस्य तृतीया या पूर्वविद्धा तु निन्दिता । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन चतुर्थीसंयुता शुभा ।। तथा वसिष्ठसंहितायां -
रोहिणीबुधयुक्तापि पूर्वविद्धा विर्वजिता । भक्तया कृतापि संमोहात्पुण्यं हन्ति पुराकृतम् ।।
इत्यादिवचनैः पूर्वविद्धस्य सर्वथा परिहार्यत्वात् । कलामात्रेपि सा पूर्णा तत्रोत्सवः कर्त्तव्यः।

अर्थात श्री परशुराम जयंती और अक्षय तृतीया दोनों उत्सव विद्धा तिथि को छोड़कर दूसरे दिन करना चाहिए। स्कन्दपुराण में कहा गया है, 'वैशाख की तृतीया, जो पूर्वविद्धा हो, तो निन्दित होती है। प्रयासपूर्वक उसे चतुर्थी से युक्त ले तो शुभ होती है। वसिष्ठसंहिता में भी कहा है, 'रोहिणी और बुधवार से युक्त तृतीया, यदि पूर्वविद्धा हो, तो उसे त्याग देना चाहिए। भले ही वह भक्तिभाव से की जाए, फिर भी वह पूर्व में किए पुण्य कर्म को भी नष्ट कर देती है।' इस प्रकार वचनों से स्पष्ट है कि पूर्वविद्धा तिथि को किसी भी प्रकार से त्यागना आवश्यक है। यदि कलामात्र भी सूर्योदय में मिले तो भगवदावतार जयन्तियों का उत्सव उसी में करना उचित है। **अतः श्रीपरशुराम जयंती 30 अप्रैल 2025 को मनाया जाना शास्त्रसम्मत है।**

✻ श्री जानकी नवमी - वैशाख शुक्ल की सूर्योदयव्यापिनी नवमी में श्रीजानकी नवमी व्रत किया जाता है। पद्मपुराण में शिवजी ने कहा है, *वैशाखशुक्लपक्षे त्वष्म्यां संयमनं कुरु। परेद्युर्विकुरुष्वै तज्जानकीजन्मनो व्रतम्।।*व्रत से पूर्व वैशाख शुक्ल पक्ष की अष्टमी को संयम करे। व परा नवमी में श्रीजानकी जन्मव्रत का पालन करे। अतः सूर्योदयव्यापिनी नवमी तिथि में व्रत का विधान पारंपरिक है। भविष्यपुराण में भी कहा है, ''*श्रीमार्कण्डेय उवाच,*

अष्टम्यां यदि विद्धा स्यान्नवमी माधवे सिते । कुर्यान्निदं व्रतं तस्यां कृतञ्चेल्ल्युनता भवेत् ।।
मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या व्रतेऽस्मिन्नवमी तिथिः। दिनद्वयगतायान्तु तस्यां कार्य्या परा नरैः ।।
एतैर्योगैर्विनापि स्यात् तद्दिनं पापनाशनम् । व्रतानां नित्यमाम्नातं कर्त्तव्यं व्रतमुत्तमम् ।।

भविष्यपुराण में श्री मार्कण्डेय जी ने कहा है, 'यदि नवमी तिथि अष्टमी से विद्ध हो, तो उस दिन इस व्रत नहीं करना चाहिए क्योंकि विद्धा नवमी में किया गए व्रत का फल न्यून और दोषपूर्ण होगा। श्रीजानकी व्रत में नवमी मध्याह्नव्यापिनी ले पर यदि दो दिन नवमी हो, तो परदिन की शुद्ध नवमी में व्रत करे (दूसरे दिन व्रत करे)। यदि दूसरा दिन ऊपर बताए गए योगों से रहित हो अर्थात् मध्याह्नव्यापी न हो तो भी दूसरा दिन पापों का नाश करने वाला होता है। यह व्रत नित्य कहा गया है, और इस उत्तम व्रत का सदैव पालन करना चाहिए।

वैष्णवमताब्ज भास्कर में भी श्री रामानन्दाचार्य ने भी इसी मत का प्रतिपादन किया है। अतः इस वर्ष संवत् 2082 में 6 मई को जानकी नवमी का व्रत किया जाएगा।

✻ श्रीनृसिंह जयंती - भगवद् जयंती का व्रत सूर्योदयव्यापिनी तिथि में किया जाता है। अतः वैशाख शुक्ल चतुर्दशी 11 मई को श्रीनृसिंह जयंती का व्रत किया जाएगा। इस दिन प्रदोष में भी चतुर्दशी तिथि विद्यमान है।

✻ रक्षाबन्धन - संवत 2082 में श्रावण शुक्ल पूर्णिमा 9 अगस्त 2025 को है। रक्षाबन्धन श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को भद्रारहित अपराह्नकाल में कहा गया है। भद्रा में श्रावणी करने से राजा की हानि होती है। 'भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फ़ाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं वहति फाल्गुनी।।' - निर्णयसिन्धु। इस दिन दोपहर 13:18 तक पूर्णिमा रहेगी अतः **राखी बाँधने का शुद्ध मुहूर्त दोपहर 13:18 मिनट तक रहेगा।**

✻ श्रीवराह जयंती - भाद्रपद शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को श्री वराह जयंती मनाई जाती है। इस वर्ष 26 अगस्त मंगलवार को हस्त नक्षत्र के शुभ संयोग में श्रीवराह जयंती का व्रत किया जाएगा।

✻ श्रीमहागणपति चतुर्थी - भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को मध्याह्न काल में श्रीगणेश जी का पूजन करना चाहिए। 27 अगस्त 2025 बुधवार को 13:52 तक चतुर्थी तिथि रहेगी, अतः मध्याह्न काल में बुधवार चित्रा नक्षत्र व शुभयोग के सुसंयोग में पूजन करना अति श्रेष्ठ रहेगा। **मुहूर्त: 11:12 से 13:45 तक**

✻ शारदीय नवरात्र- संवत 2082 में आश्विन शुक्ल प्रतिपदा 22 सितंबर 2025 को शारदीय नवरात्र आरम्भ होंगे। वैधृति एवं चित्रा रक्षित शुभमुहूर्त में कलशस्थापन होता है, व इस वर्ष आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को सम्पूर्ण दिन चित्रा-वैधृति नहीं है। अतः घटस्थापना मुहूर्त निम्न दो मुहूर्त्त में की जाएगी-

सूर्योदय से 10 घटी पर्यन्त श्रेष्ठ - 06:17-10:17 **अभिजित काल** - 11:55-12:43

✻ विजयादशमी- *उदये दशमीकिञ्चित् सम्पूर्णैकादशी यदि श्रवणः यदा काले सा तिथिः विजयाऽभिधः ।।*

अन्यञ्च- इषस्य दशमी शुक्ला पूर्वविद्धा न कारयेत्। श्रवणेनापि संयुक्ता राज्ञां पट्टाभिषेचने ।।
सूर्योदये यदा राजन दृश्यते दशमी तिथिः । आश्विने मासि शुक्ले तु विजयां ता विदुर्बुधा ।।

विजयादशमी अपराह्नव्यापिनी श्रवण नक्षत्र युक्त ग्राह्य होने से इस वर्ष 2 अक्टू. को विजयादशमी, आयुधपूजन, राज्याभिषेक आदि शास्त्रानुसार होगा। दशहरा के दिन शमीवृक्ष पूजन से पाप, दुःस्वप्न का निवारण होता है।

✻ संवत् 2082 के व्रत पर्व निर्णय (30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक) ✻

✻ **शरद पूर्णिमा**- शरदपूर्णिमा की चन्द्रकिरणों में खीर रखना, कोजागरी पूर्णिमा, महारास पूर्णिमा आदि कृत्य 6 अक्टूबर को करना शास्त्रसम्मत है।

✻ **धन त्रयोदशी**- कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के दिन प्रदोषकाल में यमदीपदान करने से अपमृत्यु का नाश होता है। 18 अक्टूबर 2025 को धनतेरस के दिन प्रदोषकाल 17:51 से 20:15 तक है।

✻ **नरक चतुर्दशी**- कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को प्रदोषकाल में नरक नाश हेतु चार बत्ती संयुक्त दीपदान करना चाहिए, 19 अक्टूबर 2025 को प्रदोषकाल 17:50 से 20:14 तक है।

✻ दीपावली लक्ष्मी पूजन 20 अक्टूबर ✻

✻ दीपावली लक्ष्मी पूजन प्रदोष व्यापिनी अमावस्या को प्रदोषकाल में दीपदान उल्का प्रदर्शन करके श्रीमहालक्ष्मी का पूजन करें फिर प्रसाद भोजन ग्रहण करें। संवत 2082 में 20 अक्टूबर 2025 को 14:27 पर अमावस्या तिथि आरम्भ होगी जो 21 अक्टूबर को 15:56 पर ही समाप्त हो जाएगी अतः **20 अक्टूबर को ही प्रदोषकाल व्यापिनी अमावस्या होने से इसी दिन दीपावली पर्व होगा। पूरे देश में इसी दिन 20 अक्टूबर को दीपावली मनाई जाएगी, 21 अक्टूबर को दीपावली मनाना शास्त्रविरुद्ध है।** गत संवत 2081 में भी सूर्यसिद्धान्तीय पंचांगों के अनुसार एकमत से 31 अक्टूबर को ही निर्विवाद दीपावली होने से पूरे देश में 31 अक्टूबर को ही दीपावली मनाई गई थी। अधिकांश दृश्य पंचांगों में भी शास्त्रों के सूक्ष्म अध्ययनोपरांत 31 अक्टूबर का निर्णय मान्य किया गया था, वही विमर्श इस वर्ष भी मान्य है अतः बहुत से दृश्य पंचांगों ने गत वर्ष के विमर्श के आधार पर संशोधन करते हुए 20 अक्टूबर 2025 को ही दीपावली का निर्णय दिया है।

✻ **सर्वश्रेष्ठ प्रदोषकाल** -	17:49 - 20:13
✻ **स्थिर वृष लग्न** -	19:20 - 21:16
✻ **वृष में सिंह नवांश** -	19:29 - 19:40
✻ **वृष में वृष नवांश** -	20:06 - 20:18
✻ **रात्रिकालीन सिंह लग्न**-	01:50 - 04:07
✻ **मुख्य प्रदोषकाल** -	17:49 - 19:01
✻ **प्रदोषे वृषलग्न योग** -	19:20 - 20:13

दीपावली पूजन प्रदोषकाल में होता है अतः दिन में पूजन करने का कोई विधान/मुहूर्त नहीं है। चौघड़िया मात्र यात्रा का मुहूर्त है अतः पूजन में उसकी कोई उपयोगिता नहीं है।

✻ **गोवर्धन पूजा** - प्रायः दीपावली के अगले दिन ही गोवर्धन मनाया जाता है। यह अमावस्या युक्त प्रतिपदा गौक्रीड़ा गोवर्धन में ग्राह्य होती है। 21 अक्टूबर को 15:56 तक अमावस्या है व 22 अक्टूबर को 17:46 तक प्रतिपदा है। गौक्रीड़ा गोवर्धन उत्सव चन्द्रदर्शन निषेध होने से ही पूर्वविद्धा प्रतिपदा में कहा है, चन्द्र का स्थूल दर्शन द्वितीया की 12 घटी बाद होता है, व 22 अक्टूबर को चन्द्रदर्शन नहीं हो रहा है इसलिए पूर्वविद्धा का प्रसंग नहीं है। और स्कन्दपुराण में कहा है, जो प्रतिपदा तिथि दिनमान के पांच में से चौथे भाग अर्थात अपराह्न में हो तो निःसन्देह वही ग्रहण करे, 'प्रतिपत्संमुखी कार्या या भवेदपराह्निकी'। 21 अक्टूबर को अपराह्न में प्रतिपदा नहीं है, 22 अक्टूबर को ही अपराह्न व सायाह्न दोनों में प्रतिपदा है, व निर्णयसिन्धु में कहा है, 'प्रातर्गोवर्धनं पूजयेत्।' इस कारण **22 अक्टूबर को गोवर्धनपूजा अन्नकूट महोत्सव करना शास्त्रसम्मत रहेगा।**

गोवर्धन एवं गौ मंत्र

गोवर्धन धराधर गोकुल त्राणकारकः। बहुबाहुकृतच्छाय गां कोटि प्रदो भव।।
लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थे मम पापं व्यपोहतु।।

✻ **होलिकादहन** - फाल्गुन पूर्णिमा को भद्रा रहित प्रदोष काल होलिकादहन का मुख्यकाल है। यथा 'सा प्रदोष व्यापिनी भद्रा रहिता ग्राह्या'। होलिका दहन भद्रा, प्रतिपदा और चतुर्दशी में शास्त्रनिषिद्ध है। इस वर्ष 2 मार्च को 17:45 पर पूर्णिमा तिथि लगते ही भद्रा लगेगी जो अगले सूर्योदय पूर्व 05:25 तक रहेगी।

इस वर्ष फाल्गुन पूर्णिमा 3 मार्च को ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण है। निर्णयसिन्धु में कहा है कि पूर्णिमा को ग्रहण हो तो उससे पूर्वरात्रि में जिस समय भद्रा न हो उसमें होली जलाए। अगर दूसरे दिन ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण हो तो पिछले दिन भद्रारहित रात्रि के चौथे प्रहर में सूर्योदय से पहले या फिर रात्रि में भद्रा के पुच्छभाग में होली जलाए। *''तत्र ग्रहणनिर्णयः। अत्र चेच्चन्द्रग्रहण तदा ततोर्वाङ्निशि भद्रावर्जं पौर्णमास्यां होलिकादीपनम्। अथ परेऽह्नियस्तोदयास्तदा पूर्वदिने भद्रावर्जं रात्रौ चतुर्थयामे विष्टिपुच्छे वा होलिका कार्या।''*

जयसिंह कल्पद्रुम में तो जयपुर की प्राचीन परंपरानुसार भविष्योत्तरपुराण के प्रमाण से *'भद्रान्ते सूर्योदयात् पूर्वे'* ही सर्वश्रेष्ठ माना है, *'यदा तु प्रदोषे पूर्वदिने भद्रा भवति परदिने चास्तात्पूर्वमेव पंचदशी समाप्यते तदा सूर्योदयात्पूर्वं भद्रान्तं प्रतीक्ष्य होलिका दीपनीया।'* अतः निर्णयसिन्धु के विकल्प से 2-3 मार्च की रात्रि में निम्न दो मुहूर्त्त में होलिका दहन शास्त्रसम्मत है-

भद्रापुच्छ - रात्रि में 01:16 - 02:25

भद्रावसाने सूर्योदयात् पूर्वे - 05:19 - 06:55

✻ **वर्षारम्भ तथा नवरात्र स्थापना**- अगले संवत 2083 की चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षय हो जाने से गुरुवार दिनांक 19 मार्च 2026 रौद्र नाम संवत्सर का प्रारम्भ होगा। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा क्षय होने से दोनों दिन उदयकाल में अव्याप्ति है अतः पूर्वदिन ही वर्षारम्भ होगा। यह चान्द्रवर्ष होता है- *तत्रौदयिकी प्रतिपद् ग्राह्या। दिनद्वये उदयव्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वा (धर्मसिन्धु, परिच्छेद 2, वर्षनिर्णय)।*

इस दिन प्रत्येक घर में ध्वजारोहण नवीन निम्बदल भक्षण, पञ्चांग श्रवण करना चाहिए। इसी दिन वासंतिक नवरात्र प्रारम्भ होंगे क्योंकि घटस्थापना प्रतिपदा में ही संभव है। इस वर्ष चित्रा नक्षत्र एवं वैधृति योग नहीं है। चौघड़िया देखकर स्थापना करना अशास्त्रीय है। घटस्थापना मुहूर्त-

सूर्योदय/प्रतिपदा से 10 घटी पर्यन्त श्रेष्ठ - 07:02-10:38

अभिजित काल - 12:11-12:59

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

स ईश्वरो व्यष्टिसमष्टिरूपोऽव्यक्तस्वरूपःप्रकटस्वरूपः। सर्वेश्वरः सर्वगः सर्ववित्ता समस्तशक्तिः परमेश्वराख्यः।।
नतोऽस्मि सर्वेश्वरमादिदेवं प्रपन्नसंरक्षणबद्धकक्षम्। कारुण्यवात्सल्यदयादिसिन्धुं जगद्गुरुं ब्रह्मशिवादिवन्द्यम्।।
विश्वरूप जयादित्य जय विष्णो जयाच्युत । जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते ।।
जयस्व सर्वेश्वर विश्वमूर्त्ते सुरासुरैर्वन्दितपादपीठ । त्रैलोक्यमातुर्गुरवे वृषाङ्क भीतः शरण्यं शरणागतोऽस्मि।।
कालरूपं कलयतां कालकालेश कारण। कालादतीत कालस्य कालकाल नमोऽस्तु ते।।
प्रतिपन्मुख्यराकान्त तिथिमण्डलपूजिता। कलात्मिका कलानाथा काव्यालापविनोदिनी।
कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनी । विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ।।
जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल । जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते ।।
लव निमेष परमानु जुग बरष कलप सर चण्ड। भजसि न मन तेहि राम को कालु जासु कोदण्ड।।
नियमेन यदानन्दो जगद्भासयतेऽखिलम् । तमहं नियमानन्दं वन्दे कृष्णं जगद्गुरुम् ।।
साङ्गोपाङ्गाय वेदाय ज्योतिषां ज्योतिषे नमः। सूर्याय सूर्यसिद्धान्तज्योतिर्विद्भ्यो नमो नमः।।

स्वस्ति श्रीः सूर्यसिद्धान्तमतेन समस्तजगदुत्पत्ति स्थिति लय नियमन-ज्ञानाज्ञानबन्धमोक्षकारणस्य स्वाभावतोऽपास्तसमस्तदोषोऽनन्ताचिन्त्य विचित्रयावदात्म-वृत्तिस्वाभाविककल्याणगुणशक्तिवैभवाश्रयो जगज्जन्मादिहेतुरखिलशास्त्रैकवेद्यो मुक्तप्राप्यः परब्रह्मभगवदादिशब्दाभिधेय श्चिदचित्पदार्थभिन्नाभिन्नसंबन्धाश्रयः श्रीपुरुषोत्तमोरमानिवास श्रीमहाविष्णोर्नाभिकमलोद्भवस्य चतुर्मुखब्रह्मणः परमायुः वर्षशतम्। तत्र पूर्वार्धं गतम्। उत्तरार्धे प्रथमवर्षे प्रथममासे प्रथमदिने श्वेतवराहकल्पसंज्ञे प्रथमकल्पे अह्नि त्रयोदशघटिकाः द्विचत्वारिंशत् पलानि च व्यत्यायन्। कृतत्रेताद्वापरकलियुगैरेकं महायुगं भवति। तैरेकसप्ततिमहायुगैः एकं मन्वन्तरम् । तैश्चतुर्दशभिरेकः कल्पः। तत् ब्रह्मणो दिनम्। तावती रात्रिः। एतादृशैः षष्ट्यधिकशतत्रयदिवसैरेकः ब्रह्मणो वर्षः। वर्तमानब्रह्मणो दिनमध्ये षण्मनवो गताः। इदानीं वर्तमानः सप्तमो वैवस्वतो मनुः। वैवस्वतमन्वन्तरेऽपि एकसप्ततिमहायुगमध्ये सप्तविंशतिमहायुगानि गतानि। अष्टाविंशतितमेऽपि महायुगे कृतत्रेताद्वापराख्यास्त्रयो युगपादाः गताः। कलियुगेऽपि 5125 वर्षाः गताः।।

महायुगप्रमाणम् - 43 लक्ष 20 सहस्रवर्षाः ।

कृतयुगप्रमाणम् - 17 लक्ष 28 सहस्रवर्षाः । **त्रेतायुगप्रमाणम्** - 12 लक्ष 96 सहस्रवर्षाः।

द्वापरयुगप्रमाणम् - 8 लक्ष 64 सहस्रवर्षाः । **कलियुगप्रमाणम्** - 4 लक्ष 32 सहस्रवर्षाः।

कल्पादितः - 1972949126 वत्सराव्यतीताः । **सृष्ट्यादितश्च** - 1955885126 ।

श्रीरामरावणयोर्युद्धतो गताब्दाः - 880167 । **श्रीकृष्णावतारतो गताब्दाः** - 5251 ।

कुरुपाण्डवयुद्धतो गताब्दाः -5126 । **सम्राट-युधिष्ठिर राज्यात्संवत्** 5162 ।

सम्राट-विक्रमादित्य राज्यात्संवत् 2082 । **शाके** 1947 । **अंग्रेजी सन्** 2025-26 ई. ।

तत्र चैत्रशुक्लप्रतिपत् **2082** तिथिमारभ्य गुरुमानेन प्रभवादि षष्ट्यब्दानां मध्ये रूद्रविंशतिकायां

सिद्धार्थ नाम संवत्सरारम्भः ।

✻ सिद्धार्थ नाम संवत्सर एवं वर्षेशादि फल ✻

श्री शुभसंवत् 2082, शक 1946, कलियुगाब्दारम्भ 5126,

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

✻✻ सिद्धार्थ संवत्सर का स्वरूप ✻✻

समुद्रतीरेसन्ध्यायां स्नात्वासूर्यसंमुखः। तिष्ठन् ध्यायन् जपन् वर्णीश्वेतः सिद्धार्थिवत्सरः।।

सन्ध्या के समय समुद्र के तट पर स्नान करके श्वेत वस्त्र धारण किए हुए सिद्धार्थ सम्वत्सर सूर्य के सम्मुख बैठकर ध्यानावस्था में जप करता है।

✻✻ सिद्धार्थ सम्वत्सर के अधिष्ठातृ देव भगवान् श्री बुद्ध का ध्यान ✻✻

सिद्धार्थिकृतनामानं बुद्धाकृतिमहं भजे। नग्नं विरूपवपुषं स्त्रीप्रधर्षण कारणम्।।

मैं सिद्धार्थ नाम धारण करने वाले बुद्ध की वंदना करता हूँ, जो अपनी साधना के परिणामस्वरूप सांसारिक वस्त्र-आभूषणों से मुक्त दिगम्बर अवस्था और अवधूत स्वरूप होने के कारण स्त्रियों के प्रधर्षण का कारण बनते हैं।

✻✻ सिद्धार्थ संवत्सर का फल ✻✻

सिद्धार्थवत्सरे भूपा ज्ञानवैराग्यभागिनः। सन्त्यथापि च सस्यानि प्रचुराणि तथा गदाः।।
सुघातलमखिलं यद्बहुविध धान्यर्घ सम्पूर्णम्। विविधामयसर्पभयं वर्षे सिद्धार्थसंज्ञे च।।

सिद्धार्थ संवत्सर में राजा तथा प्रजा दोनों में ज्ञान वैराग्य का प्रकाश दिखाई देता है। सारी पृथ्वी विशेष अन्न से पूर्ण होकर सुंदर दिखती है। सिद्धार्थ संवत्सर में कृषियोग्य वर्षा होगी। धनधान्य से पृथ्वी परिपूर्ण रहेगी। जनता में प्रसन्नता होगी। पर अनेक प्रकार के रोग से लोग पीड़ित होंगे।

✻✻ सिद्धार्थ संवत्सर में उत्पन्न जातकों के गुण ✻✻

उदारचेता विलसत्प्रसादो रणांगणप्राप्तयशाः सुखी स्यात् ।
नरेन्द्रमंत्री बहुपूजितार्थः सिद्धार्थिजातो मनुजः समर्थः ।।
वेदशास्त्रप्रभावज्ञः शुद्धचित्तश्च कोमलः ।
सुकुमारो नृपैः पूज्यः कविः सिद्धार्थिजो नरः ।।

सिद्धार्थ संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक उदार हृदय, प्रसन्नता और अनुग्रह से युक्त होता है, वह रणभूमि में यश प्राप्त करता है और सुखी होता है। वह राजा या मंत्री होता है, बहुत लोगों द्वारा पूजनीय और सर्वसमर्थ होता है। वह वेद और शास्त्रों के तत्त्व को जाननेवाला, शुद्ध हृदय, मृदु स्वभाव, सुकुमार शरीर, राजाओं से आदर पानेवाला और कवि होता है।

राजा सूर्य

मन्त्री सूर्य **शस्येश गुरु** **धान्येश मंगल** **मेघेश सूर्य** **रसेश शुक्र**
नीरसेश बुध **फलेश शनि** **धनेश सूर्य** **दुर्गेश सूर्य**

❋ संवत्सर 2082 की राज परिषद् ❋

❋❋ राजा सूर्य ❋❋

अब्दाधिपे दिनपतौ खलु मध्यवृष्टिर्मंदप्रभर्क्ष गणशीतकरं नयश्च ।
हन्तुं सपत्न विषयान्निखिलक्षितीशा निन्त्यं चरन्ति भूवि भूरिबलं वृताश्च।। (वशिष्ठ सं.पृ68 श्लो11)

इस वर्ष सूर्य के शासक होने से अल्पवृष्टि, धान्य की उपज में न्यूनता, औसत दुग्ध उद्योग में तथा फलादि खाद्य पदार्थों में कमी रहेगी। चोरी, लूट, अपहरण जैसी अनेक घटनाएँ होंगी। उच्च स्तरीय नेता का वियोग होगा। पित्त, ज्वर एवं अतिसारादि रोगों से लोग अधिक पीड़ित रहेंगे। राष्ट्रविरोधियों को तथा अपराधियों को समाप्त करने के लिए सम्पूर्ण विश्व के उच्च स्तरीय नेता एवं प्रशासक एकजुट होंगे।

❋❋ मन्त्री सूर्य ❋❋

नृपभयं गदतोपि हि तस्करात्प्रचूर धान्य धनादि महीतले।
रसचयं नहि समर्घतम तदा रविरमात्य पदं हि समागते।

इस वर्ष सूर्य के मंत्री होने से प्रजा में राजभय व्याप्त, अनेक प्रकार के रोगों से लोगों में व्याकुलता, प्रजा में चोरी, लूट आदि निंदनीय कार्यों से भय व्याप्त रहेगा। तरल पदार्थों के संग्रह से वृद्धि होगी। धन-धान्यादि की औसत उपज अधिक होगी।

❋❋ शस्येश बृहस्पति ❋❋

सस्यपतौ त्रिदशगुरौ बहुविधसस्यार्घ सम्पूर्णम्।
द्विज सज्जन पशुवृद्धि कानन फलपुष्प तोय जन्तूनाम्।

सस्येश इस वर्ष बृहस्पति के सस्येश होने से प्रजा में सात्विक प्रवृत्ति की अधिकता, वैदिक धर्म तथा सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार होगा जो जगत के लिए मंगलदायक रहेगा। वर्षा अधिक होगी। अनेक प्रकार के अन्नों से पृथ्वी परिपूर्ण रहेगी।

❋❋ मेघेश सूर्य ❋❋

जलदये यादि वासरपे तदा सरसिवैरमते जनता रसम् ।
यव चणेक्षुनिवार सुशालिभिः सुखचयं सुलभं भूवि वर्तते ।।

इस वर्ष सूर्य के मेघेश होने से जौ, चना, दलहन, तिलहन, चावल, सावाँ कोदो आदि की उपज अच्छी होगी। पृथ्वी पर सुख एवं शान्ति की वृद्धि होगी।

❋❋ धान्येश मंगल ❋❋

भूमिजे ग्रीष्म धान्येशे ग्रीष्म शालीक्षुघृततैलादिमहर्घाणि भवन्ति च ।

इस वर्ष मंगल के धान्येश होने से ग्रीष्म धान्य, चावल, गन्ना, घृत, तैल एवं तरल पदार्थों में तेजी का रुख रहेगा।

❋❋ रसेश शुक्र ❋❋

यजन याजन कोत्सुकाः जनपदाजलतोषित मानसः ।
सुखसुभिक्षु ममोदवती धरा धरणिया हतपापगया प्रिया ।।

रसेश इस वर्ष शुक्र के रसेश होने से लोगों में सत्प्रवृत्ति की भावना अधिक रहेगी। यज्ञ, याजन तथा अनेक प्रकार के उत्सवों की प्रचुरता होगी। जनता में प्रसन्नता एवं संतोष अधिक रहेगा। देश के शीर्षस्थ नेताओं में विवाद की स्थिति अधिक रहेगी।

❋❋ नीरसेश बुध ❋❋

चित्रवस्त्रादिकं चैव शंख चन्दन पूर्वकम् ।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो बुधो यदि ।।

इस वर्ष बुध के नीरसेश होने से छींटदार, धारीदार वस्त्र एवं शंख, चंदन आदि में औसत मंदी रहेगी।

❋❋ फलेश शनि ❋❋

यदि शनिः फलपः फलहा भवेज्जनित पुष्पगणस्य दमः सदा।
हिमभयं वर तस्करः जन्तुभिः जनपदो गद राशि महाकुलः ।।

इस वर्ष शनि के फलेश होने से फलदायी वृक्षों के पुष्पों का पतन अधिक मात्रा में होगा। जिसके कारण फलों के लिए क्षतिकारक रहेगा। अधिक हिमपात होने से, धन-धान्य की क्षति एवं प्रजा में भय व्याप्त रहेगा। अनेक प्रकार के रोगों से लोग पीड़ित रहेंगे। चोरों का भय व्याप्त रहेगा।

❋❋ दुर्गेश सूर्य ❋❋

नय विशेषकरस्तरविस्तदा प्रतभयानरराज पुरोगमा ।
समधिकोन तदा नृपजोन्यजः स्वपव्यजं व्रजतां न भयं क्वचित् ।।

दुर्गेश इस वर्ष सूर्य के दुर्गेश होने पर राजनेता सदा न्याय की बातें करेंगे। न्यायपूर्वक कार्य न होने पर जनता निर्भय होकर अपनी-अपनी बातें राजनेता तक रखेंगे। प्रजा तथा न्यायाधीश राजनेताओं का साथ देंगे।

❋❋ धनेश सूर्य ❋❋

कृषक द्रविणपो हियरश्मिसुतो यया विविध कृषिविशेष विशेषितः मानसाः ।
द्विजवराजय यज्ञसुसंयुता संग्रह वस्तु फलार्थदा ।

धनेश इस वर्ष सूर्य के धनेश होने से वस्तुओं के संग्रह कर विक्रय से लाभ, विप्रगण योजना कराने में तत्पर रहेंगे अर्थात लोगों में सात्विकता की अधिकता रहेगी। कृषि कार्य से अधिक लाभ होगा।

❋ अथोत्पात फलज्ञानाय चतुर्विधमण्डलम् ❋

अग्निमण्डल	वारुणमण्डल	वायुमण्डल	चन्द्रमण्डल
कृत्तिका	मूल	पुनर्वसु	अभिजित
भरणी	आश्लेषा	उत्तराफाल्गुनी	उत्तराषाढ़ा
पुष्य	शतभिषा	अश्विनी	अनुराधा
मघा	आर्द्रा	हस्त	श्रवण
पूर्वाभाद्रपद	रेवती	चित्रा	धनिष्ठा
विशाखा	उत्तराभाद्रपद	स्वाती	ज्येष्ठा
पूर्वाफाल्गुनी	पूर्वाषाढ़ा	मृगशिरा	रोहिणी
अशुभ	**शुभ**	**अशुभ**	**शुभ**

भूकम्पादिमहोत्पातो जायते यत्र मण्डले ।
तत्तत्स्वभावजं द्रव्यं जन्तून् देशांश्च पीडयेत्।।
अत्र वायव्याग्निमण्डलावनिष्टाविति ।

ब्रह्मा विंशति		विष्णु विंशति		रूद्र विंशति	
प्रभव	ईश्वर	सर्वजित	हेमलम्बी	प्लवंग	पिंगल
विभव	बहुधान्य	सर्वधारी	विलम्बी	कीलक	कालयुक्त
शुक्ल	प्रमाथी	विरोधी	विकारी	सौम्य	**सिद्धार्थ**
प्रमोद	विक्रम	विकृत	शार्वरी	साधारण	रौद्र
प्रजापति	वृष	खर	प्लव	विरोधकृत	दुर्मति
अंगिरा	चित्रभानु	नन्दन	शुभकृत	परिधावी	दुन्दुभि
श्रीमुख	सुभानु	विजय	शोभन	प्रमादी	रूधिरोद्गारी
भाव	तारण	जय	क्रोधी	आनन्द	रक्ताक्ष
युवा	पार्थिव	मन्मथ	विश्वावसु	राक्षस	क्रोधन
धाता	अव्यय	दुर्मुख	पराभव	अनल	क्षय

✻जयपुर केन्द्रित वर्षलग्न एवं जगल्लग्न का सामान्यफल ✻

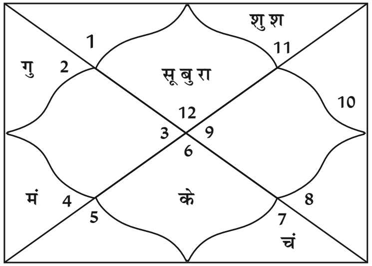

जगल्लग्न

दिनांक- 14 अप्रैल 2025

समय- 05:37

स्थान- श्रीगोविन्ददेवजी, जयपुर

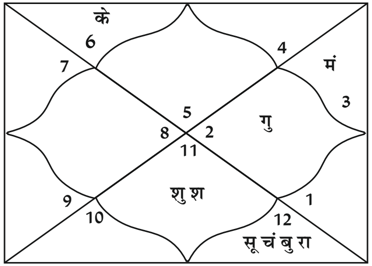

वर्षलग्न

दिनांक- 29 मार्च 2025

समय- 16:56

स्थान- श्रीगोविन्ददेवजी, जयपुर

संवत् 2082 के वर्षलग्न सिंह एवं जगल्लग्न मीन हैं। संवत्सर के दशाधिकारियों में छः पाप ग्रह एवं चार शुभ ग्रह हैं। मुख्य पद राजा सूर्य, मंत्री सूर्य एवं दुर्गेश सूर्य है। जगल्लग्नाधिपति बृहस्पति एवं वर्षलग्नाधिपति सूर्य दोनों परस्पर मित्र हैं। दशाधिकारी वर्षलग्न की ग्रह स्थिति एवं जगल्लग्न की ग्रह स्थिति के अनुसार राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार परस्पर मिलकर देश के विकास के लिए कार्य करते रहेंगे। दशाधिकारियों में अधिक पाप ग्रह हैं अतः केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार के किये गए देश के विकास कार्यों में विपक्षी दल अवरोध उत्पन्न करते रहेंगे। जिससे देश की क्षति एवं देश की प्रजा में असंतोष व्याप्त रहेगा। विपक्षी दल सत्ता प्राप्ति के लिए किसी भी सीमा तक जा सकते हैं।

विकसित देशों में सत्ता परिवर्तन होगा। देश के पश्चिम एवं पूर्वोत्तर के राज्यों में सामाजिक एवं जातीय संघर्ष होगा। देश में उच्च स्तरीय शिक्षण संस्थान, चिकित्सालय एवं धार्मिक संस्थानों के निर्माण कार्य होंगे। युवाओं के रोजगारपरक अनेक कार्य किए जायेंगे। देश की निर्धनता कम करने का प्रयत्न किया जायेगा। देश में महिला सशक्तीकरण हेतु अनेक रोजगारपरक कार्य किये जायेंगे। देश-विदेश की सीमाओं पर तनाव की स्थिति बनी रहेगी। देश-विदेश के शेयर बाजार में तेजी का रुख बना रहेगा। विदेशी मुद्राओं पर समय-समय पर उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी। देश की आर्थिक स्थिति में मजबूती आयेगी।

देश में कुत्सित राजनैतिक, अराजकता, आतंकी, हिंसक, घटनाएं अधिक एवं बैंकों की स्थिति कमजोर रहेगी। देश में दैवीय प्रकोप होंगे जिससे जन-धन की क्षति होगी। देश के राजनीतिक क्षेत्र में अनेक परिवर्तन देखे जायेंगे। दशाधिकारियों में अधिक पाप ग्रह होने से देश में लूटपाट, भ्रष्टाचार, चोरी आदि में अधिकता देखी जायेगी। देश में औसत शिक्षा-स्वास्थ्य, धार्मिक स्थल के विकास, पर्यटन के क्षेत्र में अधिक कार्य होंगे। रजत, स्वर्ण में तथा इनसे निर्मित वस्तुओं में औसत तेजी रहेगी। पेट्रोल, डीजल एवं तरल पदार्थों में तेजी रहेगी।

✻ सूर्य आर्द्रानक्षत्र प्रवेश सामान्य फल ✻

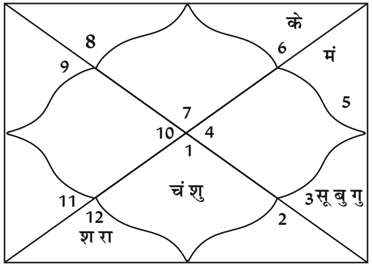

सूर्य आर्द्रा नक्षत्र प्रवेश

दिनांक- 22 जून 2025, समय- 14:46

स्थान- श्रीगोविन्ददेवजी, जयपुर

इस वर्ष आषाढ़ कृष्ण तिथि द्वादशी रविवार भरणी नक्षत्र, सुकर्मा योग, कौलव करण, तुला लग्न, मेषराशि दिवा 14:46 पर सूर्य आर्द्रा में प्रवेश करेगा। आर्द्रा प्रवेश लग्न के ग्रहों की स्थिति के अनुसार वायु के साथ खंडवृष्टि होगी। देश के पश्चिमोत्तर भाग में चक्रवाती प्रकोप अधिक रहेगा। वर्षा की अधिकता रहेगी। देश के पूर्वी भाग में कुछ क्षेत्रों में शुष्कता से फसल की क्षति होगी। देश के पूर्व दक्षिण भाग में वर्षा में न्यूनता रहेगी। तटीय भूभाग में तूफान का प्रकोप रहेगा। आकाशीय विद्युत, चक्रवात, दैवीय प्रकोप आदि से जन-धन की क्षति होगी। रोग-व्याधि की अधिकता रहेगी। प्रजा में असंतोष रहेगा। देश के उच्च स्तरीय राज्य तथा केन्द्र नेताओं में समय-समय पर युद्ध जैसी स्थिति बनी रहेगी। जो देश के लिए शुभ नहीं रहेगा। चोरी, लूट, अपहरण, बलात्कार जैसी घटनाएँ औसत से अधिक रहेंगी।

✻ स्तम्भ विचार ✻

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र, वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र है अतः इस संवत् में जल स्तम्भ व तृण स्तम्भ हैं। ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र व आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र होने के कारण वायु स्तम्भ व अन्न स्तम्भ है, अतः इस वर्ष चार स्तम्भ हैं। यह वर्ष उत्तम फल वाला रहेगा। इस वर्ष वर्षा, घास, जड़ी बूटियां, वायु व अनाज संतोषप्रद रहेंगे।

नतोऽस्मि सर्वेश्वरमादिदेवं प्रपन्नसंरक्षणबद्धकक्षम्।
कारुण्यवात्सल्यदयादिसिन्धुं जगद्गुरुं ब्रह्मशिवादिवन्द्यम्।।

✻ अग्नि-वास चक्र ✻

शु.प. तिथि	कृ.प. तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1, 9	2, 10	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
2, 10	3, 11	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
3, 11	4, 12	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
4, 12	5, 13	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
5, 13	4, 14	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
6, 14	7, 30	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
7, 15	8	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
8	1, 9	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी

✻ शिव-वास ✻

शु.प. तिथि	कृ.प. तिथि	शिव वासम्	फलम्
1, 8,	7, 14	श्मशाने	मृत्युः
2, 9	1, 8,	गौरीसन्निधौ	शुभम्
3, 10	2, 9	सभायाम्	तापकारक
4, 11	3, 10	क्रीडायाम्	विशिष्टकष्ट
5, 12	4, 11	कैलाशे	सुखम्
6, 13	5, 12	वृषे	श्री प्राप्तिः
7, 14	6, 13	भोजने	कष्टप्राप्तिः

❊भारतदेशीय विदिशा केन्द्रित सौर वर्षप्रवेश कुण्डली का सामान्यफल संवत् 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक) - मुदित मित्तल, सम्पादक

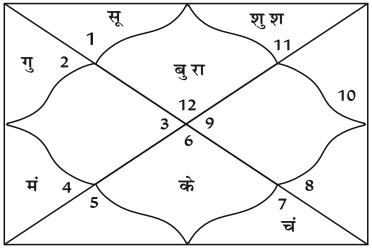

सौर वर्ष प्रवेश राशिचक्र

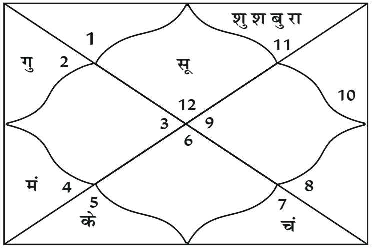

सौर वर्ष प्रवेश भावचलित चक्र

दिनांक- 14 अप्रैल 2025, समय- 05:37
स्थान- विदिशा, मध्यप्रदेश, अक्षांश 23:31:19 उ., रेखांश 77:48:39 पू.

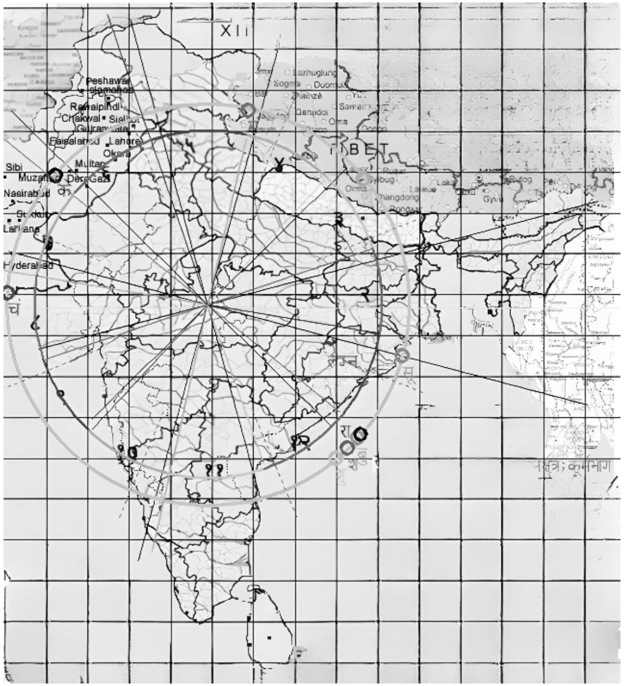

सम्वत 2082 के मेषारम्भ में मेरुपर्वत आधारित कुंडली में भारतवर्ष वृष राशि व चतुर्थ भाव में पड़ रहा है। व कश्मीर का हिस्सा पंचम भाव में पड़ रहा है। चतुर्थेश शुक्र द्वितीय भाव में स्वगृही लग्नेश शनि के नियंत्रण में है। अतः यह वर्ष भारत की अर्थव्यवस्था की दृष्टि से अच्छा रहेगा। भारत की धन संपत्ति बढ़ेगी और अंतराष्ट्रीय स्थिति मजबूत होगी।

सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के समय भारत के विदिशा से मेषारम्भ कुण्डली पर आधारित संक्षिप्त वर्षफल दिया जा रहा है। भारतवर्ष की मेषारम्भ कुण्डली में लग्नेश गुरु तृतीय भाव में है जिससे भारत का साहस बढ़ा चढ़ा रहेगा व कठोर निर्णय लिए जाएंगे। अंतराष्ट्रीय मंचों पर भारत अपनी बात प्रखरता से विश्व के सामने रखेगा। देश के प्रशासनिक अधिकारी सरकार के प्रति अधिक सहयोगी रहेंगे।

धनेश और भाग्येश मंगल इस वर्ष पंचम भाव में नीच के हैं, अतः देश में धर्म के नाम पर पाखण्डियों को अपनी रोटियाँ सेंकने का मौका मिलेगा और वो धर्म को हानि पहुँचाने की चेष्टा करते रहेंगे लेकिन धर्म भाव पर शुभ बृहस्पति की दृष्टि, और मंगल स्वयं पंचम भाव में होने से, धर्म को कुछ-कुछ सहायता भी मिलेगी।

बुध शुक्र शनि और राहु एक साथ द्वादश भाव में हैं। यह अशुभ परिस्थिति है। जातक में यह संन्यास / प्रव्रज्या का भी योग कहा है। शनि आयेश हैं अतः राष्ट्रीय आय की व्यर्थ में हानि होगी। शुक्र तृतीय-अष्टम भाव के स्वामी हैं, अतः विपरीत राजयोग बना रहे हैं पर शनि के पूर्ण नियंत्रण में हैं। अतः भारत को विपरीत परिस्थितियां भी झेलनी पड़ेंगी लेकिन अच्छा परिणाम भी होगा। देश को महिलाओं द्वारा उपलब्धि हासिल होगी। देश में विदेशी हस्तक्षेप बढ़ाने के षड्यंत्रों में बढ़ोतरी होगी। यह राष्ट्र की स्थिरता और शांति में विघ्नबाधा करेगा। पंचमेश चन्द्रमा मृत्यु भाव में हैं। कुल मिला कर इस वर्ष की कुण्डली के अनुसार भारत के लिए वर्ष में अवरोध दिखाई दे रहे हैं। धन संपत्ति बढ़ने के साथ ही देश में आर्थिक हानि होने से राजकोष को घाटा होगा, देश में आन्तरिक कलह फ़साद का योग बना रहेगा परन्तु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत कड़ाई से शत्रुओं का सामना करेगा व अपनी शक्ति बढ़ाने में सफलता प्राप्त करेगा।

देश के लिए विशेष रूप से शुभदायक व अशुभ समय की जानकारी दी जा रही है। 2025 में 25 अप्रैल से 3 मई तक का समय शुभ, 4-5 मई अशुभ, 6 से 31 मई तक शुभता बढ़ेगी जिसमें 27-31 मई विशेष शुभ है। इसके बाद 1 जून से 22 जून तक शुभता घट रही है जिसमें 17 से 22 जून विशेष अशुभ हो सकता है। 23 जून से 17 सितंबर तक का समय सामान्य है जिसमें 20 से 28 जुलाई विशेष शुभ, इसके बाद 17 से 20 अगस्त विशेष शुभ, 13 से 17 सितंबर विशेष शुभ है।

❊भारतदेशीय विदिशा केन्द्रित सौर वर्षप्रवेश कुण्डली का सामान्यफल संवत् 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

- मुदित मित्तल, सम्पादक

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

18 सितंबर से 8 अक्टूबर का समय कंटकाकीर्ण है। 9 से 24 अक्टूबर शुभ समय है। 25 अक्टूबर से 2 नवंबर कमजोर समय है। 3 नवंबर से 4 दिसंबर का समय कुछ अवरोधों के साथ सामान्य विकास का है। 5 से 9 दिसंबर का समय विशेष अशुभ है। 10 से 12 दिसंबर का समय शुभ है। 13 दिसंबर से 31 दिसंबर का समय गिरावट व अवरोधों का है। 1 जनवरी 2026 से लेकर वर्षान्त 19 मार्च 2026 तक का समय शुभतापूर्ण विकास का है, इसमें देश को कम उतार चढ़ाव देखने को मिलेंगे।

इस वर्ष में शनि का फल प्रायः सम रहेगा। बृहस्पति का फल 14 अप्रैल से 10 मई तक सामान्य, 11 मई से 5 जून तक विशेष शुभ, 6 जून से 23 जून तक सम, 24 जून से 3 अक्टूबर तक शुभ, 4 अक्टूबर को अशुभ, 5 अक्टूबर से 23 दिसंबर तक शुभ, इस दौरान 9 से 15, 17 से 24 अक्टूबर तक विशेष शुभ, 5 से 11, 14 से 20 नवंबर तक विशेष शुभ, 3 से 8, 11 से 18 दिसंबर तक विशेष शुभ रहेगा। 24 दिसंबर से 19 मार्च 2026 तक निम्न रहेगा।

8 जून से 29 जुलाई 2025 तक मंगल का विशेष फल देखने को मिलेगा। 30 अक्टूबर से 10 दिसंबर तक मंगल का बहुत कमजोर फल मिलेगा। 18 जुलाई से 17 सितंबर तक सूर्य का विशेष शुभफल देखने को मिलेगा। 18 सितंबर से 18 नवंबर तक सूर्य कमजोर रहने से निम्न फल रहेगा। 5 जून से 30 अगस्त तक बुध कमजोर रहने से निम्नफल देखने को मिलेगा। 1 जून से 27 जुलाई व 22 अगस्त से 10 अक्टूबर तक शुक्र कमजोर रहेगा।

गत वर्ष कालयुक्त नामक संवत्सर के देवता भगवान श्री कल्कि थे, जिसका विवरण केवल श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पंचांग में दिया गया था। श्रीकल्कि विष्णु मंदिर सम्भल को तोड़कर औरंगजेब ने ढांचे का निर्माण किया था। इस वर्ष श्री कल्कि जन्मभूमि हरिहर मंदिर का मामला पुनः प्रकाश में आया और न्यायालय ने सर्वे के आदेश भी जारी किए। सिद्धार्थ संवत्सर 2082 के देवता श्री बुद्ध हैं अतः इस वर्ष श्री बुद्ध व उनके मंदिरों से संबंधित उल्लेखनीय घटना घटित होने की संभावना है।

सिद्धार्थ संवत्सर में राजा तथा प्रजा दोनों में ज्ञान वैराग्य का प्रकाश दिखाई देता है। सारी पृथ्वी विशेष अन्न से पूर्ण होकर सुंदर दिखती है। सिद्धार्थ संवत्सर में कृषियोग्य वर्षा होगी। धनधान्य से पृथ्वी परिपूर्ण रहेगी। जनता में प्रसन्नता होगी। पर अनेक प्रकार के रोग से लोग पीड़ित होंगे।

सिद्धार्थ संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक उदार हृदय, प्रसन्नता और अनुग्रह से युक्त होता है, वह रणभूमि में यश प्राप्त करता है और सुखी होता है। वह राजा या मंत्री होता है, बहुत लोगों द्वारा पूजनीय और सर्वसमर्थ होता है। वह वेद और शास्त्रों के तत्त्व को जाननेवाला, शुद्ध हृदय, मृदु स्वभाव, सुकुमार शरीर, राजाओं से आदर पानेवाला और कवि होता है।

ग्रह गोचर अनुसार 2025-2026 में तेजी मन्दी का विचार

- अंकुर अग्रवाल, ज्योतिषाचार्य, श्रीगंगानगर

1 फरवरी उपरांत शेयर बाजार में मंदी की संभावना है। 20 फरवरी उपरांत अनाज एवं रुई बारदाना में तेजी एवं सोना चांदी में अस्थिरता होने की संभावना है एवं उत्तर भारत में ओलावृष्टिकी संभावना है। 25 फरवरी से सर्द हवाओं में वृद्धि की संभावना है। 28 फरवरी उपरांत रुई सूती वस्त्र इत्यादि में सामान्य तेजी की संभावना है। 12 मार्च उपरांत घी शक्कर चीनी चावल में तेजी एवं रुई में मंदी की संभावना है। 27 मार्च उपरांत अनाज एवं नेस्ले इत्यादि मिल्क प्रोडक्ट्स शेयरों में तेजी एवं उत्तर भारत में वर्षा की संभावना है।

8 अप्रैल उपरांत शेयर बाजार में मंदी की संभावना है जो कि मई महीने तक रहने के आसार हैं। 3 जून से शेयर मार्केट में अच्छी तेजी की संभावना है जो कि 19 जुलाई तक रहने के आसार हैं। 19 जुलाई से 10 नवंबर तक शेयर बाजार में सामान्य मंदी रहने की संभावना बन रही है। नवंबर माह में केतु से संबंधित बड़ी घटनाएं होने की संभावना बन रही बन रही है। 10 नवंबर से रुई में सामान्य तेजी की संभावना है। 13 नवंबर से तेल तिलहन में मंदी की संभावना है। 22 नवंबर से शेयर बाजार में तेजी के साथ फसल हानि की संभावना बन रही है। 27 नवंबर से उत्तर दिशा के देशों में युद्ध की परिस्थिति बनने की संभावना है। दिसंबर 2025 एवं जनवरी 2026 में बाजार स्थिर रहने की संभावना है। 14 फ़रवरी 2026 से शेयर बाजार एवं धान्यों में तेजी की संभावना है। 6 मार्च 2026 से शेयर बाजार में बड़े उछाल की संभावना बन रही है जो एक सप्ताह तक ही सीमित रहने के आसार हैं इसके उपरांत सामान्य रूप तेजी 24 अप्रैल तक रहने के आसार हैं।

सोना एवं चाँदी की स्थिति का विचार

1 से 9 फरवरी 2025 में मंदी की संभावना है। 20 से 23 मार्च तक तेजी की संभावना है। 26 से 29 मार्च 2025 में सोना एवं तांबा धातु में तेजी की संभावना है। 8 से 14 अप्रैल तक सोना चांदी में मंदी की संभावना बन रही है। 9 से 12 अगस्त तक चांदी में मंदी की संभावना बन रही है। 11 से 17 नवंबर 2025 तक तेजी की संभावना बन रही है। 24 से 30 नवंबर 2025 तक तेजी की संभावना बन रही है। 14 से 19 फरवरी 2026 तक तेजी की संभावना बन रही है। 23 से 26 फरवरी 2026 तक तेजी की संभावना बन रही है। 1 से 4 मार्च 2026 तक तेजी की संभावना बन रही है। 7 से 10 मार्च 2026 तक तेजी की संभावना बन रही है। 11 से 16 मार्च 2026 में सोना चांदी में मंदी की संभावना है। 19 से 22 मार्च 2026 में तेजी की संभावना बन रही है।

✻ 2082 में सूर्य की 12 संक्रान्तियों का फल एवं स्वरूप ✻

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

मेष संक्रान्ति - 14 अप्रैल 2025 - 05:37 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 06:08 (सूर्योदय) - 12:28 (दिनमध्य)
वसन्त ऋतु, खरमास समाप्ति, रविवार, स्वाती नक्षत्र, कौलव करण, विषुव संक्रान्ति।

यह मेष संक्रान्ति कौलव करण में होने से सर्प जाति की, वराह वाहन पर, नीला वस्त्र पहने, तलवार लिए, भिक्षान्न खाते हुए, लाल चन्दन का लेपन किए, बकुल अशोक का पुष्प लिए, गतालक वय में, रति अवस्था में खड़ी हुई प्रवेश कर रही है। खड़ी संक्रान्ति धर्म हेतु श्रेष्ठ, अन्नादि के भाव सस्ते व वृष्टिकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ है। इस सूर्य संक्रमण काल में खड़े नहीं रहना चाहिए। मेष संक्रान्ति बाघ पर सवार, जटिला, अग्निरूपा, तीन नेत्रों वाली, रक्तवर्णा कपालहस्ता, एकमुखी व कराली नाम की होती है। इसका सूर्य धाता है। इसमें मेषदान शुभ होता है। स्वाती की संक्रान्ति 15 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव महंगा होता है। स्वाती जातकों को कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान। इस एक महीने में **मेष**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **वृष**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **मिथुन**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **कर्क**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **सिंह**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **कन्या**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **तुला**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **वृश्चिक**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **धनु**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **मकर**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, हृदयपीड़ा। **कुम्भ**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **मीन**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना।

वृष संक्रांति - 15 मई 2025 - 04:04 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 05:42 (सूर्योदय) - 12:22 (दिनमध्य)
ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, बुधवार, ज्येष्ठा नक्षत्र, वणिज करण, विष्णुपद संक्रान्ति।

यह वृष संक्रान्ति वणिज करण में होने से मृग जाति की, महिष वाहन पर, काले वस्त्र पहने, बाण लिए, दही खाते हुए, हल्दी लेपन किए, आक का पुष्प लिए, प्रगल्भा वय में, जरा अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। वृष संक्रान्ति सिंह पर सवार, त्रिनेत्रा कपालहस्ता, श्वेतवर्णा, द्विहस्ता, एकमुखी व महाघोरा नाम की होती है। सूर्य अर्यमा। गौदान शुभ। ज्येष्ठा की संक्रान्ति 15 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव महंगा होता है। ज्येष्ठा जातकों को कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान। इस एक महीने में **मेष**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **वृष**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **मिथुन**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **कर्क**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **सिंह**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **कन्या**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **तुला**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **वृश्चिक**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **धनु**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **मकर**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **कुम्भ**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, हृदयपीड़ा। **मीन**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश।

मिथुन संक्रांति - 15 जून 2025 - 14:09 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 14:09 - 19:18 (सूर्यास्त)
ग्रीष्म ऋतु, रविवार, श्रवण नक्षत्र, कौलव करण, षडशीतिमुख संक्रान्ति।

यह मिथुन संक्रान्ति कौलव करण में होने से सर्प जाति की, वराह वाहन पर, नीला वस्त्र पहने, तलवार लिए, भिक्षान्न खाते हुए, लाल चन्दन का लेपन किए, बकुल अशोक का पुष्प लिए, गतालक वय में, रति अवस्था में खड़ी हुई प्रवेश कर रही है। खड़ी संक्रान्ति धर्म हेतु श्रेष्ठ, अन्नादि के भाव सस्ते व वृष्टिकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ है। इस सूर्य संक्रमण काल में खड़े नहीं रहना चाहिए। मिथुन संक्रान्ति वराह पर सवार, त्रिनेत्रा, एकमुखी, हरित वर्णा, अभयमुद्राधारी और कपालहस्ता, शुभ व विरुपाक्षी नाम की होती है। इसका सूर्य मित्र है। इसमें वस्त्र, अन्न, जल का दान शुभ होता है। श्रवण की संक्रान्ति 30 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। श्रवण जातकों को कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **वृष**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **मिथुन**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **कर्क**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **सिंह**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **कन्या**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **तुला**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **वृश्चिक**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **धनु**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **मकर**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **कुम्भ**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **मीन**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, हृदयपीड़ा।

कर्क संक्रांति - 17 जुलाई 2025, 05:40 से
संक्रान्ति पुण्यकाल - 05:45 (सूर्योदय) - 19:19 (सूर्यास्त)
वर्षा ऋतु आरम्भ, दक्षिणायन आरम्भ, बुधवार, रेवती नक्षत्र, विष्टि करण, याम्यायन संक्रान्ति।

यह कर्क संक्रान्ति संक्रान्ति विष्टि करण में होने से ब्राह्मण जाति की, घोड़ा वाहन पर, श्याम वस्त्र पहने, मुद्गर लिए, खिचड़ी खाते हुए, जौखार का लेपन किए, दूर्वा का पुष्प लिए, वृद्धा वय में, भुक्ता अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। कर्क संक्रान्ति अश्व पर सवार, गुलाबी रंग की, एकमुखी, द्विहस्ता, कपालहस्ता, कटका व महोदरी नाम की होती है। इसका सूर्य अरुण है। इसमें घृतधेनु का दान शुभ होता है। रेवती की संक्रान्ति 30 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। रेवती नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, हृदयपीड़ा। **वृष**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **मिथुन**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **कर्क**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **सिंह**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **कन्या**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **तुला**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **वृश्चिक**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **धनु**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **मकर**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **कुम्भ**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **मीन**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता।

❊ 2082 में सूर्य की 12 संक्रान्तियों का फल एवं स्वरूप ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

सिंह संक्रांति - 17 अगस्त 2025, 16:57 से,

संक्रान्ति पुण्यकाल - 10:33 - 16:57

वर्षा ऋतु, रविवार, रोहिणी नक्षत्र, गर करण, विष्णुपद संक्रान्ति।

यह सिंह संक्रान्ति गर करण में होने से पशु जाति की, हाथी वाहन पर, लाल वस्त्र पहने, धनुष लिए, दूध पीते हुए, गोरोचन का लेपन किए, बिल्व का पुष्प लिए, प्रौढ़ वय में, दुर्मुखी अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। सिंह संक्रान्ति शुनक पर सवार, एकमुखी, रक्तवर्णा, कपालहस्ता व चामरधारी व जिंहिका नाम की होती है। इसका सूर्य इन्द्र है। इसमें छाता व स्वर्ण शुभ होता है। रोहिणी की संक्रान्ति 45 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव सस्ता होता है। रोहिणी नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **वृष**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, ह्रदयपीड़ा। **मिथुन**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **कर्क**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **सिंह**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **कन्या**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **तुला**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **वृश्चिक**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **धनु**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **मकर**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **कुम्भ**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **मीन**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त।

कन्या संक्रान्ति 17 सितम्बर 2025, 17:21 से,

संक्रान्ति पुण्यकाल - 12:21 (दिनमध्य) - 18:26 (सूर्यास्त)

शरद ऋतु आरम्भ, बुधवार, पुष्य नक्षत्र, बालव करण, षडशीतिमुख संक्रान्ति।

यह कन्या संक्रान्ति बालव करण में होने से भूत जाति की, बाघ पर सवार, पीले वस्त्र पहने, गदा लिए, खीर खाते हुए, कुंकुम लेपन किए, जातीपुष्प लिए, कुमार वय में, भोग अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है।बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहे। कन्या संक्रान्ति गज पर सवार, त्रिनेत्रा, कपालधारी, कृष्ण मुख व रक्तिम वर्ण की देह वाली, व सिंहिका नाम की होती है। इसका सूर्य विवस्वत है। इसमें वस्त्र व गौदान शुभ होता है। पुष्य की संक्रान्ति 30 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। पुष्य नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **वृष**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **मिथुन**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, ह्रदयपीड़ा। **कर्क**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **सिंह**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **कन्या**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **तुला**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **वृश्चिक**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **धनु**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **मकर**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **कुम्भ**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **मीन**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि।

तुला संक्रान्ति 18 अक्टूबर 2025, 03:48 से,

संक्रान्ति पुण्यकाल - 06:30 (सूर्योदय) - 12:10 (दिनमध्य)

शरद ऋतु, शुक्रवार, पूफा नक्षत्र, तैतिल करण, विषुव संक्रांति।

यह तुला संक्रान्ति तैतिल करण में होने से पक्षी जाति की, गधे पर सवार, गुलाबी वस्त्र पहने, लाठी लिए, पक्वान्न खाते हुए, मिट्टी का लेपन किए, केतकी पुष्प लिए, युवा वय में, हँसती हुई अवस्था में सोती हुई प्रवेश कर रही है। सोती हुई संक्रान्ति धर्म हेतु अनिष्ट, अन्नादि के भाव महंगे व अवर्षणकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में सोते नहीं रहना चाहिए। तुला संक्रान्ति कुक्कुर पर सवार, षडानन, त्रिनेत्रा, नीलवर्णा, कपालधारी, व मन्दा नाम की होती है। इसका सूर्य त्वष्ठा है। इसमें धान्य व बीजों का दान शुभ होता है। पूफा की संक्रान्ति 30 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। पूफा नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **वृष**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **मिथुन**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **कर्क**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, ह्रदयपीड़ा। **सिंह**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **कन्या**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **तुला**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **वृश्चिक**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **धनु**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **मकर**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **कुम्भ**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **मीन**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि।

वृश्चिक संक्रांति - 17 नवम्बर 2025, 01:09 से,

संक्रान्ति पुण्यकाल - 06:51 (सूर्योदय) - 12:10 (दिनमध्य)

हेमन्त ऋतु आरम्भ, रविवार, हस्त नक्षत्र, तैतिल करण, विष्णुपद संक्रान्ति।

यह वृश्चिक संक्रान्ति तैतिल करण में होने से पक्षी जाति की, गधे पर सवार, गुलाबी वस्त्र पहने, लाठी लिए, पक्वान्न खाते हुए, मिट्टी का लेपन किए, केतकी पुष्प लिए, युवा वय में, हँसती हुई अवस्था में सोती हुई प्रवेश कर रही है। सोती हुई संक्रान्ति धर्म हेतु अनिष्ट, अन्नादि के भाव महंगे व अवर्षणकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में सोते नहीं रहना चाहिए। वृश्चिक संक्रान्ति अजा पर सवार, त्रिनेत्रा, कपालहस्ता, शक्तिधारी, नीलवर्णा, व आह्लादिनी नाम की होती है। इसका सूर्य विष्णु है। इसमें वस्त्रदान, दीपकदान शुभ होता है। हस्त की संक्रान्ति 30 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। हस्त नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **वृष**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **मिथुन**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **कर्क**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **सिंह**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, ह्रदयपीड़ा। **कन्या**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **तुला**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **वृश्चिक**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **धनु**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **मकर**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **कुम्भ**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **मीन**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता।

❊ 2082 में सूर्य की 12 संक्रान्तियों का फल एवं स्वरूप ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

धनु संक्रांति - 16 दिसम्बर 2025, 13:11 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 13:11 - 17:29 (सूर्यास्त)

हेमंत ऋतु, खरमास आरम्भ, मंगलवार, स्वाती नक्षत्र, तैतिल करण, षडशीतिमुख संक्रान्ति।

यह धनु संक्रान्ति तैतिल करण में होने से पक्षी जाति की, गधे पर सवार, गुलाबी वस्त्र पहने, लाठी लिए, पक्कान्न खाते हुए, मिट्टी का लेपन किए, केतकी पुष्प लिए, युवा वय में, हँसती हुई अवस्था में सोती हुई प्रवेश कर रही है। सोती हुई संक्रान्ति धर्म हेतु अनिष्ट, अन्नादि के भाव महंगे व अवर्षणकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में सोते नहीं रहना चाहिए। धनु संक्रान्ति महिष पर सवार, त्रिनेत्रा, कपालधारी, चित्रवर्णा व उज्वला नाम की होती है। इसका सूर्य अंशु है। इसमें वस्त्र व वाहनदान शुभ होता है। स्वाती की संक्रान्ति 15 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव महंगा होता है। स्वाती नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **वृष**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **मिथुन**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **कर्क**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **सिंह**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **कन्या**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, हृदयपीड़ा। **तुला**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **वृश्चिक**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **धनु**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **मकर**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **कुम्भ**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **मीन**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष।

मकर संक्रांति - 14 जनवरी 2026, 21:05 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 07:23 (सूर्योदय) - 17:48 (सूर्यास्त)

शिशिर ऋतु, उत्तरायण आरम्भ, खरमास समाप्ति, बुधवार, अनुराधा नक्षत्र, कौलव करण, सौम्यायन संक्रान्ति।

यह मकर संक्रान्ति कौलव करण में होने से सर्प जाति की, वराह वाहन पर, नीला वस्त्र पहने, तलवार लिए, भिक्षान्न खाते हुए, लाल चन्दन का लेपन किए, बकुल अशोक का पुष्प लिए, गतालक वय में, रति अवस्था में खड़ी हुई प्रवेश कर रही है। खड़ी संक्रान्ति धर्म हेतु श्रेष्ठ, अन्नादि के भाव सस्ते व वृष्टिकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ है। इस सूर्य संक्रमण काल में खड़े नहीं रहना चाहिए। मकर संक्रान्ति ऊँट पर सवार, त्रिनेत्रा, दंष्ट्रिकानना, रक्तवर्णा, कपालहस्ता व वज्रधारी, व राक्षसी नाम की होती है। अन्य विवरण से द्विमुख, त्रिनेत्रा, कृष्णवर्ण, चार बाँहों, सात हाथों और तीन पैरों वाली, ऊपर देखती हुई, सात आयुध धारण किये हुए- दाएं हाथों में मुसल, तलवार, बाण, व बाएं हाथों में गदा, खेटक, पात्र, व शरासन धारण करती है। इसका सूर्य भग है। इसमें अग्निदान शुभ होता है। अनुराधा की संक्रान्ति 30 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। अनुराधा नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **वृष**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **मिथुन**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **कर्क**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **सिंह**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **कन्या**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **तुला**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, हृदयपीड़ा। **वृश्चिक**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **धनु**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **मकर**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **कुम्भ**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **मीन**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य।

कुम्भ संकान्ति - 13 फरवरी 2026, 18:01 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 12:42 (दिनमध्य) - 18:13 (सूर्यास्त)

शिशिर ऋतु, शुक्रवार, पूषा नक्षत्र, कौलव करण, विष्णुपद संक्रान्ति।

यह कुम्भ संक्रान्ति कौलव करण में होने से सर्प जाति की, वराह वाहन पर, नीला वस्त्र पहने, तलवार लिए, भिक्षान्न खाते हुए, लाल चन्दन का लेपन किए, बकुल अशोक का पुष्प लिए, गतालक वय में, रति अवस्था में खड़ी हुई प्रवेश कर रही है। खड़ी संक्रान्ति धर्म हेतु श्रेष्ठ, अन्नादि के भाव सस्ते व वृष्टिकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ है। इस सूर्य संक्रमण काल में खड़े नहीं रहना चाहिए। कुम्भ संक्रान्ति तुरग पर सवार, कपालहस्ता, नीलवर्णा, व भंजिका नाम की होती है। इसका सूर्य पूषा है। इसमें गौ के लिए घास- जलदान शुभ। पूषा की संक्रान्ति 30 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। पूषा जातकों को 1 मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल,हल्दी,सरसों मिले जल से स्नान। इस एक महीने में **मेष**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **वृष**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **मिथुन**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **कर्क**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **सिंह**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **कन्या**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **तुला**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **वृश्चिक**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, हृदयपीड़ा। **धनु**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **मकर**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **कुम्भ**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **मीन**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें।

मीन संक्रांति - 15 मार्च 2026, 03:32 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 06:42 (सूर्योदय)- 12:37 (दिनमध्य)

वसंत ऋतु प्रारम्भ, खरमास आरम्भ, शनिवार, श्रवण नक्षत्र, बालव करण, षडशीतिमुख संक्रान्ति।

यह मीन संक्रान्ति बालव करण में होने से भूत जाति की, बाघ पर सवार, पीले वस्त्र पहने, गदा लिए, खीर खाते हुए, कुंकुम लेपन किए, जातीपुष्प लिए, कुमार वय में, भोग अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है।बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहे। मीन संक्रान्ति भालू पर सवार, त्रिनेत्रा, कपालहस्ता, अरुण वर्णा व वक्रा नाम की होती है। इसका सूर्य पर्जन्य है। इसमें भूमि व माला का दान शुभ होता है। श्रवण की संक्रान्ति 30 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। श्रवण नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **वृष**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **मिथुन**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **कर्क**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **सिंह**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **कन्या**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **तुला**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **वृश्चिक**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **धनु**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, हृदयपीड़ा। **मकर**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **कुम्भ**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **मीन**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी।

❊ संवत् 2082 में ग्रहों के गोचर, उदय-अस्त, वक्री-मार्गी आदि विचार ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

❊ सूर्य संचार ❊

सूर्य की इन द्वादश संक्रान्तियों का स्वरूप, फल, एवं पुण्यकाल आदि पृष्ठ 14-15 पर दिया गया है।

राशि प्रवेश	सूर्य राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
मेष	14 अप्रैल	05:37
वृषभ	15 मई	04:04
मिथुन	15 जून	14:09
कर्क	17 जुलाई	05:40
सिंह	17 अगस्त	16:57
कन्या	17 सितम्बर	17:21
तुला	18 अक्टूबर	03:48
वृश्चिक	17 नवम्बर	01:09
धनु	16 दिसम्बर	13:11
मकर	14 जनवरी 2026	21:05
कुम्भ	13 फरवरी 2026	18:01
मीन	15 मार्च 2026	03:32

❊ भौम संचार ❊

राशि प्रवेश	मंगल राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
कर्क	4 अप्रैल	10:38
सिंह	7 जून	17:20
कन्या	28 जुलाई	06:05
तुला	13 सितम्बर	07:14
वृश्चिक	27 अक्टूबर	17:56
धनु	8 दिसम्बर	21:00
मकर	17 जनवरी 2026	19:38
कुम्भ	25 फरवरी 2026	00:21

❊ संवत् 2082 में मंगल पूरे वर्ष मार्गी रहेगा

मंगल अस्त - 6 नवम्बर 2025 23:50 बजे पश्चिम दिशा

मंगल उदय- 01 जनवरी 2026 03:15 बजे पश्चिम दिशा में

❊ बुध संचार ❊

राशि प्रवेश	बुध राशि संचार	
	दिनांक	घं.मि.
कुम्भ	5 अप्रैल	20:17
मीन	7 अप्रैल	08:25
मेष	4 मई	10:58
वृषभ	20 मई	20:34
मिथुन	5 जून	14:49
कर्क	23 जून	11:17
सिंह	28 अगस्त	11:28
कन्या	14 सितम्बर	22:44
तुला	1 अक्टूबर	23:15
वृश्चिक	22 अक्टूबर	23:26
तुला	15 नवम्बर	12:40
वृश्चिक	7 दिसम्बर	07:33
धनु	28 दिसम्बर	19:04
मकर	15 जनवरी	00:37
कुम्भ	1 फरवरी	20:03
मीन	9 अप्रैल	16:23

उदय अस्त	बुध उदय अस्त	
	दिनांक	घं.मि.
उदय पूर्व	2 अप्रैल	13:27
अस्त पूर्व	16 मई	23:25
उदय पश्चि.	7 जून	22:07
अस्त पश्चि.	20 जुलाई	10:09
उदय पूर्व	9 अगस्त	00:42
अस्त पूर्व	3 सितम्बर	05:16
उदय पश्चि.	3 अक्टूबर	20:02
अस्त पश्चि.	13 नवम्बर	12:39
उदय पूर्व	25 नवम्बर	14:15
अस्त पूर्व	2 जनवरी	04:39
उदय पश्चि.	4 फरवरी	21:55
अस्त पश्चि.	1 मार्च	14:49
उदय पूर्व	14 मार्च	14:12

बुध मार्गी - 07 अप्रैल 2025 00:14 बजे

बुध वक्री - 11 जुलाई 2025 17:48 बजे

बुध मार्गी - 03 अगस्त 2025 01:47 बजे

बुध वक्री - 03 नवम्बर 2025 06:44 बजे

बुध मार्गी - 25 नवम्बर 2025 20:21 बजे

बुध वक्री - 26 फरवरी 2026 12:57 बजे

राशि प्रवेश	गुरु राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
मिथुन	11 मई	14:38
कर्क	2 अक्टूबर	20:04
मिथुन	22 दिसम्बर	14:42

गुरु वक्री - 13 नवम्बर 2025 06:37 बजे

गुरु मार्गी - 13 मार्च 2026 07:27 बजे

गुरु अस्त- 14 जून 2025 09:50 बजे, पश्चिम दिशा में

गुरु उदय- 8 जुलाई 2025 02:15 बजे, पूर्व दिशा में

❊ शुक्र संचार ❊

राशि प्रवेश	शुक्र राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
मीन	26 अप्रैल	13:13
मेष	31 मई	20:14
वृषभ	28 जून	23:01
मिथुन	25 जुलाई	07:57
कर्क	19 अगस्त	20:35
सिंह	13 सितम्बर	19:40
कन्या	08 अक्टूबर	08:56
तुला	01 नवम्बर	14:38
वृश्चिक	25 नवम्बर	14:19
धनु	19 दिसम्बर	09:28
मकर	12 जनवरी 2026	02:07
कुम्भ	04 फरवरी 2026	20:14
मीन	27 फरवरी 2026	21:57

❊ संवत् 2082 में शुक्र पूरे वर्ष मार्गी रहेगा

शुक्र अस्त - 15 दिसम्बर 2025, 07:10 बजे पूर्व दिशा में

शुक्र उदय - 01 फरवरी 2026, 05:50 बजे पश्चिम दिशा में

❊ शनि संचार ❊

राशि प्रवेश	शनि राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
मीन	24 अप्रैल 2025	03:58
कुम्भ	2 अक्टूबर 2025	10:44
मीन	19 जनवरी 2026	13:30

शनि वक्री - 10 जुलाई 2025 10:31 बजे

शनि मार्गी - 15 नवम्बर 2025 11:52 बजे

शनि उदय - 04 अप्रैल 2025 06:37 बजे पूर्व दिशा में

शनि अस्त - 11 मार्च 2026 19:54 बजे पश्चिम में

❊ राहु केतु संचार ❊

❊ संवत् 2082 में राहु कुम्भ राशि में व केतु सिंह राशि में 3 जुलाई 2025 को 13:35 बजे प्रवेश करेगा।

✲ संवत् 2082 में सूर्य आदि ग्रहों के नक्षत्र प्रवेश ✲

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

✲ सूर्य नक्षत्रप्रवेश ✲

रेवती	31 मार्च	16:13 बजे
अश्विनी	14 अप्रैल	05:38 बजे
भरणी	27 अप्रैल	21:55 बजे
कृत्तिका	11 मई	16:56 बजे
रोहिणी	25 मई	14:24 बजे
मृगशिरा	08 जून	13:51 बजे
आर्द्रा	22 जून	14:46 बजे
पुनर्वसु	06 जुलाई	16:29 बजे
पुष्य	20 जुलाई	17:58 बजे
आश्लेषा	3 अगस्त	18:19 बजे
मघा	17 अगस्त	16:58 बजे
पू.फा.	31 अगस्त	13:26 बजे
उ.फा.	14 सितंबर	07:19 बजे
हस्त	27 सितंबर	22:25 बजे
चित्रा	11 अक्टूबर	10:42 बजे
स्वाति	24 अक्टूबर	20:16 बजे
विशाखा	07 नवम्बर	03:19 बजे
अनुराधा	20 नवम्बर	08:12 बजे
ज्येष्ठा	03 दिसम्बर	11:21 बजे
मूल	16 दिसम्बर	13:12 बजे
पूर्वाषाढ़	29 दिसंबर	14:09 बजे
	2026	
उत्तराषाढ़	11 जनवरी	14:52 बजे
श्रवण	24 जनवरी	16:06 बजे
धनिष्ठा	06 फरवरी	18:22 बजे
शतभिषा	19 फरवरी	22:07 बजे
पू.भाद्र.	05 मार्च	03:47 बजे
उ.भाद्र.	18 मार्च	11:47 बजे

✲ बुध नक्षत्रप्रवेश ✲

उ.भाद्र.	14 अप्रैल	15:38 बजे
रेवती	26 अप्रैल	02:05 बजे
अश्विनी	04 मई	10:59 बजे
भरणी	11 मई	23:17 बजे
कृत्तिका	19 मई	02:31 बजे
रोहिणी	26 मई	02:02 बजे
मृगशिरा	02 जून	02:10 बजे
आर्द्रा	09 जून	07:23 बजे
पुनर्वसु	17 जून	00:12 बजे
पुष्य	25 जून	21:13 बजे
आश्लेषा	19 अगस्त	07:06 बजे
मघा	28 अगस्त	11:18 बजे
पूफा	05 सितंबर	11:45 बजे
उफा	13 सितंबर	01:55 बजे
हस्त	20 सितंबर	12:51 बजे
चित्रा	28 सितंबर	02:01 बजे
स्वाति	05 अक्टूबर	23:39 बजे
विशाखा	14 अक्टूबर	18:02 बजे
अनुराधा	26 अक्टूबर	18:54 बजे
विशाखा	11 नवम्बर	09:28 बजे
अनुराधा	10 दिसंबर	12:19 बजे
ज्येष्ठा	20 दिसंबर	10:50 बजे
मूल	28 दिसंबर	19:05 बजे
पूर्वाषाढ़	05 जनवरी	13:44 बजे
उ.षाढ़	13 जनवरी	03:19 बजे
श्रवण	20 जनवरी	17:47 बजे
धनिष्ठा	28 जनवरी	15:25 बजे
शतभिषा	06 फरवरी	08:09 बजे
पू.भाद्र.	18 फरवरी	01:32 बजे
शतभिषा	06 मार्च	09:07 बजे
पू.भाद्र.	02 अप्रैल	02:04 बजे
उ.भाद्र.	11 अप्रैल	21:07 बजे

✲ शुक्र नक्षत्रप्रवेश ✲

उ.भाद्र.	01 मई	15:27 बजे
रेवती	17 मई	23:40 बजे
अश्विनी	31 मई	20:15 बजे
भरणी	13 जून	16:16 बजे
कृत्तिका	25 जून	22:50 बजे
रोहिणी	07 जुलाई	21:00 बजे
मृगशिरा	19 जुलाई	13:25 बजे
आर्द्रा	31 जुलाई	01:34 बजे
पुनर्वसु	11 अगस्त	10:09 बजे
पुष्य	22 अगस्त	15:44 बजे
आश्लेषा	02 सितंबर	18:48 बजे
मघा	13 सितंबर	19:41 बजे
पू.फा.	24 सितंबर	18:38 बजे
उ.फा.	05 अक्टूबर	15:53 बजे
हस्त	16 अक्टूबर	11:37 बजे
चित्रा	27 अक्टूबर	05:57 बजे
स्वाति	06 नवंबर	23:03 बजे
विशाखा	17 नवंबर	15:01 बजे
अनुराधा	28 नवंबर	05:59 बजे
ज्येष्ठा	08 दिसंबर	20:06 बजे
मूल	19 दिसंबर	09:29 बजे
पूर्वाषाढ़	29 दिसंबर	22:20 बजे
	2026	
उ.षाढ़	09 जनवरी	10:57 बजे
श्रवण	19 जनवरी	23:50 बजे
धनिष्ठा	30 जनवरी	13:16 बजे
शतभिषा	10 फरवरी	03:27 बजे
पू.भाद्र.	20 फरवरी	18:32 बजे
उ.भाद्र.	03 मार्च	10:41 बजे
रेवती	14 मार्च	04:02 बजे

✲ मंगल नक्षत्रप्रवेश ✲

पुष्य	13 अप्रैल	13:38 बजे
आश्लेषा	13 मई	02:30 बजे
मघा	07 जून	07:21 बजे
पू.फा.	30 जून	15:54 बजे
उ.फा.	22 जुलाई	19:56 बजे
हस्त	13 अगस्त	06:25 बजे
चित्रा	03 सितंबर	02:12 बजे
स्वाति	23 सितंबर	09:18 बजे
विशाखा	13 अक्टूबर	04:43 बजे
अनुराधा	01 नवंबर	12:59 बजे
ज्येष्ठा	20 नवंबर	10:20 बजे
मूल	08 दिसंबर	21:00 बजे
पूर्वाषाढ़	26 दिसंबर	21:12 बजे
	2026	
उ.षाढ़	13 जनवरी	11:30 बजे
श्रवण	30 जनवरी	17:10 बजे
धनिष्ठा	16 फरवरी	15:18 बजे
शतभिषा	04 मार्च	08:40 बजे

✲ बृहस्पति नक्षत्रप्रवेश ✲

मृगशिरा	05 अप्रैल	23:00 बजे
आर्द्रा	09 जून	14:41 बजे
पुनर्वसु	08 अगस्त	08:15 बजे

✲ शनि नक्षत्रप्रवेश ✲

उ.भाद्र.	30 मई	02:16 बजे
पू. भाद्र.	20 अगस्त	12:17 बजे
उ.भाद्र.	18 फरवरी	20:15 बजे

✲ राहु केतु नक्षत्रप्रवेश ✲

राहु पू.भाद्र.	01 मई	15:40 बजे
केतु पू.फा.	04 सितंबर	11:25 बजे
राहु शतभिषा	08 जनवरी	07:17 बजे

※ संवत् 2082 के व्रत-पर्व ※

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

※ पक्षों का आरम्भ दिन ※

चैत्र शुक्ल	30 मार्च
वैशाख कृष्ण	13 अप्रैल
वैशाख शुक्ल	28 अप्रैल
ज्येष्ठ कृष्ण	13 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	28 मई
आषाढ़ कृष्ण	12 जून
आषाढ़ शुक्ल	26 जून
श्रावण कृष्ण	11 जुलाई
श्रावण शुक्ल	25 जुलाई
भाद्र. कृष्ण	10 अगस्त
भाद्र. शुक्ल	24 अगस्त
आश्विन कृष्ण	08 सितम्बर
आश्विन शुक्ल	22 सितम्बर
कार्त्तिक कृष्ण	08 अक्तूबर
कार्त्तिक शुक्ल	22 अक्तूबर
मार्ग. कृष्ण	06 नवम्बर
मार्ग. शुक्ल	21 नवम्बर
पौष कृष्ण	05 दिसंबर
2026	
पौष शुक्ल	20 दिसंबर
माघ कृष्ण	04 जनवरी
माघ शुक्ल	19 जनवरी
फाल्गु. कृष्ण	02 फरवरी
फाल्गु. शुक्ल	18 फरवरी
चैत्र कृष्ण	04 मार्च

※संकष्टी गणेश चतुर्थी※

वैशाख कृष्ण	16 अप्रैल
ज्येष्ठ कृष्ण	16 मई
आषाढ़ कृष्ण	14 जून
श्रावण कृष्ण	14 जुलाई
भाद्र. कृष्ण	12 अगस्त
आश्विन कृष्ण	10 सितम्ब
कार्त्तिक कृष्ण	10 अक्तूबर
मार्ग. कृष्ण	08 नवम्बर
पौष कृष्ण	07 दिसंबर
माघ कृष्ण	06 जनवरी
फाल्गु. कृष्ण	05 फरवरी
चैत्र कृष्ण	06 मार्च

※वैनायकी गणेश चतुर्थी※

चैत्र शुक्ल	01 अप्रैल
वैशाख शुक्ल	01 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	30 मई
आषाढ़ शुक्ल	28 जून
श्रावण शुक्ल	28 जुलाई
भाद्र. शुक्ल	27 अगस्त
आश्विन शुक्ल	25 सितम्ब
कार्त्तिक शुक्ल	25 अक्तूबर
मार्ग. शुक्ल	24 नवम्बर
पौष शुक्ल	23 दिसंबर
माघ शुक्ल	22 जनवरी
फाल्गु. शुक्ल	21 फरवरी

※ प्रदोष व्रत ※

चैत्र शुक्ल	10 अप्रैल
वैशाख कृष्ण	25 अप्रैल
वैशाख शुक्ल	09 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	24 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	08 जून
आषाढ़ कृष्ण	23 जून
आषाढ़ शुक्ल	08 जुलाई
श्रावण कृष्ण	22 जुलाई
श्रावण शुक्ल	06 अगस्त
भाद्र. कृष्ण	20 अगस्त
भाद्र. शुक्ल	05 सितम्बर
आश्विन कृष्ण	19 सितम्बर
आश्विन शुक्ल	04 अक्तूबर
कार्त्तिक कृष्ण	18 अक्तूबर
कार्त्तिक शुक्ल	03 नवम्बर
मार्ग. कृष्ण	17 नवम्बर
मार्ग. शुक्ल	02 दिसंबर
पौष कृष्ण	17 दिसंबर
पौष शुक्ल	01 जनवरी
माघ कृष्ण	16 जनवरी
माघ शुक्ल	30 जनवरी
फाल्गु. कृष्ण	14 फरवरी
फाल्गु. शुक्ल	01 मार्च
चैत्र कृष्ण	16 मार्च

※ एकादशी व्रत ※

चैत्र शुक्ल	08 अप्रैल	सर्वेषाम्
वैशाख कृष्ण	24 अप्रैल	सर्वेषाम्
वैशाख शुक्ल	08 मई	सर्वेषाम्
ज्येष्ठ कृष्ण	23 मई	सर्वेषाम्
ज्येष्ठ शुक्ल	06 जून	वैष्णव, स्मार्त
	07 जून	निम्बार्क
आषाढ़ कृष्ण	21 जून	स्मार्त
	22 जून	वैष्णव
आषाढ़ शुक्ल	06 जुलाई	सर्वेषाम्
श्रावण कृष्ण	21 जुलाई	सर्वेषाम्
श्रावण शुक्ल	05 अगस्त	सर्वेषाम्
भाद्र. कृष्ण	19 अगस्त	सर्वेषाम्
भाद्र. शुक्ल	03 सितम्बर	वैष्णव, स्मार्त
	04 सितम्बर	निम्बार्क
आश्विन कृष्ण	17 सितम्बर	वैष्णव, स्मार्त
	18 सितम्बर	निम्बार्क
आश्विन शुक्ल	03 अक्तूबर	सर्वेषाम्
कार्त्तिक कृष्ण	17 अक्तूबर	सर्वेषाम्
कार्त्तिक शुक्ल	01 नवम्बर	वैष्णव, स्मार्त
	02 नवम्बर	निम्बार्क
मार्ग. कृष्ण	15 नवम्बर	वैष्णव, स्मार्त
	16 दिसंबर	निम्बार्क
मार्ग. शुक्ल	01 दिसंबर	सर्वेषाम्
पौष कृष्ण	15 दिसंबर	सर्वेषाम्
पौष शुक्ल	30 दिसंबर	वैष्णव, स्मार्त
	31 दिसंबर	निम्बार्क
माघ कृष्ण	14 जनवरी	सर्वेषाम्
माघ शुक्ल	29 जनवरी	सर्वेषाम्
फाल्गु. कृष्ण	13 फरवरी	सर्वेषाम्
फाल्गु. शुक्ल	27 फरवरी	सर्वेषाम्
चैत्र कृष्ण	15 मार्च	सर्वेषाम्

※ चन्द्र पूर्णिमा व्रत ※

चैत्र	12 अप्रैल
वैशाख	12 मई
ज्येष्ठ	10 जून
आषाढ़	10 जुलाई
श्रावण	08 अगस्त
भाद्रपद	07 सितम्बर
आश्विन	06 अक्तूबर
कार्तिक	05 नवम्बर
मार्गशीर्ष	04 दिसंबर
पौष	02 जनवरी
माघ	01 फरवरी
फाल्गुन	02 मार्च

※सत्यनारायण पूर्णिमा※
(स्नान-दान)

चैत्र	12 अप्रैल
वैशाख	12 मई
ज्येष्ठ	11 जून
आषाढ़	10 जुलाई
श्रावण	09 अगस्त
भाद्रपद	07 सितम्बर
आश्विन	07 अक्तूबर
कार्तिक	05 नवम्बर
मार्गशीर्ष	04 दिसंबर
पौष	03 जनवरी
माघ	01 फरवरी
फाल्गुन	03 मार्च

❊ संवत् 2082 के व्रत-पर्व, पंचक, त्रिपुष्कर योग आदि ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

❊ मासिक शिवरात्रि ❊
(कृष्ण चतुर्दशी)

वैशाख	26 अप्रैल
ज्येष्ठ	25 मई
आषाढ़	23 जून
श्रावण	23 जुलाई
भाद्रपद	21 अगस्त
आश्विन	19 सितम्बर
कार्तिक	19 अक्तूबर
मार्गशीर्ष	18 नवम्बर
पौष	18 दिसंबर
माघ	16 जनवरी
फाल्गुन	15 फरवरी
चैत्र	17 मार्च

❊ मासिक कालाष्टमी ❊
(कृष्णपक्ष)

वैशाख	20 अप्रैल
ज्येष्ठ	20 मई
आषाढ़	18 जून
श्रावण	17 जुलाई
भाद्रपद	15 अगस्त
आश्विन	14 सितम्बर
कार्तिक	13 अक्टूबर
मार्गशीर्ष	12 नवम्बर
पौष	11 दिसम्बर
माघ	10 जनवरी
फाल्गुन	09 फरवरी
चैत्र	11 मार्च

❊ पितृकार्य अमावस्या ❊
(श्राद्ध)

वैशाख	27 अप्रैल
ज्येष्ठ	26 मई
आषाढ़	25 जून
श्रावण	24 जुलाई
भाद्रपद	22 अगस्त
आश्विन	21 सितम्बर
कार्तिक	21 अक्तूबर
मार्गशीर्ष	19 नवम्बर
पौष	19 दिसंबर
माघ	18 जनवरी
फाल्गुन	17 फरवरी
चैत्र	18 मार्च

❊ देवकार्य अमावस्या ❊
(स्नान दान)

वैशाख	27 अप्रैल
ज्येष्ठ	27 मई
आषाढ़	25 जून
श्रावण	24 जुलाई
भाद्रपद	23 अगस्त
आश्विन	21 सितम्बर
कार्तिक	21 अक्तूबर
मार्गशीर्ष	20 नवम्बर
पौष	19 दिसंबर
माघ	18 जनवरी
फाल्गुन	17 फरवरी
चैत्र	19 मार्च

❊ पितृपक्ष श्राद्ध तिथि ❊

8 सितम्बर	प्रतिपदा का श्राद्ध
9 सितम्बर	द्वितीया का श्राद्ध
10 सितम्बर	तृतीया का श्राद्ध
11 सितम्बर	चतुर्थी का श्राद्ध
12 सितम्बर	पंचमी, षष्ठी का श्राद्ध
23 सितम्बर	षष्ठी का श्राद्ध
13 सितम्बर	सप्तमी का श्राद्ध
14 सितम्बर	अष्टमी का श्राद्ध
15 सितम्बर	नवमी का श्राद्ध
16 सितम्बर	दशमी का श्राद्ध
17 सितम्बर	एकादशी का श्राद्ध द्वादशी को करें
18 सितम्बर	एकादशी, द्वादशी का श्राद्ध
19 सितम्बर	त्रयोदशी का श्राद्ध
20 सितम्बर	केवल शस्त्र, विष आदि से मृतकों का श्राद्ध
21 सितम्बर	अमावस्या, चतुर्दशी व पूर्णिमा का श्राद्ध

पितरों का श्राद्ध अवश्य करना चाहिए

❊ एकादशी श्राद्ध निषेध के वाक्य प्राप्त होते हैं विशेषकर वैष्णवों को एकादशी का श्राद्ध द्वादशी में करना चाहिये।

❊ सुहागिन माता का श्राद्ध किसी भी तिथि को हो नवमी में ही करना चाहिये।

❊ चतुर्दशी को जो शस्त्रादि अपमृत्यु को प्राप्त हुए हैं उनका ही श्राद्ध होता है, जिनकी तिथि चतुर्दशी हो उनका श्राद्ध अमावस्या अथवा त्रयोदशी को करें।

❊ पूर्णिमा का श्राद्ध अमावस्या को करें।

❊ पंचक ❊

वर्षारम्भ	से	30 मार्च	08:36 तक
22 अप्रैल	19:55 से	27 अप्रैल	02:39 तक
20 मई	03:45 से	24 मई	10:46 तक
16 जून	11:40 से	20 जून	19:00 तक
13 जुलाई	19:35 से	18 जुलाई	03:14 तक
10 अगस्त	03:24 से	14 अगस्त	11:21 तक
6 सितम्बर	11:04 से	10 सितम्बर	19:21 तक
3 अक्टूबर	18:40 से	8 अक्टूबर	03:19 तक
31 अक्टूबर	02:18 से	04 नवम्बर	11:21 तक
27 नवम्बर	10:05 से	01 दिसम्बर	19:32 तक
24 दिसम्बर	17:58 से	29 दिसम्बर	03:50 तक
21 जनवरी	01:50 से	25 जनवरी	12:06 तक
17 फरवरी	09:33 से	21 फरवरी	20:12 तक
16 मार्च	17:04 से		वर्षान्त तक

❊ त्रिपुष्कर योग ❊

15 अप्रैल	सूर्योदय से 08:46 तक
20 अप्रैल	07:40 से 14:13 तक
29 अप्रैल	सूर्योदय से 20:24 तक
17 जून	12:02 से 22:48 तक
22 जून	15:42 से 22:57 तक
01 जुलाई	11:26 से 12:15 तक
06 जुलाई	20:27 से 22:48 तक
12 जुलाई	सूर्योदय से 07:18 तक
20 अगस्त	02:17 से सूर्योदय तक
24 अगस्त	02:23 से सूर्योदय तक
30 अगस्त	सूर्योदय से 13:07 तक
13 सितंबर	10:49 से 14:27 तक
28 अक्टूबर	12:05 से 27:55 तक
02 नवंबर	02:24 से 13:34 तक
16 दिसंबर	15:13 से 24:04 तक
22 दिसंबर	03:10 से 07:16 तक
31 दिसंबर	01:10 से 07:20 तक
04 जनवरी	14:12 से 17:23 तक
24 फरवरी	07:02 से 07:35 तक
28 फरवरी	06:58 से 09:38 तक

❊ द्विपुष्कर योग ❊

07 जून	सूर्योदय से 10:18 तक
22 जुलाई	सूर्योदय से 05:57 तक
10 अगस्त	12:33 से 15:18 तक
23 सितंबर	12:52 से 26:24 तक
04 अक्टूबर	सूर्योदय से 06:41 तक
16 नवंबर	03:25 से 05:02 तक
06 दिसंबर	सूर्योदय से 11:39 तक
20 जनवरी	13:28 से 26:30 तक

❊ गुरुपुष्य योग ❊

24 जुलाई 17:34 से अगले सूर्योदय तक

21 अगस्त सूर्योदय से 24:59 तक

18 सितंबर सूर्योदय से 08:41 तक

❊ रविपुष्य योग ❊

7 अप्रैल 10:05 से अगले सूर्योदय तक

4 मई सूर्योदय से 17:43 तक

4 जनवरी 17:23 से अगले सूर्योदय तक

1 फरवरी सूर्योदय से 24:38 तक

1 मार्च सूर्योदय से 08:36 तक

❊ संवत् 2082 के ग्रहण ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

संवत् 2082, सन् 2025-26 ई0 में विश्व में चार ग्रहण लगेगें। जिसमें दो सूर्यग्रहण तथा दो चन्द्रग्रहण लगेगा। जिसमें दोनों चन्द्रग्रहण भारत में दिखाई देंगे। दोनों सूर्यग्रहण भारत में अदृश्य होने से महत्त्व के नहीं होंगे। जो ग्रहण अपने भूखण्ड पर दिखाई नहीं देता उसका धार्मिक महत्त्व (सूतक आदि) नहीं होता है। दिन का चन्द्रग्रहण तथा रात्रि का सूर्यग्रहण विफल होता है।-

सूर्यग्रहो यदा रात्रै दिवा चन्द्रग्रहो यदि। तत्र स्नानं न कुर्वीत दद्याद् दानं न च क्वचित्।।

1. खण्डग्रास सूर्यग्रहण - आश्विन कृष्ण अमावस्या रविवार 29 सितम्बर 2025 को लगने वाला खण्ड सूर्यग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा। यह ग्रहण न्यूजीलैंड, दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया तथा पश्चिमी अन्टार्कटिका वाले क्षेत्र में दिखाई देगा। भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ रात्रि में 11 बजे तथा मोक्ष रात्रि में 3:24 पर होगा। ग्रासमान 0.855 होगा। **यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा अतः इस ग्रहण का धार्मिक महत्त्व व सूतक नहीं होगा।**

2. कंकणाकृति सूर्यग्रहण - फाल्गुन कृष्ण अमावस्या मंगलवार 17 फरवरी 2026 को लगने वाला कंकणाकृति सूर्यग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा। यह ग्रहण दक्षिण अर्जेन्टीना, चिली, दक्षिण अफ्रीका और अन्टार्कटिका में दिखाई देगा। भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ दिन में 5:13 मिनट पर तथा मोक्ष 06:11 पर होगा। ग्रासमान 0.962 होगा। **यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा अतः इस ग्रहण का धार्मिक महत्त्व व सूतक नहीं होगा।**

3. खग्रास चन्द्रग्रहण 7 सितम्बर 2025

खग्रास चन्द्रग्रहण भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा रविवार 7 सितम्बर 2025 को लगने वाला खग्रास चन्द्रग्रहण भारत में दृश्य होगा। यह ग्रहण अंटार्कटिका, पश्चिमी प्रशान्त महासागर, ऑस्ट्रेलिया, एशिया हिन्द महासागर, यूरोप, पूर्वी अटलांटिक महासागर में दिखाई देगा। चन्द्रास्त के समय ग्रहण का प्रारम्भ रूस के कुछ भाग और प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा। चन्द्रोदय के समय ग्रहण का अन्त आइसलैंड के कुछ भाग, अफ्रीका के पश्चिमी भाग और अटलांटिक महासागर में दिखाई देगा।

यह खग्रास चन्द्रग्रहण भारत के सभी हिस्सों में दिखाई देगा। भारतीय मानक समयानुसार **ग्रहण प्रारम्भ** - रात्रि 21:57 बजे, **मध्य** - रात्रि 23:42 बजे, **ग्रहण मोक्ष** - रात्रि 25:27 बजे होगा।

ग्रहण का स्पर्श, मध्य, मोक्ष पूरे भारत में दिखाई देगा। ग्रासमान 1.368 होगा। **ग्रहण का सूतक पूरे भारत में दोपहर 12:57 बजे आरम्भ होगा।** सूतक काल के नियम आगे दिए हैं। यह चन्द्रग्रहण शतभिषा नक्षत्र कुम्भ राशि में लगने से इसमें कुम्भ, मीन, वृश्चिक, कर्क राशि व शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के जातकों को ग्रहणदुष्फल शान्ति हेतु आगे दी हुई ग्रहण शान्ति करानी आवश्यक है।

इस खग्रास चन्द्रग्रहण का राशिफल इस प्रकार है :-

मेष-	लाभप्रद	**वृष-**	सुखदायक	**मिथुन-**	मानहानि
कर्क-	शारीरिक कष्ट	**सिंह-**	स्त्री कष्ट	**कन्या-**	कार्यसिद्धि
तुला-	चिन्ता	**वृश्चिक-**	रोग भय	**धनु-**	धन प्राप्ति
मकर-	व्यय आधिक्य	**कुम्भ-**	मृत्युतुल्यकष्ट	**मीन-**	धनहानि

4. खग्रास चन्द्रग्रहण 3 मार्च 2026

फाल्गुन पूर्णिमा मंगलवार 3 मार्च 2026 को लगने वाला खग्रास चन्द्रग्रहण भारत में ग्रस्तोदित खण्ड चन्द्रग्रहण के रूप में दृश्य होगा। यह ग्रहण पूर्वी एशिया, ऑस्ट्रेलिया, प्रशान्त महासागर और अमेरिका में दिखाई देगा। चन्द्रोदय के समय ग्रहण अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, श्रीलंका और हिन्द महासागर में दिखाई देगा। भारतीय मानक समयानुसार

ग्रहण प्रारम्भ - रात्रि 15:20 बजे **ग्रहण मध्य** - रात्रि 17:04 बजे **ग्रहण मोक्ष** - रात्रि 18:47 बजे

चन्द्रोदय के समय भारत के सभी स्थानों में इस ग्रहण का मोक्ष दिखाई देगा। इस ग्रहण का प्रारम्भ भारत के किसी स्थान में दिखाई नहीं देगा क्योंकि चन्द्रोदय होने से पूर्व ग्रहण प्रारम्भ हो जाएगा। खग्रास चन्द्रग्रहण का मोक्ष भारत के सुदूर पूर्वी भागों में दिखाई देगा। देश के बाकी हिस्सों में खण्डचन्द्रग्रहण का मोक्ष ही दिखाई देगा। ग्रासमान 1.155 होगा। भारत में स्थान विशेष से चन्द्रोदय में भिन्नता के कारण ग्रहण के स्पर्श मोक्षादि काल में भिन्नता होगी। **ग्रहण का सूतक प्रातः सूर्योदय से प्रारम्भ हो जाएगा, सूतककाल के नियम आगे दिए हैं।**, सूतक काल के नियम आगे दिए हैं। यह चन्द्रग्रहण पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र सिंह राशि में लगने से इसमें, वृष, सिंह, कन्या, मकर राशि व पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के जातकों को ग्रहणदुष्फल शान्ति हेतु आगे दी हुई ग्रहण शान्ति करानी आवश्यक है।

इस खग्रास चन्द्रग्रहण का राशिफल इस प्रकार है :-

मेष-	चिन्ता	**वृष-**	रोग भय	**मिथुन-**	धन प्राप्ति
कर्क-	व्यय आधिक्य	**सिंह-**	शारीरिक कष्ट	**कन्या-**	धनहानि
तुला-	लाभप्रद	**वृश्चिक-**	सुखदायक	**धनु-**	मानहानि
मकर-	मृत्युतुल्यकष्ट	**कुम्भ-**	स्त्री कष्ट	**मीन-**	कार्यसिद्धि

❊ अन्य प्रमुख स्थानों का चन्द्रोदय तथा ग्रास मान अधोलिखित है। (स्टै.टा. घं.मि.)

स्थान	चन्द्रोदय	ग्रहणमोक्ष	ग्रासमान	स्थान	चन्द्रोदय	ग्रहण मोक्ष	ग्रासमान
जयपुर	18:30	18:47	00:17	दिल्ली	18:22	18:47	00:25
जोधपुर	18:41	18:47	00:06	मथुरा	18:22	18:47	00:25
उदयपुर	18:39	18:47	00:08	उज्जैन	18:31	18:47	00:16
बीकानेर	18:39	18:47	00:08	काशी	18:00	18:47	00:47
अजमेर	18:34	18:47	00:13	मुम्बई	18:46	18:47	00:01
अहमदाबाद	18:44	18:47	00:03	सूरत	18:44	18:47	00:03
बैंगलोर	18:28	18:47	00:19	कोलकत्ता	17:39	18:47	01:08
भोपाल	18:24	18:47	00:23	लखनऊ	18:08	18:47	00:39
हरिद्वार	18:17	18:47	00:30	राँची	17:52	18:47	00:55
पटना	18:51	18:47	00:56	नासिक	18:40	18:47	00:07

✻ संवत् 2082 के ग्रहण ✻

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

✻ ग्रहणकाल के सूतक आदि के नियम एवं ग्रहणदुष्फल शान्ति ✻

सूर्यग्रहण का सूतक ग्रहण आरम्भ से 12 घण्टे पहले और चन्द्रग्रहण का सूतक 9 घण्टे पहले लगता है। चन्द्रमा ग्रस्त अवस्था में उदित होता है तो सूर्योदय से ही सूतक होता है।

सूतक काल में वृद्ध, बालक और रोगी को छोड़कर किसीको भोजन नहीं करना चाहिए। पर ग्रहण आरम्भ होने के एक पहर पहले से बालक, वृद्ध व रोगी को भी भोजन न करना चाहिए। सूर्य ग्रस्त अवस्था में अस्त हो तो रात्रि में भोजन न करे अगले दिन ग्रहणमुक्त सूर्य का दर्शन कर ही भोजन करे।

सूतक काल में मन्दिर में दर्शन मङ्गल करदे व देवमूर्ति आदि का स्पर्श न करे। सूतक का पका अन्न ग्रहण करने योग्य नहीं रहता है। पर दूध, दही, घी, जल सूतक में दूषित नहीं होता है। जल, सब्जी आदि खाद्य पदार्थों में ग्रहण के पहले कुशा और तिल डाल देने से यह दूषित नहीं होते।

ग्रहण के समय में सोने, व मल-मूत्र त्याग का भी निषेध है। सोने से रोग, मूत्रत्याग से दरिद्रता व मलत्याग से अधम योनि, मैथुन से शूकर योनि, उबटन करने से चर्मरोग और भोजन करने से अधोगति मिलती है। ग्रहण काल में केवल जप, तप करना चाहिए। ग्रहण के जप-तप, स्नान-दान का चन्द्रग्रहण में लाख गुणा और सूर्यग्रहण में 10 लाख गुणा फल होता है। यदि गंगा स्नान प्राप्त हो जाए तो चन्द्रग्रहण में करोड़ गुणा और सूर्यग्रहण में दस करोड़ गुणा पुण्य कहा है।

ग्रहण के आरम्भ से पूर्व स्नान करना चाहिए, ग्रहणकाल में जप, पूजापाठ, हवन, करना चाहिए और ग्रहण समाप्त होने पर वस्त्रों सहित स्नान करना चाहिए व अन्न, तिल, वस्त्र, स्वर्ण, गौ आदि का दान करना चाहिए। ग्रहण समाप्ति के उपरान्त मोक्षस्नान करके ही सूतक समाप्त होता है।

सूर्य व चन्द्रग्रहण में श्राद्ध अवश्य करना चाहिए, इसका अमोघ फल सब शास्त्रों में कहा है। ग्रहण में श्राद्ध सूखे अन्न, घी व दक्षिणा से संकल्पपूर्वक करना चाहिए। आश्विन कृष्णपक्ष पृष्ठ पर आमान्न श्राद्ध की संक्षिप्त विधि दी है जो ग्रहणश्राद्ध में उपयोगी है।

ग्रहणदुष्फल शान्ति- जिसकी जन्मराशि या जन्मनक्षत्र पर ग्रहण हो, या 4,8,12 वीं राशि पर ग्रहण हो उसको ग्रहण बहुत अनिष्टकारक होता है, उसे निम्न प्रकार से शान्ति व दान करना चाहिए। चन्द्रग्रहण में चाँदी का चन्द्रबिंब व सोने का सर्पबिम्ब बनवाए व सूर्यग्रहण में सोने के सूर्य और सर्पबिम्ब बनवाकर घी से पूर्ण किये ताम्बे या काँसे के पात्र में स्थापित कर तिल, वस्त्र, दक्षिणा आदि लेकर संकल्प करे '**ममजन्मराशि-जन्मनक्षत्रस्थित अमुकग्रहणसूचित सर्वानिष्टप्रशान्तिपूर्वकं एकादशस्थानस्थित-ग्रहणसूचित-शुभफलावाप्तये बिम्बदानं करिष्ये।**' फिर सूर्य, चन्द्र और राहु केतु को प्रणाम कर पढ़े,

तमोमय महाभीम सोमसूर्यविमर्दन। हेमता प्रदानेन मम शांतिप्रदो भव ।।
विधुंतुंद नमस्तुभ्यं सिंहिकानन्दनाच्युत। दानेमानेन नागस्य रक्ष मां वेधजायान्।।

फिर इस दानवाक्य से ब्राह्मण को उपर्युक्त दान प्रदान करे, '**इदं सौवर्णं राहुबिम्बंनागं सौवर्ण रविबिम्बं/ राजतं चन्द्रबिम्बं वा घृतपूर्णताम्र/कांस्यपात्रनि हितं यथाशक्ति तिलवस्त्रदक्षिणासहितं ग्रहणसूचितारिष्टविनाशार्थ शुभफलप्रात्यर्थं च तुभ्यमहं सम्प्रददे।**'

✻ ग्रहण में जन्म हो जाए तो उसका फल और उसकी शांति ✻

चन्द्रमा और सूर्य के ग्रहण में जो बालक का जन्म हो तो उसे मृत्युतुल्य कष्ट होता है, इसमें संशय नहीं और रोगपीड़ा, दरिद्रता, शोक, कलह भी होते हैं। यहाँ संकल्प में 'सूर्यग्रहणकालिकप्रसूतिसूचित..' ऐसा उच्चार करना। ग्रहण के समय जो नक्षत्र हो उसकी अथवा नक्षत्र के देवता की सोने की प्रतिमा बनाए, सूर्य के ग्रहण में सूर्य की सोने की प्रतिमा, और चन्द्रग्रहण में चन्द्रमा का चाँदी का बिंब बनवाए। दोनों में सीसे की राहु की सर्प की आकृति की प्रतिमा बनवाए। गोबर से लिपी हुई पवित्र भूमि पर सफेद वस्त्र के उपर तीनों देवताओं का पूजन करवाए, यहाँ कलशस्थापन आदि नहीं करना।

उस वस्त्र के उपर मध्यभाग सूर्यग्रहण में '**आकृष्णेन..**' इस मंत्र से सूर्य की और दक्षिण दिशा में '**कया न.**' इस मंत्र से राहु की और उत्तरदिशा में नक्षत्र देवता का आवाहन करके पूजा करे, चन्द्रमा के ग्रहण में '**इमं देवा..**' इस मंत्र सें मध्यभाग में चन्द्रमा की पूजा करके दोनों पार्श्व भागों में राहु और नक्षत्र के देवता का पहले की तरह आवाहन करके पूजा करे। सूर्य के ग्रहण में अन्वाधान 'सूर्य अर्कसमिदाज्यचरुतिलैः प्रत्येकं अष्टेत्तरशतसंख्यया राहुं दुर्वाज्यचरुतिलैस्तावत्संख्यैः नक्षत्रदेवताजलवृक्षसमिदाज्यचरुतिलैः तावत्संख्ययाशेषेणेत्यादि' ऐसा संकल्प करना। चन्द्रग्रहण हो तो 'चंद्र पलाशसमिदाज्यचरुतिलैः...' ऐसा संकल्प करना, शेष पहले की तरह करना।

अर्थात आज्य चरु और तिल से सूर्यग्रहण में सूर्य, राहु, नक्षत्रदेवता को और चन्द्रग्रहण में चन्द्र, राहु, नक्षत्रदेवता को 108-108 आहुति देनी। सूर्य के लिए अर्क, चन्द्रमा के लिए पलाश और राहु के लिए दूब, नक्षत्रेश के लिए अश्वत्थ की समिधा लें। सूर्य-प्रीत्यर्थ रक्ताक्षत, रक्तचन्दन, रक्तमात्य तथा रक्तवस्त्र समर्पित करें। चन्द्र प्रीति के लिए श्वेतचन्दन श्वेतपुष्प, श्वेतमाख्य, श्वेतवस्त्र प्रदान करें। राहु प्रीत्यर्थ सभी कृष्ण वर्ण की वस्तुएं और नक्षत्रेश के लिए श्वेतवस्तुएं दें।

अंत में ग्रहों के कलश के पानी से अथवा पंचगव्य, पंचत्वचा, पंचपल्लव आदि से युक्त जल से अथवा केवल साधारण जल से ही जातक तथा माता पिता का अभिषेक करे। पुनः आचार्य के अभिवादन के उपरांत दक्षिणाप्रदानपूर्वक ब्राह्मणों का भोजन कराएं। सूतक के समय बालक का जन्म हो तो ये शांति नहीं करनी किंतु वह दुष्ट काल होने से उसमें भी रुद्राभिषेक कराए ऐसा शास्त्रों में कहा है।

✻ सूर्य- आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।

✻ चन्द्र- इमं देवा ऽअसपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते
जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विश
एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँराजा ।।

✻ राहु- ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठ्या वृता।।

❊ सूर्यसिद्धान्तीय निर्विवाद दीपावली ही पूरे देश में हुई मान्य-31 अक्टू. 2024 ❊

राजस्थान के एकमात्र सूर्यसिद्धान्तीय श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पंचांग व देशभर के सूर्यसिद्धान्तीय पंचांगों द्वारा एकमत से संवत् 2081 में 31 अक्टूबर 2024 को दीपावली पर्व का निर्विवाद निर्णय दिया गया था, जिसके अनुसार पूरे देश में दीपावली का पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया।

जयपुर में अखिल भारतीय विद्वत्परिषद् द्वारा बुलाई गई विद्वत् धर्मसभा में सौ से अधिक शीर्षस्थ धर्मशास्त्रियों द्वारा दीपावली पर्व के लिए 31 अक्टूबर का धर्मशास्त्रीय निर्णय अनुशंसित हुआ व सूर्यसिद्धान्त को व्रत पर्वों के निर्धारण में श्रेष्ठतम माना गया।

आश्विन शुक्ल त्रयोदशी संवत् 2081, तदनुसार 15 अक्टूबर 2024 को **अखिल भारतीय विद्वत् परिषद्** जयपुर के तत्त्वावधान में केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर में आयोजित विद्वत् धर्मसभा में राजस्थान के वरिष्ठतम वयोवृद्ध ज्योतिषाचार्य **प्रो. रामपाल जी शास्त्री** की अध्यक्षता एवं हवामहल **विधायक आचार्य श्री बालमुकुन्दाचार्य जी महाराज**, हाथोज धाम जयपुर, **आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीपद्मनाभशरणदेवाचार्य जी महाराज** जयपुर, **महन्त श्री मनोहरदास जी महाराज** पलसाना के सान्निध्य में

प्रो. विनोद शास्त्री ज्योतिषाचार्य एवं पूर्व कुलपति, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य रा संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर
प्रो. अर्कनाथ चौधरी पूर्व कुलपति, सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, वेरावल, गुजरात
प्रो. सुदेश शर्मा ज्योतिषाचार्य एवं निदेशक, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर
प्रो. सतीशचन्द्र शास्त्री वरिष्ठ ज्योतिषाचार्य एवं शास्त्र चूड़ामणि
प्रो. भगवती सुदेश शर्मा पूर्व निदेशक एवं पूर्व धर्मशास्त्र विभागाध्यक्ष, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर
प्रो. राकेशमोहन शर्मा राजज्योतिषी जयपुर
प्रो. वाई.एस. रमेश सहनिदेशक, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर
प्रो. कौशलदत्त शर्मा ज्योतिषाचार्य एवं पूर्वप्राचार्य, नीमकाथाना
प्रो. ईश्वर भट्ट ज्योतिष विभागाध्यक्ष केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर
प्रो. कृष्णा शर्मा धर्मशास्त्र विभागाध्यक्ष केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर
डॉ. विजेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर
प्रो. गंगासहाय शर्मा धर्मशास्त्राचार्य, पूर्वप्राचार्य, संस्कृत शिक्षा
डॉ. विश्वम्भर दयाल जोशी पूर्व संयुक्त निदेशक संस्कृत शिक्षा राजस्थान
प्रो. मण्डन शर्मा पूर्व निदेशक संस्कृत शिक्षा
प्रो. घनश्याम वेदाचार्य पूर्व विभागाध्यक्ष राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय जयपुर
पण्डित महेश कुमार शर्मा प्रधान पुजारी बिड़ला मंदिर जयपुर
प्रो. लक्ष्मीनारायण भार्गव पूर्व प्राचार्य राजकीय आचार्य संस्कृत महाविद्यालय अजमेर
पण्डित रामरतन पुरोहित ज्योतिषाचार्य चूरू
पण्डित बालकृष्ण शास्त्री ज्योतिषाचार्य सरदारशहर

आदि सौ से अधिक विद्वानों की उपस्थिति में समस्त विद्वानों, ज्योतिषाचार्यों, धर्माचार्यों, पंचांगकर्ताओं द्वारा सम्वत् 2081 (वर्ष 2024) में दीपावली पर्व को लेकर धर्मशास्त्रों पर व्यापक विचार-विमर्श एवं समस्त पंचांग सम्मत तिथियों के सूक्ष्म अध्ययनोपरान्त सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि-

''सम्पूर्ण भारतवर्ष में दीपावली का महापर्व इस वर्ष 31 अक्टूबर 2024, गुरुवार को मनाना शास्त्रसम्मत है एवं इसके अतिरिक्त किसी भी अन्य दिन दीपावली मनाना शास्त्रानुसार नहीं है।''

जयपुर में अखिल भारतीय विद्वत्परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष व राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य **प्रो. मोहनलाल शर्मा** के कुशल निर्देशन में प्रदेश संयोजक **मुदित मित्तल** के सहयोग से विशाल धर्मसभा का आयोजन अपराकाशी अपरावृन्दावन धर्मनगरी जयपुर में किया गया था।

❊ दृश्य गणित के पंचांगों की अस्पष्टता से फैले भ्रम के कारण देश भर के विद्वानों द्वारा 31 अक्टूबर 2024 को सूर्यसिद्धान्त अनुसार निर्विवाद व स्पष्ट दीपावली मनाने का ही शास्त्रसम्मत निर्णय लिया गया।

❊ चारों मान्य शंकराचार्य पीठों में 31 अक्टूबर को दीपावली मनाई गई :-

1. पूर्वाम्नाय जगद्गुरु शंकराचार्य पीठ, पुरी
2. पश्चिमाम्नाय जगद्गुरु शंकराचार्य पीठ
3. उत्तराम्नाय जगद्गुरु शंकराचार्य पीठ, उत्तराखंड
4. दक्षिणाम्नाय जगद्गुरु शंकराचार्य पीठ, शृंगेरी

❊ इसके अतिरिक्त देश भर के विभिन्न सम्प्रदायों की प्रमुख आचार्य पीठों व मंदिरों

रामानन्दी श्रीश्रीमठ पंचगंगा घाट काशी	रामानन्दी श्री तुलसीपीठ चित्रकूट
रामानन्दी श्री मलूक पीठ वृन्दावन	रामानन्दी श्री खोजीपीठ त्रिवेणी धाम जयपुर
रामानन्दी श्री अग्रपीठ रैवासा धाम सीकर	श्रीमन्मध्वाचार्य मठ उडुपी कर्नाटक
पुष्टिमार्गी श्रीनाथजी नाथद्वारा राजसमंद	रामानुजाचार्य पीठ श्रीरंगम तमिलनाडु

रामानुजाचार्य पीठ मेलूकोटे आदि में 31 अक्टूबर 2024 को दीपावली मनाई गई।

❊ देश, प्रदेश व जयपुर के प्रमुखतम मंदिरों में 31 अक्टूबर 2024 को दीपावली मनाने का निर्णय हुआ:-

श्रीरामजन्मभूमि अयोध्या	श्रीकृष्णजन्मभूमि मथुरा	श्रीबाँकेबिहारी जी वृन्दावन
श्री राधारमण जी वृन्दावन	श्री राधागोविन्ददेवजी जयपुर	श्री काशी विश्वनाथ काशी
श्री महाकाल उज्जैन	श्री सोमनाथ गुजरात	श्री द्वारकाधीश गुजरात
श्री तिरुपति बालाजी	श्री जगन्नाथ पुरी	श्री विन्ध्यवासिनी विन्ध्याचल
श्री वैष्णोदेवी जम्मू	श्री सालासर बालाजी	श्री खाटूश्याम जी रींगस
श्री जीण माता सीकर	श्री डिग्गी कल्याण जी	श्री ताड़केश्वर महादेव जयपुर
श्री झाड़खण्ड महादेव जयपुर	श्री मेहन्दीपुर बालाजी जयपुर	श्री खोले के हनुमान जी जयपुर
श्री काले हनुमान जी जयपुर	श्री लक्ष्मीजगदीश जी गोनेर	श्री गोपीनाथ जी जयपुर

श्री राधादामोदर जी जयपुर आदि जयपुर के 150 से अधिक प्राचीन मंदिरों ने 31 अक्टूबर को ही दीपावली मनाने का निर्णय लिया था।

❊ सूर्यसिद्धान्तीय निर्विवाद दीपावली ही पूरे देश में हुई मान्य-31 अक्टू. 2024 ❊

❊ देशभर के प्रख्यात विद्वानों ने 31 अक्टूबर 2024 को दीपावली मनाने का शास्त्रोचित निर्णय दिया

देश की अखिल भारतीय विद्वत्परिषद् के साथ साथ काशी विद्वत्परिषद्, काशी के विद्वानों ने भी 31 अक्टूबर 2024 को ही दीपावली मनाने का सर्वसम्मत निर्णय देकर देश में भ्रम की स्थिति को समाप्त किया।

डॉ. कामेश्वर उपाध्याय राष्ट्रीय महासचिव अखिल भारतीय विद्वत्परिषद् वाराणसी
आचार्य श्री विनय झा सूर्यसिद्धान्त मर्मज्ञ त्रिस्कन्धज्योतिर्वेत्ता, संरक्षक अ.भा. विद्वत्परिषद् वाराणसी
डॉ. राजेश्वर शास्त्री मुसलगांवकर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय विद्वत्परिषद् उज्जैन
प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्रीकाशीविद्वत्परिषद्, पूर्व ज्योतिष विभागाध्यक्ष बीएचयू वाराणसी
प्रो. वशिष्ठ पाण्डेय अध्यक्ष, श्रीकाशीविद्वत्परिषद्
प्रो. सर्वनारायण झा वरिष्ठ ज्योतिषाचार्य एवं निदेशक केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय लखनऊ परिसर
प्रो. नागेन्द्र पाण्डेय पूर्व ज्योतिष विभागाध्यक्ष बीएचयू वाराणसी
प्रो. चन्द्रमा पाण्डेय संकायप्रमुख, पूर्व ज्योतिष विभागाध्यक्ष बीएचयू वाराणसी
प्रो. चन्द्रमौलि उपाध्याय उपाध्यक्ष श्रीकाशीविद्वत्परिषद्, पूर्व ज्योतिष विभागाध्यक्ष बीएचयू वाराणसी
प्रो. विनोद कुमार शर्मा ज्योतिषाचार्य, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर
प्रो. कैलाश चन्द्र शर्मा ज्योतिष विभागाध्यक्ष, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर
पं. दयाकृष्ण शास्त्री याज्ञिक ज्योतिषाचार्य एवं यज्ञमार्तण्ड, बस्सी जयपुर
प्रो. रामनारायण द्विवेदी महामंत्री श्रीकाशीविद्वत्परिषद्
प्रो. गिरिजा शंकर शास्त्री पूर्व ज्योतिष विभागाध्यक्ष बीएचयू वाराणसी
प्रो. हंसधर झा कर्नाटक निदेशक केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय शृंगेरी परिसर
प्रो. शत्रुघ्न त्रिपाठी ज्योतिष विभागाध्यक्ष बीएचयू वाराणसी
प्रो. विनय कुमार पाण्डेय पूर्व ज्योतिष विभागाध्यक्ष बीएचयू वाराणसी
डॉ. अजय कुमार पाण्डेय विश्व पंचांगकार बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
डॉ. रामाधार शर्मा ज्योतिषाचार्य पटना
पं आनन्दशंकर व्यास ज्योतिषाचार्य महाकाल ज्योतिर्लिंग उज्जैन
प्रो. शिवाकान्त झा दरभंगा पूर्व ज्योतिष विभागाध्यक्ष कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय बिहार
प्रो. मदनमोहन पाठक लखनऊ ज्योतिष विभागाध्यक्ष, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय लखनऊ परिसर
प्रो. श्रीपाद भट्ट तिरुपति ज्योतिषाचार्य, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय तिरुपति
प्रो. प्रभात कुमार महापात्र त्रिपुरा निदेशक, ज्योतिष विभागाध्यक्ष, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय त्रिपुरा
प्रो. कृष्णकेश्वर झा तिरुपति ज्योतिष विभागाध्यक्ष, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय तिरुपति
डॉ. नीरज तिवारी आचार्य केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय लखनऊ
प्रो. नरेश शर्मा ज्योतिष विभागाध्यक्ष महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय कैथल हरियाणा
प्रो. प्रेम कुमार शर्मा ज्योतिषाचार्य लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली
पं. अभिषेक जोशी ज्योतिषाचार्य एवं पंचांगकर्ता जोधपुर
पं अमित शर्मा संपादक श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पंचांग जयपुर
डॉ. उपेन्द्र भार्गव ज्योतिषाचार्य, महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय उज्जैन
डॉ. योगेन्द्र कुमार शर्मा आचार्य लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली
डॉ. अखिलेश मिश्र ज्योतिषाचार्य मद्रास संस्कृत कॉलेज तमिलनाडु

❊ जयपुर में दो पंचांगों द्वारा 31 अक्टूबर 2024 को दीपावली का निर्णय दिया गया था, जिसके आधार पर समूचे जयपुर में एकमत से 31 अक्टूबर को दीपावली पर्व मनाया गया। यह दो पंचांग हैं :-

जयविनोदी जयपुर पंचांग **श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पंचांग**

❊ इसके अतिरिक्त **देश भर के प्रामाणिक, प्राचीन, सूर्यसिद्धान्तीय एवं दृक्सिद्धान्तीय उभयपक्षीय पंचांगों द्वारा 31 अक्टूबर 2024 को दीपावली का निर्णय दिया गया** था, जिसका सम्पूर्ण भारत में पालन किया गया। इन प्रमुख पंचांगों में शामिल थे :-

हृषिकेश पंचांग काशी	गणेश आपा पंचांग काशी	विश्व पंचांग काशी
बापूदेव शास्त्री पंचांग वाराणसी	देशपाण्डे पंचांग महाराष्ट्र	जन्मभूमि पंचांग मुम्बई
हरिलाल पंचांग राजकोट	ग्वालियर पंचांग	श्रीकृष्ण पंचांग अहमदाबाद
भुवनेश्वरी पंचांग राजकोट	जोशीजी का पंचांग जोधपुर	अर्बुद श्री पंचांग सिरोही राजस्थान
श्रीनाथद्वारा पंचांग राजस्थान	श्रीसरस्वती पंचांग	अधिरायण विजय पंचांग उज्जैन
श्रीवल्लभ मनीराम पंचांग	ओसवाल पंचांग दिल्ली	वाणी भूषण पंचांग गढ़वाल
सिमंधर स्वामी पंचांग महेसाणा	रुइकर पंचांग कराड़	लाटकर पंचांग

शृंगेरी शंकराचार्य पीठ पंचांग कर्नाटक	श्री दर्शन पंचांग भीनमाल राजस्थान
डॉ.शेषभट्टर सिद्धान्ती पंचांग हैदराबाद	गुजरात समाचार पंचांग अहमदाबाद
जन्मभूमि गायत्री पंचांग अहमदाबाद	आदित्य प्रत्यक्ष पंचांग अहमदाबाद

आदि महत्त्वपूर्ण पंचांगों ने सूक्ष्म धर्मशास्त्रीय विचारोपरांत 31 अक्टूबर को दीपावली का निर्णय दिया था।

❊ देशभर के प्रमुख पंचांगों, धर्मसभा एवं देशभर के शीर्ष ज्योतिषाचार्यों एवं धर्मशास्त्राचार्यों द्वारा 31 अक्टूबर को दीपावली के सर्वसम्मत निर्णय के उपरांत हरियाणा एवं उत्तराखण्ड की राज्य सरकारों ने अपना दीपावली का राजकीय अवकाश 1 नवंबर से बदलकर 31 अक्टूबर किया। इसके साथ ही **केन्द्र सरकार समेत देश के 25 से अधिक राज्यों में 31 अक्टूबर को ही दीपावली का राजकीय अवकाश रखा गया।**

इस दीपावली पर्व पर यह सिद्ध हुआ कि केवल सूर्यसिद्धान्तीय पंचांग ही व्रत पर्वों के निर्धारण हेतु ग्राह्य हैं व इसी कारण ऋषियों शास्त्रों व पूर्वाचार्यों द्वारा सूर्यसिद्धान्त को वेद के समान प्रमाण मानकर इसी का ग्रहण व्रत पर्वों के निर्धारण में किया गया। दृग्गणित के पंचांगों से व्रत पर्वों की एकता पर भारी संकट के मेघ मंडरा रहे हैं, प्रत्येक पर्व की गरिमा भंग हो रही है व सनातन धर्म व ऋषि प्रज्ञा का उपहास हो रहा है।

संवत् 2081 का दीपावली विमर्श इस वर्ष भी मान्य है अतः इस वर्ष सम्पूर्ण भारत में 20 अक्टूबर 2025 को है। अधिकांश दृश्य पंचांगों ने भी गत वर्ष के विमर्श के आधार पर संशोधन करते हुए 20 अक्टूबर 2025 को ही दीपावली का निर्णय दिया है। पूरे देश में इसी दिन 20 अक्टूबर को दीपावली मनाई जाएगी।

✻ मंगली कुण्डली विचार ✻

मंगल को लेकर ज्योतिषीगण न भ्रम में रहें, न भ्रमयुक्त निर्णय दें। भ्रमयुक्त निर्णय दाम्पत्य का नाश कर सकता है। अतः सावधानीपूर्वक मंगली कुण्डली का निर्णय दें।

✻ कुण्डली में 1, 4, 7, 8, 12वें भाव में मंगल बैठा हो तो कुण्डली मंगली होती है। इसी तरह से चन्द्रमा के साथ मंगल बैठा हो या चन्द्रमा से 4, 7, 8, 12वें भाव में बैठा हो तो कुण्डली चन्द्र मंगली होती है। प्रमाणवचन-

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुविनाशाय भत्ता पत्नी विनाशकृत्।।

✻ यदि लड़की मंगली कुण्डली वाली है तो लड़का भी मंगली कुण्डली वाला होना चाहिए।

✻ मंगल दोष का परिहार शनि करता है। यदि शनि कुण्डली में लग्न या चन्द्रमा से1, 4, 7, 8, 12वें भाव में बैठा हो तो वह मंगल दोष का शमन (नाश) करता है-

जामित्रे च यदा सौरिः लग्ने वा हिबुकेऽथवा। अष्टमे द्वादशे वाऽपि भौमदोषविनाशकृत्।।

✻ यह व्यवस्था पूरे देश में मान्य है। सॉफ्टवेयर द्वारा कुण्डली मेलापक में चन्द्रमंगली दोष पर विचार नहीं किया गया है। यह घातक प्रवृत्ति है।

✻ मंगल दोष का परिहार अपनी ही कुण्डली में नहीं देखा जाता है।

✻ यदि कन्या की कुण्डली मंगली है तो परिहार वर की कुण्डली में देखा जाता है ।

✻ यदि वर की कुण्डली मंगली है तो परिहार कन्या की कुण्डली में देखा जाता है।

✻ 1, 4, 7 केन्द्रों में बैठा मेष, वृश्चिक, मकर का मंगल राजयोगकारी होने पर भी मंगली-कुण्डली का दोष देता है। यह दाम्पत्य के लिए बाधक होता है।

परिहार (उपाय)

✻ यदि लड़की की कुण्डली मंगली है और लड़के की कुण्डली मंगली नहीं है और कोई ज्योतिषीय परिहार न निकले तो धर्मशास्त्रीय परिहार करना चाहिए। ऐसा करने से विच्छेद या वैधव्यादि दोष नहीं उत्पन्न होता है।

✻ कुम्भ विवाह, विष्णु प्रतिमा विवाह और अश्वत्थविवाह ये तीन धर्मशास्त्रीय परिहार कन्या के लिए बतलाये गये हैं। ये उपाय आज भी व्यवहार में हैं।

✻ अर्कविवाह वर के लिए होता है। इससे कन्या के जीवन की रक्षा होती है।

✻ मंगलदोष परिहार के लिए लड़का या लड़की (जो मंगल दोष से ग्रस्त हो) हेतु ब्राह्मणों द्वारा सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र का जप कराया जाता है। यह भी परम्परा प्राप्त एवं शास्त्रोक्त परिहार है।

✻ धर्मशास्त्रीय परिहार प्रायशः विवाह से पूर्व और तिलकोत्सव के बाद किया जाता है। अभी बहुतायत में यही परम्परा सक्रिय है।

✻ शनि की साढ़ेसाती ✻

शनिग्रह जिस राशि पर रहता है उससे एक राशि आगे और एक राशि पीछे इस प्रकार कुल तीन राशि को प्रभावित करता है। शनि एक राशि पर ढ़ाई वर्ष रहता है। कुल तीन राशि पर इसका काल साढ़ेसात वर्ष का होता है। इसे ही शनि की सार्द्धसप्तवार्षिकी (साढ़ेसाती) कहते हैं।

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः। सार्द्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्युतो भवेत्।

राशि प्रवेश	शनि राशि संचार		साढ़ेसाती
	दिनांक	समय घं.मि.	
मीन	24 अप्रैल 2025	03:58 से	कुम्भ मीन और मेष
कुम्भ	2 अक्टूबर 2025	10:44 से	मकर कुम्भ मीन
मीन	19 जनवरी 2026	13:30 से	कुम्भ मीन और मेष

अतः 2082 में मकर राशि साढ़ेसाती से मुक्त हो जाएगी और मेष राशि की साढ़ेसाती आरम्भ हो जाएगी। कुम्भ एवं मीन पर शनि का प्रभाव अत्यधिक होगा। अतः शनि का जप हवन तथा श्रीहनुमान जी की आराधना करने से साढ़ेसाती का दुष्प्रभाव शान्त होगा।

✻ शनि की ढैय्या ✻

जब अपनी जन्मराशि से शनि चतुर्थ या अष्टम में स्थित हो तो शनि की ढैय्या चलती है। इसकी अवधि ढाई वर्ष की होती है। शनि की ढैया का प्रभाव भी जातक को प्रभावित करता है। यदि कुण्डली में चन्द्रमा शुभ स्थान में स्थित होकर योगकारी हो तो शनि की ढैया का प्रभाव कल्याणकारी होता है। कतिपय लोग इसे शनि की कल्याणी भी कहते हैं। **यहाँ शनि की राशि और ढैय्या प्रभावित राशि दी जा रही है-**

मेष - कर्क, वृश्चिक का शनि ढैया कारक।
वृष - सिंह, धनु का शनि ढैया कारक।
मिथुन - कन्या, मकर का शनि ढैया कारक।
कर्क - तुला, कुम्भ का शनि ढैया कारक।
सिंह - वृश्चिक, मीन का शनि ढैया कारक।
कन्या - धनु, मेष का शनि ढैया कारक।
तुला - मकर, वृष का शनि ढैया कारक।
वृश्चिक - कुम्भ, मिथुन का शनि ढैया कारक।
धनु - मीन, कर्क का शनि ढैया कारक।
मकर - मेष, सिंह का शनि ढैया कारक।
कुम्भ - वृष, कन्या का शनि ढैया कारक।
मीन - मिथुन, तुला का शनि ढैया कारक।

शनि साढ़ेसाती शांति स्तोत्र

महर्षि पिप्पलाद कृत शनि की साढ़ेसाती के शांति स्तोत्र के पाठ से साढ़ेसाती जनित रोग, कष्ट, जीविका तथा कलह आदि बाधाएं दूर होती हैं। शनिवार को 108 पाठ कल्याणकारी है:--

नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बंधु रूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो ।।
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ।।

*ज्येष्ठ कृष्णपक्ष, पर **शनि शान्ति के उपाय** दिए गए हैं*

❊ नाड़ीदोष विचार ❊

जन्मकुण्डली में आदिनाड़ी, मध्यनाड़ी तथा अन्त्यनाड़ी नाम से तीन नाड़ियों का विवेचन प्राप्त होता है।

आदि नाड़ी - अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, उ.फाल्गुनी, हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, पूर्वाभाद्र.

मध्य नाड़ी - भरणी, मृगशीर्ष, पुष्य, पू.फाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पू.षाढ़ा, धनिष्ठा, उ.भाद्र.

अन्त्यनाड़ी- कृतिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, स्वाती, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, रेवती

यदि वर एवं कन्या की नाड़ी अलग-अलग होती है तो आठ गुण प्राप्त होते हैं। यदि वर कन्या की नाड़ी समान हो तो शून्य गुण मिलता है। इसे ही नाड़ी दोष कहते हैं। नाड़ी दोष की तीन स्थिति बनती है- 1. वर-कन्या दोनों की आदि नाड़ी हो। 2. वर-कन्या दोनों की मध्य नाड़ी हो तथा 3. वर-कन्या दोनों की अन्त्य नाड़ी हो।

यदि दोनों की आदिनाड़ी हो तो विवाह करने पर वर की मृत्यु होती है। यदि दोनों की मध्यनाड़ी हो तो विवाह करने पर कन्या की मृत्यु होती है। यदि दोनों की अन्त्य नाड़ी हो तो विवाह के पश्चात् दोनों की मृत्यु होती है। अत: नाड़ी दोष त्याज्य होता है।

आदिनाडीवरं हन्ति मध्यनाडी च कन्यकाम् ।
अन्त्यनाडी द्वयोहन्ति नाडीदोषं त्यजेद् बुधः ।।

यह वचन प्राचीन काल से ही समादृत है। यदि वर-कन्या का एक नक्षत्र हो और नक्षत्र चरण अलग-अलग हो तो नाड़ी दोष नहीं लगता है। यदि वर-कन्या का एक नक्षत्र हो और राशि अलग-अलग हो तो भी नाड़ी दोष नहीं लगता है।

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव ।
नाडीदोषो नो गणानाञ्च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ।। -मु.चि.

जातिभेद से नाड़ीदोष परिहार

प्राचीन परम्परा से प्राप्त ज्योतिर्विदों के द्वारा 'नाडीदोष' का त्याग केवल विप्रवर्ण के लिए आदिष्ट हैं। क्षत्रिय वर्ण के लिए 'वर्णदोष' का त्याग कहा गया है। वैश्यवर्ण के लिए 'गणदोष' तथा शूद्रवर्ण के लिए 'योनिदोष' का त्याग आदिष्ट किया गया है-

नाडीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्। गणदोषस्तु वैश्यानां योनिदोषस्तु पादजे।।

यदि नाड़ीदोष के कारण सभी वर्गों में विवाह को रोक दिया जाये तो फिर सोलह गुण पर विवाह होना ही कठिन हो जायेगा। कभी-कभी तो अट्ठाईस गुण होते हुए भी नाड़ीदोष की प्राप्ति होने से समस्या उत्पन्न हो जाती है। फलतः सोलह गुण पर विवाह सम्पन्न होने का शास्त्रीय आदेश सिद्ध करता है कि ब्राह्मण वर्ण के लिए ही नाड़ी दोष सर्वथा वर्ज्य है। नाड़ी दोष का ज्योतिष द्वारा प्राप्त परिहार ही एकमात्र उपाय नहीं होता है, धर्मशास्त्र द्वारा बतलाया उपाय ज्यादा महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली होता है।

फलत: नाड़ीदोष परिहार के लिए ज्योतिषशास्त्रीय परिहार के अतिरिक्त धर्मशास्त्रीय परिहार का भी अवलम्बन लेना चाहिए। भारत में प्राचीन काल से ही धर्मशास्त्रीय परिहारों की मान्यता बनी हुयी है। यह भी देखा गया है कि धर्मशास्त्रीय परिहार के बाद नवदम्पती के जीवन में विवाह के बाद किसी प्रकार की कोई दुर्घटना नहीं होती है। यह आवश्यक है कि परिहार विद्वान् वैदिक द्वारा सम्पन्न कराया जाय।

❊ नाड़ीदोष परिहार ❊

यदि ज्योतिषशास्त्रोक्त परिहार न मिले तो धर्मशास्त्रोक्त परिहार द्वारा नाड़ीदोष का निवारण करके विवाह किया जाता है। ऐसा करने पर नाड़ीदोष से उत्पन्न दुष्प्रभाव वर-कन्या को नहीं प्राप्त होता है। धर्मशास्त्रीय परिहार में बृहस्पति के वचन के अनुसार सवालाख महामृत्युंजय मंत्र जप कन्या का पिता कराकर तब विवाह करे। साथ ही विवाह मण्डप में नाड़ीदोष परिहार हेतु कन्या का पिता ब्राह्मण को गोदान-स्वर्णदान करे -

दोषापनुत्तये नाड्या मृत्युञ्जयजपादिकम्।
विधाय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत्काञ्चनादिना।। -बृहस्पतिः

नारायणभट्ट द्वारा दी गयी धर्मशास्त्रीय व्यवस्था पूरे देश में मान्य है। आज भी यही धर्मशास्त्रीय व्यवस्था नाड़ी दोष के लिए प्रभावशाली उपाय है। नारायणभट्ट के अनुसार वर-कन्या की नाड़ी यदि एक हो जाये तो विवाह मण्डप में प्रत्यक्ष गोदान एवं स्वर्णदान करके ही कन्या का पिता विवाह करे -

द्व्यर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्ममर्थांकके।
रौप्यं कांस्यमथैकनाडियुजिभे गोस्वर्णादिदत्वोद्वहेत्।।

इस उपाय को करके हजारों की संख्या में नाड़ी दोष युक्त विवाह का परिहार किया गया है। इस परिहार के पश्चात् दम्पती के जीवन में कोई अनिष्ट नहीं होता है। ध्येय है कि कन्या का पिता मण्डप में पाणिग्रहण संस्कार से पूर्व ही अपने कुल पुरोहित या श्रेष्ठ विद्वान् को संकल्पपूर्वक गोदान तथा स्वर्णदान करे। संकल्प में नाड़ीदोष परिहारार्थ गोदान तथा स्वर्णदान का उल्लेख आवश्यक होता है। इस उल्लेख के बिना किया हुआ संकल्प या दान व्यर्थ होता है। अत: विद्वान् वैदिक द्वारा ही इस कृत्य का संपादन होना चाहिए। निष्कर्षत: नाड़ीदोष होने पर विवाह का त्याग ही एकमात्र मार्ग नहीं होता, बल्कि परिहारपूर्वक विवाह करना श्रेष्ठ मार्ग है।

नाड़ीकूट सर्वश्रेष्ठ है

आठ प्रकार के कूटों में नाड़ी सर्वश्रेष्ठ कूट होने के कारण कूटशिरोमणि नाम से प्रसिद्ध है। अत: नाड़ीदोष को लेकर पारम्परिक विद्वानों में भारी सजगता देखी जाती है। प्रायशः विद्वान् सामान्य ग्रन्थों में कहे गये परिहार को स्वीकार नहीं करते। फलत: मुहूर्त्तचिंतामणि या फिर नारायणभट्ट द्वारा कहा गया परिहार ही आज विद्वानों में स्वीकार्य है।

वर–वधु मेलापक सारिणी

वर / वधू			मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			अ4	भ4	कृ1	कृ3	रो4	मृ2	मृ2	आ4	पु3	पु1	पु4	श्ले4	म4	पू4	उ1	उ3	ह4	चि2	चि2	खा4	वि3	वि1	अनु4	ज्ये4	मु4	पू4	उ1	उ3	श्र4	ध2	ध2	श4	पू3	पू1	उ4	र4
			चू चे चो ला	लि लू ले लो	अ	इ उ ए	ओ वा वि वु	वे वो	क कि	कू घ ङ छ	के को ह	ही	हु हे हो डा	डी डू डे डो	म मी मू मे	मो टा टी टू	टे	टो प पी	पू ष ण ठ	पे पो	र री	रू रे रो ता	ति तू ते	तो	न नी नू ने	नो या यी यू	ये यो भ भी	भू धा फा ढ़ा	भे	भो ज जी	खि खू खे खो	ग गि	गु गे	गो सा सी सू	से सो द	दी	दू थ झ त्र	दे दो चा ची
मेष	अ4	चू चे चो ला	28 3	33 0	28.5	18.5 4	21.5 -4	22.5 -4	26	17 3	19 3	23.5 3	31.5	28	21 +5	25 +5	15.5 35	11 36	9 236	13 6	22.5	26.5 -2	22.5	18.5 -6	25.5 -6	14 36	13 35	25 +5	23.5 +5	25	26	20	20	15 3	16 3	14.5 34	24.5 +4	26 +4
	भ4	लि लू ले लो	34	28 3	29 01	19 041	22.5 -4	14.5 34	18 3	26	27	31.5	23.5 3	25.5 1	20 -15	18 35	26 +5	21.5 6	20 6	4 136	13.5 13	29.5	21.5 -1	17.5 -16	17.5 36	19.5 -16	20 -15	18 35	26 +5	27.5	26	10 132	10 132	20 -1	24 -2	22.5 ×24	17.5 34	26.5 +4
	कृ1	अ	27.5	29 1	28 3	18 34	10 1340	16.5 4	20	20 1	21	25.5	26.5	23.5 3	16.5 35	20 15	20 15	15.5 16	15.5 6	18 6	27.5	15.5 3	19.5 3	15.5 36	19.5 -6	25.5 -6	24.5 +5	18 125	12 315	13.5 13	11.5 23	25	25	27	19 1	17.5 14	19.5 14	11.5 34
वृष	कृ3	इ उ ए	18.5 4	20 14	19 34	28 3	20 013	26.5	17.5 +4	17.5 14	18.5 +4	22	23	20 3	18.5 3	22 1	22 1	21 15	21 +5	23.5 +5	22.5 -6	10.5 36	14.5 36	20.5 3	24.5	30.5	20 6	13.5 126	7.5 136	12 135	10 352	23.5 +5	29.5	31.5	23.5 1	20 1	22 1	14 3
	रो4	ओ वा वी वू	23.5 -4	23.5 4	11 341	20 31	28 3	36 0	27 04	23.5 +4	22.5 +4	26	27	12 31	10.5 31	24.5	27	26 +5	26 +5	20 -15	19 -16	15.5 36	9.5 316	15.5 31	29.5	23.5 1	14 16	19 6	11.5 326	16 352	17 35	20 -15	26 -1	24.5 -1	30.5	27	27	19 3
	मृ2	वे वो	23.5 -4	14.5 34	18.5 -4	27.5	35	28 3	19 34	24 04	22.5 +4	26	19 3	21	19.5	15.5 3	24.5	23.5 +5	26 +5	13 35	12 36	25 -6	18.5 -6	24.5	21.5 3	24.5	15 6	10 36	17 26	21.5 ×25	25 +5	13 35	19 3	27	29.5	26	18 3	27
मिथुन	मृ2	क की	27	18 3	22	19.5 +4	27 +4	20 34	28 3	33 0	31.5	19 -4	12 34	14 4	23.5	19.5 3	28.5	31.5	34	21 3	14 35	27 +5	20.5 +5	14 6	11 36	14 6	23	18 3	25 +2	20 -26	23.5 -6	11.5 36	13 35	21 +5	23.5 +5	25.5	17.5 3	26.5
	आ4	कू घ ङ छ	19 3	27	21 1	18.5 ×14	24.5 +4	26 +4	34	28 3	25 30	12.5 034	20 -4	13 14	23.5 1	29.5	21.5 3	24.5 3	24.5 3	27 1	20 -15	27 +5	20 ×15	13.5 16	17 26	3 1326	16 13	28	28	23 -6	23 -6	17.5 -16	19 ×15	12 135	17 35	19 3	26.5	26.5
	पु3	के को ह	20 3	27	23	20.5 +4	22.5 +4	23.5 +4	31.5	24 3	28 3	15.5 -34	22.5 40	17 -4	22.5 +2	26.5 +2	21.5 3	24.5 3	25.5 3	27.5	20.5 +5	28 +5	22 +5	15.5 6	21.5 6	7 36	14 3	27	27	22 -6	23 -6	17 -6	18.5 +5	14 35	16 35	18 3	28	27.5
कर्क	पु1	ही	22.5 3	29.5	25.5	22	24	25	18 4	10.5 34	14.5 34	28 3	35 0	29.5	16.5 ×24	20.5 24	15.5 34	18 3	19 3	21	20.5	28	22	20 +5	26 +5	11.5 35	8 36	21 -6	21 -6	26	27	21	12.5 6	8 36	10 36	16 35	26 +5	25.5 +5
	पु4	हु हे हो डा	30.5	21.5 3	26.5	23	25	18 3	11 34	18 4	21.5 4	35	28 3	30 0	19.5 +4	15.5 34	23.5 +4	26	27	12 3	11.5 3	26.5	21	19 +5	18 35	21 -5	17	11 236	21 6	26	25 -2	13 3	4.5 36	14.5 6	18 6	24 +5	18 35	27 +5
	श्ले4	डी डू डे डो	26.5	24.5 1	22.5 3	19 3	11 31	19	12 4	12 14	15 4	28.5	29	28 3	15 0342	15.5 142	18.5 14	21 1	21	26	25.5	12.5 3	17.5 3	15.5 35	20 +5	26 -5	22.5 6	16 16	8 316	13 13	13 3	26	17.5 6	19.5 6	11.5 16	17.5 15	21 15	13 35
सिंह	म4	म मी मू मे	20 +5	20 15	16.5 35	17.5 3	9.5 31	17.5	21.5	22.5 1	20.5 -2	16.5 ×24	19.5 +4	16 342	28 3	30 01	27.5 1	16.5 14	16.5 +4	21.5 4	24.5	11.5 3	16.5 3	22.5 3	25.5	33	25 +5	19 15	8.5 135	3.5 316	4.5 36	18.5 6	24.5	25.5	18.5 1	18.5 -16	19.5 16	13 36
	पू4	मो टा टी टू	26 +5	18 35	20 -15	21 1	23.5	15.5 3	19.5 3	28.5	26.5 -2	22.5 ×24	17.5 34	16.5 124	30 -1	28 3	35 0	24 04	22.5 +4	7.5 134	10.5 13	25.5	18.5 1	24.5 -1	23.5 3	25.5 -1	19 ×15	17 35	24 +5	19 6	18.5 6	4.5 136	10.5 13	19.5 1	24.5	24.5 -6	17.5 36	25.5 -6
	उ1	टे	16.5 35	26 +5	20 -15	21 1	26	24.5	28.5	20.5 3	21.5 3	17.5 34	25.5 +4	19.5 -14	27.5 -1	35	28 3	17 34	16 034	13.5 142	16.5 12	25.5	16.5 12	22.5 -12	31.5	17.5 13	9.5 135	25 +5	25 +5	20 6	20 6	11.5 16	17.5 1	11.5 13	15.5 3	15.5 36	26.5 -6	25.5 -6
कन्या	उ3	टो प पी	13 36	22.5 6	16.5 16	21 ×15	26 +5	24.5 +5	31.5	23.5 3	24.5 3	20 3	28	22 1	17.5 14	25.5 +4	18 34	28 3	27 30	24.5 ×12	16.5 124	25.5 +4	16.5 124	18 12	27	13 13	14 13	29.5	29.5	24.5 +5	24.5 +5	16 +15	16.5 -16	10.5 316	14.5 36	17.5 3	28.5	27.5
	ह4	पू ष ण ठ	10 236	20 6	17.5 6	22 +5	25 +5	26 +5	33	22.5 3	24.5 3	20 3	28	23	18.5 +4	22.5 +4	16 34	26 3	28 3	28 0	20 04	26.5 +4	18.5 +4	20	26	13 3	15 3	27	28.5	23.5 +5	24.5 +5	18.5 +5	19 -6	8.5 362	13.5 36	16.5 3	26.5	27.5
	चि2	पे पो	13 6	5 136	19 6	23.5 +5	20 15	12 35	19 3	26 1	25.5	21	12 3	27	22.5 +4	8.5 134	14.5 124	24.5 12	27	28 3	20 34	19 04	26.5 +4	28	11 3	25	27	14 13	22 1	17 15	18.5 +5	15.5 35	16 36	24 -6	16.5 16	19.5 1	10.5 132	19.5

यहाँ सारिणी में ऊपर, दायें से बाये मेष मे मीन तक वर की राशि, नक्षत्र चरण व नाम का प्रथम अक्षर है ऊपर से नीचे कन्या की राशि, नक्षत्र चरण व नाम का प्रथम अक्षर है। अष्टकूट मेलापक सारिणी में कुल गुणों का योग व नीचे दोषों के चिह्न दिये हैं। इन दोषों को इकाई के रूप में इस प्रकार समझना चाहिए। 1 – गणदोष, 2 – वैर योनि, 3 – नाड़ी दोष, 4 – द्विर्द्वादश दोष, 5 – नवम पंचम, 6 – षडाष्टक तथा जहाँ 0 लिखा है यह वर के नक्षत्र से पूर्व वधु के नक्षत्र की सूचना देता है। जो कि महादोष माना गया है। – का चिह्न दोष की न्यूनता दर्शाता है। × एवं + का चिह्न दोष का पूरा निर्वाह करता है।

वर–वधु मेलापक सारिणी

वर / वधू			मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			अ4	भ4	कृ1	कृ3	रो4	मृ2	मृ2	आ4	पु3	पु1	पु4	श्ले4	म4	पू4	उ1	उ3	ह4	चि2	चि2	स्वा4	वि3	वि1	अनु4	ज्ये4	मु4	पू4	उ1	उ3	श्र4	ध2	ध2	श4	पू3	पू1	उ4	र4
			चू चे चो ला	लि लू ले लो	अ	इ उ ए	ओ वा वि वु	वे वो	क कि	कू घ ङ छ	के को ह	ही	हु हे हो डा	डी डू डे डो	म मी मू मे	मो टा टी टू	टे	टो प पी	पू ष ण ठ	पे पो	र री	रू रे रो ता	ति तू ते	तो	न नी नू ने	नो या यी यू	ये यो भ भी	भू धा फा ढ़ा	भे	भो ज जी	खि खू खे खो	ग गि	गु गे	गो सा सी सू	से सो द	दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची
तुला	चि2	र री	22.5	14.3 13	28.5	23.5 +6	20 16	12 36	13 35	21 15	19.5 +5	20.5	11.5 3	26.5	25.5	11.5 13	17.5 12	17.5 124	20 +4	21 34	28 3	27 0	34.5	23.5 4	6.5 34	20.5 4	27	14 13	22 1	25 1	26.5	23.5 3	18 35	26 +5	18.5 15	12.5 16	3.5 6213	12.5 6
	स्वा4	रू रे रो ता	27.5 +2	29.5	17.5 3	12.5 36	15.5 36	26 -6	27 +5	26 +5	28 +5	29	27.5	14.5 3	13.5 3	25.5	25.5	25.5 +4	27.5 +4	21 +4	28	28 3	20 30	9 340	21.5 4	16.5 4	23	27	19 3	22 3	23 3	26.5	21 +5	20 ×52	25 +5	19 6	19.5 6	12.5 36
	वि3	ति तू ते	22.5	22.5 1	20.5 3	15.5 36	10.5 136	18.5 -6	19.5 +5	20 15	21 +5	22	21	18.5 3	17.5 3	19.5 1	17.5 12	17.5 142	18.5 +4	27.5 +4	34.5	19 3	28 3	17 34	16 04	20.5 4	27	22 1	14 13	17 13	17 3	30	24.5 +5	26 +5	20 15	14 16	13 162	4.5 36
वृश्चिक	वि1	तो	16.5 +6	16.5 16	14.5 36	19.5 3	14.5 13	22.5	12 6	12.5 16	13.5 6	19 -5	18 -5	15.5 -5	21.5 3	23.5 1	21.5 12	17 12	18	27	22.5 4	7 34	16 34	28 3	27 0	31.5	21.5 +4	16.5 41	8.5 134	12 13	12 3	25	24	25.5	19.5 1	19 15	18 15	9.5 325
	अनु4	न नी नू ने	24.5 -6	15.5 36	19.5 -6	24.5	27.5	20.5 3	10 36	15 26	20.5 6	26 -5	18 35	21 -5	24.5	20.5 3	29.5	25	26	11 3	6.5 34	21.5 4	16 4	28	28 3	31 0	15.5 ×24	13.5 34	21.5 +4	25	26	12 3	11 3	21	24.5	24 +5	18 35	27 +5
	ज्ये4	नो या यी यू	12 36	18.5 16	24.5 -6	29.5	22.5 1	22.5	12 6	2 3126	5 63	10.5 53	20 +5	26 -5	31	23.5 1	16.5 13	12 13	12 3	24	19.5 4	15.5 4	19.5 4	31.5	30	28 3	14 0234	16.5 14	16.5 14	20 1	20	25	24	18 3	10 13	9.5 135	21 15	21 +5
धनु	मु4	ये यो भ भी	12 35	20 15	24.5 +5	19 6	13 16	13 6	21	15 13	12 3	8 36	17 6	23.5 6	25 +5	19 15	9.5 153	13 31	13 3	26	26	21	26	22.5 +4	15.5 ×24	15 342	28 3	28 01	26.5 1	15 14	15 4	20 4	28.5	21.5 3	14.5 13	16 13	25 1	26.5
	पू4	भू धा फा ढ़ा	26 +5	18 35	18 125	12.5 162	18 6	10 36	18 3	27	27	23 6	12 236	17 16	19 -15	17 35	25 +5	28.5	27	13 13	13 13	27	21 1	17.5 -14	15.5 34	17.5 -14	28 +1	28 3	34 0	22.5 04	23 4	6 134	14.5 13	23.5 1	28.5	30	23 3	31
	उ1	भे	24.5 +5	26 +5	12 135	6.5 136	10.5 236	17 26	25 +2	27	27	23 6	23 6	9 163	8.5 153	24 +5	25 +5	28.5	28.5	21 1	21 1	19 3	13 13	9.5 134	23.5 +4	17.5 -14	26.5 -1	34	28 3	16.5 34	14.5 340	15 14	23.5 1	23.5 1	29.5	31	31	23 3
मकर	उ3	भो ज जी	27	28.5	14.5 13	12 135	16 235	22.5 ×25	20 ×26	22 -6	22 -6	28	28	14 13	4.5 136	20 6	21 6	24.5 +5	24.5 15	17 15	24 -1	22 3	16 13	13 31	27	21 1	16 14	23.5 4	17.5 34	28 3	26 30	26.5 +1	17 ×14	17 ×14	23 +4	30.5	30.5	22.5 3
	श्र4	खि खू खे खो	27	26	13.5 32	11 352	16 35	25 +5	22.5 -6	21 -6	22 -6	28	26 +2	15 3	6.5 36	18.5 6	20 6	23.5 +5	24.5 +5	19.5 5	26.5	22 3	17 3	14 3	27	22	17 4	23 4	14.5 34	25 3	28 3	28 -0	18.5 04	18 +4	21 +4	28.5	29.5	22.5 3
	ध2	ग गि	20	11 132	26	23.5 +5	20 15	12 35	9.5 36	16.5 16	16 -6	22	13 3	28	19.5 6	5.5 136	12.5 16	16 15	17.5 +5	15.5 35	22.5 3	24.5	29	26	12 3	26	21 4	7 341	16 41	26.5 1	27	28 3	18.5 34	23.5 40	19 14	26.5 1	15.5 13	22.5 +2
कुम्भ	ध2	गू गे	20	11 132	26	30.5	27 1	19 3	12 35	19 15	18.5 +5	13.5 6	4.5 36	19.5 6	25.5	11.5 13	18.5 1	17.5 16	19 +6	17 36	18 35	20 -5	24.5 -5	25	11 3	25	29.5	15.5 13	24.5 1	18 14	18.5 +4	19.5 34	28 3	33 0	28.5 1	18 14	7 134	14 42
	श4	गो गा सी सू	15 3	21 1	28	32.5	25.5 1	27	20 +5	12 135	13 35	8.5 36	14.5 6	20.5 6	26.5	20.5 1	12.5 13	11.5 136	8.5 1236	25 6	25 +5	19 +5	26 +5	26.5	21	19 3	22.5 3	24.5 1	24.5 1	18 14	18 +4	24.5 +4	33	28 3	19 013	8.5 1340	17 14	16 4
	पू3	से सो द	18 3	25 +2	20 -1	24.5 -1	31.5	31.5	24.5 +5	17 35	18 35	13 36	20 6	13.5 16	19.5 1	25.5	16.5 3	15.5 36	15.5 ×36	17.5 16	18.5 -15	26 +5	20 -15	20.5 1	26.5	11 13	15.5 13	29.5	30.5	24 +4	23 +4	20 -14	28.5 -1	19 13	28 3	17.5 34	22.5 04	20 42
मीन	पू1	दी	14.5 346	21.5 +426	16.5 -146	19 1	26	26	25.5	18 3	19 3	18 35	25 5	18.5 15	17.5 -16	23.5 +6	14.5 36	16.5 3	16.5 3	18.5 +1	11.5 16	19 6	13 16	19 -15	25 +5	9.5 135	15 13	29	30	29.5	28.5	25.5 1	17 14	7.5 134	16.5 34	28 3	33 0	30.5 +2
	उ4	दू थ झ ञ	24.5 +4	16.5 34	18.5 -14	21 1	26	18 3	17.5 3	25.5	28	27 5	19 35	21 15	18.5 -16	16.5 36	25.5 +6	27.5	26.5	9.5 132	2.5 3216	19.5 6	12 162	18 152	19 35	21 -15	24 -1	22 3	30	29.5	29.5	14.5 13	6 134	16 14	21.5 4	33	28 3	35 0
	र4	दे दो चा ची	25 +40	24.5 +4	11.5 34	14 3	17 3	16	25.5	24.5	26.5	25.5 5	27 5	14 35	13 36	23.5 +6	23.5 +6	25.5	26.5	19.5	12.5 6	11.5 36	4.5 36	10.5 35	27 -5	22 +5	26.5	29	21	20.5 3	21.5 3	22.5 -2	14 42	16 4	18 42	29.5 +2	34	28 3

यहाँ दोषों को इकाई के रूप में मानना चाहिए। जैसे वर की राशि धनु में पूर्व 4 चरण तथा कन्या की राशि वृष कृतिका 3 चरण का मेलापक देखने पर कुल गुण योग 13.5 तथा दोष में 126 लिखा है। यहाँ 1 – गण दोष, 2 – वैर योनि, 6 – षडाष्टक दोष प्राप्त होता है।

वर–कन्या वैवाहिक अष्टकूट मेलापक सारणियाँ इत्यादि

१ – वर्णस्यगुणाः

वरस्य (कन्यायाः)

वर्णाः	ब्रा·	क्ष·	वै·	शू·
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ – वश्यगुणाः

वरस्य (कन्यायाः)

वश्याः	च·	मा·	ज·	व·	की·
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

४ – योनिकूटस्य गुणज्ञानाय चक्रमिदम्

वरस्य (कन्यायाः)

योनयः	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	२	२	२	२	२	३	१	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	२	२	२	२	२	३	२	२	२	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	२	३	३	१	३	०	३	१
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	३	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
मृग	३	३	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	१	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	१	१	२	१	२	१	१	३	२	२	३	२	४

६ – गणगुणाः

वरस्य (कन्यायाः)

गण	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

८ – नाड़ीगुणाः

वरस्य (कन्यायाः)

नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

३ – तारायाः गुणाः

वरस्य (कन्यायाः)

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
जन्म १	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
संपत् २	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
विपत् ३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१
क्षेम ४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
प्रत्यरि ५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१
साधक ६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
वध ७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१
मैत्र ८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
अतिमैत्र ९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

अष्टकूट मेलापक

विवाह–मेलापक विचार में वर्ण में १, वश्य में २, तारा में ३, योनि में ४, ग्रहमैत्री में ५, गणमैत्री में ६, भकूट में ७ तथा नाड़ी में ८ गुण होते हैं। इन कुल ३६ गुणों में से १८ गुण से ऊपर विवाह अत्यन्त शुभ माना जाता है। तारा देखने के लिये कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर जो आये, उसमें अलग–अलग ९ का भाग देने से जो शेष बचे, उसे तारा जाने।

अथ मेलापके विशेषस्तत्राह।

अज्ञातजन्मनां नृणां नाम्नि भं परिकल्पयेत्।
तेनैव चिन्तयेत्सर्वं राशिकूटादि जन्मवत्।।१।।
जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्।

७ – राशिकूटस्य गुणाः

वरस्य (कन्यायाः)

राशि	मेष	वृष	मि·	कर्क	सिंह	क·	तुला	वृ·	धनु	म·	कुंभ	मीन
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

५ – ग्रहमैत्रकस्य गुणाः

वरस्य (कन्यायाः)

ग्रह	सू	च	मं	बु	गु	शु	श
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

निराभिजिद् गणना

स्थानम्	नक्ष·	फलानि
शीर्षे	३	हानिः
मुखे	३	सिद्धिः
कण्ठे	३	मृत्युः
हस्ते	४	शत्रुभयं
हृदये	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	हानिः
कटचां	३	इष्टाप्तिः
चरणे	४	धनाप्तिः

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चं·मं·गु·	बुधः	शु·श·
चन्द्र	सू· बु·	मं·गु·शु·श·	०
मंगल	चं·सू·गु·	शुक्र, शनि	बुध
बुध	सू· शु·	मं,गु,श·	चन्द्र
गुरु	सू·चं·मं·	शनि	बु·शु·
शुक्र	बु· श·	मंगल,गुरु	सू·चं·
शनि	बु· शु·	गुरु	सू·चं·मं·

प्रीतिषडष्टक	मृत्युषडष्टक	शुभद्विर्दादशक	अशुभद्विर्दादशक	शुभनवपंचक	अशुभनवपंचक
सिंह–मीन	मेष–कन्या	मीन–मेष	वृष–मिथनु	मेष–सिंह	धनु–मेष
तुला–वृश्चिक	तुला–मीन	कर्क–सिंह	कुम्भ–मीन	वृष–कन्या	मकर–वृष
कुम्भ–कन्या	मिथुन–वृश्चिक	सिंह–कन्या	मेष–वृष	मिथुन–तुला	कर्क–वृश्चिक
मिथुन–मकर	मकर–सिंह	मकर–कुम्भ	मिथुन–कर्क	सिंह–धनु	कन्या–मकर
मेष–वृश्चिक	कुम्भ–कर्क	तुला–कन्या	तुला–वृश्चिक	तुला–कुम्भ	कुम्भ–मिथु·
धनु–कर्क	धनु–वृष	धनु–वृश्चिक	मकर–धनु	वृश्चिक–मीन	मीन–कर्क

❊ विवाह मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

❊ **विवाह के मास-** चैत्र (मेषकासूर्य), वैशाख (वृषकासूर्य), ज्येष्ठ (वृष-मिथुनकासूर्य), आषाढ़ (मिथुनकासूर्य, शुक्लदशमीतक), कार्तिक (वृश्चिककासूर्य), मार्गशीर्ष (वृश्चिककासूर्य), पौष (मकरकासूर्य), माघ (मकरकासूर्य), फाल्गुन (कुम्भकासूर्य)। कार्तिक व पौष में प्रायः वृश्चिक और मकर का सूर्य नहीं मिलता है। ❊ **वर्जित मास-** श्रावण, भाद्रपद, आश्विन।

❊ **विवाह के वार-** रवि, सोम, बुध, गुरू, शुक्र, शनि। ❊ **विवाह तिथियाँ-** 1, 2, 3, 5, 6, 7,8, 10, 11, 12, 13, 15

❊ **विवाह नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल व रेवती। ❊ **पारस्कर गृह्यसूत्रोक्त-** अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा।

❊ मृत्युबाण में विवाह वर्जित होता है। सूर्य के 1, 10, 19, 28 गतांश पर मृत्युबाण होता है। ❊ **पारस्कर गृह्यसूत्रोक्त नक्षत्र चतुष्टयी** को मुहूर्तों में सम्मिलित किया गया है।

❊ **विवाह हेतु वर्जित काल :-** ❊ **मीन मलमास -** वर्षारम्भ से 13 अप्रैल 2025 तक। ❊ **देवशयन काल-** 6 जुलाई से 1 नवम्बर 2025 तक ❊ **कर्क संक्रान्ति दोष-** 17 जुलाई 2025 से।

❊ **गुरू अस्त** बालत्व वृद्धत्व वर्जित काल - 11 जून से 10 जुलाई 2025 तक। ❊ **शुक्र अस्त** बालत्व वृद्धत्व वर्जित काल - 12 दिसम्बर 2025 से 4 फरवरी 2026 तक

❊ **धनु मलमास -** 16 दिसम्बर 2025 से 14 जनवरी 2026। ❊ **होलाष्टक -** 24 फरवरी से 3 मार्च 2026 तक। ❊ **मीन मलमास-** 15 मार्च 2026 से वर्षान्त तक।

विवाह के मुहूर्त्तों में त्रिबल शुद्धि में सूर्य के 1, 2, 5, 7, 9वें स्थान पर होने से पूजा का, 4, 8, 12वें स्थान पर निन्दित, 3, 6, 10, 11वें स्थान पर शुभ। गुरु के 1, 3, 6, 10वें स्थान पर होने से पूजा का, 4, 8, 12वें स्थान पर निन्दित, 2, 5, 7, 9, 11वें स्थान पर शुभ। चन्द्र के 1, 2, 5, 9वें स्थान पर पूजा का, 4, 8, 12वें स्थान पर निन्दित, व 3, 6, 7, 10व 11वें स्थान पर शुभ माना है।

कुछ आचार्यो ने द्वादश चन्द्र को पूजा का कहा है। हमने यहाँ पर द्वादश चन्द्र को निन्दित ही माना है। तिथि क्षय, नक्षत्र क्षय, मन्वादिः युगादिः तिथियाँ, रिक्ता तिथि का विचार परम्परा से विवाह के मुहूर्त्तों में नहीं होता है। क्रूर ग्रहों की युति का परिहार चन्द्रमा की अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्र राशि (सूर्य, व बुध) में होने पर हो जाता है। विवाह में लग्नशुद्धि का विचार पीयूषधारा के निम्न वाक्य के अनुसार ही किया जाता है- **''त्याज्यलग्नेऽब्धयो मंदात्षष्ठेशुकेंदुलग्नपाः। रंध्रेचन्द्रादयः पंचसर्वेस्तेब्जगुरु समौ ।''**

❊ गोधूलि लग्न काल में निषिद्ध ग्रह स्थिति ❊

गोधूलि लग्न का विचार करते समय, लग्न, छठे व आठवें स्थान में चन्द्रमा को शुभ नहीं माना गया है। क्रान्तिसाम्य का दोष भी गोधूलि लग्न में शुभ नहीं होता है। लग्न से 2, 3 व 11वें स्थान पर चन्द्रमा को अति शुभ माना गया है। लग्न, छठे व आठवे स्थान पर चन्द्र नहीं होना चाहिए। 2-3-11वे स्थान पर चन्द्र होने पर लग्न गोधूलि होता है। अन्य स्थानों पर चन्द्र होने पर लग्न अन्य गोधूलि कहा जाता है।

गोधूलि लग्न में कुलिक दोष का विचार किया जाता है। शनिवार व गुरुवार को कुलिक दोष रहता है। शनिवार को सूर्यास्त तक तथा गुरुवार को सूर्यास्त के पश्चात् यह दोष रहता है। गोधूलि के अतिरिक्त लग्न शुद्धि का विचार निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया जाता है-

(1) लग्न में शनि-रवि-सोम-मंगल को शुभ नहीं माना जाता है।
(2) छठे स्थान पर शुक्र, चन्द्रमा व लग्न पति को शुभ नहीं माना जाता है।
(3) सातवें स्थान पर कोई भी ग्रह शुभ नहीं होता है, मात्र चन्द्र व गुरु को सम माना जाता है।
(4) अष्ठम स्थान में चन्द्र-मंगल-बुध-गुरू व शुक्र को शुभ नहीं माना जाता है।

पापौ कर्तरिकारको रिपुगृहे नीचास्तगी कर्तरीदोषो नैव सितेऽरिनीचगृहर्गतत्षष्ठदोषोऽपि नः।
भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद्धीमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिः फाष्टारिदोषोऽपि नः ।।

(1) छठे स्थान का शुक्र अशुभ कहा गया है किन्तु अपने शत्रु (कर्क-सिंह) या नीच राशि कन्या पर होने से षष्ठस्थ शुक्र दोष परिहार हो जाता है। **(2)** मंगल अष्ठम स्थान में दोष कारक होता है किन्तु सूर्य के साथ अस्त होने पर, अपने शत्रु राशि (मिथुन-कन्या) या नीच राशि कर्क में होने पर अष्ठमस्थ मंगल के दोष का परिहार हो जाता है। **(3)** छठे आठवें व बारहवें स्थान का चन्द्रमा भी दोषकारक माना गया है किन्तु अपनी नीच वृश्चिक राशि या वृश्चिक के नवमांश में होने पर इस दोष का परिहार हो जाता है। **विशेष-** विवाह लग्न से 12वें शनि, 10वें मंगल व 3रे शुक्र का विचार परम्परा से नहीं किया जाता है।

विवाह के लग्न का विंशोपक बल निकालने का प्रकार- विवाह काल के लग्न के समय 3,6,8,11वें स्थान में सूर्य-शनि-राहु या केतु शुभ होते हैं। 3,6,11वें स्थान में मंगल शुभ होता है। 2,3,11वें स्थान में चन्द्रमा शुभ होता है। 1,2,3,4,5,6,9,10,12वें स्थान में बुध व गुरु शुभ होते हैं। 1,2,4,5,9,10,11,12वें स्थान में शुक्र शुभ होता है। बुध व शुक्र के 2, 2, चन्द्रमा के 5, सूर्य के 3.5, गुरु के 3, शनि-राहु-केतु मंगल के 1.5-1.5 बल होते हैं। विवाह काल के समय जितने ज्यादा बल हों वह लग्न उतना ही उत्तम होता है।

जन्म मास में विवाह- जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्मतिथि व जन्म लग्न में प्रथम उत्पन्न पुत्र व कन्या का विवाह शुभ नहीं माना जाता है। परन्तु द्वितीय पुत्र या कन्या का विवाह पुत्र का देने वाला व पण्डितों से प्रशंसित है। (मु. चिन्तामणि)

ज्येष्ठ माह में विशेष- ज्येष्ठ कन्या, ज्येष्ठ वर व ज्येष्ठ का महीना ये तीन ज्येष्ठ शुभ नहीं होते हैं। ज्येष्ठ महीना व ज्येष्ठ वर या ज्येष्ठ कन्या ये दो ज्येष्ठ मध्यम होते हैं। **परिहार-** ज्येष्ठ माह में यदि सूर्य कृतिका नक्षत्र का त्याग कर चुका हो तब दो ज्येष्ठ मध्यम फल के स्थान पर शुभ फलप्रद हो जाता है परन्तु 3 ज्येष्ठ तो कभी भी शुभ नहीं माने जाते हैं।

❊ विवाह मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय		चन्द्र शुद्धि 4,8,12 वां निन्दित चन्द्र छोड़कर व अन्य दोषों का विवरण
							दिवा लग्न	रात्रि लग्न	
14 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 1 सोमवार	स्वाती	तुला	मेष	वृष	7	मिथुन 09:40-11:54	वृश्चिक 21:04-23:23(गुरु दान से)	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
18 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 5 शुक्रवार	मूल	धनु	मेष	वृष	6	लग्नाभाव	गोधूलि 18:36-19:00 वृश्चिक 20:49-23:08	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
20 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 7 रविवार	उषा	मकर	मेष	वृष	8	लग्नाभाव	अन्य गोधूलि 18:37-19:01 वृश्चिक 20:41-22:59(गुरुदान से) कुम्भ 26:47-28:17	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
30 अप्रैल	वैशाख शुक्ल 3 बुधवार	रोहिणी मृगशिरा	वृष	मेष	वृष	9	मिथुन 08:38-10:52	वृश्चिक 20:01-22:19 (चन्द्र-गुरु दान से)	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
1 मई	वैशाख शुक्ल 4 गुरुवार	मृगशिरा	मिथुन 07:41 से	मेष	वृष	9	रिक्ता 16:14 तक	गोधूलि 18:44-19:08	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
5 मई	वैशाख शुक्ल 8 सोमवार	मघा	सिंह	मेष	वृष	8	लग्नाभाव	गोधूलि 18:45-19:09 वृश्चिक 19:41-21:59(गुरु दान से) कुम्भ 25:47-27:17(चन्द्र दान से)	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
6 मई	वैशाख शुक्ल 9 मंगलवार जानकी नवमी	मघा	सिंह	मेष	वृष	8	वृष-मिथुन 06:17-10:28	नक्षत्राभाव	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
8 मई	वैशाख शुक्ल 11 गुरुवार	हस्त 22:20 से	कन्या	मेष	वृष	7	नक्षत्राभाव, उफा में केतुयुति	अन्य गोधूलि 18:59-19:11 वृश्चिक 19:29-21:06	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
9 मई	वैशाख शुक्ल 12 शुक्रवार	हस्त 24:35 तक	कन्या	मेष	वृष	7	वृष 06:06-08:01	लग्नाभाव	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन

❊ विवाह मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय		चन्द्र शुद्धि 4,8,12 वां निन्दित चन्द्र छोड़कर व अन्य दोषों का विवरण
							दिवा लग्न	रात्रि लग्न	
17 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 5 शनिवार	उषा 15:13 से	मकर	वृष	मिथुन	8	लग्नाभाव	गोधूलि 18:52-19:04	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
18 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 6 रविवार	उषा 15:47 तक	मकर	वृष	मिथुन	8	मिथुन 07:27-09:41 सिंह 12:00-14:16 पंचेष्ट लग्नाभाव	नक्षत्राभाव	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
22 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 10 गुरुवार	उभा 13:40 से	मीन	वृष	मिथुन	8	भद्रा दोष भद्रान्त 20:34	कुम्भ-मीन 24:44-26:13 वृष 29:15-31:10	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
1 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 6 रविवार	मघा 25:47 से	सिंह	वृष	मिथुन	6	नक्षत्राभाव	धनु उत्तरार्ध 21:36-22:16 (गुरुदान से भौम अष्टम परिहार) मेष 26:57-28:34(शनि दान से)	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
2 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 7 सोमवार	मघा 26:36 तक	सिंह	वृष	मिथुन	8	मिथुन 06:27-08:41	अन्य गोधूलि 19:00-19:24 धनु 20:10-22:16 भद्रारम्भ 24:09 से	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
7 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 12 शनिवार	स्वाती 10:18 से	तुला	वृष	मिथुन	8	कर्क 09:40-10:40	मेष 26:33-28:10 (चन्द्र-शनि दान से)	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
8 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 12-13 रविवार	स्वाती 12:55 तक	तुला	वृष	मिथुन	8	मिथुन-कर्क 06:03-10:36	नक्षत्राभाव	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
9 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 13 सोमवार	अनुराधा 15:30 से	वृश्चिक	वृष	मिथुन	10	लग्नाभाव	मेष 26:25-28:02 (शनि दान से चन्द्र अष्टम परिहार)	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
22 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 2 शनिवार	मूल 15:30 से	धनु	वृश्चिक	कर्क	10	लग्नाभाव	गोधूलि 17:16-17:40 कन्या-तुला 25:56-30:28	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन

❊ विवाह मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय		चन्द्र शुद्धि 4,8,12 वां निन्दित चन्द्र छोड़कर व अन्य दोषों का विवरण
							दिवा लग्न	रात्रि लग्न	
23 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 3 रविवार	मूल 17:44 तक	धनु	वृश्चिक	कर्क	10	मकर 10:46-12:30 (गुरुदान से)	गोधूलि17:15-17:39 अग्रे नक्षत्राभाव	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
24 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 4 सोमवार	उषा 19:34 से	मकर	वृश्चिक	कर्क	7	नक्षत्राभाव	कर्क 21:54-23:30 तुला 28:02-30:20 रिक्तांत भद्रान्त 17:54	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
29 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 9 शनिवार	उभा 21:36 से	मीन	वृश्चिक	कर्क	7	नक्षत्राभाव	तुला 27:42-30:00 (दग्धा तिथि परिहार)	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
30 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 10 रविवार	उभा-रेवती	मीन	वृश्चिक	कर्क	7	लग्नाभाव	गोधूलि17:17-17:41(भौमशुक्र 7स्थ) कर्क 20:47-23:06(दग्ध तिथि परिहार) भद्रारम्भ 26:55 से	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
5 दिसंबर	पौष कृष्ण 1 शुक्रवार	रोहिणी 13:12 तक	वृष	वृश्चिक	कर्क	8	मकर 10:03-11:47	नक्षत्राभाव	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
5 दिसंबर	पौष कृष्ण 1 शुक्रवार	मृगशिरा 13:12 से	वृष	वृश्चिक	कर्क	6	लग्नाभाव	गोधूलि 17:15-17:39 अग्रे मृत्युबाण	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
4 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 3 बुधवार	उफा 24:07 से	सिंह	मकर	मिथुन	7	नक्षत्राभाव	धनु 27:57-30:02 (भद्रान्त 25:52 तक)	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
5 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 5 गुरुवार	उफा-हस्त	कन्या	मकर	मिथुन	7	वृष 12:14-14:11	गोधूलि 18:07-18:19 (मंगल शुक्र सप्तम दोष)	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
6 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 5 शुक्रवार	हस्त 26:09 तक	कन्या	मकर	मिथुन	8	लग्नाभाव	गोधूलि 17:55-18:19 तुला-वृश्चिक 23:11-27:49	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन

❊ विवाह मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय		चन्द्र शुद्धि 4,8,12 वां निन्दित चन्द्र छोड़कर व अन्य दोषों का विवरण
							दिवा लग्न	रात्रि लग्न	
12 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 10 गुरुवार	मूल 13:40 से	धनु	मकर	मिथुन	6	लग्नाभाव	गोधूलि 18:00-18:24 तुला-वृश्चिक 22:47-27:25	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
20 फरवरी	फाल्गुन शुक्ल 3 शुक्रवार	रेवती 21:11 से	मीन	कुम्भ	मिथुन	8	नक्षत्राभाव	तुला-वृश्चिक पूर्वार्ध 22:17-25:50	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
21 फरवरी	फाल्गुन शुक्ल 4 शनिवार	रेवती 20:12 तक	मीन	कुम्भ	मिथुन	9	मिथुन 13:55-15:22 भद्रान्त 13:55	गोधूलि 18:07-18:31 अग्रे लग्नाभाव	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
❊ पारस्कर गृह्यसूत्रोक्त विवाह मुहूर्त्त 2082 ❊									
21 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 8 सोमवार	श्रवण	मकर	मेष	वृष	7	लग्नाभाव	अन्य गोधूलि 18:38-19:02 वृश्चिक 20:37-22:55(गुरु दान से) कुम्भ 26:43-28:13	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
18 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 6 रविवार	श्रवण 15:47 से	मकर	वृष	मिथुन	8	नक्षत्राभाव भद्रारम्भ 26:16 से	गोधूलि 18:53-19:16 धनु 21:08-23:12 (गुरु दान से, भौम 8 परिहार)	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
24 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 12 शनिवार	अश्विनी 10:46 से	मेष	वृष	मिथुन	10	लग्नाभाव	धनु 20:44-22:48 (गुरु दान से, भौम 8 परिहार)	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन

*************************** शुभ विवाह मुहूर्त्त की अनिवार्यता ***************************

सुन्दर स्वभाव (सदा पति के अनुकूल चलने) वाली स्त्री धर्म, अर्थ एवं काम, इन तीनों वर्गों को देती है और पति को सहयोग देकर तीन ऋणों से मुक्त कराती है। स्त्री की सुशीलता विवाहकालिक लग्न के अधीन है, अर्थात शास्त्रविहित शुभ मुहूर्त्त में विवाह होने से स्त्री का स्वभाव और आचरण पवित्र होता है। इसलिए विवाह मुहूर्त्त का विचार किया जाता है, क्योंकि पुत्र (सुसन्तति), शील (सुन्दर स्वभाव) और धर्म विवाहकालिक लग्न के अधीन होते हैं। यद्यपि जन्मकालिक ग्रहस्थितिवश मानवमात्र (जीवमात्र) को शुभाशुभ फल भोगना अनिवार्य है, तथापि कार्यों में शुभ समयजनित अपूर्व फल से जन्मान्तरीय कर्मजन्य शुभाशुभ फल का उपशमन होकर नया प्रारब्ध बन जाता है, उसका फल तत्काल भोगना पड़ता है। अतः सब जीवों के लिये शुभ समय देखना आवश्यक है। **-मुहूर्त्त चिंतामणि**

✻ उपनयन (यज्ञोपवीत, व्रतबन्ध) मुहूर्त्त 2082 ✻

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

✻ **उपनयन के नाम-** उपनयन को व्रतबन्ध, यज्ञोपवीत या जनेऊ संस्कार भी कहते हैं। इस संस्कार से ब्रह्मविद्या, वेदाध्ययन का अधिकार मिलता है।

✻ **उपनयन की आयु-** पंचम, षष्ठ, अष्टम, एकादश, द्वादश वर्ष में उपनयन कराना चाहिए।

✻ **उपनयन अयन-** उपनयन संस्कार केवल उत्तरायण में ही किया जाता है।

✻ **उपनयन मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मास। (चैत्र मास में केवल ब्राह्मण बटुकों का उपनयन होता है।)

✻ **उपनयन के वार-** रवि, सोम, बुध, गुरू, शुक्र (शनि वर्जित)।

✻ **उपनयन तिथियाँ-** **शुक्लपक्ष-** 2, 3, 5, 10, 11, 12, 13 **कृष्णपक्ष-** 2, 3, 5

✻ **उपनयन नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल 22 नक्षत्र)।

✻ **वर्जित नक्षत्र-** भरणी, कृत्तिका, ज्येष्ठा, विशाखा, मघा (कुल 5 नक्षत्र)।

पुनर्वसु में विप्र बटुकों का उपनयन वर्जित है- *पुनर्वसौ कृतो विप्रः पुनः संस्कारमर्हति।(राजमार्तण्ड)*

✻ **उपनयन लग्न-** 2, 3, 4, 5, 6, 7, 9, 12 ✻ **वर्जित लग्न-** 1, 8, 10, 11

✻ **उपनयन काल-** पूर्वाह्न एवं मध्याह्न (अपराह्न वर्जित)

✻ **उपनयन में बाणदोष-** रोगबाण में उपनयन नहीं होता है (अन्य चार बाणों में होता है) । सूर्य के 8, 17, 26 गतांश पर रोगबाण होता है।

✻ उपनयन में क्रूरग्रहों सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु के वेध को त्यागकर मुहूर्त्त शोधन किया गया है। *''कर्णविधे विवाहे च व्रते पुंसवने तथा। प्राशने चाद्यचूडायां विद्धमृक्षं परित्यजेत्।''*

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	यज्ञोपवीत मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
7 अप्रैल	चैत्र शुक्ल 10 सोमवार	पुष्य-आश्लेषा	वृष-मिथुन 08:12-12:22, सिंह 14:42-16:58	कर्क	मीन	वृष मिथु. कर्क कन्या तुला वृश्चि मकर कुम्भ मीन
9 अप्रैल	चैत्र शुक्ल 12 बुधवार	पूफा	मिथुन 11:39-12:14, सिंह 14:34-16:50	कन्या	मीन	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
14 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 01 सोमवार	स्वाती	वृष-मिथुन 07:44-11:54, सिंह 14:14-16:31	तुला	मेष	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
18 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 05 शुक्रवार	मूल	वृष-मिथुन 10:09-11:38	धनु	मेष	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुम्भ मीन
30 अप्रैल	वैशाख शुक्ल 03 बुधवार	रोहिणी	**अक्षय तृतीया** वृष-मिथुन 06:41-10:51, सिंह 13:11-15:47	वृष	मेष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
7 मई	वैशाख शुक्ल 10 बुधवार	पूफा	वृष-मिथुन 06:14-10:23, सिंह 12:44-15:00	कन्या	मेष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
09 मई	वैशाख शुक्ल 12 शुक्रवार	हस्त	वृष-मिथुन 06:06-10:15, सिंह-कन्या 12:36-15:23	कन्या	मेष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
15 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 3 गुरुवार	मूल	सिंह 12:35-13:18	धनु	वृष	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुम्भ मीन
29 मई	ज्येष्ठ शुक्ल 03 गुरुवार	आर्द्रा	मिथुन 05:36-08:57, सिंह-कन्या 11:17-15:48	मिथुन	वृष	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
5 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 10 गुरुवार	हस्त	**गंगा दशहरा** वृष-मिथुन 05:35-08:29, सिंह 10:49-11:26 (शनिवेध)	कन्या	वृष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
8 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 12 रविवार	स्वाती	वृष-मिथुन 05:34-07:03	तुला	वृष	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
6 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 5 शुक्रवार	हस्त	कुम्भ-मीन 07:39-10:34, वृष-मिथुन 12:10-16:19	कन्या	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
19 फरवरी	फाल्गुन शुक्ल 2 गुरुवार	पूभा	कुम्भ-मीन 07:06-09:42, वृष-मिथुन 11:18-15:28	कुम्भ	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
20 फरवरी	फाल्गुन शुक्ल 3 शुक्रवार	उभा	कुम्भ-मीन 07:05-09:38, वृष-मिथुन 11:14-15:24	मीन	कुम्भ	वृष मिथु कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
5 मार्च	चैत्र कृष्ण 2 गुरुवार	उफा-हस्त	कुम्भ-मीन 06:53-08:47, वृष-मिथुन 10:23-14:33	कन्या	कुम्भ	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन

✻ गृहारम्भ मुहूर्त्त (नींव) 2082 ✻

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

✻ **गृहारम्भ मास-** वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, पौष एवं फाल्गुन

✻ **गृहारम्भ नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल 14 नक्षत्र)

✻ **गृहारम्भ तिथि-** 1, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13, 15 तिथियाँ

✻ **गृहारम्भ वार-** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार

✻ **सूर्यराशि-** जब सूर्य मेष, वृष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर या कुम्भ राशिस्थ हो

✻ **गृहारम्भ में वर्ज्य-** अग्निबाण(सूर्य के 2,11,20,29 गतांश) पंचक और भूशयनदोष (परिहारपूर्वक)

✻ चैत्र, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, कार्तिक और माघ में गृहारम्भ नहीं करना चाहिए।

✻ चैत्र में शोक, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ़ में पशुनाश, भाद्रपद में मृत्यु, आश्विन में कलह, कार्तिक में हानि और माघ में अग्निभय उत्पन्न होता है।

✻ **गृहारम्भ लग्न-** 2, 3, 5, 6, 8, 9, 11, 12

✻ **लग्न शुद्धि-** लग्न से 1, 4, 7, 10, 5, 9 में शुभग्रह, लग्न से 3, 6, 11 में पापग्रह

✻ चक्रशुद्धि सहित मुहूर्त्तों को ✓ चिह्न से दर्शाया गया है, अन्य मुहूर्त्त चक्रशुद्धि रहित हैं।

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	गृहारम्भ नक्षत्र	चक्र शुद्धि	गृहारम्भ मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	नींव की दिशा		चन्द्रराशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
					गृहारम्भ	देवालय		
14 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 2 सोमवार	स्वाती	✓	वृष-मिथुन 07:44-11:54	वायव्य	आग्नेय	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
23 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 11 बुधवार	शतभिषा	-	कन्या 15:55-18:10 (भद्रान्त 11:47 के बाद)	वायव्य	आग्नेय	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
30 अप्रैल	वैशाख शुक्ल 3 बुधवार	रोहिणी	-	वृष-मिथुन 06:41-10:51 (अतिगण्ड आरम्भ 15:47 पूर्व)	वायव्य	आग्नेय	वृष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
1 मई	वैशाख शुक्ल 5 गुरुवार	मृगशिरा	-	कन्या 16:14 से 17:39 (रिक्तान्त/भद्रान्त 16:14 बाद)	वायव्य	आग्नेय	वृष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
9 मई	वैशाख शुक्ल 12 शुक्रवार	हस्त	✓	वृष-मिथुन 06:06-10:15 कन्या 14:52-17:07	वायव्य	आग्नेय	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
17 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 5 शनिवार	उषा 15:13 से	-	कन्या 15:13-16:36	नैऋत्य	आग्नेय	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
19 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 7 सोमवार	श्रवण	-	कन्या 13:55-16:28 (भद्रान्त 13:55 के बाद)	नैऋत्य	आग्नेय	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
23 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 11 शुक्रवार	उभा 12:19 तक	-	वृष-मिथुन 05:38-09:20	नैऋत्य	आग्नेय	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
24 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 12 शनिवार	रेवती 10:46 तक	-	वृष-मिथुन 05:38-09:16	नैऋत्य	आग्नेय	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन

✼ गृहारम्भ मुहूर्त्त (नींव) 2082 ✼

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	गृहारम्भ नक्षत्र	चक्र शुद्धि	गृहारम्भ मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	नींव की दिशा		चन्द्रराशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
					गृहारम्भ	देवालय		
31 मई	ज्येष्ठ शुक्ल 5 शनिवार	पुष्य	-	वृष-मिथुन 05:36-08:49 कन्या 13:26-15:41	नैऋत्य	आग्नेय	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
7 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 12 शनिवार	स्वाती 10:18 से	✓	अभिजित 11:58-12:19 (परिघ आरंभ 12:19 पूर्व)	नैऋत्य	आग्नेय	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
12 जुलाई	श्रावण कृष्ण 2 शनिवार	उषा-श्रवण	✓	मिथुन 05:42-06:01 कन्या 10:41-12:52	नैऋत्य	ईशान	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
21 जुलाई	श्रावण कृष्ण 11 सोमवार	रोहिणी	-	कन्या 10:06-12:21 वृश्चिक 14:40-16:58	नैऋत्य	ईशान	वृष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
9 अगस्त	श्रावण शुक्ल 15 शनिवार	श्रवण-धनिष्ठा	✓	कन्या 08:51-11:06 वृश्चिक-धनु 13:25-17:49	नैऋत्य	ईशान	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
28 अगस्त	भाद्रपद शुक्ल 5 गुरुवार	स्वाती 07:59 से	-	कन्या 07:36-09:51 वृश्चिक-धनु 12:10-16:34	आग्नेय	ईशान	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
29 अगस्त	भाद्रपद शुक्ल 6 शुक्रवार	स्वाती 10:30 तक	-	कन्या 07:32-09:47 वृश्चिक-धनु 12:06-16:30	आग्नेय	ईशान	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
30 अगस्त	भाद्रपद शुक्ल 7 शनिवार	अनुराधा 13:07 से	✓	वृश्चिक-धनु 13:07-14:55 (वैधृति आरंभ 14:55 पूर्व)	आग्नेय	ईशान	वृश्चि.	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
4 सितंबर	भाद्रपद शुक्ल 12 गुरुवार	उषा	✓	कन्या 07:08-09:23 वृश्चिक-धनु 11:42-16:06	आग्नेय	ईशान	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
5 सितंबर	भाद्रपद शुक्ल 13 शुक्रवार	श्रवण 14:06 तक	✓	कन्या 07:04-09:19 वृश्चिक-धनु 11:38-14:06	आग्नेय	ईशान	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
15 अक्टूबर	कार्तिक कृष्ण 10 बुधवार	पुष्य 16:25 तक	-	कुम्भ-मीन 15:09-17:54 (रिक्तान्त 14:16 बाद)	आग्नेय	वायव्य	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
22 अक्टूबर	कार्तिक शुक्ल 1 बुधवार	स्वाती	-	वृश्चिक-धनु 08:33-12:57 कुम्भ-मीन 14:41-17:36	आग्नेय	वायव्य	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
24 अक्टूबर	कार्तिक शुक्ल 3 शुक्रवार	अनुराधा	-	वृश्चिक-धनु 08:25-12:49 कुम्भ-मीन 14:33-17:28	आग्नेय	वायव्य	वृश्चि.	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन

✻ गृहारम्भ मुहूर्त्त (नींव) 2082 ✻

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	गृहारम्भ नक्षत्र	चक्र शुद्धि	गृहारम्भ मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	नींव की दिशा गृहारम्भ	नींव की दिशा देवालय	चन्द्रराशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
31 अक्टूबर	कार्तिक शुक्ल 10 शुक्रवार	शतभिषा 14:23 से	✓	कुम्भ-मीन 14:23-17:01	आग्नेय	वायव्य	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
3 नवंबर	कार्तिक शुक्ल 13 सोमवार	उभा-रेवती	✓	वृश्चिक-धनु 07:45-12:09 कुम्भ-मीन 13:54-16:49	आग्नेय	वायव्य	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
15 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 11 शनिवार	उफा	-	कुम्भ-मीन 13:06-16:01 (वैधृति अंत 10:02 बाद)	आग्नेय	वायव्य	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
21 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 1 शुक्रवार	अनुराधा 13:01 तक	-	वृश्चिक-धनु 06:54-10:58 कुम्भ 12:43-13:01	ईशान	वायव्य	वृश्चि.	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
26 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 6 बुधवार	श्रवण	✓	वृश्चिक-धनु 06:58-10:38 कुम्भ-मीन 12:23-15:18	ईशान	वायव्य	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
27 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 7 गुरुवार	धनिष्ठा	✓	वृश्चिक-धनु 06:59-09:12 कुम्भ-मीन 12:48-15:14 (09:12 पूर्व व 12:48 पश्चात-व्याघात 9 घटी वर्ज्य)	ईशान	वायव्य	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
5 दिसंबर	पौष कृष्ण 1 शुक्रवार	रोहिणी-मृगशिरा	✓	वृश्चिक-धनु 07:05-10:03 कुम्भ-मीन 11:47-14:42	ईशान	वायव्य	वृष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
6 दिसंबर	पौष कृष्ण 2 शनिवार	मृगशिरा 11:39 तक	✓	वृश्चिक-धनु 07:06-09:59 कुम्भ-मीन 11:43-14:38	ईशान	वायव्य	मिथुन	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
6 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 5 शुक्रवार	हस्त	✓	कुम्भ-मीन 07:39-10:34 वृष-मिथुन 12:10-16:19	ईशान	नैऋत्य	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
11 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 10 बुधवार	अनुराधा 11:05 तक	-	मीन 09:51-10:14 (रिक्तांत 09:51 बाद)	ईशान	नैऋत्य	वृश्चि.	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
20 फरवरी	फाल्गुन शुक्ल 3 शुक्रवार	उभा	-	कुम्भ-मीन 07:05-09:38 वृष-मिथुन 11:14-15:24 (रिक्तारम्भ 15:30 पूर्व)	वायव्य	नैऋत्य	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
21 फरवरी	फाल्गुन शुक्ल 5 शनिवार	रेवती	-	मिथुन 13:55-15:20 (रिक्तान्त भद्रान्त 13:55 बाद)	वायव्य	नैऋत्य	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन

❊ नवीन व जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

❊ **नूतन गृहप्रवेश- मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख एवं ज्येष्ठ मास (सौम्यायन) का गृहप्रवेश सर्वोत्तम होता है- *अथ प्रवेशो नवसद्मनश्च सौम्यायने जीवसिते बलाढ्ये (वसिष्ठसंहिता)। अथ सौम्यायने कार्यं नववेश्मप्रवेशनम् (नारदसंहिता)। माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठ मासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्याकार्त्तिक- मासयोः (नारदसंहिता) (सौम्य = मार्गशीर्ष)।*

❊ कार्त्तिक और मार्गशीर्ष में गृहप्रवेश मध्यम बताया गया है।

❊ गृहप्रवेश में चान्द्रमास लिया जाता है, सौरमास नहीं।

❊ **गृहप्रवेश तिथि-** 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13 तिथियाँ

❊ **गृहप्रवेश में वर्जित मास -** चैत्र, आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, पौष में नूतन गृहप्रवेश सर्वथा वर्जित है।

❊ **नूतन गृहप्रवेश नक्षत्र**-रोहिणी, मृगशीर्ष, तीनों उत्तरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती। (कुल8)

❊ **गृहप्रवेश वार -** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार

❊ ❊ ❊ जीर्ण गृहप्रवेश के मुहूर्त्तों में नए घर का गृहप्रवेश नहीं किया जाता है। ❊ ❊ ❊

❊ **जीर्ण गृहप्रवेश-** दूसरे या अपने द्वारा बनाए गए पुराने घर में, अग्नि, जल, राजा आदि के कारण जीर्ण घर को पुनः बनाने के बाद जो गृहप्रवेश किया जाता है, इसे जीर्ण गृहप्रवेश कहा जाता है, पुराने फ्लैट भी इसी के अन्तर्गत आते हैं। जीर्ण गृहप्रवेश में गुरु शुक्र के उदय अस्त, बाल्यावस्था-वृद्धावस्था, सिंह-मकरस्थ गुरु, लुप्त सम्वत्सर आदि का विचार आवश्यक नहीं होता है, '*वेशोअम्बुपेज्यानिलवासवेषु नावश्यमस्तादिविचारणात्र ' (मु.चि.प्रक.13,श्लो.2)*। ग्रहों के वेध से दोषयुक्त मुहूर्त्त भी जीर्ण गृहप्रवेश के अंतर्गत ही दिया गया है। इसमें नवीन गृहप्रवेश के सभी मुहूर्त्तों के अतिरिक्त निम्न मास व नक्षत्र भी ग्राह्य होते हैं:-

❊ **जीर्ण गृहप्रवेश मास-** श्रावण, कार्त्तिक एवं मार्गशीर्ष- *मार्गोर्जयोः श्रावणिकेऽपि सत्स्यात्।*

❊ **जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र -** शतभिषा, पुष्य, स्वाती, धनिष्ठा। *(मु.चि.प्रक.13,श्लो.2)*

❊ भद्रा, व्यतिपात, वैधृति योग, परिघ का आधा मान, शूल योग के प्रारम्भ की 5 घटी, गण्ड व अतिगण्ड योग की 6 घटी, व्याघात की 9 घटी, विष्कुंभ व वज्र की 3-3 घटी, मुहूर्त्त शोधन के समय त्याग दी गई है।

❊ **चक्र शुद्धि-** पंचांग में गृह प्रवेश के मुहूर्त्तों में चक्रशुद्धि सहित मुहूर्त्तों को ✓ के चिह्न से स्पष्ट कर दिया गया है। मुहूर्त्त चिंतामणि के अनुसार सूर्य जिस नक्षत्र में स्थित होता है उस नक्षत्र से मुहूर्त्त के नक्षत्र तक गणना करने पर यदि गणना श्रेष्ठ मिलती है तो ऐसा मुहूर्त कलश चक्र शुद्धि सहित कहलाता है। गणना न मिलने पर चक्र शुद्धि रहित कहलाता है। 1) सूर्य जिस नक्षत्र में स्थित हो तथा उसी नक्षत्र में गृह प्रवेश किया जाय तो घर में अग्नि का भय होता है। (2) उससे अगले चार नक्षत्र तक प्रवेश किया जाय तो ऐसा घर स्थायी नहीं होता। (3) उससे अगले वाले चार नक्षत्र में प्रवेश हो तो ऐसा घर लाभ देता। (4) उससे आगे के चार नक्षत्र में गृह प्रवेश करने पर घर में लक्ष्मी रहती है। (5) उससे आगे के चार नक्षत्र में गृह प्रवेश करने पर घर में अशान्ति रहती है। (6) उससे आगे के चार नक्षत्र में गृह प्रवेश करने घर घर में मन का उच्चाटन रहता है। (7) उससे आगे 6 नक्षत्र में गृह प्रवेश होने पर घर में स्थिरता रहती है। चक्र शुद्धि इसे ही कहते हैं। संक्षिप्त में यह इस प्रकार जाननी चाहिए-सूर्य नक्षत्र से 5 नक्षत्र नेष्ट, 8 श्रेष्ठ, 4 नेष्ट, 6 श्रेष्ठ।

❊ अधिक श्रेष्ठ की कामना वाले निम्न बातों का भी ध्यान रखें- यदि घर पूर्वाभिमुख हो-तिथि-5, 10, 15 हो तथा सूर्य वाम हो अर्थात वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ व मीन का सूर्य हो। (प्रायः 16 नवम्बर से 14 अप्रैल तक) (2) यदि घर दक्षिणाभिमुख हो-तिथि-1, 6, 11 हो। वाम सूर्य-सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक व धनु का सूर्य (प्रायः 17 अगस्त से 14 जनवरी तक) (3) यदि घर पश्चिमाभिमुख हो- तिथि-2, 7, 12 हो। वाम सूर्य-वृष, मिथुन कर्क, सिंह व कन्या का। (प्रायः 15 मई से 17 अक्टूबर तक) (4) यदि घर उत्तराभिमुख हो- तिथि-3, 8, 13 हो वाम सूर्य-कुभ, मीन, मेष, वृष मिथुन हो। (प्रायः 13 फरवरी से 15 जुलाई तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नूतन गृहप्रवेश नक्षत्र	जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र	चक्र शुद्धि	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्रराशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
14 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 02 सोमवार		स्वाती	-	वृष-मिथुन 07:44-11:54 सिंह-कन्या 14:14-18:46	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
23 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 11 बुधवार		शतभिषा	✓	सिंह-कन्या 13:39-18:10 (भद्रान्त 11:47 के बाद)	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
25 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 12 शुक्रवार		उभा राहुयुति	✓	वृष-मिथुन 07:01-09:36 (वैधृति आरम्भ 09:36 पूर्व)	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
30 अप्रैल	वैशाख शुक्ल 03 बुधवार	रोहिणी		-	वृष-मिथुन 06:41-10:51, सिंह-कन्या 13:11-15:47 (अतिगण्ड आरम्भ 15:47 पूर्व)	वृष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन

✻ नवीन व जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त 2082 ✻

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नूतन गृहप्रवेश नक्षत्र	जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र	चक्र शुद्धि	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्रराशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
1 मई	वैशाख शुक्ल 05 गुरुवार	मृगशिरा		-	कन्या 16:14 से 17:39 (रिक्तान्त/भद्रान्त 16:14 बाद) (गुरुयुति)	मिथुन	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
08 मई	वैशाख शुक्ल 12 गुरुवार		उफा केतुयुति	✓	सिंह-कन्या 13:51-17:11 (भद्रांत 13:51 के बाद)	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
10 मई	वैशाख शुक्ल 13 शनिवार		चित्रा राहु-शनि वेध	✓	वृष-मिथुन 06:02-10:12 सिंह-कन्या 12:32-17:03 (रिक्तारम्भ 17:13 पूर्व)	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
14 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 02 बुधवार	अनुराधा 10:36 तक		-	वृष-मिथुन 05:46-09:56 (भौमवेध)	वृश्चिक	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
17 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 05 शनिवार	उषा 15:13 से		-	सिंह-कन्या 15:13-16:36 वृश्चिक 18:54-19:05	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
23 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 11 शुक्रवार	उभा 12:19 तक		✓	वृष-मिथुन 05:38-09:20 सिंह-11:41-12:19	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
23 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 11 शुक्रवार	रेवती 12:19 से		✓	सिंह-कन्या 12:19-16:12 वृश्चिक 18:31-19:08 (रेवती केतुविद्ध)	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
24 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 12 शनिवार	रेवती 10:46 तक		✓	वृष-मिथुन 05:38-09:16	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
31 मई	ज्येष्ठ शुक्ल 05 शनिवार		पुष्य	-	वृष-मिथुन 05:36-08:49 सिंह-कन्या 11:09-15:41, वृश्चिक 17:59-19:12	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
6 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 11 शुक्रवार		चित्रा राहुवेध	✓	सिंह-कन्या 11:46-15:17 (व्यतिपात अंत 11:46 बाद, भद्रारम्भ 16:08 पूर्व)	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
7 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 12 शनिवार		चित्रा स्वाती	✓	वृष-मिथुन 05:34-08:21, सिंह 11:42-12:19 (चित्रा राहुविद्ध 10:18 तक)(परिघ आरंभ 12:19 पूर्व)	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
12 जुलाई	श्रावण कृष्ण 02 शनिवार		उषा 07:18 तक	-	मिथुन 05:42-06:01	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
17 जुलाई	श्रावण कृष्ण 07 गुरुवार		रेवती केतुवेध	-	सिंह-कन्या 08:05-12:36 वृश्चिक-धनु 14:55-19:19 (भद्रांत 07:03 बाद)	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन

✻ नवीन व जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त 2082 ✻

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नूतन गृहप्रवेश नक्षत्र	जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र	चक्र शुद्धि	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्रराशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
21 जुलाई	श्रावण कृष्ण 11 सोमवार		रोहिणी	✓	सिंह-कन्या 07:49-12:21 वृश्चिक-धनु 14:40-19:04	वृष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
25 जुलाई	श्रावण शुक्ल 01 शुक्रवार		पुष्य सूर्ययुति	-	सिंह-कन्या 07:34-12:05 वृश्चिक-धनु 14:24-18:48	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
31 जुलाई	श्रावण शुक्ल 07 गुरुवार		चित्रा राहुवेध	✓	सिंह-कन्या 07:10-11:41 वृश्चिक-धनु 14:00-18:24	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
01 अगस्त	श्रावण शुक्ल 08 शुक्रवार		स्वाती	✓	धनु 16:50-18:21 (भद्रांत 16:50 के बाद)	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
04 अगस्त	श्रावण शुक्ल 10 सोमवार		अनुराधा 08:31 तक	✓	सूर्यवेध सिंह 06:54-08:31	वृश्चिक	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
09 अगस्त	श्रावण शुक्ल 15 शनिवार		धनिष्ठा 15:22 से	-	धनु 15:44-17:49	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
15 अक्टूबर	कार्तिक कृष्ण 10 बुधवार		पुष्य 16:25 तक	✓	कुम्भ-मीन 15:09-17:54 (रिक्तान्त 14:16 बाद)	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
18 अक्टूबर	कार्तिक कृष्ण 13 शनिवार		उफा 17:09 से	✓	वृश्चिक-धनु 08:48-13:13 कुम्भ-मीन 14:57-17:51	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
22 अक्टूबर	कार्तिक शुक्ल 01 बुधवार		स्वाती	-	वृश्चिक-धनु 08:33-12:57 कुम्भ-मीन 14:41-17:36	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
24 अक्टूबर	कार्तिक शुक्ल 03 शुक्रवार		अनुराधा	-	वृश्चिक-धनु 08:25-12:49 कुम्भ-मीन 14:33-17:28	वृश्चिक	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
31 अक्टूबर	कार्तिक शुक्ल 10 शुक्रवार		शतभिषा 14:23 से	✓	कुम्भ-मीन 14:23-17:01	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
01 नवंबर	कार्तिक शुक्ल 11 शनिवार		शतभिषा 14:11 तक	✓	वृश्चिक-धनु 07:53-12:17 (सूर्यवेध)	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
03 नवंबर	कार्तिक शुक्ल 13 सोमवार		उभा-रेवती	✓	वृश्चिक-धनु 07:45-12:09 कुम्भ-मीन 13:54-16:49	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन

❊ नवीन व जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नूतन गृहप्रवेश नक्षत्र	जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र	चक्र शुद्धि	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्रराशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
15 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 11 शनिवार		उफा	✓	कुम्भ-मीन 13:06-16:01 (वैधृति अंत 10:02 बाद)	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
17 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 13 सोमवार		चित्रा शनि-राहु वेध	✓	वृश्चिक-धनु 06:51-11:14 कुम्भ-मीन 12:58-15:53	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
20 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 01 गुरुवार		अनुराधा सूर्ययुति	-	धनु 10:35-11:02, कुम्भ-मीन 12:47-15:42 (अमान्त 10:35 पश्चात)	वृश्चिक	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
21 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 01 शुक्रवार		अनुराधा 13:01 तक	-	वृश्चिक-धनु 06:54-10:58 कुम्भ-मीन 12:43-13:01	वृश्चिक	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
27 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 07 गुरुवार		धनिष्ठा	✓	वृश्चिक-धनु 06:59-09:12, कुम्भ-मीन 12:48-15:14, वृष 16:50-17:23	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
28 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 8 शुक्रवार		शतभिषा	✓	(09:12 पूर्व व 12:48 पश्चात-व्याघात 9 घटी वर्ज्य) वृश्चिक-धनु 06:59-10:30 कुम्भ-मीन 12:15-15:10, वृष 16:46-17:27	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
23 जनवरी	माघ शुक्ल 5 शुक्रवार		उभा 13:53 से	✓	वृष-मिथुन 13:53-17:15	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
24 जनवरी	माघ शुक्ल 6 शनिवार		उभा-रेवती	✓	कुम्भ-मीन 08:30-11:25 वृष-मिथुन 13:01-17:11	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
29 जनवरी	माघ शुक्ल 11 गुरूवार		मृगशिरा भौमवेध	✓	वृष-मिथुन 12:41-16:51 (भद्रान्त 11:57 बाद)	मिथुन	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
7 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 6 शनिवार		चित्रा शनिवेध	-	कुम्भ-मीन 07:35-10:30 वृष-मिथुन 12:06-16:15	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
11 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 10 बुधवार	अनुराधा 11:05 तक		✓	मीन 09:51-10:14 (रिक्तांत 09:51 बाद)	वृश्चिक	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
18 फरवरी	फाल्गुन शुक्ल 1 बुधवार		शतभिषा राहुयुति	-	कुम्भ-मीन 07:07-09:46, वृष-मिथुन 11:22-15:32, सिंह 17:52-18:16	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
20 फरवरी	फाल्गुन शुक्ल 3 शुक्रवार	उभा		-	कुम्भ-मीन 07:05-09:38 वृष-मिथुन 11:14-15:24 (रिक्तारम्भ 15:30 पूर्व)	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
21 फरवरी	फाल्गुन शुक्ल 5 शनिवार	रेवती		-	मिथुन 13:55-15:20, सिंह 17:40-18:19 (रिक्तान्त भद्रान्त 13:55 बाद)	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन

❊ जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

❊ मुहूर्त्त पारिजातोक्त गृहप्रवेश मुहूर्त्त -

मुहूर्त्त पारिजात ग्रन्थ में 5 नक्षत्रों- अश्विनी, पुनर्वसु, हस्त, मूल व श्रवण को भी गृहप्रवेश में ग्राह्य कहा है, कई पंचांगों में इनके आधार पर मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। अपरिहार्य या अधिक आवश्यकता की स्थिति में जीर्ण गृहप्रवेश में स्वमतानुसार इन्हें उपयोग में लिया जा सकता है। इन मुहूर्तों में चक्रशुद्धि नहीं दी जा रही है।

18 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 05 शुक्रवार मूल में 10:09 के बाद। (परिघ का आधा मान वर्ज्य)
	समय- वृष-मिथुन 10:09-11:38, सिंह-कन्या 13:58-18:30
21 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 08 सोमवार श्रवण में 08:07 बाद रिक्तारंभ 13:52 पूर्व।
	समय- वृष-मिथुन 08:07-11:26
3 मई	वैशाख शुक्ल 6 शनिवार पुनर्वसु में शूलारम्भ 08:26 पूर्व व पंचघटी अंत 10:26 बाद।
	समय- वृष 06:29-08:25, सिंह-कन्या 12:59-17:31
09 मई	वैशाख शुक्ल 12 शुक्रवार हस्त में।
	समय- वृष-मिथुन 06:06-10:15, सिंह-कन्या 12:36-17:07
19 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 07 सोमवार श्रवण में भद्रान्त 13:55 के बाद।
	समय- कन्या 13:55-16:28, वृश्चिक 18:47-19:06
24 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 12 शनिवार अश्विनी में 10:46 बाद।
	समय- सिंह-कन्या 11:37-16:08, वृश्चिक 18:27-19:08
5 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 10 गुरुवार हस्त में व्यतीपात आरंभ 11:26 पूर्व। शनिवेध **गंगा दशहरा**
	समय- वृष-मिथुन 05:35-08:29, सिंह 10:49-11:26
12 जुलाई	श्रावण कृष्ण 02 शनिवार श्रवण में 07:18 पश्चात।
	समय- मिथुन 05:42-06:01, सिंह-कन्या 08:21-12:52, वृश्चिक-धनु 15:11-19:20
18 जुलाई	श्रावण कृष्ण 08 शुक्रवार अश्विनी में रिक्तारम्भ 15:34 पूर्व। भौमवेध
	समय- सिंह-कन्या 08:01-12:33, वृश्चिक 14:51-15:34
30 जुलाई	श्रावण शुक्ल 06 बुधवार हस्त में। शनिवेध
	समय- सिंह-कन्या 07:14-11:45, वृश्चिक-धनु 14:04-18:28
6 अगस्त	श्रावण शुक्ल 12 बुधवार मूल अंत 12:37 पूर्व वैधृति अंत 07:54 बाद।
	समय- सिंह-कन्या 07:54-11:18
9 अगस्त	श्रावण शुक्ल 15 शनिवार श्रवण में नक्षत्रांत 15:22 पूर्व। **रक्षाबंधन**
	समय- सिंह-कन्या 06:34-11:06, वृश्चिक 13:25-15:22
27 अक्टूबर	कार्तिक शुक्ल 06 सोमवार मूल अंत 10:22 पूर्व।
	समय- वृश्चिक-धनु 08:13-10:22
29 अक्टूबर	कार्तिक शुक्ल 8 बुधवार श्रवण में भद्रांत 16:10 बाद।
	समय- मीन 16:10-17:09
	समय- वृश्चिक-धनु 06:55-10:54, कुम्भ-मीन 13:30-15:34
26 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 06 बुधवार श्रवण में।
	समय- वृश्चिक-धनु 06:58-10:38, कुम्भ-मीन 12:23-15:18, वृष 16:54-17:27
16 जनवरी	माघ कृष्ण 13 शुक्रवार मूल में।
	समय- कुम्भ-मीन 09:02-11:57, वृष-मिथुन 13:33-17:43
19 जनवरी	माघ शुक्ल 1 सोमवार श्रवण में 12:22 पश्चात।
	समय- वृष-मिथुन 13:21-17:31
26 जनवरी	माघ शुक्ल 8 सोमवार अश्विनी अंत 10:46 पूर्व भद्रान्त 08:00 पश्चात। केतुवेध
	समय- कुम्भ-मीन 08:22-10:46
6 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 5 शुक्रवार हस्त में।
	समय- कुम्भ-मीन 07:39-10:34, वृष-मिथुन 12:10-16:19
12 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 10 गुरुवार मूल आरम्भ 13:40 बाद।
	समय- मिथुन 13:41-15:56
13 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 11 शुक्रवार मूल अंत 16:06 पूर्व।
	समय- कुम्भ-मीन 07:11-10:06, वृष-मिथुन 11:42-15:52

❊ गर्गाचार्य और ज्योतिषशास्त्र की महानता ❊

ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तज्ज्ञानमतीन्द्रियम् । प्रणीतं भवता येन पुमान्वेद परावरम् ।।

- श्रीमद्भागवत महापुराण, दशम स्कन्ध, अष्टम अध्याय, श्लोक 5

श्रीनन्दबाबा महर्षि गर्ग से बोले, ग्रहादि से सम्बन्धित ज्ञान इन्द्रियातीत है। आपने इस ज्ञान को प्रतिपादित करने वाले शास्त्र की रचना की है। इसके द्वारा कोई व्यक्ति भूत और भविष्य से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त कर सकता है। महर्षि गर्ग ने अन्यत्र कहा कि यह शास्त्र परमगति प्रदान करता है -

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्। ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद स याति परमां गतिम् ।।

ज्योतिष् चक्र समस्त लोगों के शुभ और अशुभ का ज्ञान कराता है। जिसे ज्योतिष् विद्या का ज्ञान है, वह परमगति को प्राप्त करता है।

✻ मुण्डन मुहूर्त्त 2082 ✻

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

✻ **मुण्डन के नाम-** मुण्डन को चौल, चूड़ा या वपन कहते हैं।

✻ **मुण्डन काल-** एक वर्ष के भीतर, तीसरे वर्ष या विषम वर्ष में किया जाता है।

✻ **मुण्डन अयन-** मुण्डन उत्तरायण में किया जाता है-

चौलोपवीतं नैवयाम्यायने स्यात्। मुहूर्त्तचिन्तामणि, 5.26

✻ **मुण्डन मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मास में हरिशयनपूर्व

✻ **वर्जित मास-** चैत्र में मुण्डन वर्जित है- *चैत्रे चौलं न कारयेत्।*

✻ **मुण्डन पक्ष-** कृष्णपक्ष में पंचमी तिथि पर्यन्त एवं सम्पूर्ण शुक्लपक्ष में।

✻ **मुण्डन के वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र - *ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम्।*

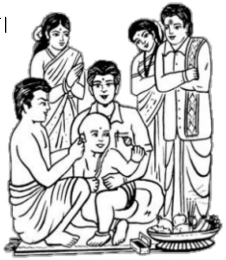

✻ **मुण्डन नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (12 नक्षत्र)। ✻ **मुण्डन समय-** पूर्वाह्न व मध्याह्न

✻ **वर्जित नक्षत्र-** रोहिणी, तीनों उत्तरा एवं अनुराधा (5 नक्षत्र)। इसके अतिरिक्त भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, विशाखा, मूल भी वर्जित हैं ।

✻ **मुण्डन लग्न-** 2, 3, 4, 5, 6, 7, 9, 12 ✻ **वर्जित लग्न-** 1, 8, 10, 11

✻ **मुण्डन तिथियाँ-** 2,3,5,7,10,11,13(कुल 7) ✻ **वर्जित तिथियाँ-**1,4,6, 8, 9,12,14,15, 30

✻ मुण्डन में क्रूरग्रहों सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु के वेध को त्यागकर मुहूर्त्त शोधन किया गया है।

'कणविधे विवाहे च व्रते पुंसवने तथा। प्राशने चाद्यचूडायां विद्धमृक्षं परित्यजेत्।'

मुण्डन वाले 5 वर्ष से छोटे बालक की माता यदि पाँच माह से अधिक गर्भवती हो तो बालक का मुण्डन नहीं करना चाहिए। पहली सन्तान का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए। माता के रजस्वला या प्रसूता (पुत्र जन्म के बाद 20 दिन, कन्या जन्म के बाद 30 दिन तक) होने पर भी मुण्डन नहीं करना चाहिए। किसी धार्मिक स्थल पर, कुलदेवी के यहाँ बिना मुहूर्त के भी मुण्डन कराने की परम्परा लोक में है। विशेष आवश्यकता हेतु मार्गशीर्ष में मुहूर्त दिया जा रहा है। संवत 2082 में निम्न अबूझ मुहूर्त हैं- **चैत्र नवरात्रारम्भ** 30 मार्च, **अक्षय तृतीया** 30 अप्रैल, **गंगादशमी** 5 जून, **भड़ूली नवमी** 4 जुलाई, **देवशयन** 6 जुलाई, **विजयदशमी** 2 अक्टूबर, **धन त्रयोदशी** 18 अक्टूबर, **देव प्रबोधिनी** 1 नवम्बर, **वसन्त पंचमी** 23 जनवरी, **फुलेरा दौज** 19 फरवरी

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	मुण्डन मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
14 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 02 सोमवार	स्वाती	वृष-मिथुन 07:44-11:54 कन्या 16:31-18:46	तुला
17 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 04 गुरुवार	ज्येष्ठा	कन्या 16:19-16:19 (रिक्तांत 12:14 पश्चात)	वृश्चिक
23 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 11 बुधवार	शतभिषा	कन्या 15:55-18:10 (भद्रान्त 11:47 के बाद)	कुम्भ
24 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 11 गुरुवार	शतभिषा 06:47 पूर्व	लग्नाभाव, सूर्योदय 05:59-06:47	कुम्भ
30 अप्रैल	वैशाख शुक्ल 03 बुधवार	रोहिणी	वृष-मिथुन 06:41-10:51 (अक्षय तृतीया, अतिगण्ड आरम्भ 15:47 पूर्व)	वृष
14 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 02 बुधवार	ज्येष्ठा 10:36 के पश्चात	कन्या 13:55-16:28	वृश्चिक
15 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 03 गुरुवार	ज्येष्ठा 12:35 के पूर्व	कन्या 13:55-16:28	वृश्चिक
19 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 07 सोमवार	श्रवण	कन्या 13:55-16:28 (भद्रान्त 13:55 के बाद)	मकर
5 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 10 गुरुवार	हस्त	वृष-मिथुन 05:35-08:29 (व्यतीपात आरंभ 11:26 पूर्व) (गंगा दशहरा, शनिवेध)	तुला
6 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 5 शुक्रवार	हस्त	मीन 09:08-10:34 वृष-मिथुन 12:10-16:19	तुला

❊ कर्णवेध संस्कार मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

❊ **कर्णवेध नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती। ❊ **तिथि-** 2, 3, 5, 6, 7, 10, 12, 13 ❊ **लग्न-** 2, 3, 4, 6, 7, 9, 12

❊ जन्मदिन से 12वें या 16वें दिन, जन्म से 6, 7 या 8वें माह में अथवा जन्म से तीसरे या पांचवे वर्ष में कर्णवेध संस्कार किया जाता है। ❊ **कर्णवेध वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र

❊ चैत्र, व पौष मास में, तिथिक्षय में, व हरिशयन अर्थात् आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक कर्णवेध संस्कार नहीं किया जाता।

❊ **कर्णवेध** में क्रूरग्रहों सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु के वेध को त्यागकर मुहूर्त्त शोधन किया गया है। *'कर्णविधे विवाहे च व्रते पुंसवने तथा। प्राशने चाद्यचूडायां विद्धमृक्षं परित्यजेत्।'*

❊ **संवत् 2082 में निम्न अबूझ मुहूर्त हैं- चैत्र नवरात्रारम्भ** 30 मार्च, **अक्षय तृतीया** 30 अप्रैल, **गंगादशमी** 5 जून, **भडूली नवमी** 4 जुलाई, **देवशयन** 6 जुलाई, **विजयदशमी** 2 अक्टूबर, **धन त्रयोदशी** 18 अक्टूबर, **देव प्रबोधिनी** 1 नवम्बर, **वसन्त पंचमी** 23 जनवरी, **फुलेरा दौज** 19 फरवरी

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	कर्णवेध मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
21 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 08 सोमवार	श्रवण में 08:07 बाद	वृष-मिथुन 08:07-11:26 (रिक्तारंभ 13:52 पूर्व)	मकर
1 मई	वैशाख शुक्ल 05 गुरुवार	मृगशिरा	कन्या 16:14 से 17:39 (रिक्तान्त/भद्रान्त 16:14 बाद) (गुरुयुति दोष)	वृष
09 मई	वैशाख शुक्ल 12 शुक्रवार	हस्त	वृष-मिथुन 06:06-10:15 कन्या 14:52-17:07	तुला
19 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 07 सोमवार	श्रवण	कन्या-तुला 14:13-18:47 (भद्रान्त 13:55 के बाद)	मकर
5 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 10 गुरुवार	हस्त	वृष-मिथुन 05:35-08:29 (व्यतीपात आरंभ 11:26 पूर्व) (गंगा दशहरा, शनिवेध दोष)	तुला
3 नवंबर	कार्तिक शुक्ल 13 सोमवार	रेवती में 12:36 पश्चात	मीन 15:23-16:49	मीन

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	कर्णवेध मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
21 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 01 शुक्रवार	अनुराधा 13:01 पूर्व	धनु 08:53-10:58	वृश्चिक
26 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 06 बुधवार	श्रवण	धनु 08:33-10:38 मीन 13:52-15:18 वृष 16:54-17:27	मकर
27 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 07 गुरुवार	धनिष्ठा	धनु 08:29-09:12 मीन 13:48-15:14 वृष 16:50-17:23 (व्याघात 9 घटी वर्ज्य होने से 09:12 पूर्व व 12:48 पश्चात)	मकर
6 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 5 शुक्रवार	हस्त	मीन 09:08-10:34 वृष-मिथुन 12:10-16:19	तुला
11 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 10 बुधवार	अनुराधा 11:05 पूर्व	मीन 09:51-10:14 (रिक्तांत 09:51 बाद)	वृश्चिक

✻ अन्नप्राशन मुहूर्त्त 2082 ✻

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

✻ **अन्नप्राशन तिथियाँ-** 2,3,5,7,10,13,15 ✻ **अन्नप्राशन वार-** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार ✻ **अन्नप्राशन मास-** षष्ठ मास से आरम्भ कर सम मास बालकों के लिए एवं पंचम से आरम्भ कर विषम मास कन्याओं के लिए ✻ **अन्नप्राशन नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल 16) ✻ **अन्नप्राशन लग्न-** मीन, मेष, वृश्चिक निषेध। ✻ **अन्नप्राशन** में क्रूरग्रहों सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु के वेध को त्यागकर मुहूर्त्त शोधन किया गया है। *''कर्णवेधे विवाहे च व्रते पुंसवने तथा। प्राशने चाद्यचूडायां विद्धमृक्षं परित्यजेत्।''*

संवत 2082 में निम्न अबूझ मुहूर्त हैं- चैत्र नवरात्रारम्भ 30 मार्च, **अक्षय तृतीया** 30 अप्रैल, **गंगादशमी** 5 जून, **भड़ली नवमी** 4 जुलाई, **देवशयन** 6 जुलाई, **विजयदशमी** 2 अक्टूबर, **धन त्रयोदशी** 18 अक्टूबर, **देव प्रबोधिनी** 1 नवम्बर, **वसन्त पंचमी** 23 जनवरी, **फुलेरा दौज** 19 फरवरी

04 अप्रैल चैत्र शुक्ल 07 शुक्रवार मृगशिरा अंत 11:18 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 08:28-11:18

07 अप्रैल चैत्र शुक्ल 10 सोमवार पुष्य अंत 10:05 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 08:12-10:05

14 अप्रैल वैशाख कृष्ण 02 सोमवार स्वाती में।
समय- वृष-मिथुन 07:44-11:54, सिंह-कन्या 14:14-18:46

30 अप्रैल वैशाख शुक्ल 03 बुधवार रोहिणी में अतिगण्ड आरम्भ 15:47 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 06:41-10:51, सिंह-कन्या 13:11-15:47

1 मई वैशाख शुक्ल 05 गुरुवार मृगशिरा में रिक्तान्त/भद्रान्त 16:14 बाद। गुरुयुति
समय- कन्या 16:14 से 17:39

09 मई वैशाख शुक्ल 12 शुक्रवार तिथ्यन्त 15:23 बाद हस्त में।
समय- कन्या 15:23-17:07

19 मई ज्येष्ठ कृष्ण 07 सोमवार श्रवण में भद्रान्त 13:55 के बाद।
समय- कन्या 13:55-16:28

23 जून आषाढ़ कृष्ण 13 सोमवार रोहिणी में 14:37 के पश्चात्। (शूलान्त)
समय- धनु 18:48-19:20

26 जून आषाढ़ शुक्ल 01 गुरुवार पुनर्वसु में द्वितीया आरम्भ 14:32 के बाद।
समय- धनु 18:37-19:21

27 जून आषाढ शुक्ल 02 शुक्रवार पुनर्वसु में 09:36 पूर्व, पुष्य में 09:36 पश्चात्।
समय- मिथुन 05:37-07:03, सिंह-कन्या 09:36-13:55, धनु 18:33-19:21

11 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 02 सोमवार शतभिषा अंत 14:49 तक।
समय- सिंह-कन्या 06:27-10:58, धनु 15:36-14:49

20 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 12 बुधवार पुनर्वसु में तिथ्यन्त 13:59 पश्चात्। गुरुयुति
समय- धनु 15:00-17:05

28 अगस्त भाद्रपद शुक्ल 05 गुरुवार स्वाती में 07:59 पश्चात् तिथ्यन्त 15:38 पूर्व।
समय- सिंह-कन्या 06:06-09:51, धनु 14:28-15:38

05 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 13 शुक्रवार श्रवण में 14:06 पूर्व व 16:30 बाद।
समय- सिंह-कन्या 06:10-09:19, कुम्भ 17:47-18:40

01 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 10 बुधवार उषा में रिक्तान्त 14:06 बाद।
समय- कुम्भ 16:04-17:33

02 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 10 गुरुवार श्रवण में तिथ्यन्त 14:26 पूर्व।
समय- कन्या 06:22-07:33, धनु 09:52-12:10

15 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 10 बुधवार पुष्य अंत 16:25 पूर्व रिक्तान्त 14:16 बाद।
समय- कुम्भ 15:09-16:38

24 अक्टूबर कार्तिक शुक्ल 03 शुक्रवार अनुराधा में।
समय- धनु 10:44-12:49, कुम्भ 14:33-16:03

03 नवंबर कार्तिक शुक्ल 13 सोमवार उभा-रेवती में।
समय- धनु 10:04-12:09, कुम्भ 13:54-15:23

10 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 5 सोमवार पुनर्वसु में 07:33 पूर्व।(अग्रे क्षय तिथि)
समय- धनु 09:36-07:33

21 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 01 शुक्रवार अनुराधा अंत 13:01 पूर्व तिथ्यन्त 12:45 पश्चात्।
समय- कुम्भ 12:45-13:01

27 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 07 गुरुवार धनिष्ठा में 09:12 पूर्व व 12:48 पश्चात्।(व्याघात 9 घटी वर्ज्य)
समय- धनु 08:29-09:12, कुम्भ 12:48-13:48, वृष 16:50-17:23

23 जनवरी माघ शुक्ल 5 शुक्रवार उभा आरम्भ 13:53 बाद।
समय- वृष-मिथुन 13:53-17:15

6 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 5 शुक्रवार हस्त में।
समय- कुम्भ 07:39-09:08, वृष-मिथुन 12:10-16:19

20 फरवरी फाल्गुन शुक्ल 3 शुक्रवार उभा में रिक्तारम्भ 15:30 पूर्व।
समय- कुम्भ 07:05-08:12, वृष-मिथुन 11:14-15:24

26 फरवरी फाल्गुन शुक्ल 10 गुरुवार मृगशिरा अंत 12:28 पूर्व।
समय- कुम्भ 07:00-07:49, वृष 10:51-12:28

4 मार्च चैत्र कृष्ण 1 बुधवार उफा में तिथ्यन्त 16:43 पश्चात्।
समय- सिंह 16:57-18:26

5 मार्च चैत्र कृष्ण 2 गुरुवार उफा-हस्त में 08:05 पूर्व व 10:29 पश्चात्। (गण्ड षड्घटी वर्ज्य)
समय- कुम्भ 06:53-07:21, वृष-मिथुन 10:23-14:33, सिंह 16:53-18:26

✻ देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त 2082 ✻

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

✻ देव प्रतिष्ठा मास- चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ, फाल्गुन (हरिशयनपूर्व) बृहस्पति के मतानुसार पौष और माघ सभी देवों की प्रतिष्ठा हेतु ग्राह्य हैं- *सर्वेषां पौषमाघौ द्वौ विबुधस्थापने शुभौ।* आषाढ़ यजमान विनाशक, श्रावण राज्य-राष्ट्रनाशक, भाद्रपद पृथ्वीनाशक, आश्विन राज्यनाशक, कार्तिक एवं मार्गशीर्ष शत्रुवर्धक (बृहदैवज्ञरंजन)।

✻ देव प्रतिष्ठा नक्षत्र- अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल 16 नक्षत्र)।
जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशशाङ्क शुक्रे। दृश्ये मृदुक्षिप्रचरध्रुवे स्यात् पक्षेसिते स्वर्क्षतिथिक्षणे वा।। मु.चि.,2.61

✻ देव प्रतिष्ठा तिथि- 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13, 15 *द्वितीयसादिद्वयोः पञ्चम्यादितः तिसृषु क्रमात् । दशम्यादिचतसृषु पौर्णमास्यां विशेषतः।। - नारदसंहिता*
मुहूर्त्त चिन्तामणि के अनुसार प्रतिमा प्रतिष्ठा रिक्ता तिथि (4, 9, 14) को छोड़कर सभी तिथियाँ ग्राह्य हैं- रिक्तारवर्जे अर्थात् 1, 8 तिथि भी ग्राह्य है।

✻ उग्रदेव प्रतिष्ठा- काली, नृसिंह, वराह, वामन, महिषवाहिनी, महाविद्या, श्मशानदेवता, भैरव आदि की प्रतिष्ठा दक्षिणायन में भी होती है (वैखानससंहिता)।

✻ विशेषदेवता प्रतिष्ठा- **विष्णु-** पुष्य, श्रवण, अभिजित्, कन्या। **सूर्य-** हस्त नक्षत्र, सिंह लग्न। **चन्द्रादि अष्टग्रह-** पुष्य नक्षत्र। **ब्रह्मा-** पुष्य, श्रवण, अभिजित्, कुम्भ।
शिव-पार्वती- पुष्य, श्रवण, अभिजित्, मिथुन। **दुर्गा-** मूल नक्षत्र। **कुबेर-कार्तिकेय-** अनुराधा नक्षत्र। **✻ देव प्रतिष्ठा लग्न-** 2, 3, 5, 6, 8, 11, 12

✻ देव प्रतिष्ठा वार- सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि। **✻ मंगलवार** को निषेध है। **देव प्रतिष्ठा** में क्रूरग्रहों सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु के वेध को त्यागकर मुहूर्त्त शोधन किया गया है।

03 अप्रैल चैत्र शुक्ल 06 गुरुवार रोहिणी में।
समय- वृष-मिथुन 08:28-12:37, सिंह-कन्या 14:58-18:42

04 अप्रैल चैत्र शुक्ल 07 शुक्रवार मृगशिरा अंत 11:18 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 08:28-11:18

07 अप्रैल चैत्र शुक्ल 10 सोमवार पुष्य अंत 10:05 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 08:12-10:05

14 अप्रैल वैशाख कृष्ण 02 सोमवार स्वाती में।
समय- वृष-मिथुन 07:44-11:54, सिंह-कन्या 14:14-18:46

20 अप्रैल वैशाख कृष्ण 07 रविवार उषा आरम्भ 07:40 के बाद।
समय- वृष-मिथुन 07:40-11:30, सिंह-कन्या 13:51-18:22

21 अप्रैल वैशाख कृष्ण 08 सोमवार श्रवण में 08:07 बाद रिक्तारंभ 13:52 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 08:07-11:26

23 अप्रैल वैशाख कृष्ण 11 बुधवार शतभिषा में भद्रान्त 11:47 के बाद।
समय- सिंह-कन्या 13:39-18:10

30 अप्रैल वैशाख शुक्ल 03 बुधवार रोहिणी में अतिगण्ड आरम्भ 15:47 पूर्व।
समयः वृष-मिथुन 06:41-10:51, सिंह-कन्या 13:11-15:47

3 मई वैशाख शुक्ल 6 शनिवार पुनर्वसु में शूलारम्भ 08:26 पूर्व व पंचघटी अंत 10:26 के बाद।
समय- वृष 06:29-08:25, सिंह-कन्या 12:59-17:31

09 मई वैशाख शुक्ल 12 शुक्रवार हस्त में।
समय- वृष-मिथुन 06:06-10:15, सिंह-कन्या 12:36-17:07

17 मई ज्येष्ठ कृष्ण 05 शनिवार उषा आरंभ 15:13 के बाद।
समय- सिंह-कन्या 15:13-16:36, वृश्चिक 18:54-19:05

18 मई ज्येष्ठ कृष्ण 06 रविवार उषा-श्रवण में। (श्रवण 15:47 तक)
समय- वृष-मिथुन 05:30-09:40, सिंह-कन्या 12:00-16:32, वृश्चिक 18:50-19:05

19 मई ज्येष्ठ कृष्ण 07 सोमवार श्रवण में भद्रान्त 13:55 के बाद।
समय- कन्या 13:55-16:28, वृश्चिक 18:47-19:06

23 मई ज्येष्ठ कृष्ण 11 शुक्रवार उभा में 12:19 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 05:38-09:20, सिंह-11:41-12:19

24 मई ज्येष्ठ कृष्ण 12 शनिवार रेवती-अश्विनी में।(रेवती 10:46 तक)
समय- वृष-मिथुन 05:38-09:16 सिंह-कन्या 11:37-16:08, वृश्चिक 18:27-19:08

31 मई ज्येष्ठ शुक्ल 05 शनिवार पुष्य में।
समयः वृष-मिथुन 05:36-08:49, सिंह-कन्या 11:09-15:41, वृश्चिक 17:59-19:12

7 जून ज्येष्ठ शुक्ल 12 शनिवार स्वाती में 10:18 बाद परिघ आरंभ 12:19 पूर्व।
समय- सिंह 11:42-12:19

8 जून ज्येष्ठ शुक्ल 12-13 रविवार स्वाती अंत 12:55 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 05:34-08:18, सिंह 10:38-12:55

12 जुलाई श्रावण कृष्ण 02 शनिवार उषा-श्रवण में। (उ.षा.07:18 तक)
समय- मिथुन 05:42-06:01, सिंह-कन्या 08:21-12:52, वृश्चिक-धनु 15:11-19:20

13 जुलाई श्रावण कृष्ण 03 रविवार श्रवण-धनिष्ठा में भद्रारम्भ 13:20 पूर्व। (श्रवण 07:36तक)
समय- मिथुन 05:43-06:01, सिंह-कन्या 08:21-12:52

21 जुलाई श्रावण कृष्ण 11 सोमवार रोहिणी में।
समय- सिंह-कन्या 07:49-12:21, वृश्चिक-धनु 14:40-19:04

01 अगस्त श्रावण शुक्ल 08 शुक्रवार स्वाती में भद्रांत 16:50 के बाद।
समय- धनु 16:50-18:21

❊ देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

03 अगस्त श्रावण शुक्ल 10 रविवार अनुराधा में रिक्तांत 07:51 बाद।
समय- सिंह-कन्या 07:51-11:30, वृश्चिक-धनु 13:48-18:13

09 अगस्त श्रावण शुक्ल 15 शनिवार श्रवण/धनिष्ठा में।
समय- सिंह-कन्या 06:34-11:06, वृश्चिक-धनु 13:25-17:49

22 सितंबर आश्विन शुक्ल 01 सोमवार हस्त में 11:05 पश्चातब।
समय- कन्या 06:17-08:12, वृश्चिक-धनु 10:31-14:55, कुम्भ 16:40-18:09

24 सितंबर आश्विन शुक्ल 03 बुधवार स्वाती में 15:04 के बाद।
समय- कुम्भ 16:32-18:01

27 सितंबर आश्विन शुक्ल 05-06 शनिवार अनुराधा में।
समय- कन्या 06:19-07:52, वृश्चिक-धनु 10:11-14:36, कुम्भ 16:20-17:49

1 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 10 बुधवार उषा में रिक्तान्त 14:06 बाद।
समय- कुम्भ-मीन 16:04-18:10

2 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 10 गुरुवार श्रवण में।
कन्या 06:22-07:33, वृश्चिक-धनु 09:52-14:16, कुम्भ-मीन 16:00-18:09

3 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 11 शुक्रवार धनिष्ठा में भद्रांत 14:16 बाद।
समय- कुम्भ-मीन 15:56-18:08

12 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 06 रविवार मृगशिरा में परिघ प्रारंभ 17:12 पूर्व।
कन्या 06:27-06:53, वृश्चिक-धनु 09:12-13:36, कुम्भ-मीन 15:21-17:12

15 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 10 बुधवार पुष्य अंत 16:25 पूर्व रिक्तान्त 14:16 बाद।
समय- कुम्भ-मीन 15:09-17:54

18 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 13 शनिवार उफा आरम्भ 17:09 के बाद।
समय- वृश्चिक-धनु 08:48-13:13, कुम्भ-मीन 14:57-17:51

19 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 13 रविवार उफा में भद्रारम्भ 13:25 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 08:44-13:09, कुम्भ-मीन 14:53-17:48

22 अक्टूबर कार्तिक शुक्ल 01 बुधवार स्वाती में।
समय- वृश्चिक-धनु 08:33-12:57, कुम्भ-मीन 14:41-17:36

24 अक्टूबर कार्तिक शुक्ल 03 शुक्रवार अनुराधा में।
समय- वृश्चिक-धनु 08:25-12:49, कुम्भ-मीन 14:33-17:28

29 अक्टूबर कार्तिक शुक्ल 8 बुधवार श्रवण में भद्रांत 16:10 बाद।
समय- मीन 16:10-17:09

31 अक्टूबर कार्तिक शुक्ल 10 शुक्रवार शतभिषा में 14:23 पश्चातब।
समय- कुम्भ-मीन 14:23-17:01

2 नवंबर कार्तिक शुक्ल 12 रविवार उभा आरम्भ 13:34 बाद।
समय- कुम्भ-मीन 13:58-16:53

3 नवंबर कार्तिक शुक्ल 13 सोमवार उभा-रेवती में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:45-12:09, कुम्भ-मीन 13:54-16:49

10 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 5 सोमवार पुनर्वसु में 07:33 पूर्व।(अग्रे क्षय तिथि)
समय- वृश्चिक-धनु 07:17-07:33

15 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 11 शनिवार उफा में वैधृति अंत 10:02 बाद।
समय- कुम्भ-मीन 13:06-16:01

16 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 12 रविवार हस्त में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:54-11:18, कुम्भ-मीन 13:02-15:57

21 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 01 शुक्रवार अनुराधा अंत 13:01 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 06:54-10:58, कुम्भ-मीन 12:43-15:38, वृष

26 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 06 बुधवार श्रवण में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:58-10:38, कुम्भ-मीन 12:23-15:18, वृष 16:54-17:27

27 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 07 गुरुवार धनिष्ठा में 09:12 पूर्व व 12:48 पश्चात। (व्याघात 9 घटी वर्ज्य)
समय- वृश्चिक-धनु 06:59-09:12, कुम्भ-मीन 12:48-15:14, वृष 16:50-17:23

28 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 8 शुक्रवार शतभिषा में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:59-10:30, कुम्भ-मीन 12:15-15:10, वृष 16:46-17:27

30 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 10 रविवार उभा में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:01-10:23, कुम्भ-मीन 12:07-15:02, वृष 16:38-17:26

5 दिसंबर पौष कृष्ण 01 शुक्रवार रोहिणी-मृगशिरा में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:05-10:03, कुम्भ-मीन 11:47-14:42, वृष 16:18-17:27

6 दिसंबर पौष कृष्ण 02 शनिवार मृगशिरा अंत 11:39 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 07:06-09:59, कुम्भ-मीन 11:43-14:38, वृष 16:14-17:23

7 दिसंबर पौष कृष्ण 03 रविवार पुनर्वसु आरंभ 10:16 से भद्रारंभ 11:33 तक।
समय- वृश्चिक-धनु 07:06-09:55, कुम्भ-मीन 11:39-14:34, वृष 16:10-17:19

12 दिसंबर पौष कृष्ण 08 शुक्रवार उफा आरंभ 08:27 बाद।
समय- धनु 08:27-09:35, कुम्भ-मीन 11:20-14:15, वृष 15:51-17:28

14 दिसंबर पौष कृष्ण 10 रविवार हस्त में भद्रारम्भ 07:53 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 07:11-07:53

6 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 5 शुक्रवार हस्त में।
समय- कुम्भ-मीन 07:39-10:34, वृष-मिथुन 12:10-16:19

20 फरवरी फाल्गुन शुक्ल 3 शुक्रवार उभा में रिक्तारम्भ 15:30 पूर्व।
समय- कुम्भ-मीन 07:05-09:38, वृष-मिथुन 11:14-15:24

21 फरवरी फाल्गुन शुक्ल 5 शनिवार रेवती में रिक्तान्त भद्रान्त 13:55 बाद।
समय- मिथुन 13:55-15:20, सिंह 17:40-18:19

❊ प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

❊ सन्तानोत्पत्ति के छठवें एवं बारहवें दिन प्रसूतिका स्नान करती है। इसे लोक में छठी एवं बरही का स्नान कहते हैं। यह संस्कार अनिवार्य कृत्य होने के कारण आवश्यक करणीय है। **प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त में लग्न शुद्धि विचार आवश्यक नहीं है।** स्नान के दिन चन्द्रमा की दिशा का विचार किया जाता है। स्नान करते समय चन्द्रमा प्रसूतिका के सम्मुख या दक्षिण होना चाहिए।

❊ **स्नान के नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, रेवती।

❊ **स्नान में मध्यम नक्षत्र-** आश्लेषा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा।

❊ **स्नान की तिथियाँ-**1, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13, 15, 30।

❊ **स्नान में त्याज्य नक्षत्र-** भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, चित्रा, विशाखा, मूल, श्रवण।

❊ **स्नान के वार-** रवि, मंगल, बृहस्पति। रवीज्यकुजेषु शस्तम्। मुहूर्त्तचिन्तामणि, 5/12।

❊ **स्नान में त्याज्य-** रिक्तातिथि 4, 9, 14 तथा 6, 8, 12 तिथियाँ। भद्रा एवं वैधृतिदोष।

❊ प्रसूतिका स्नान का अर्थ जनन अशौच की निवृत्ति नहीं होता है, जनन अशौच की निवृत्ति दश रात्रि बीतने के पश्चात् ही होती है।

30 मार्च	चैत्र शुक्ल 1 रविवार रेवती में। **समय-** 06:25-18:40
10 अप्रैल	चैत्र शुक्ल 13 गुरुवार पूफा में। **समय-** 06:13-18:45
17 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 4 गुरुवार रिक्ता बाद ज्येष्ठा में। **समय-** 12:14-18:49
20 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 7 रविवार उषा में। **समय-** 06:02-14:13
22 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 9 मंगलवार रिक्ता बाद भद्रापूर्व धनिष्ठा में। **समय-** 13:02-18:51
01 मई	वैशाख शुक्ल 4 गुरुवार रिक्ता भद्रा बाद मृगशिरा में। **समय-** 16:14-18:56
08 मई	वैशाख शुक्ल 11 गुरुवार भद्राबाद उफा में। **समय-** 13:51-19:00
15 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 3 गुरुवार भद्रापूर्व ज्येष्ठा मे। **समय-** 05:42-12:35
22 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 10 गुरुवार भद्रापूर्व पूभा में। **समय-** 05:39-09:35
25 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 13 रविवार अश्विनी में। **समय-** 05:37-09:08
08 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 12 रविवार स्वाती में। **समय-** 05:34-12:55
08 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल 1 मंगलवार ज्येष्ठा में। **समय-**05:41-19:21
10 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल 15 गुरुवार भद्रा बाद पूषा में। **समय-**13:29-19:21
13 जुलाई	श्रावण कृष्ण 3 रविवार भद्रापूर्व धनिष्ठा में। **समय-** 07:36-13:20
15 जुलाई	श्रावण कृष्ण 5 मंगलवार पूभा में। **समय-** 05:44-19:20
17 जुलाई	श्रावण कृष्ण 7 गुरुवार भद्राबाद रेवती में। **समय-** 07:03-17:55
27 जुलाई	श्रावण शुक्ल 03 रविवार पूफा में। **समय-** 17:52-19:15
29 जुलाई	श्रावण शुक्ल 05 मंगलवार उफा में। **समय-** 05:51-19:14
03 अगस्त	श्रावण शुक्ल 09 रविवार रिक्ताबाद अनुराधा में। **समय-** 07:51-19:11
07 अगस्त	श्रावण शुक्ल 13 गुरुवार पूषा में। **समय-** 05:56-13:19
10 अगस्त	भाद्रपद कृष्ण 1 रविवार धनिष्ठा में। **समय-** 05:57-19:05
24 अगस्त	भाद्रपद शुक्ल 1 रविवार पूफा में। **समय-** 06:04-18:53
26 अगस्त	भाद्रपद शुक्ल 3 मंगलवार रिक्तापूर्व हस्त में। **समय-** 06:05-12:27
28 अगस्त	भाद्रपद शुक्ल 5 गुरुवार स्वाती में। **समय-** 07:59-15:38
04 सितंबर	भाद्रपद शुक्ल 12 गुरुवार उषा में। **समय-** 06:09-18:41
08 सितंबर	आश्विन कृष्ण 2 मंगलवार पूभा-उभा में। **समय-** 06:11-18:37
11 सितंबर	आश्विन कृष्ण 4 गुरुवार रिक्ताबाद अश्विनी में। **समय-** 15:41-17:37
14 सितंबर	आश्विन कृष्ण 7 रविवार रोहिणी में। **समय-** 06:14-08:26
23 सितंबर	आश्विन शुक्ल 2 मंगलवार हस्त में। **समय-** 06:18-12:52
28 सितंबर	आश्विन शुक्ल 6 रविवार ज्येष्ठा में। **समय-** 10:15-18:13
05 अक्टूबर	आश्विन शुक्ल 13 रविवार पूभा में। **समय-** 06:23-12:29
07 अक्टूबर	आश्विन शुक्ल 15 मंगलवार रेवती में। **समय-** 06:24-18:03
19 अक्टूबर	कार्त्तिक कृष्ण 13 रविवार रिक्ताभद्रापूर्व उफा में। **समय-** 13:24-17:50
26 अक्टूबर	कार्त्तिक शुक्ल 5 रविवार ज्येष्ठा में। **समय-** 06:35-08:14
28 अक्टूबर	कार्त्तिक शुक्ल 07 मंगलवार उषा में। **समय-** 06:36-17:42
02 नवंबर	कार्त्तिक शुक्ल 12 रविवार उभा में। **समय-** 06:40-17:38
16 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 12 रविवार हस्त में। **समय-** 06:50-17:30
25 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 5 मंगलवार उषा में। **समय-** 06:57-17:27
27 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 7 गुरुवार धनिष्ठा में। **समय-** 06:59-09:12
30 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 10 रविवार उभा में। **समय-** 07:01-17:26
02 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 12 मंगलवार अश्विनी में। **समय-** 07:03-17:26
11 दिसंबर	पौष कृष्ण 7 गुरुवार पूफा में। **समय-** 07:57-17:28

✻ प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त 2082 ✻

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

14 दिसंबर पौष कृष्ण 10 रविवार भद्रापूर्व इस्त में।
समय- 07:11-07:53

21 दिसंबर पौष शुक्ल 1 रविवार पूषा में।
समय- 07:16-17:31

01 जनवरी पौष शुक्ल 13 गुरुवार रोहिणी में।
समय- 07:21-17:38

08 जनवरी माघ कृष्ण 5 गुरुवार पूफा में।
समय- 07:22-10:18

15 जनवरी माघ कृष्ण 12 गुरुवार ज्येष्ठा में।
समय- 07:23-17:49

20 जनवरी माघ शुक्ल 2 मंगलवार व्यतिपातपूर्व धनिष्ठा में।
समय- 13:28-17:53

25 जनवरी माघ शुक्ल 7 रविवार रेवती में।
समय- 07:21-17:57

29 फरवरी माघ शुक्ल 11 गुरुवार भद्राबाद मृगशिरा में।
समय- 11:57-18:01

08 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 7 रविवार भद्राबाद स्वाती में।
समय- 16:52-18:09

12 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 10 गुरुवार ज्येष्ठा में।
समय- 12:00-13:40

19 फरवरी फाल्गुन शुक्ल 2 गुरुवार पूभा में।
समय- 07:06-18:17

22 फरवरी फाल्गुन शुक्ल 5 रविवार अश्विनी में।
समय- 07:03-12:01

26 फरवरी फाल्गुन शुक्ल 10 गुरुवार मृगशिरा में।
समय- 07:00-12:28

03 मार्च फाल्गुन शुक्ल 15 मंगलवार पूफा में।
समय- 07:36-18:25

05 मार्च चैत्र कृष्ण 2 गुरुवार हस्त में।
समय- 06:53-18:26

08 मार्च चैत्र कृष्ण 5 रविवार स्वाती में।
समय- 06:50-13:15

10 मार्च चैत्र कृष्ण 7 मंगलवार भद्राबाद अनुराधा में।
समय-11:34-18:29

गृहप्रवेश से सम्बंधित विशेष विवरण

✻ रत्नादि का स्थान - प्रासाद के शिरोभाग में, शिलान्यास से जुड़ी दीवारों में, प्रत्येक तल के बीच में, मण्डप में, मध्यभाग में, सभागार में, शिखर पर पद्म के नीचे, गोपुरों के शीर्ष भाग में प्रासाद के सदृश रत्न स्थापित करने चाहिए।

✻ वास्तुदेवता बलि - स्थापक को बलि का अन्न, जौ अन्न, खिचड़ी, गुड़, चावल, काला एवं लाल चावल, ये सभी वास्तुदेवता के आगे रखकर दही, दूध, घी, शहद, रत्न, पुष्प, अक्षत एवं जल और केले से युक्त पात्र लेकर अन्य शिल्पियों के साथ रात्रि में इन पदार्थों द्वारा वास्तुदेवता को बलि प्रदान करनी चाहिए। मयमतम 18.184

✻ स्थूपिका कीलों को स्थापित करते समय यह प्रार्थना करे :-

धाराधिपातात् सलिलप्रकोपाद् दंष्ट्रया निपातात् पवनप्रकोपात् । अग्नेश्च दाहान्मुषितापचाराद् रक्षत्विदं सद्म शिवं च मे ऽस्तु ।।
निरुजा मुदिता सघना प्रथिता यशसा महदद्भुतवीर्ययुता । सततं निरुपद्रवकर्मयुता पृथिवी पृथु जीवतु धर्मविधेः ।।
ब्रह्मा विष्णुः शङ्करः सर्वदेवाः क्षोणी लक्ष्मीर्वाग्वधूः सिंहकेतुः । विश्वेदेवदेव्यः प्रजानां श्रीसौभाग्यारोग्यभोग्यं कृषीरन् ।।

हे ईश्वर, इस भवन की गिरने से, जल के प्रकोप से, गजादि पशुओं के दाँत से गिरने से, वायु के प्रकोप से, अग्नि द्वारा जलने से एवं चोरों से रक्षा कीजिये और मेरा कल्याण कीजिए। रोगरहित, प्रसन्नता, धनयुक्त, कीर्ति का विस्तार करने वाली, बड़े चमत्कारों से एवं बल से युक्त, विना उपद्रव के निरन्तर कर्म से युक्त यह पृथिवी चिरकाल तक धर्मपूर्वक रहे। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सभी देवता, क्षोणी (पृथिवी), लक्ष्मी, वाग्वधू (सरस्वती), सिंहकेतु, ज्येष्ठा, विश्वेदेव तथा देवियाँ प्रजाजनों को श्री सौभाग्य, आरोग्य एवं भोग प्रदान करें।

इस प्रकार कहने के पश्चात स्थपति का कार्य पूर्ण हो जाता है। इसके बाद स्थापक को विधिपूर्वक यज्ञ आदि कार्य से तथा घट के जल, पय, कुश के जल में प्रोक्षण कर प्रासाद को शुद्ध करना चाहिए।

✻ सम्प्रोक्षण की महत्ता - स्थपति को चन्दन के जल से, अगरु के जल से, गंधयुक्त जल से, कलश जल एवं कुश के जल से ऊपर से चारों ओर प्रोक्षण करके संसार के स्वामी की स्तुति करे। इस तरह निर्मित वास्तु युगों तक नित्य वृद्धि को प्राप्त होता है। यजमान को इस लोक व परलोक में स्थिर फल भलीभांति प्राप्त होता है। अन्य विधि से वास्तुकृत्य फलदायी नहीं होता और उस भवन में भूत प्रेत पिशाच एवं राक्षस निवास करते हैं। इसलिए प्रासाद का प्रोक्षण कर्म अवश्य करना चाहिए। मण्डप में, सभा में, रङ्गमण्डप में, विहारशाला में, हेमगर्भ के सभागार में, तुलाभारकूट में, विश्वकोष्ठ में, जलस्थान में, धान्यगृह में तथा रसोई में विधिपूर्वक वास्तुदेव को बलि प्रदान कर पवित्र चित्त एवं आत्मा से पाँच अङ्गों में आभूषण धारण कर, नवीन वस्त्र पहन कर तथा नवीन उत्तरीय धारण कर सभी प्रकार के मङ्गल स्वर के साथ जलसम्प्रोक्षण कर्म सम्पन्न करना चाहिए।

तिथि, नक्षत्र और वार में वर्जित पदार्थ - सप्तमी के दिन तेल को छूना भी नहीं चाहिए, नीले वस्त्र नहीं पहनना चाहिए, आँवलों से स्नान करे और कलह नहीं करे और सप्तमी के दिन तांबे के पात्र में भोजन नहीं करना चाहिए। प्रतिपदा, षष्ठी, और एकादशी, इन नंदा तिथियों में तेल उबटन आदि को वर्जित करना चाहिए। चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी इन रिक्ता तिथियों में क्षौरकर्म नहीं करना चाहिए। तृतीया, अष्टमी, और त्रयोदशी इन जया तिथियों में शूद्र आदि को भी माँस नहीं खाना चाहिए। पंचमी, दशमी, और पूर्णिमा इन पूर्णा तिथियों में स्त्रीसंग नहीं करना चाहिए। रविवार को तेल आदि नहीं लगाना। मंगलवार को क्षौर नहीं कराना। बुधवार को स्त्रीसंग नहीं करना। चित्रा, हस्त, और श्रवण इन नक्षत्रों में तेल वर्जित करना। विशाखा और प्रतिपदा में क्षौर नहीं कराना। मघा, कृत्तिका, और तीनों उत्तरा में स्त्रीसंग नहीं करना। सप्तमी तिथि में तिलों का भक्षण और तिलों से तर्पण नहीं करना। अष्टमी में नारियल, नवमी में तूंबी, दशमी में परवल, एकादशी में मोठ, द्वादशी में मसूर, त्रयोदशी में बैंगन अथवा कटेली का फल ये सब वर्ज देने चाहिए। पूर्णिमा, अमावस, संक्रांति, चतुर्दशी और अष्टमी में तेल, मांस, स्त्रीसंग करने से मनुष्य चांडालयोनि में उपजता है। पूर्णिमा, अमावस, संक्रांति, द्वादशी और श्राद्धदिन में वस्त्रों को नहीं निचोड़ना। रात्रि में गाय का गोबर, मिट्टी, पानी को नहीं लाना। गोमूत्र प्रदोषकाल में ग्रहण नहीं करना। अमावस्या आदि पर्वों में शांति के लिए अवश्य ही तिलों का होम करना। अपनी रक्षा के लिए दान आदि भी करना। पर्वदिन में अध्ययन करना नहीं और पवित्रता, आचमन, ब्रह्मचर्य बनाकर रहना। प्रतिपदा, अमावस्या, षष्ठी, नवमी इन तिथियों में, श्राद्धदिन में, जन्मदिन में, व्रत में, उपवास में, रविवार में और मध्याह्न स्नान के समय में काष्ठ से दंतधावन करना वर्जित है। जो दातुन नहीं मिले और निषिद्ध दिन हो तब पानी के 12 कुल्ले करे। यहाँ सब जगह निषेधों में तिथि आदि तत्कालव्यापिनी लेनी चाहिए।

❊ नामकरण एवं जातकर्म संस्कार मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

❊ **तिथियाँ-** 1,2,3,5,6,7,10,11,12,13 ❊ **वार-** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार ❊ **समय-** कुलपरम्परा अनुसार

❊ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल 16)

संवत 2082 में निम्न अबूझ मुहूर्त हैं- चैत्र नवरात्रारम्भ 30 मार्च, **अक्षय तृतीया** 30 अप्रैल, **गंगादशमी** 5 जून, **भडूली नवमी** 4 जुलाई, **देवशयन** 6 जुलाई, **विजयदशमी** 2 अक्टूबर, **धन त्रयोदशी** 18 अक्टूबर, **देव प्रबोधिनी** 1 नवम्बर, **वसन्त पंचमी** 23 जनवरी, **फुलेरा दौज** 19 फरवरी

चैत्र शुक्ल पक्ष

03 अप्रैल चैत्र शुक्ल 06 गुरुवार रोहिणी में।
समय- वृष-मिथुन 08:28-12:37, सिंह-कन्या 14:58-18:42

04 अप्रैल चैत्र शुक्ल 07 शुक्रवार मृगशिरा अंत 11:18 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 08:28-11:18

07 अप्रैल चैत्र शुक्ल 10 सोमवार पुष्य अंत 10:05 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 08:12-10:05

10 अप्रैल चैत्र शुक्ल 13 गुरुवार उफा आरम्भ 13:10 बाद। केतुयुति
समय- सिंह-कन्या 14:30-18:45

वैशाख कृष्णपक्ष

14 अप्रैल वैशाख कृष्ण 02 सोमवार स्वाती में।
समय- वृष-मिथुन 07:44-11:54, सिंह-कन्या 14:14-18:46

23 अप्रैल वैशाख कृष्ण 11 बुधवार शतभिषा में भद्रान्त 11:47 के बाद।
समय- सिंह-कन्या 13:39-18:10

25 अप्रैल वैशाख कृष्ण 12 शुक्रवार उभा में वैधृति आरम्भ 09:36 पूर्व। राहुयुति
समय- वृष-मिथुन 07:01-09:36

वैशाख शुक्लपक्ष

30 अप्रैल वैशाख शुक्ल 03 बुधवार रोहिणी में अतिगण्ड आरम्भ 15:47 पूर्व।
समयः वृष-मिथुन 06:41-10:51, सिंह-कन्या 13:11-15:47

1 मई वैशाख शुक्ल 05 गुरुवार मृगशिरा में रिक्तान्त/भद्रान्त 16:14 बाद। गुरुयुति
समयः कन्या 16:14 से 17:39

08 मई वैशाख शुक्ल 12 गुरुवार उफा में भद्रांत 13:51 के बाद। केतुयुति
समय- सिंह-कन्या 13:51-17:11

09 मई वैशाख शुक्ल 12 शुक्रवार हस्त में।
समय- वृष-मिथुन 06:06-10:15, सिंह-कन्या 12:36-17:07

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

14 मई ज्येष्ठ कृष्ण 02 बुधवार अनुराधा में 10:36 पूर्व। भौमवेध
समय- वृष-मिथुन 05:46-09:56

19 मई ज्येष्ठ कृष्ण 07 सोमवार श्रवण में भद्रान्त 13:55 के बाद।
समय- कन्या 13:55-16:28, वृश्चिक 18:47-19:06

23 मई ज्येष्ठ कृष्ण 11 शुक्रवार उभा में 12:19 पूर्व। अग्रे रेवती केतुविद्ध
समय- वृष-मिथुन 05:38-09:20, सिंह-11:41-12:19

23 मई ज्येष्ठ कृष्ण 11 शुक्रवार रेवती में 12:19 पश्चात। रेवती केतुविद्ध
समय- सिंह-कन्या 12:19-16:12, वृश्चिक 18:31-19:08

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

5 जून ज्येष्ठ शुक्ल 10 गुरुवार हस्त में व्यतीपात आरंभ 11:26 पूर्व। शनिवेध
समय- वृष-मिथुन 05:35-08:29, सिंह 10:49-11:26

6 जून ज्येष्ठ शुक्ल 11 शुक्रवार चित्रा में. व्यतिपात अंत 11:46 बाद, भद्रारम्भ 16:08 पूर्व।
समय- सिंह-कन्या 11:46-15:17 राहुवेध

श्रावण कृष्ण

17 जुलाई श्रावण कृष्ण 07 गुरुवार रेवती में भद्रांत 07:03 बाद। केतुवेध
समय- सिंह-कन्या 08:05-12:36, वृश्चिक-धनु 14:55-19:19

21 जुलाई श्रावण कृष्ण 11 सोमवार रोहिणी में।
समय- सिंह-कन्या 07:49-12:21, वृश्चिक-धनु 14:40-19:04

श्रावण शुक्ल

25 जुलाई श्रावण शुक्ल 01 शुक्रवार पुष्य में। सूर्ययुति
समय- सिंह-कन्या 07:34-12:05, वृश्चिक-धनु 14:24-18:48

30 जुलाई श्रावण शुक्ल 06 बुधवार हस्त में। शनिवेध
समय- सिंह-कन्या 07:14-11:45, वृश्चिक-धनु 14:04-18:28

31 जुलाई श्रावण शुक्ल 07 गुरुवार चित्रा में। राहुवेध
समय- सिंह-कन्या 07:10-11:41, वृश्चिक-धनु 14:00-18:24

4 अगस्त श्रावण शुक्ल 10 सोमवार अनुराधा अंत 08:31 पूर्व। सूर्यविध
समय- सिंह 06:54-08:31

भाद्रपद कृष्ण

11 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 02 सोमवार शतभिषा अंत 14:49 तक।
समय- सिंह-कन्या 06:27-10:58, वृश्चिक-धनु 13:17-14:49

14 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 06 गुरुवार अश्विनी में 11:20 बाद। पूर्वे रेवती केतुविद्ध
समय- वृश्चिक-धनु 13:09-17:33

20 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 12 बुधवार पुनर्वसु में। गुरुयुति
समय- सिंह-कन्या 06:02-10:22, वृश्चिक-धनु 12:41-17:05

✻ नामकरण एवं जातकर्म संस्कार मुहूर्त्त 2082 ✻

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

भाद्रपद शुक्ल

25 अगस्त भाद्रपद शुक्ल 02 सोमवार उफा में। केतुयुति
समय- सिंह-कन्या 06:05-10:07, वृश्चिक-धनु 12:25-16:50, कुम्भ 18:34-18:52

27 अगस्त भाद्रपद शुक्ल 05 बुधवार चित्रा में रिक्तांत -भद्रान्त 13:53 बाद। राहुवेध
समय- सिंह-कन्या 06:06-09:55, वृश्चिक-धनु 12:14-16:38, कुम्भ 18:22-18:50

28 अगस्त भाद्रपद शुक्ल 05 गुरुवार स्वाती में 07:59 पश्चात।
समय- सिंह-कन्या 06:06-09:51, वृश्चिक-धनु 12:10-16:34, कुम्भ 18:18-18:49

29 अगस्त भाद्रपद शुक्ल 06 शुक्रवार स्वाती अंत 10:30 पूर्व।
समय- सिंह-कन्या 06:07-09:47, वृश्चिक-धनु 12:06-16:30, कुम्भ 18:14-18:48

4 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 12 गुरुवार उषा में।
समय- सिंह-कन्या 06:09-09:23, वृश्चिक-धनु 11:42-16:06, कुम्भ 17:51-18:41

5 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 13 शुक्रवार श्रवण में 14:06 पूर्व व 16:30 बाद।
समय- सिंह-कन्या 06:10-09:19, वृश्चिक-धनु 11:38-14:06, कुम्भ 17:47-18:40

आश्विन शुक्ल

22 सितंबर आश्विन शुक्ल 01 सोमवार हस्त में 11:05 पश्चात। पूर्वे उफा सूर्ययुति
समय- कन्या 06:17-08:12, वृश्चिक-धनु 10:31-14:55, कुम्भ 16:40-18:09

24 सितंबर आश्विन शुक्ल 03 बुधवार चित्रा-स्वाती में। राहु-शनि वेध चित्रा में 15:04 तक
समय- कन्या 06:18-8:04, वृश्चिक-धनु10:23-14:47, कुम्भ 16:32-18:01

1 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 10 बुधवार उषा में रिक्तान्त 14:06 बाद।
समय- कुम्भ-मीन 16:04-18:10

2 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 10 गुरुवार श्रवण में।
समय- कन्या 06:22-07:33, वृश्चिक-धनु 09:52-14:16, कुम्भ-मीन 16:00-18:09

3 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 11 शुक्रवार धनिष्ठा में भद्रांत 14:16 बाद।
समय- कुम्भ-मीन 15:56-18:08

कार्तिक कृष्ण

15 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 10 बुधवार पुष्य अंत 16:25 पूर्व रिक्तान्त 14:16 बाद।
समय- कुम्भ-मीन 15:09-17:54

कार्तिक शुक्ल

22 अक्टूबर कार्तिक शुक्ल 01 बुधवार स्वाती में।
समय- वृश्चिक-धनु 08:33-12:57, कुम्भ-मीन 14:41-17:36

24 अक्टूबर कार्तिक शुक्ल 03 शुक्रवार अनुराधा में।
समय- वृश्चिक-धनु 08:25-12:49, कुम्भ-मीन 14:33-17:28

31 अक्टूबर कार्तिक शुक्ल 10 शुक्रवार शतभिषा में 14:23 पश्चात। पूर्वे धनिष्ठा भौमविद्ध
समय- कुम्भ-मीन 14:23-17:01

03 नवंबर कार्तिक शुक्ल 13 सोमवार उभा-रेवती में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:45-12:09, कुम्भ-मीन 13:54-16:49

मार्गशीर्ष कृष्ण

17 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 13 सोमवार चित्रा में। शनि-राहु वेध
समय- वृश्चिक-धनु 06:51-11:14, कुम्भ-मीन 12:58-15:53

20 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 01 गुरुवार अनुराधा में अमान्त 10:35 पश्चात। सूर्ययुति
समय- धनु 10:35-11:02, कुम्भ-मीन 12:47-15:42

मार्गशीर्ष शुक्ल

21 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 01 शुक्रवार अनुराधा अंत 13:01 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 06:54-10:58, कुम्भ-मीन 12:43-13:01

26 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 06 बुधवार श्रवण में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:58-10:38, कुम्भ-मीन 12:23-15:18, वृष 16:54-17:27

27 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 07 गुरुवार धनिष्ठा में 09:12 पूर्व व 12:48 पश्चात। (व्याघात 9 घटी वर्ज्य)
समय- वृश्चिक-धनु 06:59-09:12, कुम्भ-मीन 12:48-15:14, वृष 16:50-17:23

पौष कृष्ण

5 दिसंबर पौष कृष्ण 01 शुक्रवार रोहिणी-मृगशिरा में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:05-10:03, कुम्भ-मीन 11:47-14:42, वृष 16:18-17:27

फाल्गुन कृष्ण

6 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 5 शुक्रवार हस्त में।
समय- कुम्भ-मीन 07:39-10:34, वृष-मिथुन 12:10-16:19

फाल्गुन शुक्ल

18 फरवरी फाल्गुन शुक्ल 1 बुधवार शतभिषा में। राहुयुति
समय- कुम्भ-मीन 07:07-09:46, वृष-मिथुन 11:22-15:32, सिंह 17:52-18:16

20 फरवरी फाल्गुन शुक्ल 3 शुक्रवार उभा में रिक्तारम्भ 15:30 पूर्व।
समय- कुम्भ-मीन 07:05-09:38, वृष-मिथुन 11:14-15:24

चैत्र कृष्ण

4 मार्च चैत्र कृष्ण 1 बुधवार उफा आरम्भ 07:46 से 09:11 पूर्व व 11:11 के बाद। (शूल पंचघटी वर्ज्य)
समय- कुम्भ-मीन 07:46-08:51, वृष-मिथुन 11:11-14:37, सिंह 16:57-18:26

5 मार्च चैत्र कृष्ण 2 गुरुवार उफा-हस्त में 08:05 पूर्व व 10:29 पश्चात। (गण्ड षड्घटी वर्ज्य)
समय- कुम्भ-मीन 06:53-08:47, वृष-मिथुन 10:23-14:33, सिंह 16:53-18:26

9 मार्च चैत्र कृष्ण 6 सोमवार अनुराधा आरम्भ 15:37 पश्चात।
समय- सिंह 16:37-18:28

❊ वाहन खरीदने का मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

❊ **तिथि:** 2,3,5,7,10,11,12,13,15❊ **पक्ष:** शुक्ल व कृष्ण ❊ **वार:** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि ❊ **नक्षत्र:** अश्विनी, स्वाति, चित्रा, रेवती, शतभिषा, श्रवण, मृगशिरा, मूल, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, धनिष्ठा, अनुराधा *(मुहूर्त्त चिन्तामणि)* ❊ **संवत 2082 में निम्न अबूझ मुहूर्त हैं- चैत्र नवरात्रारम्भ** 30 मार्च, **अक्षय तृतीया** 30 अप्रैल, **गंगादशमी** 5 जून, **भड़ूली नवमी** 4 जुलाई, **देवशयन** 6 जुलाई, **विजयदशमी** 2 अक्टूबर, **धन त्रयोदशी** 18 अक्टूबर, **देव प्रबोधिनी** 1 नवम्बर, **वसन्त पंचमी** 23 जनवरी, **फुलेरा दौज** 19 फरवरी

30 मार्च	चैत्र शुक्ल 1-2 रविवार रेवती में। *केतुवेध, सूर्ययुति* **समय**- वृष-मिथुन 08:43-12:53, सिंह-कन्या 15:13-18:40
03 अप्रैल	चैत्र शुक्ल 06 गुरुवार रोहिणी में। **समय**- वृष-मिथुन 08:28-12:37, सिंह-कन्या 14:58-18:42
04 अप्रैल	चैत्र शुक्ल 07 शुक्रवार मृगशिरा अंत 11:18 पूर्व। **समय**- वृष-मिथुन 08:28-11:18
05 अप्रैल	चैत्र शुक्ल 08 शनिवार पुनर्वसु में भद्रान्त 13:01 बाद। *भौमयुति* **समय**- सिंह-कन्या 14:50-18:43
07 अप्रैल	चैत्र शुक्ल 10 सोमवार पुष्य अंत 10:05 पूर्व। **समय**- वृष-मिथुन 08:12-10:05
10 अप्रैल	चैत्र शुक्ल 13 गुरुवार उफा आरम्भ 13:10 बाद। केतुयुति **समय**- सिंह-कन्या 14:30-18:45
12 अप्रैल	चैत्र शुक्ल 15 शनिवार हस्त-चित्रा में भद्रांत 15:42 बाद। *हस्त में राहुवेध, चित्रा में शनिवेध* **समय**- सिंह-कन्या 15:42-18:46
13 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 01 रविवार चित्रा में। शनिवेध **समय**- वृष-मिथुन 07:48-11:58, सिंह-कन्या 14:18-18:47
14 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 02 सोमवार स्वाती में। **समय**- वृष-मिथुन 07:44-11:54, सिंह-कन्या 14:14-18:46
18 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 05 शुक्रवार मूल में 10:09 के बाद। (परिघ का आधा मान वर्ज्य) **समय**- वृष-मिथुन 10:09-11:38, सिंह-कन्या 13:58-18:30
20 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 07 रविवार उषा आरम्भ 07:40 के बाद। **समय**- वृष-मिथुन 07:40-11:30, सिंह-कन्या 13:51-18:22
21 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 08 सोमवार श्रवण में 08:07 बाद रिक्तारंभ 13:52 पूर्व। **समय**- वृष-मिथुन 08:07-11:26
23 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 11 बुधवार शतभिषा में भद्रान्त 11:47 के बाद। **समय**- सिंह-कन्या 13:39-18:10
25 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 12 शुक्रवार उभा में वैधृति आरम्भ 09:36 पूर्व। *राहुयुति* **समय**- वृष-मिथुन 07:01-09:36
30 अप्रैल	वैशाख शुक्ल 03 बुधवार रोहिणी में अतिगण्ड आरम्भ 15:47 पूर्व। **समय**ः वृष-मिथुन 06:41-10:51, सिंह-कन्या 13:11-15:47
1 मई	वैशाख शुक्ल 05 गुरुवार मृगशिरा में रिक्तान्त/भद्रान्त 16:14 बाद। *गुरुयुति* **समय**ः कन्या 16:14 से 17:39
3 मई	वैशाख शुक्ल 06 शनिवार पुनर्वसु में शूलारम्भ 08:26 पूर्व व पंचघटी अंत 10:26 के बाद। **समय**- वृष 06:29-08:25, सिंह-कन्या 12:59-17:31
4 मई	वैशाख शुक्ल 07 रविवार पुष्य में प्रारम्भ 12:25 पूर्व। भौमयुति **समय**- वृष-मिथुन 06:25-10:35
8 मई	वैशाख शुक्ल 12 गुरुवार उफा में भद्रांत 13:51 के बाद। केतुयुति **समय**- सिंह-कन्या 13:51-17:11
9 मई	वैशाख शुक्ल 12 शुक्रवार हस्त में। **समय**- वृष-मिथुन 06:06-10:15, सिंह-कन्या 12:36-17:07
10 मई	वैशाख शुक्ल 13 शनिवार चित्रा में रिक्तारम्भ 17:13 पूर्व। राहु-शनि वेध **समय**- वृष-मिथुन 06:02-10:12, सिंह-कन्या 12:32-17:03
12 मई	वैशाख शुक्ल 15 सोमवार विशाखा में भद्रान्त 08:16 बाद। **समय**- वृष-मिथुन 08:16-10:04, सिंह-कन्या 12:24-16:55
14 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 02 बुधवार अनुराधा में 10:36 पूर्व। भौमवेध **समय**- वृष-मिथुन 05:46-09:56
17 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 05 शनिवार उषा आरंभ 15:13 के बाद। **समय**- सिंह-कन्या 15:13-16:36, वृश्चिक 18:54-19:05
18 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 06 रविवार उषा में 15:47 पूर्व। **समय**- वृष-मिथुन 05:30-09:40, सिंह-कन्या 12:00-15:47
18 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 06 रविवार श्रवण में 15:47 पश्चात। **समय**- कन्या 15:47-16:32, वृश्चिक 18:50-19:05
19 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 07 सोमवार श्रवण में भद्रान्त 13:55 के बाद। **समय**- कन्या 13:55-16:28, वृश्चिक 18:47-19:06
23 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 11 शुक्रवार उभा-रेवती में। रेवती केतुविद्ध **समय**- वृष-मिथुन 05:38-09:20, सिंह-कन्या 11:41-16:12, वृश्चिक 18:31-19:08
24 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 12 शनिवार रेवती-अश्विनी में। **समय**- वृष-मिथुन 05:38-09:16, सिंह-कन्या 11:37-16:08, वृश्चिक 18:27-19:08
31 मई	ज्येष्ठ शुक्ल 05 शनिवार पुष्य में। **समय**ः वृष-मिथुन 05:36-08:49, सिंह-कन्या 11:09-15:41, वृश्चिक 17:59-19:12

❊ वाहन खरीदने का मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

5 जून ज्येष्ठ शुक्ल 10 गुरुवार हस्त में व्यतीपात आरंभ 11:26 पूर्व। शनिवेध
समय- वृष-मिथुन 05:35-08:29, सिंह 10:49-11:26

6 जून ज्येष्ठ शुक्ल 11 शुक्रवार चित्रा में. व्यतिपात अंत 11:46 बाद, भद्रारम्भ 16:08 पूर्व। राहुवेध
समय- सिंह-कन्या 11:46-15:17

7 जून ज्येष्ठ शुक्ल 12 शनिवार स्वाती में 10:18 बाद परिघ आरंभ 12:19 पूर्व। पूर्वे चित्रा राहुविद्ध
समय- सिंह 11:42-12:19

8 जून ज्येष्ठ शुक्ल 12-13 रविवार स्वाती अंत 12:55 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 05:34-08:18, सिंह 10:38-12:55

12 जून आषाढ़ कृष्ण 01 -02 गुरुवार मूल में।
समय- वृष-मिथुन 05:34-8:02, सिंह-कन्या 10:22-14:54, वृश्चिक 17:12-19:17

16 जून आषाढ़ कृष्ण 05-06 रविवार धनिष्ठा में वैधृति अंत 10:15 बाद।
समय- सिंह-कन्या 10:15-14:38, वृश्चिक 16:57-19:18

21 जून आषाढ़ कृष्ण 11 शनिवार अश्विनी अंत 17:22 पूर्व।
समय- मिथुन 05:35-07:27, सिंह-कन्या 09:47-14:18, वृश्चिक 16:37-17:22

23 जून आषाढ़ कृष्ण 13 सोमवार रोहिणी में 14:37 के पश्चात। (शूलान्त)
समय- वृश्चिक-धनु 16:29-19:20

25 जून आषाढ़ कृष्ण 30 बुधवार मृगशिरा अंत 11:17 पूर्व। (अमावस्या)
समय- मिथुन 05:36-07:11, सिंह 09:31-11:17

26 जून आषाढ़ शुक्ल 01-02 गुरुवार पुनर्वसु आरम्भ 10:16 के बाद।
समय- सिंह-कन्या 10:16-13:59, वृश्चिक-धनु 16:18-19:21

27 जून आषाढ शुक्ल 02 शुक्रवार पुनर्वसु में 09:36 पूर्व, पुष्य में 09:36 पश्चात।
समय- मिथुन 05:37-07:03, सिंह-कन्या 09:36-13:55, वृश्चिक-धनु 16:14-19:21

28 जून आषाढ शुक्ल 03 शनिवार पुष्य अंत 09:20 पूर्व।
समय- मिथुन 05:37-06:59

2 जुलाई आषाढ शुक्ल 07 बुधवार उफा में अप्रारम्भ 13:16 पूर्व। केतुयुति
समय- मिथुन 05:38-06:44, सिंह-कन्या 09:04-13:35, वृश्चिक-धनु 15:54-19:21

3 जुलाई आषाढ शुक्ल 08 गुरुवार हस्त में 08:20 बाद रिक्तारम्भ 14:42 पूर्व। शनियुति
समय- सिंह-कन्या 09:00-13:31

4 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 10 शुक्रवार चित्रा-स्वाती में । चित्राराहुविद्ध
समय- मिथुन 05:39-06:36, सिंह-कन्या 08:56-13:27, वृश्चिक-धनु 15:46-19:21

5 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 10 शनिवार स्वाती में।
समय- मिथुन 05:39-06:32, सिंह-कन्या 08:52-13:24, वृश्चिक-धनु 15:42-19:21

07 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 12 सोमवार अनुराधा में।
समय- मिथुन 05:40-06:24, सिंह-कन्या 08:44-13:16, वृश्चिक-धनु 15:35-19:59

12 जुलाई श्रावण कृष्ण 02 शनिवार श्रवण में 07:18 पश्चात।
समय- मिथुन 05:42-06:01, सिंह-कन्या 08:21-12:52, वृश्चिक-धनु 15:11-19:20

13 जुलाई श्रावण कृष्ण 03 रविवार श्रवण-धनिष्ठा में भद्रारम्भ 13:20 पूर्व। (श्रवण 07:36तक)
समय- सिंह-कन्या 08:21-12:52

17 जुलाई श्रावण कृष्ण 07 गुरुवार रेवती में भद्रांत 07:03 बाद। केतुवेध
समय- सिंह-कन्या 08:05-12:36, वृश्चिक-धनु 14:55-19:19

18 जुलाई श्रावण कृष्ण 08 शुक्रवार अश्विनी में रिक्तारम्भ 15:34 पूर्व। भौमवेध
समय- सिंह-कन्या 08:01-12:33, वृश्चिक 14:51-15:34

21 जुलाई श्रावण कृष्ण 11 सोमवार रोहिणी में।
समय- सिंह-कन्या 07:49-12:21, वृश्चिक-धनु 14:40-19:04

25 जुलाई श्रावण शुक्ल 01 शुक्रवार पुष्य में। सूर्ययुति
समय- सिंह-कन्या 07:34-12:05, वृश्चिक-धनु 14:24-18:48

30 जुलाई श्रावण शुक्ल 06 बुधवार हस्त में। शनिवेध
समय- सिंह-कन्या 07:14-11:45, वृश्चिक-धनु 14:04-18:28

31 जुलाई श्रावण शुक्ल 07 गुरुवार चित्रा में। राहुवेध
समय- सिंह-कन्या 07:10-11:41, वृश्चिक-धनु 14:00-18:24

01 अगस्त श्रावण शुक्ल 08 शुक्रवार स्वाती में भद्रांत 16:50 के बाद।
समय- धनु 16:50-18:21

03 अगस्त श्रावण शुक्ल 10 रविवार अनुराधा में रिक्तांत 07:51 बाद।
समय- सिंह-कन्या 07:51-11:30, वृश्चिक-धनु 13:48-18:13

6 अगस्त श्रावण शुक्ल 12 बुधवार मूल अंत 12:37 पूर्व वैधृति अंत 07:54 बाद।
समय- सिंह-कन्या 07:54-11:18

09 अगस्त श्रावण शुक्ल 15 शनिवार श्रवण/धनिष्ठा में।
समय- सिंह-कन्या 06:34-11:06, वृश्चिक-धनु 13:25-17:49

10 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 01 रविवार धनिष्ठा- शतभिषा में।
समय- सिंह-कन्या 06:30-11:02, वृश्चिक-धनु 13:21-17:45

11 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 02 सोमवार शतभिषा अंत 14:49 तक।
समय- सिंह-कन्या 06:27-10:58, वृश्चिक-धनु 13:17-14:49

14 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 06 गुरुवार अश्विनी में 11:20 बाद। पूर्वे रेवती केतुविद्ध
समय- वृश्चिक-धनु 13:09-17:33

❊ वाहन खरीदने का मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

20 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 12 बुधवार पुनर्वसु में। गुरुयुति
समय- सिंह-कन्या 06:02-10:22, वृश्चिक-धनु 12:41-17:05

25 अगस्त भाद्रपद शुक्ल 02 सोमवार उफा में। केतुयुति
समय- सिंह-कन्या 06:05-10:07, वृश्चिक-धनु 12:25-16:50, कुम्भ 18:34-18:52

27 अगस्त भाद्रपद शुक्ल 05 बुधवार चित्रा में रिक्तांत -भद्रान्त 13:53 बाद। राहुवेध
समय- सिंह-कन्या 06:06-09:55, वृश्चिक-धनु 12:14-16:38, कुम्भ 18:22-18:50

28 अगस्त भाद्रपद शुक्ल 05 गुरुवार स्वाती में 07:59 पश्चात।
समय- सिंह-कन्या 06:06-09:51, वृश्चिक-धनु 12:10-16:34, कुम्भ 18:18-18:49

29 अगस्त भाद्रपद शुक्ल 06 शुक्रवार स्वाती अंत 10:30 पूर्व।
समय- सिंह-कन्या 06:07-09:47, वृश्चिक-धनु 12:06-16:30, कुम्भ 18:14-18:48

30 अगस्त भाद्रपद शुक्ल 07 शनिवार अनुराधा आरंभ 13:07 वाद वैधृति आरंभ 14:55 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 13:07-14:55

04 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 12 गुरुवार उषा में।
समय- सिंह-कन्या 06:09-09:23, वृश्चिक-धनु 11:42-16:06, कुम्भ 17:51-18:41

05 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 13 शुक्रवार श्रवण में 14:06 पूर्व व 16:30 बाद।
समय- सिंह-कन्या 06:10-09:19, वृश्चिक-धनु 11:38-14:06, कुम्भ 17:47-18:40

07 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 15 रविवार शतभिषा में भद्रांत 12:10 बाद।
समय- वृश्चिक-धनु 12:10-15:34, कुम्भ 17:39-18:38

22 सितंबर आश्विन शुक्ल 01 सोमवार हस्त में 11:05 पश्चात। पूर्वे उफा सूर्ययुति
समय- कन्या 06:17-08:12, वृश्चिक-धनु 10:31-14:55, कुम्भ 16:40-18:09

24 सितंबर आश्विन शुक्ल 03 बुधवार चित्रा-स्वाती में। राहु-शनि वेध चित्रा में 15:04 तक
समय- कन्या 06:18-8:04, वृश्चिक-धनु10:23-14:47, कुम्भ 16:32-18:01

27 सितंबर आश्विन शुक्ल 05-06 शनिवार अनुराधा में।
समय- कन्या 06:19-07:52, वृश्चिक-धनु 10:11-14:36, कुम्भ 16:20-17:49

29 सितंबर आश्विन शुक्ल 07 सोमवार मूल में भद्रारम्भ 11:57 पूर्व।
समय- कन्या 06:20-07:44, वृश्चिक 10:03-11:57

01 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 10 बुधवार उषा में रिक्तान्त 14:06 बाद।
समय- कुम्भ-मीन 16:04-18:10

02 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 10 गुरुवार श्रवण में।
समय- कन्या 06:22-07:33, वृश्चिक-धनु 09:52-14:16, कुम्भ-मीन 16:00-18:09

03 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 11 शुक्रवार धनिष्ठ में भद्रांत 14:16 बाद।
समय- कुम्भ-मीन 15:56-18:08

12 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 06 रविवार मृगशिरा में परिघ प्रारंभ 17:12 पूर्व।
समय- कन्या 06:27-06:53, वृश्चिक-धनु 09:12-13:36, कुम्भ-मीन 15:21-17:12

15 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 10 बुधवार पुष्य अंत 16:25 पूर्व रिक्तान्त 14:16 बाद।
समय- कुम्भ-मीन 15:09-17:54

18 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 13 शनिवार उफा आरम्भ 17:09 के बाद।
समय- वृश्चिक-धनु 08:48-13:13, कुम्भ-मीन 14:57-17:51

19 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 13 रविवार उफा में भद्रारम्भ 13:25 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 08:44-13:09, कुम्भ-मीन 14:53-17:48

22 अक्टूबर कार्तिक शुक्ल 01 बुधवार स्वाती में।
समय- वृश्चिक-धनु 08:33-12:57, कुम्भ-मीन 14:41-17:36

24 अक्टूबर कार्तिक शुक्ल 03 शुक्रवार अनुराधा में।
समय- वृश्चिक-धनु 08:25-12:49, कुम्भ-मीन 14:33-17:28

26 अक्टूबर कार्तिक शुक्ल **समय**- 05 रविवार मूल आरंभ 08:14 बाद।
समय- वृश्चिक-धनु 08:17-12:41, कुम्भ-मीन 14:26-17:21

27 अक्टूबर कार्तिक शुक्ल 06 सोमवार मूल अंत 10:22 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 08:13-10:22

29 अक्टूबर कार्तिक शुक्ल 8 बुधवार श्रवण में भद्रांत 16:10 बाद।
समय- मीन 16:10-17:09

31 अक्टूबर कार्तिक शुक्ल 10 शुक्रवार शतभिषा में 14:23 पश्चात। पूर्वे धनिष्ठा भौमविद्ध
समय- कुम्भ-मीन 14:23-17:01

01 नवंबर कार्तिक शुक्ल 11 शनिवार शतभिषा अंत 14:11 पूर्व। सूर्यविध
समय- वृश्चिक-धनु 07:53-12:17

02 नवंबर कार्तिक शुक्ल 12 रविवार उभा आरम्भ 13:34 बाद।
समय- कुम्भ-मीन 13:58-16:53

03 नवंबर कार्तिक शुक्ल 13 सोमवार उभा-रेवती में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:45-12:09, कुम्भ-मीन 13:54-16:49

15 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 11 शनिवार उफा में वैधृति अंत 10:02 बाद।
समय- कुम्भ-मीन 13:06-16:01

16 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 12 रविवार हस्त में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:54-11:18, कुम्भ-मीन 13:02-15:57

17 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 13 सोमवार चित्रा में। शनि-राहु वेध
समय- वृश्चिक-धनु 06:51-11:14, कुम्भ-मीन 12:58-15:53

❊ वाहन खरीदने का मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

20 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 01 गुरुवार अनुराधा में अमान्त 10:35 पश्चात। सूर्ययुति
समय- धनु 10:35-11:02, कुम्भ-मीन 12:47-15:42

21 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 01 शुक्रवार अनुराधा अंत 13:01 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 06:54-10:58, कुम्भ-मीन 12:43-15:38, वृष

23 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 03 रविवार मूल में 11:30 पूर्व व 13:30 से रिक्तान्त 16:32 पूर्व। (शूल पञ्च घटी वर्ज्य)
समय- वृश्चिक-धनु 06:55-10:54, कुम्भ-मीन 13:30-15:34

26 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 06 बुधवार श्रवण में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:58-10:38, कुम्भ-मीन 12:23-15:18, वृष 16:54-17:27

27 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 07 गुरुवार धनिष्ठा में 09:12 पूर्व व 12:48 पश्चात। (व्याघात 9 घटी वर्ज्य)
समय- वृश्चिक-धनु 06:59-09:12, कुम्भ-मीन 12:48-15:14, वृष 16:50-17:23

28 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 8 शुक्रवार शतभिषा में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:59-10:30, कुम्भ-मीन 12:15-15:10, वृष 16:46-17:27

30 नवंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 10 रविवार उभा में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:01-10:23, कुम्भ-मीन 12:07-15:02, वृष 16:38-17:26

5 दिसंबर पौष कृष्ण 01 शुक्रवार रोहिणी-मृगशिरा में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:05-10:03, कुम्भ-मीन 11:47-14:42, वृष 16:18-17:27

6 दिसंबर पौष कृष्ण 02 शनिवार मृगशिरा अंत 11:39 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 07:06-09:59, कुम्भ-मीन 11:43-14:38, वृष 16:14-17:23

7 दिसंबर पौष कृष्ण 03 रविवार पुनर्वसु आरंभ 10:16 से भद्रारंभ 11:33 तक।
समय- वृश्चिक-धनु 07:06-09:55, कुम्भ-मीन 11:39-14:34, वृष 16:10-17:19

12 दिसंबर पौष कृष्ण 08 शुक्रवार उफा आरंभ 08:27 बाद।
समय- धनु 08:27-09:35, कुम्भ-मीन 11:20-14:15, वृष 15:51-17:28

15 दिसंबर पौष कृष्ण 11 सोमवार स्वाती में 12:54 से 14:46 तक। (अतिगण्ड षड्घटी वर्ज्य)
समय- मीन 12:54-14:03, वृष 15:39-17:29

16 जनवरी माघ कृष्ण 13 शुक्रवार मूल में।
समय- कुम्भ-मीन 09:02-11:57, वृष-मिथुन 13:33-17:43

19 जनवरी माघ शुक्ल 1 सोमवार श्रवण में 12:22 पश्चात। पूर्वे उषा सूर्ययुति
समय- वृष-मिथुन 13:21-17:31

23 जनवरी माघ शुक्ल 5 शुक्रवार उभा आरम्भ 13:53 बाद।
समय- वृष-मिथुन 13:53-17:15

24 जनवरी माघ शुक्ल 6 शनिवार उभा-रेवती में।
समय- कुम्भ-मीन 08:30-11:25, वृष-मिथुन 13:01-17:11

25 जनवरी माघ शुक्ल 7 रविवार रेवती 12:06 पूर्व। पश्चात अश्विनी में।
समय- कुम्भ-मीन 08:26-11:21

26 जनवरी माघ शुक्ल 8 सोमवार अश्विनी अंत 10:46 पूर्व भद्रान्त 08:00 पश्चात। केतुवेध
समय- कुम्भ-मीन 08:22-10:46

29 जनवरी माघ शुक्ल 11 गुरूवार मृगशिरा में भद्रान्त 11:57 बाद। भौमवेध
समय- वृष-मिथुन 12:41-16:51

6 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 5 शुक्रवार हस्त में।
समय- कुम्भ-मीन 07:39-10:34, वृष-मिथुन 12:10-16:19

7 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 6 शनिवार चित्रा में। शनिवेध
समय- कुम्भ-मीन 07:35-10:30, वृष-मिथुन 12:06-16:15

8 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 7 रविवार स्वाती में। राहुवेध
समय- कुम्भ-मीन 07:31-10:26, वृष-मिथुन 12:02-16:11

11 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 10 बुधवार रिक्तांत 09:51 बाद अनुराधा अंत 11:05 पूर्व।
समय- मीन 09:51-10:14

12 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 10 गुरुवार मूल आरम्भ 13:40 बाद।
समय- मिथुन 13:41-15:56

13 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 11 शुक्रवार मूल अंत 16:06 पूर्व।
समय- कुम्भ-मीन 07:11-10:06, वृष-मिथुन 11:42-15:52

18 फरवरी फाल्गुन शुक्ल 1 बुधवार शतभिषा में। राहुयुति
समय- कुम्भ-मीन 07:07-09:46, वृष-मिथुन 11:22-15:32, सिंह 17:52-18:16

20 फरवरी फाल्गुन शुक्ल 3 शुक्रवार उभा में रिक्तारम्भ 15:30 पूर्व।
समय- कुम्भ-मीन 07:05-09:38, वृष-मिथुन 11:14-15:24

21 फरवरी फाल्गुन शुक्ल 5 शनिवार रेवती में रिक्तान्त भद्रान्त 13:55 बाद।
समय- मिथुन 13:55-15:20, सिंह 17:40-18:19

22 फरवरी फाल्गुन शुक्ल 5 रविवार अश्विनी में। केतुवेध
समय- कुम्भ-मीन 07:03-09:30, वृष-मिथुन 11:06-15:16, सिंह 17:36-18:19

4 मार्च चैत्र कृष्ण 1 बुधवार उफा आरम्भ 07:46 से 09:11 पूर्व व 11:11 के बाद। (शूल पंचघटी वर्ज्य)
समय- कुम्भ-मीन 07:46-08:51, वृष-मिथुन 11:11-14:37, सिंह 16:57-18:26

5 मार्च चैत्र कृष्ण 2 गुरुवार उफा-हस्त में 08:05 पूर्व व 10:29 पश्चात। (गण्ड षड्घटी वर्ज्य)
समय- कुम्भ-मीन 06:53-08:47, वृष-मिथुन 10:23-14:33, सिंह 16:53-18:26

8 मार्च चैत्र कृष्ण 5 रविवार 10:40 पश्चात स्वाती अंत 13:15 पूर्व। राहुवेध
समय- वृष-मिथुन 10:40-13:15

9 मार्च चैत्र कृष्ण 6 सोमवार अनुराधा आरम्भ 15:37 पश्चात।
समय- सिंह 16:37-18:28

❊ विपणि व्यापार मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

❊ **तिथि:** 2,3,5,7,8,10,11,12,13,15 ❊ **पक्ष:** शुक्ल व कृष्ण ❊ **नक्षत्र:** तीनों उत्तरा, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, मूल, पुष्य, हस्त, धनिष्ठा, रेवती, स्वाती, अनुराधा, श्रवण

❊ **वार:** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि ❊ **मंगलवार का निषेध** ❊ **इसमें दुकान आरम्भ की जाती है और वस्तुएं खरीदी जातीं हैं। कुम्भ लग्न के अतिरिक्त सभी लग्न ग्राह्य हैं।**

30 मार्च चैत्र शुक्ल 1-2 रविवार रेवती में। केतुवेध, सूर्ययुति
समय- वृष-मिथुन 08:43-12:53, सिंह-कन्या 15:13-18:40

3 अप्रैल चैत्र शुक्ल 06 गुरुवार रोहिणी में।
समय- वृष-मिथुन 08:28-12:37, सिंह-कन्या 14:58-18:42

4 अप्रैल चैत्र शुक्ल 07 शुक्रवार मृगशिरा अंत 11:18 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 08:28-11:18

5 अप्रैल चैत्र शुक्ल 08 शनिवार पुनर्वसु में भद्रान्त 13:01 बाद। भौमयुति
समय- सिंह-कन्या 14:50-18:43

7 अप्रैल चैत्र शुक्ल 10 सोमवार पुष्य अंत 10:05 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 08:12-10:05

10 अप्रैल चैत्र शुक्ल 13 गुरुवार उफा आरम्भ 13:10 बाद। केतुयुति
समय- सिंह-कन्या 14:30-18:45

12 अप्रैल चैत्र शुक्ल 15 शनिवार हस्त-चित्रा में भद्रांत 15:42 बाद।
हस्त में राहुवेध, चित्रा में शनिवेध
समय- सिंह-कन्या 15:42-18:46

13 अप्रैल वैशाख कृष्ण 01 रविवार चित्रा में। शनिवेध
समय- वृष-मिथुन 07:48-11:58, सिंह-कन्या 14:18-18:47

14 अप्रैल वैशाख कृष्ण 02 सोमवार स्वाती में।
समय- वृष-मिथुन 07:44-11:54, सिंह-कन्या 14:14-18:46

18 अप्रैल वैशाख कृष्ण 05 शुक्रवार मूल में 10:09 के बाद। (परिघ का आधा मान वर्ज्य)
समय- वृष-मिथुन 10:09-11:38, सिंह-कन्या 13:58-18:30

20 अप्रैल वैशाख कृष्ण 07 रविवार उषा आरम्भ 07:40 के बाद।
समय- वृष-मिथुन 07:40-11:30, सिंह-कन्या 13:51-18:22

21 अप्रैल वैशाख कृष्ण 08 सोमवार श्रवण में 08:07 बाद रिक्तारंभ 13:52 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 08:07-11:26

23 अप्रैल वैशाख कृष्ण 11 बुधवार शतभिषा में भद्रान्त 11:47 के बाद।
समय- सिंह-कन्या 13:39-18:10

24 अप्रैल वैशाख कृष्ण 11 गुरुवार शतभिषा अंत 06:47 पूर्व।
समय- लग्नाभाव, सूर्योदय 05:59-06:47

25 अप्रैल वैशाख कृष्ण 12 शुक्रवार उभा में वैधृति आरम्भ 09:36 पूर्व। राहुयुति
समय- वृष-मिथुन 07:01-09:36

30 अप्रैल वैशाख शुक्ल 03 बुधवार रोहिणी में अतिगण्ड आरम्भ 15:47 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 06:41-10:51, सिंह-कन्या 13:11-15:47

1 मई वैशाख शुक्ल 05 गुरुवार मृगशिरा में रिक्तान्त/भद्रान्त 16:14 बाद। गुरुयुति
समय- कन्या 16:14 से 17:39

3 मई वैशाख शुक्ल 06 शनिवार पुनर्वसु में शूलारम्भ 08:26 पूर्व व पंचघटी अंत 10:26 के बाद।
समय- वृष 06:29-08:25, सिंह-कन्या 12:59-17:31

4 मई वैशाख शुक्ल 07 रविवार पुष्य में प्रारम्भ 12:25 पूर्व। भौमयुति
समय- वृष-मिथुन 06:25-10:35

08 मई वैशाख शुक्ल 12 गुरुवार उफा में भद्रांत 13:51 के बाद। केतुयुति
समय- सिंह-कन्या 13:51-17:11

09 मई वैशाख शुक्ल 12 शुक्रवार हस्त में।
समय- वृष-मिथुन 06:06-10:15, सिंह-कन्या 12:36-17:07

10 मई वैशाख शुक्ल 13 शनिवार चित्रा में रिक्तारम्भ 17:13 पूर्व। राहु-शनि वेध
समय- वृष-मिथुन 06:02-10:12, सिंह-कन्या 12:32-17:03

12 मई वैशाख शुक्ल 15 **समय-** सोमवार विशाखा में भद्रान्त 08:16 बाद।
समय- वृष-मिथुन 08:16-10:04, सिंह-कन्या 12:24-16:55

14 मई ज्येष्ठ कृष्ण 02 बुधवार अनुराधा में 10:36 पूर्व। भौमवेध
समय- वृष-मिथुन 05:46-09:56

17 मई ज्येष्ठ कृष्ण 05 शनिवार उषा आरंभ 15:13 के बाद।
समय- सिंह-कन्या 15:13-16:36, वृश्चिक 18:54-19:05

18 मई ज्येष्ठ कृष्ण 06 रविवार उषा-श्रवण में।
समय- वृष-मिथुन 05:30-09:40, सिंह-कन्या 12:00-16:32
वृश्चिक 18:50-19:05

19 मई ज्येष्ठ कृष्ण 07 सोमवार श्रवण में भद्रान्त 13:55 के बाद।
समय- कन्या 13:55-16:28, वृश्चिक 18:47-19:06

23 मई ज्येष्ठ कृष्ण 11 शुक्रवार उभा में 12:19 पूर्व, रेवती में 12:19 पश्चात। रेवती केतुविद्ध
समय- वृष-मिथुन 05:38-09:20, सिंह-11:41-16:12, वृश्चिक 18:31-19:08

24 मई ज्येष्ठ कृष्ण 12 शनिवार रेवती- अश्विनी में।
समय- वृष-मिथुन 05:38-09:16 सिंह-कन्या 11:37-16:08
वृश्चिक 18:27-19:08

❊ विपणि व्यापार मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

31 मई ज्येष्ठ शुक्ल 05 शनिवार पुष्य में।
समय- वृष-मिथुन 05:36-08:49, सिंह-कन्या 11:09-15:41
वृश्चिक 17:59-19:12

5 जून ज्येष्ठ शुक्ल 10 गुरुवार हस्त में व्यतीपात आरंभ 11:26 पूर्व। शनिवेध
समय- वृष-मिथुन 05:35-08:29, सिंह 10:49-11:26

6 जून ज्येष्ठ शुक्ल 11 शुक्रवार चित्रा में व्यति. अंत 11:46 बाद, भद्रारम्भ 16:08 पूर्व। राहुवेध
समय- सिंह-कन्या 11:46-15:17

7 जून ज्येष्ठ शुक्ल 12 शनिवार स्वाती में 10:18 बाद परिघ आरंभ 12:19 पूर्व।
समय- सिंह 11:42-12:19

8 जून ज्येष्ठ शुक्ल 12-13 रविवार स्वाती अंत 12:55 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 05:34-08:18, सिंह 10:38-12:55

12 जून आषाढ कृष्ण 01 -02 गुरुवार मूल में।
समय- सिंह-कन्या 10:22-14:54, वृश्चिक 17:12-19:17

16 जून आषाढ़ कृष्ण 05-06 रविवार धनिष्ठा में वैधृति अंत 10:15 बाद।
समय- सिंह-कन्या 10:15-14:38, वृश्चिक 16:57-19:18

21 जून आषाढ़ कृष्ण 11 शनिवार अश्विनी अंत 17:22 पूर्व।
समय- मिथुन 05:35-07:27, सिंह-कन्या 09:47-14:18

23 जून आषाढ़ कृष्ण 13 सोमवार रोहिणी में 14:37 के पश्चात। (शूलान्त)
समय- वृश्चिक-धनु 16:29-19:20

26 जून आषाढ शुक्ल 01-02 गुरुवार पुनर्वसु आरम्भ 10:16 के बाद।
समय- सिंह-कन्या 10:16-13:59, वृश्चिक-धनु 16:18-19:21

27 जून आषाढ शुक्ल 02 शुक्रवार पुनर्वसु में 09:36 पूर्व, पुष्य में 09:36 पश्चात।
समय- मिथुन 05:37-07:03, सिंह-कन्या 09:36-13:55
वृश्चिक-धनु 16:14-19:21

28 जून आषाढ शुक्ल 03 शनिवार पुष्य अंत 09:20 पूर्व।
समय- मिथुन 05:37-06:59

2 जुलाई आषाढ शुक्ल 07 बुधवार उफा में भद्रारम्भ 13:16 पूर्व। केतुयुति
समय- मिथुन 05:38-06:44, सिंह-कन्या 09:04-13:35
वृश्चिक-धनु 15:54-19:21

3 जुलाई आषाढ शुक्ल 08 गुरुवार हस्त में 08:20 बाद रिक्तारम्भ 14:42 पूर्व। शनियुति
समय- सिंह-कन्या 09:00-13:31

4 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 10 शुक्रवार चित्रा में 17:35 पूर्व, स्वाती में 17:35 बाद। चित्राराहुविद्ध
समय- मिथुन 05:39-06:36, सिंह-कन्या 08:56-13:27
वृश्चिक-धनु 15:46-19:21

5 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 10 शनिवार स्वाती में।
समय- सिंह-कन्या 08:52-13:24, वृश्चिक-धनु 15:42-19:21

7 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 12 सोमवार अनुराधा में।
समय- सिंह-कन्या 08:44-13:16, वृश्चिक-धनु 15:35-19:59

12 जुलाई श्रावण कृष्ण 02 शनिवार उषा-श्रवण में। (उ.षा.07:18 तक)
समय- सिंह-कन्या 08:21-12:52, वृश्चिक-धनु 15:11-19:20

12 जुलाई श्रावण कृष्ण 02 शनिवार श्रवण में 07:18 पश्चात।
समय- सिंह-कन्या 08:21-12:52, वृश्चिक-धनु 15:11-19:20

13 जुलाई श्रावण कृष्ण 03 रविवार श्रवण-धनिष्ठा में भद्रारम्भ 13:20 पूर्व। (श्रवण 07:36तक)
समय- सिंह-कन्या 08:21-12:52

17 जुलाई श्रावण कृष्ण 07 गुरुवार रेवती में भद्रांत 07:03 बाद। केतुवेध
समय- सिंह-कन्या 08:05-12:36, वृश्चिक-धनु 14:55-19:19

18 जुलाई श्रावण कृष्ण 08 शुक्रवार अश्विनी में रिक्तारम्भ 15:34 पूर्व। भौमवेध
समय- सिंह-कन्या 08:01-12:33, वृश्चिक 14:51-15:34

21 जुलाई श्रावण कृष्ण 11 सोमवार रोहिणी में।
समय- सिंह-कन्या 07:49-12:21, वृश्चिक-धनु 14:40-19:04

25 जुलाई श्रावण शुक्ल 01 शुक्रवार पुष्य में। सूर्ययुति
समय- सिंह-कन्या 07:34-12:05, वृश्चिक-धनु 14:24-18:48

30 जुलाई श्रावण शुक्ल 06 बुधवार हस्त में। शनिवेध
समय- सिंह-कन्या 07:14-11:45, वृश्चिक-धनु 14:04-18:28

31 जुलाई श्रावण शुक्ल 07 गुरुवार चित्रा में। राहुवेध
समय- सिंह-कन्या 07:10-11:41, वृश्चिक-धनु 14:00-18:24

1 अगस्त श्रावण शुक्ल 08 शुक्रवार स्वाती में भद्रांत 16:50 के बाद।
समय- धनु 16:50-18:21

3 अगस्त श्रावण शुक्ल 10 रविवार अनुराधा में रिक्तांत 07:51 बाद।
समय- सिंह-कन्या 07:51-11:30, वृश्चिक-धनु 13:48-18:13

6 अगस्त श्रावण शुक्ल 12 बुधवार मूल अंत 12:37 पूर्व वैधृति अंत 07:54 बाद।
समय- सिंह-कन्या 07:54-11:18

9 अगस्त श्रावण शुक्ल 15 शनिवार श्रवण/धनिष्ठा में।
समय- सिंह-कन्या 06:34-11:06, वृश्चिक-धनु 13:25-17:49

10 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 01 रविवार धनिष्ठा- शतभिषा में।
समय- सिंह-कन्या 06:30-11:02, वृश्चिक-धनु 13:21-17:45

11 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 02 सोमवार शतभिषा अंत 14:49 तक।
समय- सिंह-कन्या 06:27-10:58, वृश्चिक-धनु 13:17-14:49

14 अगस्त	भाद्रपद कृष्ण 06 गुरुवार अश्विनी में 11:20 बाद। पूर्वे रेवती केतुविद्ध **समय-** वृश्चिक-धनु 13:09-17:33
20 अगस्त	भाद्रपद कृष्ण 12 बुधवार पुनर्वसु में। गुरुयुति **समय-** सिंह-कन्या 06:02-10:22, वृश्चिक-धनु 12:41-17:05
25 अगस्त	भाद्रपद शुक्ल 02 सोमवार उफा में। केतुयुति **समय-** सिंह-कन्या 06:05-10:07, वृश्चिक-धनु 12:25-16:50
27 अगस्त	भाद्रपद शुक्ल 05 बुधवार चित्रा में रिक्तांत -भद्रान्त 13:53 बाद। राहुवेध **समय-** सिंह-कन्या 06:06-09:55, वृश्चिक-धनु 12:14-16:38
28 अगस्त	भाद्रपद शुक्ल 05 गुरुवार स्वाती में 07:59 पश्चात। **समय-** सिंह-कन्या 06:06-09:51, वृश्चिक-धनु 12:10-16:34
29 अगस्त	भाद्रपद शुक्ल 06 शुक्रवार स्वाती अंत 10:30 पूर्व। **समय-** सिंह-कन्या 06:07-09:47, वृश्चिक-धनु 12:06-16:30
30 अगस्त	भाद्रपद शुक्ल 07 शनिवार अनुराधा आरंभ 13:07 वाद वैधृति आरंभ 14:55 पूर्व। **समय-** वृश्चिक-धनु 13:07-14:55
4 सितंबर	भाद्रपद शुक्ल 12 गुरुवार उषा में। **समय-** सिंह-कन्या 06:09-09:23, वृश्चिक-धनु 11:42-16:06
5 सितंबर	भाद्रपद शुक्ल 13 शुक्रवार श्रवण में 14:06 पूर्व व 16:30 बाद। **समय-** सिंह-कन्या 06:10-09:19, वृश्चिक-धनु 11:38-14:06
22 सितंबर	आश्विन शुक्ल 01 सोमवार हस्त में 11:05 पश्चात। **समय-** कन्या 06:17-08:12, वृश्चिक-धनु 10:31-14:55
24 सितंबर	आश्विन शुक्ल 03 बुधवार चित्रा-स्वाती में। राहु-शनि वेध चित्रा में 15:04 तक **समय-** कन्या 06:18-8:04, वृश्चिक-धनु10:23-14:47
27 सितंबर	आश्विन शुक्ल 05-06 शनिवार अनुराधा में। **समय-** कन्या 06:19-07:52, वृश्चिक-धनु 10:11-14:36
29 सितंबर	आश्विन शुक्ल 07 सोमवार मूल में भद्रारम्भ 11:57 पूर्व। **समय-** कन्या 06:20-07:44, वृश्चिक 10:03-11:57
1 अक्टूबर	आश्विन शुक्ल 10 बुधवार उषा में रिक्तान्त 14:06 बाद। **समय-** मीन 17:33-18:10
2 अक्टूबर	आश्विन शुक्ल 10 गुरुवार श्रवण में। **समय-** कन्या 06:22-07:33, वृश्चिक-धनु 09:52-14:16
3 अक्टूबर	आश्विन शुक्ल 11 शुक्रवार धनिष्ठा में भद्रांत 14:16 बाद। **समय-** मीन 17:25-18:08
12 अक्टू	कार्तिक कृष्ण 06 रविवार मृगशिरा में परिघ प्रारंभ 17:12 पूर्व। **समय-** कन्या 06:27-06:53, वृश्चिक-धनु 09:12-13:36, मीन 16:50-17:12
15 अक्टू	कार्तिक कृष्ण 10 बुधवार पुष्य अंत 16:25 पूर्व रिक्तान्त 14:16 बाद। **समय-** वृश्चिक-धनु 09:00-13:25, मीन 16:38-17:54
18 अक्टू	कार्तिक कृष्ण 13 शनिवार उफा आरम्भ 17:09 के बाद। **समय-** वृश्चिक-धनु 08:48-13:13, मीन 16:26-17:51
19 अक्टू	कार्तिक कृष्ण 13 रविवार उफा में भद्रारम्भ 13:25 पूर्व। **समय-** वृश्चिक-धनु 08:44-13:09, मीन 16:22-17:48
22 अक्टू	कार्तिक शुक्ल 01 बुधवार स्वाती में। **समय-** वृश्चिक-धनु 08:33-12:57, मीन 16:10-17:36
24 अक्टू	कार्तिक शुक्ल 03 शुक्रवार अनुराधा में। **समय-** वृश्चिक-धनु 08:25-12:49, मीन 16:03-17:28
26 अक्टू	कार्तिक शुक्ल 05 रविवार मूल आरंभ 08:14 बाद। **समय-** वृश्चिक-धनु 08:17-12:41, मीन 15:55-17:21
27 अक्टू	कार्तिक शुक्ल 06 सोमवार मूल अंत 10:22 पूर्व। **समय-** वृश्चिक-धनु 08:13-10:22
29 अक्टू	कार्तिक शुक्ल 8 बुधवार श्रवण में भद्रांत 16:10 बाद। **समय-** मीन 16:10-17:09
31 अक्टू	कार्तिक शुक्ल 10 शुक्रवार शतभिषा में 14:23 पश्चात। **समय-** मीन 15:35-17:01
1 नवंबर	कार्तिक शुक्ल 11 शनिवार शतभिषा अंत 14:11 पूर्व। सूर्यवेध **समय-** वृश्चिक-धनु 07:53-12:17
2 नवंबर	कार्तिक शुक्ल 12 रविवार उभा आरम्भ 13:34 बाद। **समय-** मीन 15:27-16:53
3 नवंबर	कार्तिक शुक्ल 13 सोमवार उभा-रेवती में। **समय-** वृश्चिक-धनु 07:45-12:09, मीन 15:23-16:49
15 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 11 शनिवार उफा में वैधृति अंत 10:02 बाद। **समय-** मीन 14:35-16:01
16 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 12 रविवार हस्त में। **समय-** वृश्चिक-धनु 06:54-11:18, मीन 14:32-15:57
17 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 13 सोमवार चित्रा में। शनि-राहु वेध **समय-** वृश्चिक-धनु 06:51-11:14, मीन 14:28-15:53

❊ विपणि व्यापार मुहूर्त्त 2082 ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

20 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 01 गुरुवार अनुराधा में अमान्त 10:35 पश्चात। सूर्ययुति **समय-** धनु 10:35-11:02, मीन 14:16-15:42
21 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 01 शुक्रवार अनुराधा अंत 13:01 पूर्व। **समय-** वृश्चिक-धनु 06:54-10:58
23 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 03 रविवार मूल में 11:30 पूर्व व 13:30 से रिक्तान्त 16:32 पूर्व। (शूल पञ्च घटी वर्ज्य) **समय-** वृश्चिक-धनु 06:55-10:54, मीन 14:04-15:34
26 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 06 बुधवार श्रवण में। **समय-** वृश्चिक-धनु 06:58-10:38, मीन 13:52-15:18, वृष 16:54-17:27
27 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 07 गुरुवार धनिष्ठा में 09:12 पूर्व व 12:48 पश्चात। (व्याघात 9 घटी वर्ज्य) **समय-** वृश्चिक-धनु 06:59-09:12, मीन 13:48-15:14, वृष 16:50-17:23
28 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 8 शुक्रवार शतभिषा में। **समय-** वृश्चिक-धनु 06:59-10:30, मीन 13:44-15:10, वृष 16:46-17:27
30 नवंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 10 रविवार उभा में। **समय-** वृश्चिक-धनु 07:01-10:23, मीन 13:36-15:02, वृष 16:38-17:26
5 दिसंबर	पौष कृष्ण 01 शुक्रवार रोहिणी-मृगशिरा में। **समय-** वृश्चिक-धनु 07:05-10:03, मीन 13:16-14:42, वृष 16:18-17:27
6 दिसंबर	पौष कृष्ण 02 शनिवार मृगशिरा अंत 11:39 पूर्व। **समय-** वृश्चिक-धनु 07:06-09:59, मीन 13:13-14:38, वृष 16:14-17:23
7 दिसंबर	पौष कृष्ण 03 रविवार पुनर्वसु आरंभ 10:16 से भद्रारंभ 11:33 तक। **समय-** वृश्चिक-धनु 07:06-09:55, मीन 13:09-14:34, वृष 16:10-17:19
12 दिसंबर	पौष कृष्ण 08 शुक्रवार उफा आरंभ 08:27 बाद। **समय-** धनु 08:27-09:35, मीन 12:49-14:15, वृष 15:51-17:28
15 दिसंबर	पौष कृष्ण 11 सोमवार स्वाती में 12:54 से 14:46 तक। (अतिगण्ड षड्घटी वर्ज्य) **समय-** मीन 12:54-14:03, वृष 15:39-17:29
16 जनवरी	माघ कृष्ण 13 शुक्रवार मूल में। **समय-** मीन 10:31-11:57, वृष-मिथुन 13:33-17:43
19 जनवरी	माघ शुक्ल 1 सोमवार श्रवण में 12:22 पश्चात। पूर्वे उषा सूर्ययुति **समय-** वृष-मिथुन 13:21-17:31
23 जनवरी	माघ शुक्ल 5 शुक्रवार उभा आरम्भ 13:53 बाद। **समय-** वृष-मिथुन 13:53-17:15
24 जनवरी	माघ शुक्ल 6 शनिवार उभा-रेवती में। **समय-** मीन 09:59-11:25, वृष-मिथुन 13:01-17:11
25 जनवरी	माघ शुक्ल 7 रविवार रेवती 12:06 पूर्व। पश्चात अश्विनी में। **समय-** मीन 09:55-11:21
26 जनवरी	माघ शुक्ल 8 सोमवार अश्विनी अंत 10:46 पूर्व भद्रान्त 08:00 पश्चात। केतुवेध **समय-** मीन 09:51-10:46
29 जनवरी	माघ शुक्ल 11 गुरूवार मृगशिरा में भद्रान्त 11:57 बाद। भौमवेध **समय-** वृष-मिथुन 12:41-16:51
6 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 5 शुक्रवार हस्त में। **समय-** मीन 09:08-10:34, वृष-मिथुन 12:10-16:19
7 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 6 शनिवार चित्रा में। शनिवेध **समय-** मीन 09:04-10:30, वृष-मिथुन 12:06-16:15
8 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 7 रविवार स्वाती में। राहुवेध **समय-** मीन 09:00-10:26, वृष-मिथुन 12:02-16:11
12 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 10 गुरुवार मूल आरम्भ 13:40 बाद। **समय-** मिथुन 13:41-15:56
13 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 11 शुक्रवार मूल अंत 16:06 पूर्व। **समय-** मीन 08:40-10:06, वृष-मिथुन 11:42-15:52
18 फरवरी	फाल्गुन शुक्ल 1 बुधवार शतभिषा में। राहुयुति **समय-** मीन 08:20-09:46, वृष-मिथुन 11:22-15:32, सिंह 17:52-18:16
20 फरवरी	फाल्गुन शुक्ल 3 शुक्रवार उभा में रिक्तारम्भ 15:30 पूर्व। **समय-** मीन 08:12-09:38, वृष-मिथुन 11:14-15:24
21 फरवरी	फाल्गुन शुक्ल 5 शनिवार रेवती में रिक्तान्त भद्रान्त 13:55 बाद। **समय-** मिथुन 13:55-15:20, सिंह 17:40-18:19
22 फरवरी	फाल्गुन शुक्ल 5 रविवार अश्विनी में। केतुवेध **समय-** कुम्भ-मीन 08:04-09:30, वृष-मिथुन 11:06-15:16 सिंह 17:36-18:19
4 मार्च	चैत्र कृष्ण 1 बुध उफा आरम्भ 07:46-09:11 पूर्व, 11:11 बाद।(शूल 5 घटी वर्ज्य) **समय-** मीन 07:25-08:51, वृष-मिथुन 11:11-14:37, सिंह 16:57-18:26
5 मार्च	चैत्र कृष्ण 2 गुरुवार उफा-हस्त में 08:05 पूर्व व 10:29 पश्चात। (गण्ड षड्घटी वर्ज्य) **समय-** मीन 07:21-08:47, वृष-मिथुन 10:23-14:33, सिंह 16:53-18:26
8 मार्च	चैत्र कृष्ण 5 रविवार 10:40 पश्चात स्वाती अंत 13:15 पूर्व। राहुवेध **समय-** वृष-मिथुन 10:40-13:15

✻ कतिपय आवश्यक मुहूर्त्त ✻

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग में अधिकांश आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय दिया गया है। मुहूर्त्त शास्त्रों में अनेकविध कृत्यों के मुहूर्त्त दिए गए हैं, जिनमें से कुछ का विवरण यहाँ दिया जा रहा है।

✻ गर्भाधान मुहूर्त्त✻

✻ **तिथि-** क्षीणचन्द्रमा रहित 1, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13 **तिथि**। ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र। ✻ **नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशि, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी। ✻ **विशेष-** रजोदर्शन की चतुर्थ रात्रि से 12 रात्रियों तक। ✻ **त्याज्य-** 4, 6, 8, 9, 14, 30 **तिथि**, प्रातः, सायं, सन्ध्या, ग्रहण, संक्रान्ति, श्राद्ध।✻ **लग्नशुद्धि-** शुभग्रह केन्द्र त्रिकोणस्थ व पापग्रह त्रिषडाय में।

✻ सीमन्तोन्नयन पुंसवन मुहूर्त्त ✻

पुंसवन गर्भाधान से तृतीय मास में करना चाहिए। सीमन्तोन्नयन षष्ठ वा अष्टम मास में करना चाहिए। ✻ **तिथि-** शुक्लपक्ष- 1, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13, कृष्णपक्ष-1, 2, 3, 5। ✻ **वार-** सोम, मंगल, गुरुवार में। अन्यमतेन सोम, शुक्रवार को पूर्वाह्न में। ✻ **नक्षत्र-** मृगशिरा, पुष्य, श्रवण, पुनर्वसु, हस्त, रोहिणी, रेवती, तीनों उत्तरा (जन्मनक्षत्र त्याज्य)। ✻ **लग्नशुद्धि-** 1, 4, 5, 7, 9, 10 भावों में शुभग्रह, 2, 3, 4, 5, 9, 10, 11 स्थानों में चन्द्र तथा 4, 8, 10 में पापग्रह वर्जित ।

✻ जातकर्म मुहूर्त्त ✻

शिशु के ग्रहदोष निवारण व आयुवृद्धि हेतु जन्म-समय में या एकादश या द्वादश दिन में पिता को जातकर्म करना चाहिए। ✻ **नक्षत्र-** चित्रा, अनुराधा, रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा। ✻ **तिथि-** 1, 2,3,5,7,10,11,12,13 ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र। ✻ **लग्न-** 2, 3, 4, 6, 7, 9 12, लग्न व नवांश की शुद्धि अनिवार्य।

✻ नामकरण मुहूर्त्त ✻

✻ **तिथि-** 1,2,3,5,7,10,11,12,13। वार-सोम,बुध,गुरु,शुक्र। पूर्वाह्न में शुभ, मध्याह्न में मध्यम। ✻ **नक्षत्र-** स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठ, हस्त, अश्वि, पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, शतभिषा, अनुराधा। ✻ **लग्न-** 2,3,5,6,8,9,11,12। ✻ **लग्नशुद्धि-** 1, 4, 5, 7, 9, 10 भावों में शुभग्रह, 2, 3, 5, 9, 10, 11 स्थानों में चन्द्र, त्रिषडाय में पापग्रह हो। शुभग्रहदृष्टलग्न।

✻ अन्नप्राशन मुहूर्त्त ✻

✻ **तिथि-** 2,3,5,7,10,13,15। क्षीणचन्द्र वर्जित। ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✻ **नक्षत्र-** जन्म नक्षत्र एवं अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठ, शतभिषा, रेवती। ✻ **लग्न-** 2,3,5,6,7,9,11,12। ✻ **लग्नशुद्धि-** जन्मलग्न व जन्म राशि से अष्टमलग्न व नवांश वर्जित है। दशम भाव में चन्द्र के अतिरिक्त अन्य ग्रह वर्जित। 1,6, 8 भाव में चन्द्रवर्जित। ✻ **बालकों का अन्नप्राशन-** 6,8,10,12 मासों में, **बालिकाओं** का 5, 7, 9, 11 मासों में। पूर्वाह्न शुभ।

✻ कर्णवेध मुहूर्त्त ✻

1,2,6 मास में व विषमवर्ष में, रिक्ता एवं समवर्ष त्याज्य है। ✻ **कालशुद्धि-** सौर चैत्र व पौषमास, क्षयदिन, हरिशयन (आषाढ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल दशमी तक) एवं जन्ममास त्याज्य है। पूर्वाह्न एवं मध्याह्न में। ✻ **तिथि-** 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13, 15 ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती। ✻ **लग्नशुद्धि-** वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु व मीन लग्न प्रशस्त। लग्न से अष्टम भाव शुद्धि।

✻ चूड़ाकर्म मुण्डन मुहूर्त्त ✻

✻ **कालशुद्धि-** उत्तरायण। गुरुशुक्रास्त वर्ज्य। पूर्वाह्न व मध्याह्न शुभ। 1,2,6 मास में व विषमवर्ष में, समवर्ष त्याज्य है। सौर चैत्र व पौषमास, क्षयदिन, हरिशयन (आषाढ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल दशमी तक) एवं जन्ममास त्याज्य है। ✻ **मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मास में हरिशयनपूर्व। ✻ **वर्जितमास-** चैत्र। ✻ **पक्ष-**कृष्णपक्ष में पंचमी तिथि पर्यन्त एवं सम्पूर्ण शुक्लपक्ष में। ✻ **तिथियाँ-** 2,3,5,7,10,11,13 (कुल 7)। ✻ **वर्जित तिथियाँ-** 1, 4,6, 8, 9,12, 14, 15, 30। ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (12 नक्षत्र)। ✻ **वर्जित नक्षत्र-** रोहिणी, तीनों उत्तरा एवं अनुराधा (5 नक्षत्र)। इसके अतिरिक्त भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, विशाखा, मूल भी वर्जित हैं । ✻ **लग्न-** 2, 3, 4, 5, 6, 7, 9, 12। ✻ **वर्जित लग्न-** 1, 8, 10, 11। ✻ **लग्नशुद्धि-**जन्मलग्न व जन्मराशि से अष्टम लग्न वर्जित। अष्टम स्थानशुद्धि। केन्द्र में क्षीणचन्द्र, मंगल, शनि व सूर्य अशुभ।

✻ अक्षरारम्भ मुहूर्त्त ✻

उत्तरायण, गुरु शुक्र के अस्तादि विचारणीय। ✻ **तिथि-** 2, 3, 5, 6, 10, 11, 12। ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र। ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, आर्द्रा, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, रेवती। ✻ **लग्न-** 2,3,6,9,12 शुभ, 5,8,11 मध्यम।

✻ उपनयन मुहूर्त्त ✻

✻ **मास-** माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ। ✻ **तिथि-** शुक्लपक्ष- 2,3,5,10,11,12। कृष्णपक्ष- 2,3,5 । ✻ **वार-** सूर्य, सोम, बुध, गुरु व शुक्रवार। ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु, मूल, श्रवण, धनि., शत, तीनों उत्तरा, रेवती। ✻ **समयशुद्धि-** उत्तरायण में। देवशयन, गुरु-शुक्र अस्तादि वर्जित। पूर्वाह्न व मध्याह्न तक ही उपनयन शुभ। अपराह्न निषिद्ध। ✻ **लग्नशुद्धि-** षष्ठ व अष्टम भाव में शुक्र, गुरु, चन्द्र व लग्नेश वर्जित। द्वादश भाव में चन्द्र व शुक्र वर्जित। लग्न पञ्चम व अष्टम में पापग्रह वर्जित। ✻ **त्याज्य-** आषाढ शुक्ल दशमी, ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया, पौष शुक्ल एकादशी, मघा शुक्ल द्वादशी तथा संक्रान्ति दिन। सूर्य के 8, 17, 26 अंश पर रोगबाण में वर्जित।

✻ प्रथम रजोदर्शन विचार ✻

✻ **मास-** वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन ✻ **तिथि-** 1,2,3,5,7,10,11,12,13,15 । ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु व शुक्रवार। ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। ✻ **लग्न-** 2,3,4,6,7,9,12 शुभयुक्त एवं दृष्ट लग्न राशि। ✻ **विशेष-** प्रथम रजोदर्शन में कुयोग (परिघ, व्यतिपात, वैधृति आदि) भद्रा, सूर्यचन्द्र ग्रहण, मासान्त, सन्ध्या, निद्रावस्था आदि अशुभ कहा गया है। यदि इन कुयोगो में प्रथम ऋतुमति हो तो गायत्री मन्त्र से तिल, घृत, दूर्वा सहित 108 आहुति देने से कुयोगों की शान्ति होती है।

✻ विद्यारम्भ मुहूर्त्त ✻

उत्तरायण, गुरु-शुक्र अस्तादि शुद्धि विचारणीय। ✻ **तिथि-** 2, 3, 5, 6, 10, 11, 12। ✻ **वार-** सूर्य, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा। अन्यमतेन रोहिणी, तीनों उत्तरा, अनुराधा, रेवती भी ग्राह्य हैं। ✻ **लग्न-** 2,3,5,6,8,9,11,12

✼ विवाह मुहूर्त्त ✼

गुरु शुक्र अस्तादि शद्धि, देवशयनादि विचार आवश्यक। ✼ **मास**- मीन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला व धनु के सूर्य में वर्जित। सौरमासों में वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन ग्राह्य। दोनों पक्षों की ✼ **तिथि**- 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13 व शुक्लपक्ष की 15। ✼ **वार**- सोम, बुध, गुरु, शुक्र। रवि, शनि- मध्यम। मंगल त्याज्य (मु.चि. 6/55)। ✼ **नक्षत्र**- रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल व रेवती। ✼ **कात्यायन गृह्यसूत्रोक्त**- अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा। ✼ **लग्न**- लग्नस्थ चन्द्र, पापग्रह, तृतीयस्थ शुक्र, षष्ठस्थ चन्द्र, शुक्र व लग्नेश, सप्तम में सभी ग्रह, अष्टमस्थ चन्द्र, लग्नेश, मंगल व शुभग्रह, दशमस्थ मंगल व द्वादशस्थ शनि वर्जित।

✼ वधूप्रवेश मुहूर्त्त ✼

✼ **कालशुद्धि**- 'वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्त:' के अनुसार वधू का प्रवेश रात्रि में ही शुभ होता है, शेष विवाह मुहूर्त्त के समान। ✼ **वार**- सोम, बुध, गुरु, शुक्र व शनिवार। **तिथि**- 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13, 15। ✼ **नक्षत्र**- अश्विनी, रो, मृग, पुष्य, मघा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, तीनों उत्तरा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, व रेवती। ✼ **लग्नशुद्धि**- वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ राशि के लग्न शुभ। चतुर्थाष्टम शुद्धि चाहिए। ✼ **त्याज्य**- भद्रा, व्यति, क्षयतिथि, रिक्ता, अमा., ग्रहण, वैधृति व संक्रान्ति।

✼ द्विरागमन मुहूर्त्त ✼

कुम्भ, वृश्चिक व मेष राशि में सूर्य के रहने पर ही द्विरागमन विहित है। ✼ **वार**- सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✼ **तिथि**- 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13, 15 ✼ **नक्षत्र**- अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा रेवती। ✼ **वर्जित लग्न**- 1,4,7,10

✼ प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त ✼

✼ **स्नान के नक्षत्र**- अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, रेवती। ✼ **स्नान में त्याज्य नक्षत्र**- भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, चित्रा, विशाखा, मूल, श्रवण। ✼ **स्नान में मध्यम नक्षत्र**- आश्लेषा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा। ✼ **स्नान के वार**- रवि, मंगल, बृहस्पति। रवीज्यकुजेषु शस्तम्। मुहूर्त्तचिन्तामणि, 5/12। ✼ **स्नान की तिथियाँ**-1, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13, 15, 30।

✼ **स्नान में त्याज्य**- रिक्तातिथि 4, 9, 14 तथा 6, 8, 12 **तिथियाँ**। भद्रा एवं वैधृतिदोष।

✼ गृहारम्भ मुहूर्त्त ✼

गुरु-शुक्र अस्तादि विचार आवश्यक है। पर देवशयन विचार आवश्यक नहीं। ✼ **चान्द्रमास**- वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, पौष, फाल्गुन। ✼ **सौरमास**- मेष, वृष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर, कुम्भ राशिस्थ। ✼ **तिथि**- 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13, 15। ✼ **वार**- सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनिवार। ✼ **नक्षत्र**- रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती(मु. चि. 12/15) पराशरमतानुसार- अश्विनी, पुनर्वसु, मूल व श्रवण भी ग्राह्य। वास्तु राजवल्लभ के अनुसार ज्येष्ठा भी ग्राह्य। **योग व करण**- वैधृति, शूल, गण्ड, परिघ, व्याघात, वज्र, विष्कुम्भ एवं व्यतीपात योग तथा भद्रा वर्जित। ✼ **लग्न**- 2,3,5,6,8,9,11,12। अष्टम, द्वादश भाव की शुद्धि।

✼ नवीन गृहप्रवेश मुहूर्त्त ✼

उत्तरायण विशेष शुभ। गुरु-शुक्र अस्तादिविचार आवश्यक। दिन व रात दोनों ही में प्रवेश शुभ। ✼ **मास**- माघ, फाल्गुन, वैशाख व ज्येष्ठ श्रेष्ठ। मार्गशीर्ष, कार्तिक मध्यम। ✼ **तिथि**- दोनों पक्षों की- 1,2,3, 5,6,7,8,10। एवं शु.प. 11,12,13,15 ✼ **वार**- सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। ✼ **नक्षत्र**- रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, चित्रा, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। मतान्तर से अश्विनी, पुष्य, स्वाती, मूल व श्रवण भी ग्राह्य (मुहूर्त्तपारिजात)। ✼ **लग्न**- 2,3, 5,6,8,9,11,12। लग्न से चतुर्थाष्टम शुद्धि आवश्यक। ✼ **समय-शुद्धि**- भद्रा, व्यतीपात, वैधृति योग त्याज्य, परिघ का आधा मान, शूल योग की आदि 5 घटी, गण्ड व अतिगण्ड योग की आदि 6 घटी, व्याघात की 9 घटी, विष्कुम्भ व वज्र की 3-3 घटी मुहूर्त्त में त्याज्य।

✼ जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त्त ✼

नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त के समान ही। पर श्रावण, मार्गशीर्ष एवं कार्तिक मास भी ग्राह्य। नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त में भी प्रवेश। गुरु शुक्र अस्तादि विचार की आवश्यकता नहीं। ✼ **जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र** - शतभिषा, पुष्य, स्वाती, धनिष्ठा।

✼ सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त ✼

उत्तरायण, गुरु-शुक्र अस्तादि का विचार आवश्यक। मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष एवं मिथुन में सूर्य के रहने पर।

✼ **देव प्रतिष्ठा नक्षत्र**- अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल 16 नक्षत्र)। ✼ **देव प्रतिष्ठा मास**- चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ, फाल्गुन (हरिशयनपूर्व) ✼ **वार**- सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि। मंगलवार को निषेध है। ✼ **लग्न**- 2, 3, 5, 6, 8, 11, 12 । ✼ **तिथि**- 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13, 15 ।

✼ ऋण देने का मुहूर्त्त ✼

✼ **वार**- चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि नक्षत्र स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, मूल, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा। ✼ **लग्न**- 1, 4, 7, 10 लग्न में। ✼ **तिथि**- 1, 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13, 15। ✼ **कर्ज देने में निषिद्ध समय**- बुधवार, भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, चित्रा, ज्येष्ठा नक्षत्रों में, भद्रा एवं पात योगों में निषिद्ध होता है। ✼ **कर्ज लेने में निषिद्ध समय**- रविवार, मंगलवार, संक्रान्ति, हस्त नक्षत्र में ऋणग्रहण नहीं करना चाहिए।

✼ औषधि/दवाई ग्रहण करने का मुहूर्त्त ✼

✼ **वार**- सूर्य, सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✼ **नक्षत्र**- अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणी में शुभ। ✼ **लग्न**-3, 6, 9, 12। शुभग्रह 3, 6, 9, 12 राशिमें स्थित हो, तथा लग्न से 7, 8, 12 स्थान ग्रहरहित हों, इसमें औषधि ग्रहण शुभ।

✼ ऑपरेशन का मुहूर्त ✼

✼ **वार**- सूर्य, मंगल, गुरुवार। ✼ **नक्षत्र**- अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, अभिजित्, श्रवण, शतभिषा। ✼ **तिथि**- 4, 9, 14, 15, 30 वर्जित।

✼ भूमि क्रय विक्रय मुहूर्त्त ✼

✼ **वार**- गुरु, शुक्र। ✼ **तिथि**- दोनों पक्षों की- 5, 6, 10, 11, पूर्णिमा व कृष्णपक्ष की 1। ✼ **नक्षत्र**- मृगशिरा, पुनर्वसु, आश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, तीनों पूर्वा, मूल, रेवती। ✼भद्रा एवं कुयोग त्याज्य

✼ व्यवहार पत्रारम्भ मुहूर्त्त ✼

✼ **तिथि**- 1,2,3,5,7,10,11,13 ✼ **वार**- रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✼ **नक्षत्र**- अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, अभिजित्, श्रवण, रेवती।

चैत्र शुक्लपक्षः, सिद्धार्थ नाम संवत् 2082, शाके 1947, 30 मार्च से 12 अप्रैल, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 30:3:2025–मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, मार्गी शनिःपश्चिमास्तः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, वक्री बुधःपश्चिमास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
मार्च	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	मार्च	30 मार्च से 12 अप्रैल, 2025
30	1 र	२०:२८	14:36	रेवती	३०:२८	18:36	ऐन्द्र	३३:५८	20:00	बव	14:36	बाल	25:24	30:36	6:25	18:40	मे·30:28	06:36	प्रवर्द्ध	30	**विक्रम नववर्षारम्भः 2082, नवरात्र घटस्थापना, ध्वजारोहण**
31	2 चं	१४:२९	12:11	अश्वि·	२६:२०	16:56	वैधृ·	२६:१३	16:53	कौल	12:11	तैति	22:58	30:40	6:24	18:40	मेष	अहोरात्र	राक्षस	31	**सिंजारा**, वैधृति पुण्यम्
अप्रैल	3 मं	०८:२९	09:46	भरणी	२२:१४	15:16	विष्कु·	१८:३०	13:47	गर	09:46	वणि	20:35	30:44	6:23	18:41	वृ·36:14	20:52	मुसल	अप्रैल	**गणगौर पूजा, श्रीमत्स्यावतार जयन्ती, वैनायकी चतुर्थी**
2	4 बु 5 बु	०२:४२ ५४:३४	07:26 29:15	कृत्ति·	१८:२४	13:43	प्रीति	११:००	10:46	विष	07:26	बव	18:20	30:48	6:22	18:41	वृष	अहोरात्र	सिद्धि	2	**श्रीपंचमी, रंगपंचमी,**
3	6 गु	५२:२८	27:20	रोहि·	१४:६०	12:20	आयु· सौभा·	०३:५१ ५३:१९	07:53 29:12	कौल	16:15	तैति	27:20	30:52	6:20	18:42	मि·43:31	23:45	उत्पात	3	श्रीयमुना जयन्ती, स्कन्द षष्ठी
4	7 शु	४८:२६	25:42	मृग·	१२:१५	11:13	शोभ·	५१:०८	26:46	गर	14:27	वणि	25:42	30:56	6:19	18:42	मिथुन	अहोरात्र	मानस	4	
5	8 श	४५:१९	24:26	आर्द्रा	१०:२०	10:26	अतिग·	४५:५२	24:39	विष	13:00	बव	24:26	31:00	6:18	18:43	क·54:29	28:06	मुद्गर	5	**महाष्टमी**, महानिशा पूजा (निशीथव्यापिनी अष्टम्यां)
6	9 र	४३:१७	23:36	पुन·	०९:२३	10:02	सुकर्मा	४१:२७	22:52	बाल	11:57	कौल	23:36	31:04	6:17	18:43	कर्क	अहोरात्र	ध्वज	6	**श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्ति, श्रीमहानवमी**
7	10 चं	४२:२७	23:15	पुष्य	०९:३२	10:05	धृति	३८:००	21:28	तैति	11:21	गर	23:15	31:08	6:16	18:44	कर्क	अहोरात्र	धाता	7	**नवरात्रोत्थापन, नवरात्र व्रतपारणा**, जयन्ती ग्रहणम्
8	11 मं	४२:५३	23:24	आश्ले·	१०:५५	10:37	शूल	३५:३२	20:28	वणि	15:24	विष	23:24	31:12	6:15	18:44	सि·10:55	10:37	आनन्द	8	**श्रीकामदा एकादशी (सर्वेषाम्)**, लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव
9	12 बु	४४:३६	24:04	मघा	१३:३२	11:39	गण्ड	३४:०५	19:52	बव	11:40	बाल	24:04	31:16	6:14	18:45	सिंह	अहोरात्र	सुस्थिर	9	**हरि दमनोत्सव**, मदन द्वादशी, वामन द्वादशी
10	13 गु	४७:३०	24:13	पू·फा·	१७:२३	13:10	वृद्धि	३३:३५	19:39	कौल	12:35	तैति	24:13	31:20	6:13	18:45	कं·33:31	19:37	गद	10	**प्रदोष व्रतम्, श्रीमहावीर जयन्ती** (जैन) १३
11	14 शु	५१:२८	26:47	उ·फा·	२२:१९	15:07	ध्रुव	३३:५५	19:46	गर	13:57	वणि	26:47	31:24	6:12	18:46	कन्या	अहोरात्र	शुभ	11	**शिव दमनोत्सव चतुर्दशी, श्रीनृसिंह दोलोत्सव**
12	15 श	५६:१२	28:39	हस्त	२८:०९	17:26	व्याघ·	३४:५५	20:09	विष	15:41	बव	28:39	31:28	6:11	18:46	कन्या	अहोरात्र	मृत्यु	12	**चैत्रपूर्णिमा** (व्रत–स्नान–दान), **श्रीहनुमानजयन्ती**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क मार्च	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	वक्री बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मिःसे	चन्द्रोदयः
30	1 र	11:15:16:33	11:22:44:12	02:28:20:25	11:02:46:33	01:22:05:40	10:24:40:16	10:27:02:25	11:05:02:58	45:18:22	उ·03:16:00	– 5:55	06:47
31	2 चं	11:16:15:48	00:07:02:31	02:28:38:48	11:02:06:02	01:22:14:41	10:24:22:12	10:27:09:52	11:04:59:48	45:20:24	उ·03:39:52	– 5:36	07:26
अप्रैल	3 मं	11:17:15:00	00:21:21:54	02:28:57:37	11:01:30:08	01:22:23:50	10:24:06:37	10:27:17:18	11:04:56:37	45:22:25	उ·04:03:40	– 5:17	08:11
2	4 बु	11:18:14:10	01:05:38:23	02:29:16:50	11:00:59:31	01:22:33:07	10:23:53:34	10:27:24:43	11:04:53:26	45:24:26	उ·04:27:24	– 4:59	08:56
3	6 गु	11:19:13:18	01:19:48:36	02:29:36:28	11:00:34:43	01:22:42:31	10:23:43:03	10:27:32:07	11:04:50:16	45:26:27	उ·04:51:02	– 4:40	09:51
4	7 शु	11:20:12:24	02:03:49:31	02:29:56:29	11:00:16:07	01:22:52:03	10:23:35:04	10:27:39:29	11:04:47:05	45:28:27	उ·05:14:36	– 4:21	10:46
5	8 श	11:21:11:27	02:17:38:35	03:00:16:53	11:00:04:00	01:23:01:42	10:23:29:37	10:27:46:50	11:04:43:55	45:30:27	उ·05:38:04	– 4:03	11:47
6	9 र	11:22:10:28	03:01:13:52	03:00:37:40	10:29:58:30	01:23:11:29	10:23:26:39	10:27:54:10	11:04:40:44	45:32:27	उ·06:01:26	– 3:45	12:47
7	10 चं	11:23:09:27	03:14:34:07	03:00:58:48	मार्गी 29:59:38	01:23:21:23	10:23:26:09	10:28:01:28	11:04:37:33	45:34:27	उ·06:24:41	– 3:27	13:47
8	11 मं	11:24:08:24	03:27:38:50	03:01:20:18	11:00:07:21	01:23:31:23	10:23:28:04	10:28:08:44	11:04:34:23	45:36:26	उ·06:47:50	– 3:09	14:46
9	12 बु	11:25:07:19	04:10:28:18	03:01:42:09	11:00:21:32	01:23:41:31	10:23:32:22	10:28:15:59	11:04:31:12	45:38:24	उ·07:10:52	– 2:51	15:43
10	13 गु	11:26:06:11	04:23:03:31	03:02:04:20	11:00:41:60	01:23:51:46	10:23:38:58	10:28:23:12	11:04:28:01	45:40:23	उ·07:33:47	– 2:34	16:37
11	14 शु	11:27:05:01	05:05:26:15	03:02:26:51	11:01:08:31	01:24:02:07	10:23:47:51	10:28:30:23	11:04:24:51	45:42:20	उ·07:56:34	– 2:17	17:31
12	15 श	11:28:03:48	05:17:38:51	03:02:49:42	11:01:40:51	01:24:12:35	10:23:58:56	10:28:37:33	11:04:21:40	45:44:18	उ·08:19:12	– 1:00	18:24

2 अप्रैल सूर्योदयकालीन तिथिः4

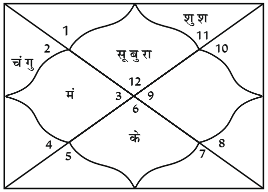

8 अप्रैल सूर्योदयकालीन तिथिः11

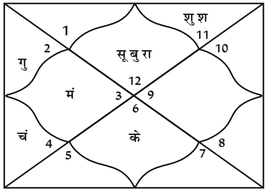

चैत्र शुक्लपक्षः, सिद्धार्थ नाम संवत् 2082, शाके 1947, 30 मार्च से 12 अप्रैल, 2025 ईस्वी

पक्षान्तः –कालःदक्षिण । ऋतुःवसन्त । याम्यगोलः । उत्तरायणं । ति·15 अयनांशाः22:53:23

दिनाङ्क मार्च	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
30	1 र	**गण्डान्तः 13:01–24:12, पञ्चकान्तः18:37, पंचांग फलश्रवण, गुड़ी पड़वा**, कल्पादि, ①
31	2 चं	रेवत्यांरविः घं·16:13। ① चेटीचण्ड–श्रीझूलेलाल जयन्ती, बालेन्दु चन्द्रपूजन, हेडगेवार जयन्ती।
अप्रैल	3 मं	**भद्रारंभः 20:36 घं·**, गौरी तृतीया, मनोरथ तृतीया, मेवाड़ उत्सव आरम्भ, स्वायम्भुव मन्वादि।
2	4 बु 5 बु	**भद्रांतः7:27 घं·**, श्रीरामराज्य महोत्सव, मेवाड़ उत्सव पूर्ण, कड़क पूजा (बंगाल)।
3	6 गु	अशोक षष्ठी (बंगाल)।
4	7 शु	**भद्रारंभः 25:42 घं·**, दुर्गापूजा प्रारम्भ (बंगाल), सूर्यसप्तमी, मोदन व्रत, कर्कमेङ्गलः घं·10:38।
5	8 श	**भद्रांतः13:01 घं·**,अशोकाष्टमी,श्रीभवानी उत्पत्ति,अशोककलिका·प्राशनम्,कुम्भेबुधः घं·20:03 ②
6	9 र	**श्रीरामजन्मभूमि मन्दिरे जन्मोत्सव अयोध्या, पाठ हवन पूर्णाहुति बलिदान।**
7	10 चं	**गण्डान्तारम्भः 28:27**, धर्मराजदशमी, मीनेबुधः घं·08:25, मार्गी बुधः घं·००:१४।
8	11 मं	**भद्रा 11:16–23:24 घं·, गण्डान्तः16:50।** ② मृगशिरायांगुरुः घं·23:00।
9	12 बु	श्यामबाबा द्वादशी।
10	13 गु	अनंग त्रयोदशी।
11	14 शु	**भद्रारंभः 26:47 घं·।**
12	15 श	**भद्रांतः15:42 घं·, वैशाखस्नान आरम्भ, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा**, सर्वदेव दमनकोत्सव, स्वारोचिष मन्वादि, छत्रपति शिवाजी पुण्यदिवस।

❀ चैत्रशुक्लपक्ष – कृत्य एवं मुहूर्त्त ❀

❀ **नववर्षारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा**– यदि उदयकाल में प्रतिपदा का मान स्वल्प भी हो तो उसी दिन वर्षारम्भ होता है। यह चान्द्रवर्ष होता है– *तत्रौदयिकी प्रतिपद् ग्राह्या। दिनद्वये उदयव्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वा (धर्मसिन्धु, परिच्छेद 2, वर्षनिर्णय)।*

❀ **वासन्तिक नवरात्रि**– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा मुहूर्त्तमात्र भी द्वितीयायुक्त ग्राह्य होती है– *''परयुता मुहूर्त्तमात्रापि प्रतिपद् ग्राह्या (धर्मसिन्धु)।''* **घटस्थापना मुहूर्त्त – सूर्योदय से 10 घटी पर्यन्त श्रेष्ठ 06:25-10:25, अभिजित् 12:08 - 12:56**

नवरात्रि में चित्रा नक्षत्र एवं वैधृति योग में कभी भी कलशस्थापन नहीं करना चाहिए।(रुद्रयामल) इस वर्ष वैधृति नहीं है।

अखण्ड दीप जलाने का मन्त्र – अखण्डदीपकं देव्याः प्रीतये नवरात्रिकम्। प्रज्वालयेद् अहोरात्रं एकचित्तं दृढव्रतः।।

❀ **श्रीरामनवमी**– चैत्र शुक्ल नवमी के मध्याह्न में पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क लग्न में प्रभु श्रीराम का जन्म हुआ था। व्रतपूर्वक श्रीरामजी का जन्माभिषेक कर श्रीरामचरितमानस, श्रीरामरक्षास्तोत्र का पाठ करे। श्रीरामचन्द्रजी व तीनों भाइयों को निम्न मंत्र से अर्घ्य दें–

दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च।
परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोनघ ।।

❀ **दुर्गापाठ हवन व बलिदान**– नवमी तिथि में दुर्गापाठ का हवन करना चाहिए– *''नवम्यां पूजां विधाय होमः कार्यः''* (धर्मसिन्धु)। नवरात्रि पारणा दशमी में होती है– *''दशम्यामेव पारणा''*।

❀ **निम्बपत्रभक्षण**– चैत्र शुक्लपक्ष में निम्ब की सुकोमल पत्तियों एवं पुष्पों का चूर्ण बनाकर उसमें मरीचि (कालीमिर्च), सेंधा नमक, हींग, जीरा एवं आजवाइन को सम मात्रा में मिला कर खाने से वर्षपर्यन्त रक्तविकार एवं चर्मरोग नहीं होता है।

''पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः । सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः।
मरीचिं लवणं हिंगुं जीरकेण च संयुतम्। अजमोदयुतं कृत्वा भक्षयेद्रोगशान्तये।।''

ति	**श्राद्धकाल** घं·मि·
1	12:08–13:46
30	12:03–13:44

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

मार्च	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीनः
30	07:07	08:43	10:39	12:53	15:13	17:30	19:45	22:03	00:22	02:28	04:12	05:41
31	07:04	08:39	10:35	12:49	15:09	17:26	19:41	22:00	00:18	02:24	04:08	05:37
अप्रैल	07:00	08:36	10:31	12:45	15:05	17:22	19:37	21:56	00:14	02:20	04:04	05:33
2	06:56	08:32	10:27	12:41	15:01	17:18	19:33	21:52	00:11	02:16	04:00	05:29
3	06:52	08:28	10:23	12:37	14:58	17:14	19:29	21:48	00:07	02:12	03:56	05:26
4	06:48	08:24	10:19	12:33	14:54	17:10	19:25	21:44	00:03	02:08	03:53	05:22
5	06:44	08:20	10:15	12:30	14:50	17:06	19:21	21:40	23:59	02:04	03:49	05:18
6	06:40	08:16	10:11	12:26	14:46	17:02	19:17	21:36	23:55	02:00	03:45	05:14
7	06:36	08:12	10:07	12:22	14:42	16:58	19:13	21:32	23:51	01:56	03:41	05:10
8	06:32	08:08	10:04	12:18	14:38	16:54	19:09	21:28	23:47	01:52	03:37	05:06
9	06:28	08:04	10:00	12:14	14:34	16:50	19:05	21:24	23:43	01:48	03:33	05:02
10	06:24	08:00	09:56	12:10	14:30	16:46	19:01	21:20	23:39	01:44	03:29	04:58
11	06:20	07:56	09:52	12:06	14:26	16:42	18:57	21:16	23:35	01:40	03:25	04:54
12	06:16	07:52	09:48	12:02	14:22	16:39	18:53	21:12	23:31	01:37	03:21	04:50

मार्च	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
30	**द·ति**·14:36 से, **मृत्यु**·14:36 तक, **सर्वार्थ**·18:36 से
31	**द·ति**·12:11 तक, **मृत्यु**·12:11 तक
अप्रैल	**सिद्ध**·09:43 तक, **सर्वार्थ**·15:16 से, **रवियोगः**15:16 से
2	**सर्वार्थ·रवियोगः**13:43 तक, सर्वार्थ·13:43 से, **अमृत**·07:26 से
3	**रवियोगः**12:20 से
4	**मृत्यु**·25:42 तक, **रवियोगः**11:13 तक
5	**सिद्ध**·24:26 से ① रवियोगः10:05 से, **सिद्ध**·23:15 से
6	**सर्वार्थ**·10:02 से, **रवियोगः** 10:02 से, **अमृत**·23:36 से
7	**सर्वार्थ**·10:05 तक, **अमृत**·23:15 तक, **रवियोगः**10:05 तक, ①
8	**सर्वार्थ**·10:37 तक, **मृत्यु**·23:24 तक, **रवियोगः**10:37 तक, **अमृत**·23:24 तक,
9	**सिद्ध**·24:04 तक, **मृत्यु**·24:04 से ② **मृत्यु**·24:13 से
10	**द·न·उफा**·13:10 से, **अमृत**·24:13 तक, **रवियोगः**13:10 से, ②
11	**अमृत**·26:47 तक, **रवियोगः**15:07 तक
12	**मृत्यु**·28:39 तक, **अमृत**·28:39 से

चंद्रमा, मंगल आदि ग्रहों की संक्रांति का पुण्यकाल

चंद्रमा की संक्रांति में पिछली और अगली एक घटी तरह पल पुण्यकाल है। मंगल की संक्रांति में आगे पीछे चार घटी और एक पल पुण्यकाल है। बुध की संक्रांति में आगे पीछे की तीन घटी और चौदह पल पुण्यकाल है। बृहस्पति की संक्रांति में आगे पीछे की चार घटी और सैंतीस पल पुण्यकाल है। शुक्र की संक्रांति में आगे पीछे की चार घटी और एक पल पुण्यकाल है। शनि की संक्रांति में आगे पीछे सोलह घटी और सात पल पुण्यकाल है।

रात्रि में अन्य ग्रहों की संक्रांति हो तो रात्रि में ही पुण्यकाल जानना। सूर्य की संक्रांति की तरह दिन में पुण्यकाल के अभाव से चंद्रमा आदि की संक्रांतियों में स्नान काम्य है, नित्य नहीं है।

वैशाख कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2081 शाके 1946, 13 अप्रैल से 27 अप्रैल, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थिति 13:4:2025:– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अप्रैल	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	अप्रैल	13 अप्रैल से 27 अप्रैल, 2025
13	1 र	६0:00	अहोरात्र	चित्रा	३४:३२	19:58	हर्षण	३६:२१	20:42	बाल	17:40	कौल	30:08	31:32	6:10	18:47	तु·01:18	06:41	पद्म	13	श्रीएकलिंगजी पाटोत्सव
14	1 चं	0१:२५	06:43	स्वाती	४१:0८	22:36	वज्र	३७:५६	21:19	कौल	06:43	तैति	19:44	31:36	6:08	18:47	तुला	अहोरात्र	छत्र	14	**मीन मलमास समाप्त**
15	2 मं	0६:३६	08:46	विशा·	४७:२८	25:06	सिद्धि	३९:२0	21:51	गर	08:46	वणि	21:44	31:40	6:07	18:48	वृ·30:56	18:30	श्रीवत्स	15	आशा द्वितीया
16	3 बु	११:२२	10:39	अनु·	५३:१0	27:22	व्यति·	४0:१६	22:13	विष	10:39	बव	23:28	31:44	6:06	18:48	वृश्चिक	अहोरात्र	सौम्य	16	**संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थी** चन्द्रोदय घं·२१:५९
17	4 गु	१५:२१	12:14	ज्ये·	५७:५६	29:16	वरी·	४0:३0	22:17	बाल	12:14	कौल	24:51	31:47	6:05	18:49	ध·57:56	29:16	कालदंड	17	सती अनुसुइया जयन्ती
18	5 शु	१८:१६	13:23	मूल	६0:00	अहोरात्र	परिघ	३९:५३	22:01	तैति	13:23	गर	25:46	31:51	6:04	18:49	धनु	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	18	श्री मलूकदासजी जयन्ती
19	6 श	१९:५९	14:03	मूल	0१:३७	06:42	शिव	३८:१८	21:23	वणि	14:03	विष	26:11	31:55	6:03	18:50	धनु	अहोरात्र	गद	19	श्रीकोकिला षष्ठी
20	7 र	२0:२६	14:13	पू·षा·	0४:0३	07:40	सिद्ध	३५:४३	20:20	बव	14:13	बाल	26:05	31:59	6:02	18:50	म·19:27	13:49	शुभ	20	**श्रीकालाष्टमी**
21	8 चं	१९:३६	13:52	उ·षा·	0५:१४	08:07	साध्य	३२:0९	18:53	कौल	13:52	तैति	25:30	32:02	6:01	18:51	मकर	अहोरात्र	काण	21	**बूढ़ा बास्योड़ा**
22	9 मं	१७:३४	13:02	श्रवण	0५:१२	08:05	शुभ	२७:३९	17:04	गर	13:02	वणि	24:26	32:06	6:00	18:51	कु·34:46	19:55	लुम्ब	22	
23	10 बु	१४:२६	11:46	धनि·	0४:0६	07:38	शुक्ल	२२:१८	14:54	विष	11:46	बव	22:59	32:10	5:59	18:52	कुंभ	अहोरात्र	मित्र	23	मुनि सुमतिनाथ जयन्ती
24	11 गु	१0:२३	10:08	शत· पू·भा·	0२:0१ ५७:0७	06:47 29:38	ब्रह्म	१६:१३	12:28	बाल	10:08	कौल	21:12	32:14	5:59	18:52	मी·44:55	23:57	वज्र	24	**श्रीवरूथिनी एकादशी (सर्वेषाम्)**
25	12 शु	0५:३३	08:11	उ·भा·	५५:३९	28:13	ऐन्द्र	0९:३१	09:46	तैति	08:11	गर	19:07	32:17	5:58	18:53	मीन	अहोरात्र	ध्वज	25	**प्रदोष व्रतम्**
26	13 श 14 श	00:0७ ५४:0८	06:00 27:39	रेवती	५१:४५	26:39	वैधृ· विष्कु·	0२:२0 ५२:२८	06:53 27:52	वणि	06:00	विष	16:50	32:21	5:57	18:53	मे·51:45	26:39	धाता	26	**मास शिवरात्रि**, वैधृति पुण्यम्
27	30 र	४८:११	26:12	अश्वि·	४७:३८	24:59	प्रीति	४७:0८	24:47	चतु	14:26	नाग	26:12	32:24	5:56	18:54	मेष	अहोरात्र	आनन्द	27	**अमावस्या (देव पितृकार्य)**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क अप्रैल	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
13	1 र	11:29:02:34	05:29:44:13	03:03:12:52	11:02:18:44	01:24:23:09	10:24:12:10	10:28:44:41	11:04:18:29	45:46:14	उ·08:41:43	− 1:43	19:16
14	1 चं	00:00:01:17	06:11:45:37	03:03:36:20	11:03:01:52	01:24:33:49	10:24:27:27	10:28:51:46	11:04:15:19	45:48:11	द·21:07:29	− 1:26	20:10
15	2 मं	00:00:59:57	06:23:46:50	03:04:00:06	11:03:49:59	01:24:44:36	10:24:44:46	10:28:58:50	11:04:12:08	45:50:07	उ·09:26:17	− 1:10	21:05
16	3 बु	00:01:58:36	07:05:51:43	03:04:24:10	11:04:42:49	01:24:55:29	10:25:04:01	10:29:05:51	11:04:08:57	45:52:02	उ·09:48:21	− 0:55	21:59
17	4 गु	00:02:57:12	07:18:03:34	03:04:48:31	11:05:40:04	01:25:06:28	10:25:25:08	10:29:12:50	11:04:05:47	45:53:56	उ·10:10:14	− 0:39	22:53
18	5 शु	00:03:55:46	08:00:25:19	03:05:13:10	11:06:41:29	01:25:17:33	10:25:48:05	10:29:19:47	11:04:02:36	45:55:50	उ·10:31:57	− 0:24	23:47
19	6 श	00:04:54:18	08:12:59:23	03:05:38:04	11:07:46:49	01:25:28:43	10:26:12:46	10:29:26:42	11:03:59:26	45:57:44	उ·10:53:30	− 0:09	24:36
20	7 र	00:05:52:48	08:25:47:34	03:06:03:15	11:08:55:48	01:25:39:60	10:26:39:08	10:29:33:34	11:03:56:15	45:59:36	उ·11:14:53	+ 0:05	25:26
21	8 चं	00:06:51:15	09:08:50:57	03:06:28:42	11:10:08:14	01:25:51:21	10:27:07:07	10:29:40:23	11:03:53:04	46:01:28	उ·11:36:04	+ 0:19	26:08
22	9 मं	00:07:49:41	09:22:09:53	03:06:54:24	11:11:23:52	01:26:02:49	10:27:36:40	10:29:47:10	11:03:49:54	46:03:20	उ·11:57:03	+ 0:32	26:50
23	10 बु	00:08:48:04	10:05:43:56	03:07:20:21	11:12:42:32	01:26:14:21	10:28:07:43	10:29:53:54	11:03:46:43	46:05:10	उ·12:17:51	+ 0:45	27:29
24	11 गु	00:09:46:25	10:19:31:54	03:07:46:32	11:14:03:59	01:26:25:59	10:28:40:12	11:00:00:36	11:03:43:32	46:07:00	उ·12:38:27	+ 0:58	28:06
25	12 शु	00:10:44:44	11:03:31:54	03:08:12:58	11:15:28:05	01:26:37:42	10:29:14:05	11:00:07:14	11:03:40:22	46:08:49	उ·12:58:51	+ 1:10	27:44
26	13 श	00:11:43:00	11:17:41:28	03:08:39:38	11:16:54:39	01:26:49:30	10:29:49:17	11:00:13:50	11:03:37:11	46:10:37	उ·13:19:01	+ 1:22	29:22
27	30 र	00:12:41:15	00:01:57:35	03:09:06:32	11:18:23:31	01:27:01:22	11:00:25:46	11:00:20:23	11:03:34:00	46:12:24	उ·13:38:59	+ 1:33	06:05

17 अप्रैल सूर्योदयकालीन तिथि:**4**

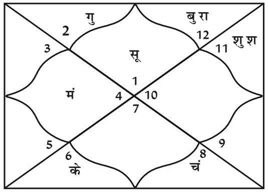

24 अप्रैल सूर्योदयकालीन तिथि:**11**

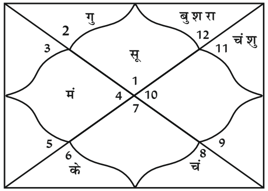

वैशाख कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2081 शाके 1946, 13 अप्रैल से 27 अप्रैल, 2025 ईस्वी

पक्षान्तः –कालःदक्षिण | ऋतुःवसन्त | उत्तरायणं | याम्यगोलः
मेषार्कतः सौम्यगोलः | तिः30 अयनांशाः22:53:26

दिनाङ्क अप्रैल	तिथि वार	व्रत-पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·)
13	1 र	आश्वन्यांमेषेरविः घं·05:38, पुष्येमङ्गलः घं·13:38, मेला श्रीमहावीरजी समाप्त।
14	1 चं	**मेष संक्रान्ति पुण्यकालं 06:08–12:28 घं.**, उत्तरभाद्रेबुधःघं·15:38।
15	2 मं	**भद्रारंभः 21:45 घं.।**
16	3 बु	**भद्रांतः10:40 घं.**, व्यतीपात पुण्यम्।
17	4 गु	**गण्डान्तारम्भः 22:50।**
18	5 शु	**गण्डान्तः11:41।**
19	6 श	**भद्रा 14:04–26:12 घं.।**
20	7 र	।
21	8 चं	**अभिजितारम्भः 26:01।**
22	9 मं	**अभिजितान्तः 09:42, पंचकारंभः 19:55, भद्रारंभः 24:28 घं.।**
23	10 बु	**पंचक, भद्रांतः11:47 घं.।**
24	11 गु	**पंचक, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती**, मीनेशनिःघं·03:58।
25	12 शु	**पंचक**, रेवत्यांबुधः घं·02:05।
26	13 श 14 श	**पंचकान्तः26:39, भद्रा 6:00–16:51 घं., गण्डान्तारम्भः21:03**, मीनेशुक्रःघं·13:13।
27	30 र	**गण्डान्तः08:14**, श्रीशुकदेव जयन्ती सरसकुंज, भरण्यांरविः घं·21:55।

ति	श्राद्धकाल घं·मि·
1	12:03–13:44
30	11:59–13:43

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अप्रैल	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीनः
13	06:12	07:48	09:44	11:58	14:18	16:35	18:50	21:08	23:27	01:33	03:17	04:46
14	06:08	07:44	09:40	11:54	14:14	16:31	18:46	21:04	23:23	01:29	03:13	04:42
15	06:04	07:40	09:36	11:50	14:10	16:27	18:42	21:00	23:19	01:25	03:09	04:38
16	06:01	07:36	09:32	11:46	14:06	16:23	18:38	20:57	23:15	01:21	03:05	04:34
17	05:57	07:33	09:28	11:42	14:02	16:19	18:34	20:53	23:11	01:17	03:01	04:30
18	05:53	07:29	09:24	11:38	13:58	16:15	18:30	20:49	23:08	01:13	02:57	04:27
19	05:49	07:25	09:20	11:34	13:55	16:11	18:26	20:45	23:04	01:09	02:53	04:23
20	05:45	07:21	09:16	11:30	13:51	16:07	18:22	20:41	23:00	01:05	02:50	04:19
21	05:41	07:17	09:12	11:26	13:47	16:03	18:18	20:37	22:56	01:01	02:46	04:15
22	05:37	07:13	09:08	11:23	13:43	15:59	18:14	20:33	22:52	00:57	02:42	04:11
23	05:33	07:09	09:04	11:19	13:39	15:55	18:10	20:29	22:48	00:53	02:38	04:07
24	05:29	07:05	09:00	11:15	13:35	15:51	18:06	20:25	22:44	00:49	02:34	04:03
25	05:25	07:01	08:57	11:11	13:31	15:47	18:02	20:21	22:40	00:45	02:30	03:59
26	05:21	06:57	08:53	11:07	13:27	15:43	17:58	20:17	22:36	00:41	02:26	03:55
27	05:17	06:53	08:49	11:03	13:23	15:39	17:54	20:13	22:32	00:37	02:22	03:51

❀ वैशाख मास कृत्य ❀

इस मास में भगवान् श्रीहरि की पूजा करने से दारुण पाप जलकर भस्म हो जाते हैं। वैशाख में प्रातःकाल पीपल वृक्ष की जड़ में प्रतिदिन जल देने से अपूर्व पुण्य की प्राप्ति व कुल का तारण होता है- "**अनेन अनेककुलतारणं फलम् ।**"

❀ **वैशाख स्नान का महत्त्व-** चैत्र पूर्णिमा से लेकर वैशाख पूर्णिमा तक सूर्योदयपूर्व संकल्पपूर्वक स्नान करने से समस्त पाप का नाश होता है। अशक्त स्थिति में वैशाख शुक्ल त्रयोदशी से पूर्णिमा तक सूर्योदयपूर्व स्नान करना चाहिए। वैशाख में तुलसीपत्र से भगवान् विष्णु की त्रिकाल पूजा करने से मोक्ष प्राप्ति होती है।

❀ **वैशाख मास में विशेष दान** - वैशाख में जलदान करने का विशेष पुण्य है। मिट्टी के घड़े द्रोण कलश में सुगन्धित शीतल जल भरकर दान करने का अपूर्व महत्व होता है। इस मास में शिवलिंग पर कलश से जल टपकाने की व्यवस्था करना अक्षय पुण्यकारी होता है। गर्मी से बचाने वाली वस्तु, मटका, जल दान, जूता, चप्पल, छाता, कपड़ा, पंखा, चंदन, मलमल वस्त्र, कर्पूर, ताम्बूल, फूल माला, सुगन्धित पदार्थ, शर्बत, अंगूर, तरबूज, खीरा, आम्र आदि दान करने से अक्षयफल की प्राप्ति होती है। वैशाख में प्रपा प्याऊ लगाने का बहुत ही महत्व है।

अप्रैल	सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग
13	मृत्यु·अहोरात्र
14	**सिद्ध**·06:43 तक, **मृत्यु**·06:43 से
15	**अमृत**·08:46 तक, **त्रिपुष्कर**·08:46 तक, **सिद्ध**·08:46 से,
16	**सर्वार्थ**·27:22 तक, **मृत्यु**·10:39 तक
17	**मृत्यु**·12:14 तक, **सिद्ध**·12:14 से
18	**द·ति**·13:23 से, **सिद्ध**·13:23 से
19	**द·ति**·14:03 तक, **अमृत**·14:03 तक, **रवियोग**·06:42 से
20	**रवियोग**·07:40 तक, **सर्वार्थ**·07:40 से, **त्रिपुष्कर**·07:40 से 14:13 तक, **सिद्ध**·14:13 से
21	**सर्वार्थ**·08:07 से
23	**द·न·ध**·07:38 तक, **अमृत**·11:46 से
25	**मृत्यु**·08:11 तक, **सर्वार्थ**·28:13 से
26	**सिद्ध**·14·06:00–27:39, **मृत्यु**·27:39 से
27	**द·न·भ**·24:59 से, **सर्वार्थ**·24:59 तक, **अमृत**·26:12 तक **मृत्यु**·26:12 से

❀ नागशाप, कालसर्प व राहु-केतु शान्त्यर्थ वैदिक प्रयोग ❀

संकल्प- ॐ ... देशकाल संकीर्त्य ... अमुक गोत्रोत्पन्नोहं अमुक नामाहं मम जन्मकुण्डल्यां सामुद्रिकलक्षणे वा सर्पशापजनित-दोषोपशान्तये च ममेह जन्मनि जन्मान्तरे वा ज्ञानाद् अज्ञानाद् वा कृतस्य सर्पवधस्य तदुत्थदोषस्य परिहारार्थं जीविका- व्यवसाय- विद्या- विवाह- सत्पुत्र स्वास्थ्य- राजसत्ता- पदप्रतिष्ठासम्बन्धी समस्तविघ्ननिरसनपूर्वकं साफल्यं सम्प्राप्तये, प्राप्तश्रीरक्षणार्थं, राहुकेतुजनित समस्त-अशुभफल निवारणार्थं शुभफलप्राप्तिकामनया नागशापशान्त्यर्थं कालसर्पदोषशान्त्यर्थं च श्रीसर्पदेवताप्रीत्यर्थं यजुर्वेदीय त्रिमन्त्रात्मक सर्पसूक्तस्य द्वादशशत पाठ कर्माऽहं करिष्ये/ ब्राह्मणानां कारयिष्ये।

विनियोगः - ॐ अस्य सर्पसूक्तस्य देवश्रवा ऋ षिः भुरिगुष्णिक् अनुष्टुप् निचृदनुष्टुप् नानाछन्दांसि सर्पसमूह देवता मम संकल्प सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

सर्पगायत्री-भुजङ्गेशाय विद्महे सर्पराजाय धीमहि । तन्नो नागः प्रचोदयात्।।

❀ सर्पसूक्तम् ❀

ॐ नमो अस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।1।।
येऽदो रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु ।
येषामप्सु सदः कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।2।।
या इषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीँ रनु ।
ये वा वटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।3।।

❀ शनि, रवि, मंगल को दाढ़ी-बाल न बनवायें ❀

शनि, रवि और मंगलवार को दाढ़ी, बाल, नाखून कटवाने से आयु घटती है। शेष दिनों में क्षौर कराने से आयु बढ़ती है। अनुराधा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, कृत्तिका और मघा नक्षत्र में भी दाढ़ी-बाल कटवाने से आयु की हानि होती है। **युक्षयोऽनुराधाग्नित्र्युत्तरारोहिणीमघे।।** जो लोग प्रतिदिन दाढ़ी बनाते हैं, उनपर यह दोष नहीं लगता है।

वैशाख शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2081 शाके 1946, 28 अप्रैल से 12 मई, 2025

ग्रहस्थितिः 28:4:2025– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अप्रैल	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	अप्रैल	28 अप्रैल से 12 मई, 2025
28	1 चं	४२:०७	22:46	भरणी	४३:३०	23:19	आयु·	३९:२८	21:42	किं	11:58	बव	22:46	32:28	5:55	18:54	वृ·57:29	28:54	सुस्थिर	28	मुनि कुन्थुनाथ जयन्ती॥
29	2 मं	३६:१५	20:24	कृत्ति·	३९:३४	21:44	सौभा·	३१:५७	06:41	बाल	09:34	कौल	20:24	32:31	5:54	18:55	वृष	अहोरात्र	गद	29	छत्रपति शिवाजी जयन्ती
30	3 बु	३०:४७	18:12	रोहि·	३६:०३	20:18	शोभ·	२४:४५	15:47	तैति	07:16	गर	18:12	32:35	5:53	18:55	वृष	अहोरात्र	शुभ	30	**अक्षय तृतीया, श्रीपरशुराम जयन्ती,** चन्दन श्रृंगार
मई	4 गु	२५:५४	16:14	मृग·	३३:०९	19:08	अतिग·	१८:००	13:04	विष	16:13	बव	16:14	32:38	5:52	18:56	मि·04:32	07:41	मृत्यु	मई	**वैनायकी गणेशचतुर्थी**
2	5 शु	२१:४६	14:34	आर्द्रा	३१:००	18:16	सुकर्मा	११:५२	10:36	बाल	14:33	कौल	14:34	32:42	5:51	18:56	मिथुन	अहोर	पद्म	2	**श्री आद्य शंकराचार्य जयन्ती**
3	6 श	१८:३४	13:16	पुन·	२९:४९	17:46	धृति	०६:२७	08:26	तैति	13:16	गर	13:16	32:45	5:51	18:57	क·15:01	11:51	छत्र	3	**श्रीस्कन्दषष्ठी, श्री रामानुजाचार्य जयन्ती**
4	7 र	१६:२६	12:24	पुष्य	२९:४२	17:43	शूल गण्ड	०१:५३ ५६:२१	06:35 29:07	वणि	12:24	विष	12:24	32:48	5:50	18:57	कर्क	अहोरात्र	श्रीवत्स	4	**श्रीगंगासप्तमी,** कामदा सप्तमी, शर्करा सप्तमी
5	8 चं	१५:२९	12:01	आश्ले·	३०:४७	18:08	वृद्धि	५५:३५	28:03	बव	12:00	बाल	12:01	32:52	5:49	18:58	सि·30:47	18:08	सौम्य	5	**श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीबगलामुखी जयन्ती, अन्नपूर्णा अष्टमी**
6	9 मं	१५:४८	12:07	मघा	३३:०७	19:03	ध्रुव	५३:५७	27:23	कौल	12:07	तैति	12:07	32:55	5:48	18:59	सिंह	अहोरात्र	कालदंड	6	**श्रीजानकी नवमी (सर्वेषाम्)**
7	10 बु	१७:२३	12:45	पू·फा·	३६:४१	20:28	व्याघ·	५३:१८	27:07	गर	12:45	वणि	12:45	32:58	5:48	18:59	कं·52:45	26:54	प्रवर्द्ध	7	**श्रीमहावीर स्वामी कैवल्यज्ञान**
8	11 गु	२०:१०	13:51	उ·फा·	४१:२२	22:20	हर्षण	५३:३०	27:11	विष	13:51	बव	13:51	33:01	5:47	19:00	कन्या	अहोरात्र	मातङ्ग	8	**श्रीमोहिनी एकादशी (सर्वेषाम्), श्रीहितहरिवंश जयन्ती**
9	12 शु	२४:०१	15:23	हस्त	४७:०१	24:35	वज्र	५४:२७	27:33	बाल	15:22	कौल	15:23	33:05	5:46	19:00	कन्या	अहोरात्र	अमृत	9	**प्रदोष व्रतम्,** श्रीपरशुराम द्वादशी, मधुसूदन द्वादशी
10	13 श	२८:३९	17:13	चित्रा	५३:१८	27:05	सिद्धि	५५:५२	28:06	तैति	17:12	गर	17:13	33:08	5:45	19:01	तु·20:07	13:48	काण	10	
11	14 र	३३:४३	19:14	स्वाती	५९:५३	29:42	व्यति·	५७:३१	28:45	गर	06:13	वणि	19:14	33:11	5:45	19:01	तुला	अहोरात्र	लुम्ब	11	**श्रीनृसिंह जयन्ती, श्रीछिन्नमस्ता जयन्ती** (प्रदोषे)
12	15 चं	३८:४९	21:16	विशा·	६०:००	अहोरात्र	वरी·	५९:०३	29:21	विष	08:15	बव	21:16	33:14	5:44	19:02	वृ·49:44	25:38	मित्र	12	**वैशाखी पूर्णिमा (व्रत–स्नान–दान), बुद्ध पूर्णिमा**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क अप्रैल	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
28	1 चं	00:13:39:27	00:16:16:56	03:09:33:39	11:19:54:32	01:27:13:20	11:01:03:29	11:00:26:53	11:03:30:50	46:14:11	उ·13:58:43	+ 1:44	06:04
29	2 मं	00:14:37:38	01:00:35:34	03:10:00:59	11:21:27:35	01:27:25:22	11:01:42:23	11:00:33:19	11:03:27:39	46:15:56	उ·14:18:13	+ 1:54	06:49
30	3 बु	00:15:35:46	01:14:49:48	03:10:28:32	11:23:02:30	01:27:37:29	11:02:22:25	11:00:39:43	11:03:24:28	46:17:41	उ·14:37:30	+ 2:04	07:40
मई	4 गु	00:16:33:52	01:28:56:25	03:10:56:18	11:24:39:10	01:27:49:40	11:03:03:32	11:00:46:03	11:03:21:18	46:19:24	उ·14:56:32	+ 2:13	08:35
2	5 शु	00:17:31:56	02:12:52:35	03:11:24:16	11:26:17:29	01:28:01:56	11:03:45:43	11:00:52:20	11:03:18:07	46:21:07	उ·15:15:19	+ 2:22	09:33
3	6 श	00:18:29:59	02:26:35:58	03:11:52:26	11:27:57:21	01:28:14:16	11:04:28:53	11:00:58:33	11:03:14:56	46:22:48	उ·15:33:51	+ 2:30	10:34
4	7 र	00:19:27:59	03:10:04:58	03:12:20:47	11:29:38:39	01:28:26:40	11:05:13:02	11:01:04:43	11:03:11:46	46:24:28	उ·15:52:08	+ 2:38	11:34
5	8 चं	00:20:25:57	03:23:18:36	03:12:49:21	00:01:21:16	01:28:39:09	11:05:58:06	11:01:10:50	11:03:08:35	46:26:07	उ·16:10:09	+ 2:45	12:34
6	9 मं	00:21:23:53	04:06:16:45	03:13:18:05	00:03:05:09	01:28:51:41	11:06:44:04	11:01:16:53	11:03:05:24	46:27:45	उ·16:27:55	+ 2:51	13:32
7	10 बु	00:22:21:48	04:18:59:58	03:13:47:00	00:04:50:12	01:29:04:17	11:07:30:53	11:01:22:52	11:03:02:14	46:29:22	उ·16:45:24	+ 2:57	14:27
8	11 गु	00:23:19:40	05:01:29:38	03:14:16:06	00:06:36:20	01:29:16:57	11:08:18:32	11:01:28:47	11:02:59:03	46:30:58	उ·17:02:36	+ 3:03	15:21
9	12 शु	00:24:17:31	05:13:47:44	03:14:45:23	00:08:23:27	01:29:29:40	11:09:06:58	11:01:34:38	11:02:55:52	46:32:32	उ·17:19:31	+ 3:08	16:15
10	13 श	00:25:15:20	05:25:56:55	03:15:14:50	00:10:11:31	01:29:42:27	11:09:56:10	11:01:40:26	11:02:52:42	46:34:05	उ·17:36:10	+ 3:12	17:07
11	14 र	00:26:13:06	06:08:00:14	03:15:44:27	00:12:00:27	01:29:55:18	11:10:46:06	11:01:46:09	11:02:49:31	46:35:36	उ·17:52:30	+ 3:16	18:01
12	15 चं	00:27:10:52	06:20:01:08	03:16:14:14	00:13:50:11	02:00:08:12	11:11:36:44	11:01:51:48	11:02:46:20	46:37:06	उ·18:08:33	+ 3:19	18:55

1 मई सूर्योदयकालीन तिथिः**4**

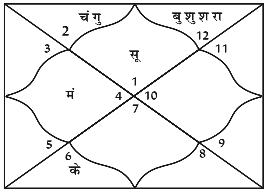

8 मई सूर्योदयकालीन तिथिः**11**

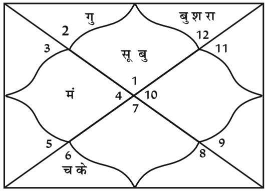

वैशाख शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2081 शाके 1946, 28 अप्रैल से 12 मई, 2025

पक्षान्तः– कालःपश्चिम । ऋतुःवसन्त । उत्तरायणं ।
सौम्यगोलः, ति·15 अयनांशा:22:52:36

दिनाङ्क अप्रैल	तिथि वार	व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·)
28	1 चं	।
29	2 मं	।
30	3 बु	**भद्रारंभः 29:09 घं·**, त्रेतायुगादि, कल्पादि, श्रीमातंगी जयन्ती, जलकलश दान।
मई	4 गु	**भद्रांत:16:14 घं·**, मजदूर दिवस, उत्तरभाद्रेशुक्रःघं·15:27, पूभायां राहुःघं·15:40।
2	5 शु	संत श्रीसूरदास जयन्ती।
3	6 श	चन्दनषष्ठी।
4	7 र	**भद्रा 12:25–24:09 घं·**, श्रीकमला सप्तमी, निम्ब सप्तमी, आश्वन्यांबुधःघं·10:59।
5	8 चं	**गण्डान्त:11:59–24:20**।
6	9 मं	।
7	10 बु	**भद्रारंभः 25:15 घं·**।
8	11 गु	**भद्रांत:13:51 घं·, श्री लक्ष्मीनारायण एकादशी**।
9	12 शु	श्री रुक्मिणी द्वादशी।
10	13 श	। (१) कृत्तिकायांरविः घं·16:56।
11	14 र	**भद्रारंभः 19:15 घं·**, व्यतीपात पुण्यम्, मिथुनेगुरुः घं·14:38, भरण्यांबुधः घं·23:17 (१)
12	15 चं	**भद्रांत:8:16 घं·, श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, पीपल पूर्णिमा**, मेला देवयानी सांभर, आश्लेषयांमङ्गलःघं·26:30।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
1	11:59–13:43
15	11:54–13:43

❀ वैशाख मास कृत्य ❀

❀ **अक्षयतृतीया–** वैशाख शुक्ल तृतीया को भगवान श्री परशुराम का अवतार व त्रेतायुग की प्रवृत्ति हुई। उस दिन वेद धर्म की प्रवृत्ति हुई। यह अक्षय तृतीया श्रीहरि भगवान को बहुत प्यारी है, इस में स्नान, दान, पूजा, श्राद्ध, जप और पितृ–तर्पण का अक्षय फल प्राप्त होता है। अक्षय तृतीया पूर्वाह्नव्यापिनी ग्राह्य होती है। दो दिन पूर्वाह्न में होने पर अगली तिथि ग्राह्य होती है। द्वितीया विद्धा अग्राह्य व चतुर्थी विद्धा शुभ होती है *(निर्णयसिन्धु)*–

वैशाखशुक्लतृतीया अक्षय्यतृतीयोच्यते।
सापूर्वाह्नव्यापिनीग्राह्या। दिनद्वयेपितद्व्याप्तौपरैव।

अक्षय तृतीया को गंगास्नान करके मनुष्य सब पापों से रहित होता है, और उस दिन यवों से हवन, यवों से विष्णु का अर्चन, ब्राह्मणों को यव दे और स्वयं भी यव ही भक्षण करे। सुवर्ण, अन्न, सम्पूर्ण रसों सहित जल के घड़े, तव, गेहूं, चने, सत्तू भात और ग्रीष्म ऋतु के सम्पूर्ण वस्तु दान करे। इस दिन रोहिणी नक्षत्र में जल के घड़े को पूजकर दान देने से शिवलोक में सत्कार पाता है, उसका मंत्र है:–

एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः।
अस्य प्रदानातृप्यन्तु पितरोअपि पितामहाः।।
गन्धोदकतिलैर्मिश्रं सान्नं कुम्भं फलान्वितं।
पितृभ्यः संप्रदास्यामि अक्षय्यमुपतिष्ठतु।।

❀ **चन्दनोत्सव–** भी इसी दिन करें। श्रीठाकुरजी को अभ्यंग पूर्वक स्नान कराकर गुलाब जल में घिसे हुए केशर–कपूर–चन्दन का सर्वांग में लेपन करें, अत्यन्त महीन–वस्त्र धारण करावें, आभूषण–पुष्पादि से श्रृंगार कर सिंहासन पर विराजमान करें।

❀ **श्रीगंगासप्तमी–** वैशाख शुक्ल सप्तमी के दिन महर्षि जह्नु ने अपने दाहिने कान से गंगा को पृथ्वी पर छोड़ा था। गंगा सप्तमी मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्य होती है। दोनों दिन मध्याह्न व्यापिनी होने, या न होने पर पूर्वातिथि ग्राह्य होती है।

❀ द्वादशाक्षर मन्त्र ❀

विनियोगः–ॐ अस्य श्रीद्वादशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापति ऋषिः गायत्री छन्दः वासुदेव देवता ॐ बीजं नमः शक्तिः श्रीवासुदेवप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः। **ध्यानम्**(प्रपंचसारे):–
हरिमुज्जवल चक्रदराब्ज गदाकुलदोः परिघं सितपद्मगतम्।
वलयांगदहारकिरीटधरं नवकुन्दरुचं प्रणमामि सदा।

मन्त्रः – **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अप्रैल	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
28	05:13	06:49	08:45	10:59	13:19	15:35	17:50	20:09	22:28	00:34	02:18	03:47
29	05:09	06:45	08:41	10:55	13:15	15:32	17:46	20:05	22:24	00:30	02:14	03:43
30	05:05	06:41	08:37	10:51	13:11	15:28	17:43	20:01	22:20	00:26	02:10	03:39
मई	05:01	06:37	08:33	10:47	13:07	15:24	17:39	19:57	22:16	00:22	02:06	03:35
2	04:57	06:33	08:29	10:43	13:03	15:20	17:35	19:53	22:12	00:18	02:02	03:31
3	04:53	06:29	08:25	10:39	12:59	15:16	17:31	19:50	22:08	00:14	01:58	03:27
4	04:49	06:25	08:21	10:35	12:55	15:12	17:27	19:46	22:04	00:10	01:54	03:23
5	04:45	06:22	08:17	10:31	12:51	15:08	17:23	19:42	22:01	00:06	01:50	03:20
6	04:42	06:18	08:13	10:27	12:47	15:04	17:19	19:38	21:57	00:02	01:47	03:16
7	04:38	06:14	08:09	10:23	12:44	15:00	17:15	19:34	21:53	23:58	01:43	03:12
8	04:34	06:10	08:05	10:19	12:40	14:56	17:11	19:30	21:49	23:54	01:39	03:08
9	04:30	06:06	08:01	10:15	12:36	14:52	17:07	19:26	21:45	23:50	01:35	03:04
10	04:26	06:02	07:57	10:12	12:32	14:48	17:03	19:22	21:41	23:46	01:31	03:00
11	04:22	05:58	07:53	10:08	12:28	14:44	16:59	19:18	21:37	23:42	01:27	02:56
12	04:18	05:54	07:49	10:04	12:24	14:40	16:55	19:14	21:33	23:38	01:23	02:52

अप्रैल	सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग
28	**सिद्ध**·22:46 तक, **मृत्यु**·22:46 से,
29	**सर्वार्थ**·21:44 तक, **अमृत**·20:24 तक, **त्रिपुष्कर**:20:24
30	**सर्वार्थ**·20:18 तक, **मृत्यु**·18:12 तक, **सर्वार्थ**·20:18 से
मई	**मृत्यु**·16:14 तक, **रवियोग**:19:08 तक, **सिद्ध**·16:14 से
2	**द·ति**·14:34 से, **सिद्ध**·14:34 से, **सर्वार्थ·रवियोग** 8:16 से
3	**द·ति**·13:16 तक, **अमृत**·13:16 तक, **रवियोग**:17:46
4	**सर्वार्थ**·17:43 तक, **सिद्ध**·12:24 से
5	**रवियोग**:18:08 से
6	**रवियोग**:19:03 तक, **रवियोग**:19:03 से
7	**रवियोग**:20:28 तक, **अमृत**·12:45 से
8	**द·न**·उफा·22:20 तक
9	**मृत्यु**·15:23 तक, **रवियोग**:24:35 से
10	**रवियोग**:27:05 तक, **सिद्ध**·17:13 से, **सर्वार्थ**·27:05 से
11	**अमृत**·19:14 से, **रवियोग**:29:42 तक
12	**अमृत**·21:16 तक, **सिद्ध**·21:16 से

❀ श्रीनृसिंह मंत्रराज ❀

विनियोगः– ॐ अस्य श्री नृसिंह मन्त्रराजस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप् छंदः नृसिंह देवता हं बीजं ई शक्तिः श्रीनृसिंहप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः

सौम्य ध्यान –जान्वोरासक्ततीक्ष्णस्वनखरुचिलसद्बाहुसंस्पृष्टं,
केशश्चक्रं खड्गं च दोर्भ्यां दधदनलसमज्योतिषा ग्रस्तदैत्यः ।
ज्वालामालापरीतं रविशशिदहनत्रीक्षणं दीप्तजिह्वं,
दंष्ट्रोग्रं धूतकेशं वदनमपि वहन् पातु वो नारसिंहः ।।

मन्त्रः– **ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतो मुखम् ।**
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युं मृत्युं नमाम्यहम् ।

इस मन्त्र के दस हज़ार जप से पुरश्चरण होता है व 32 हज़ार जप के बाद मन्त्र प्रयोग का अधिकारी बनता है। जप पूर्णता के लिए प्रतिदिन श्रीनरसिंह भगवान् की पूजा करते रहना चाहिए। इस मंत्र के जप के बाद द्वादशाक्षर मन्त्र का जप भी करना चाहिए।

ज्येष्ठ कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 13 मई से 27 मई, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 13:5:2025– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
मई	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	मई	**13 मई से 27 मई, 2025**
13	1 मं	४३:२९	23:07	विशा·	०६:२०	08:15	परिघ	६०:००	अहोरात्र	बाल	10:13	कौल	23:07	33:17	5:44	19:02	वृश्चिक	अहोरात्र	श्रीवत्स	13	श्रीठाकुरजी की जलसेवा आरम्भ
14	2 बु	४७:२४	24:40	अनु·	१२:१२	10:36	परिघ	००:१२	05:48	तैति	11:56	गर	24:40	33:20	5:43	19:03	वृश्चिक	अहोरात्र	सौम्य	14	**देवर्षि श्रीनारद जयन्ती**, वृन्दावन परिक्रमा व वनविहार
15	3 गु	५०:१६	25:49	ज्ये·	१७:१२	12:35	शिव	००:४१	05:59	वणि	13:21	विष	25:49	33:22	5:42	19:03	ध·17:12	12:35	कालदंड	15	**वृष संक्रान्ति पुण्यकालं 5:42–12:22 घं·**
16	4 शु	५१:५७	26:28	मूल	२१:०७	14:08	सिद्ध साध्य	००:१९ ५८:४१	**05:49** **29:17**	बव	14:12	बाल	26:28	33:25	5:42	19:04	धनु	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	16	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी**, चन्द्रोदय घं·22:28
17	5 श	५२:२१	26:37	पू·षा·	२३:४९	15:13	शुभ	५६:४३	28:22	कौल	14:36	तैति	26:37	33:28	5:41	19:05	म·39:18	21:24	मातङ्ग	17	कृष्ण पंचमी (जैन)
18	6 र	५१:२८	26:16	उ·षा·	२५:१६	15:47	शुक्ल	५३:२५	27:03	गर	14:30	वणि	26:16	33:31	5:41	19:05	मकर	अहोरात्र	अमृत	18	
19	7 चं	४९:२४	25:26	श्रवण	२५:३१	15:53	ब्रह्म	४९:१०	25:20	विष	13:54	बव	25:26	33:33	5:40	19:06	कुं·55:12	27:45	सिद्धि	19	
20	8 मं	४६:१५	24:10	धनि·	२४:३८	15:31	ऐन्द्र	४४:०३	23:17	बाल	12:51	कौल	24:10	33:36	5:40	19:06	कुंभ	अहोरात्र	उत्पात	20	**श्रीकालाष्टमी**, श्री दादूदयाल पुण्यदिवस
21	9 बु	४२:०९	22:31	शत·	२२:४५	14:45	वैधृ·	३८:०९	20:55	तैति	11:22	गर	22:31	33:38	5:39	19:07	कुंभ	अहोरात्र	मानस	21	
22	10 गु	३७:१७	20:33	पू·भा·	२०:०३	13:40	विष्कु·	३१:३८	18:18	वणि	09:34	विष	20:33	33:41	5:39	19:07	मी·05:48	07:58	मुद्गर	22	
23	11 शु	३१:४८	18:21	उ·भा·	१६:४१	12:19	प्रीति	२४:३५	15:28	बव	07:28	बाल	18:21	33:43	5:38	19:08	मीन	अहोरात्र	ध्वज	23	**श्रीअपरा एकादशी (सर्वेषाम्)**
24	12 श	२५:५४	15:59	रेवती	१२:५१	10:46	आयु·	१७:११	12:30	तैति	15:59	गर	26:46	33:46	5:38	19:08	मे·12:51	10:46	धाता	24	**प्रदोष व्रत**, मधुसूदनद्वादशी,वटसावित्री व्रतारम्भ (उत्तरभारत)
25	13 र	१९:४७	13:32	अश्वि·	०८:४५	09:08	सौभा·	०९:३५	09:27	वणि	13:32	विष	24:17	33:48	5:37	19:09	मेष	अहोरात्र	आनन्द	25	**मास शिवरात्रि**,वटसावित्री द्वितीय दिन,रोहिणी नौतपा आरम्भ
26	14 चं	१३:३८	11:04	भरणी	०४:३६	07:27	शोभ· अतिग·	०१:५५ ५२:२७	**06:23** **27:22**	शकु	11:04	चतु	21:51	33:50	5:37	19:09	वृ·18:34	13:03	सुस्थिर	26	**ज्येष्ठी अमावस्या (पितृकार्य)**, वटसावित्री व्रतपूर्ति
27	30 मं	०७:४२	08:41	कृत्ति· रोहि·	००:३६ ५६:२१	**05:51** **28:23**	सुकर्मा	४७:०७	24:28	नाग	08:41	किं	19:33	33:52	5:37	19:10	वृष	अहोरात्र	गद	27	**ज्येष्ठी अमावस्या (देवकार्य)**

✳ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ✳

दिनाङ्क मई	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
13	1 मं	00:28:08:35	07:02:03:36	03:16:44:10	00:15:40:38	02:00:21:09	11:12:28:03	11:01:57:24	11:02:43:10	46:38:35	उ·18:24:18	+ 3:21	19:49
14	2 बु	00:29:06:16	07:14:11:12	03:17:14:17	00:17:31:46	02:00:34:09	11:13:20:02	11:02:02:55	11:02:39:59	46:40:02	उ·18:39:44	+ 3:23	20:43
15	3 गु	01:00:03:56	07:26:27:06	03:17:44:32	00:19:23:31	02:00:47:13	11:14:12:37	11:02:08:21	11:02:36:48	46:41:28	उ·18:54:52	+ 3:25	21:38
16	4 शु	01:01:01:34	08:08:54:01	03:18:14:56	00:21:15:49	02:01:00:19	11:15:05:50	11:02:13:43	11:02:33:38	46:42:52	उ·19:09:41	+ 3:26	22:28
17	5 श	01:01:59:11	08:21:34:07	03:18:45:30	00:23:08:37	02:01:13:29	11:15:59:37	11:02:19:01	11:02:30:27	46:44:15	उ·19:24:10	+ 3:26	23:17
18	6 र	01:02:56:45	09:04:28:54	03:19:16:12	00:25:01:51	02:01:26:41	11:16:53:58	11:02:24:15	11:02:27:16	46:45:35	उ·19:38:20	+ 3:26	24:03
19	7 चं	01:03:54:18	09:17:39:08	03:19:47:03	00:26:55:30	02:01:39:56	11:17:48:51	11:02:29:23	11:02:24:06	46:46:55	उ·19:52:10	+ 3:25	24:45
20	8 मं	01:04:51:50	10:01:04:50	03:20:18:02	00:28:49:28	02:01:53:14	11:18:44:16	11:02:34:27	11:02:20:55	46:48:12	उ·20:05:40	+ 3:23	25:25
21	9 बु	01:05:49:20	10:14:45:14	03:20:49:09	01:00:43:45	02:02:06:34	11:19:40:11	11:02:39:27	11:02:17:44	46:49:28	उ·20:18:50	+ 3:21	26:03
22	10 गु	01:06:46:48	10:28:38:50	03:21:20:25	01:02:38:15	02:02:19:57	11:20:36:35	11:02:44:21	11:02:14:34	46:50:42	उ·20:31:39	+ 3:19	26:41
23	11 शु	01:07:44:15	11:12:43:28	03:21:51:49	01:04:32:57	02:02:33:22	11:21:33:27	11:02:49:11	11:02:11:23	46:51:54	उ·20:44:07	+ 3:16	27:19
24	12 श	01:08:41:40	11:26:56:24	03:22:23:21	01:06:27:48	02:02:46:49	11:22:30:46	11:02:53:55	11:02:08:12	46:53:04	उ·20:56:15	+ 3:12	27:58
25	13 र	01:09:39:04	00:11:14:30	03:22:55:01	01:08:22:44	02:03:00:18	11:23:28:31	11:02:58:35	11:02:05:02	46:54:12	उ·21:08:00	+ 3:08	28:43
26	14 चं	01:10:36:27	00:25:34:12	03:23:26:49	01:10:17:39	02:03:13:50	11:24:26:41	11:03:03:10	11:02:01:51	46:55:18	उ·21:19:24	+ 3:03	29:30
27	30 मं	01:11:33:48	01:09:51:31	03:23:58:44	01:12:12:30	02:03:27:23	11:25:25:16	11:03:07:39	11:01:58:40	46:56:22	उ·21:30:27	+ 2:58	06:25

16 मई सूर्योदयकालीन तिथि:**4**

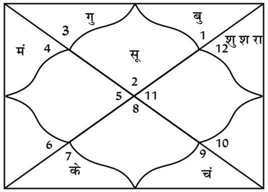

23 मई सूर्योदयकालीन तिथि:**11**

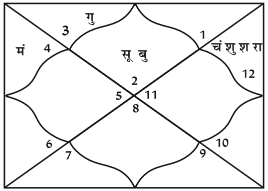

ज्येष्ठ कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 13 मई से 27 मई, 2025 ईस्वी

पक्षान्तः– कालः पश्चिम । ऋतुःवसन्त वृषार्कतः ऋतुःग्रीष्म । उत्तरायण । सौम्यगोलः । ति·30 अयनांशाः 22:53:30

दिनाङ्क मई	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
13	1 मं	।
14	2 बु	।
15	3 गु	**भद्रा 13:18–25:49 घं·, गण्डान्तः6:08–19:01,** वृषेरविः घं·04:04।
16	4 शु	।
17	5 श	रेवत्यांशुक्रः घं·23:40।
18	6 र	**भद्रारंभः 26:16 घं·, अभिजितः 09:42–17:25,** कृत्तिकायांबुधः घं·2:31।
19	7 चं	**पंचकारंभः 27:45, भद्रांतः13:55 घं·।**
20	8 मं	**पंचक,** मेला चननी माताजी, वृषेबुधः घं·20:34।
21	9 बु	**पंचक,** वैधृति पुण्यम्।
22	10 गु	**पंचक, भद्रा 9:35–20:34 घं·।**
23	11 शु	**पंचक, गण्डान्तारम्भः 29:11,** जलक्रीड़ा एकादशी उड़ीसा।
24	12 श	**पंचकान्तः10:47, गण्डान्तः16:23,** मुनि अनन्तनाथ जयन्ती१२।
25	13 र	**भद्रा 13:33–24:18 घं·,** रोहिण्यांरविः घं·14:24।
26	14 चं	मुनि शान्तिनाथ जयन्ती१४, **बड़पूजन,** रोहिण्यांबुधः घं·02:02।
27	30 मं	**श्रीशनि जयन्ती,** संत श्री ज्ञानेश्वर जयन्ती।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
1	11:56–13:44
30	11:57–13:47

❀ ज्येष्ठ मास कृत्य ❀

❀ **शनिजयन्ती-** ज्येष्ठ अमावास्या के दिन शनि देव की जयन्ती मनायी जाती है। आज शनि का पूजन एवं दान किया जाता है। कालावस्त्र, तिल, तेल का दान शनिजनित कष्ट को दूर करता है।

शनिग्रह का ध्यानमंत्र- नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी, गृध्रस्थितः शस्त्रधरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः, सदास्तु मह्यं वरदोस्तु नित्यम् ।।

नीलवस्त्र धारण करने वाले, शूल धारण करने वाले, मुकुट धारण करने वाले, गृध्रवाहन पर स्थित शस्त्रधारण करने वाले, धनुष से युक्त, चार भुजाधारी भगवान् सूर्य के पुत्र प्रशान्त शनि हमारे लिए हमेशा वरदायी हों।

शनि गायत्री- ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।।

शनिमन्त्र- ॐ नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

यात्रा, विवाह, व्यापार आरम्भ करना तथा कर्ज का लेन–देन इन तीनों में दग्धतिथि से बचना चाहिए।

दग्धतिथि का फल – *एभिर्यातो स जीवेत यदि शक्रसमो भवेत्।*
विवाहे विधवा नारी वाणिज्ये मूलनाशनम्।कुशीदस्य विवादः स्यात् यात्रायां मरणं ध्रुवम्।।

अर्थात् इसमें यात्रा करने वाला यदि इन्द्र के समान प्रतापी होगा तभी जीवित रहेगा। विवाह करने से नारी विधवा होती है, व्यापार करने से मूलधन भी नष्ट हो जाता है। कर्ज लेन–देन करने से विवाद होता है तथा यात्रा में निश्चित मरण होता है। रविवार को भरणी, सोमवार को चित्रा, मंगल को उषा, बुध को धनिष्ठा, गुरू को उफा, शुक्र को ज्येष्ठा एवं शनि को रेवती दग्ध संज्ञक नक्षत्र हैं, इनमें शुभ कार्य करना वर्जित है।

❀ शनि दोष शान्ति के उपाय

छायादान- लोहा, कांसा या स्टील की कटोरी या कड़ाही में सरसों तेल भरकर पाँच का सिक्का एवं काली तिल डालकर शनिवार के दिन दोपहर में तेल में अपने चेहरे की छाया देखकर दान करने से शनिग्रह का दोष तत्काल दूर होता है। इससे स्वास्थ्य एवं मन पर शीघ्र शुभ प्रभाव पड़ता है।

उतारा(भैरवप्रयोग)-एक रोटी में गुड़ -घी लगाके अपने सिर पर से सात बार घड़ी की तरह घुमाकर शनिवार को कुत्ते को खिलाने से व्यापक लाभ होता है। रोटी घुमाते समय कोई टोके नहीं। इससे प्रभामण्डल ठीक हो जाता है।

सिक्का का उतारा- शनिवार रात्रि में किसी चौराहे पर जाकर पाँच सिक्कों को मुट्ठी में बंदकर अपने सिर पर से सात बार घड़ी की तरह घुमाकर वहीं पर छोड़ दें। यह प्रयोग एक या दो बार करने से ही अद्भुत लाभ देता है।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

मई	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
13	4:14	5:50	7:46	10:00	12:20	14:36	16:51	19:10	21:29	23:34	1:19	2:48
14	4:10	5:46	7:42	9:56	12:16	14:32	16:47	19:06	21:25	23:30	1:15	2:44
15	4:06	5:42	7:38	9:52	12:12	14:28	16:43	19:02	21:21	23:27	1:11	2:40
16	4:02	5:38	7:34	9:48	12:08	14:25	16:39	18:58	21:17	23:23	1:07	2:36
17	3:58	5:34	7:30	9:44	12:04	14:21	16:36	18:54	21:13	23:19	1:03	2:32
18	3:54	5:30	7:26	9:40	12:00	14:17	16:32	18:50	21:09	23:15	0:59	2:28
19	3:50	5:26	7:22	9:36	11:56	14:13	16:28	18:47	21:05	23:11	0:55	2:24
20	3:46	5:22	7:18	9:32	11:52	14:09	16:24	18:43	21:01	23:07	0:51	2:21
21	3:43	5:18	7:14	9:28	11:48	14:05	16:20	18:39	20:58	23:03	0:47	2:17
22	3:39	5:15	7:10	9:24	11:44	14:01	16:16	18:35	20:54	22:59	0:44	2:13
23	3:35	5:11	7:06	9:20	11:41	13:57	16:12	18:31	20:50	22:55	0:40	2:09
24	3:31	5:07	7:02	9:16	11:37	13:53	16:08	18:27	20:46	22:51	0:36	2:05
25	3:27	5:03	6:58	9:12	11:33	13:49	16:04	18:23	20:42	22:47	0:32	2:01
26	3:23	4:59	6:54	9:09	11:29	13:45	16:00	18:19	20:38	22:43	0:28	1:57
27	3:19	4:55	6:50	9:05	11:25	13:41	15:56	18:15	20:34	22:39	0:24	1:53

मई	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
13	**मृत्यु**·23:07 तक, **अमृत**·23:07 से
14	**सर्वार्थ**·10:36 तक, **सिद्ध**·24:40 तक, **मृत्यु**·10:36 से
15	**अमृत**·25:49 तक, **मृत्यु**·25:49 से
16	**द·ति**·23:28 से, **अमृत**·23:28 तक
17	**द·ति**·26:37 तक, **मृत्यु**·26:37 तक, **अमृत**·26:37 से
18	**सर्वार्थ**·15:47 तक, **मृत्यु**·26:16 तक, **रवियोगः**15:47 से
19	**सर्वार्थ**·15:53 तक, **मृत्यु**·25:26 तक, **रवियोगः**15:53 तक
20	**सिद्ध**·24:10 तक
22	**सिद्ध**·20:33 तक
23	**सिद्ध**·18:21 तक, **सर्वार्थ**·12:19 से, **मृत्यु**·18:21 से
24	**द·न·रे**·10:46 तक
25	**सर्वार्थ**·09:08 तक, **सिद्ध**·13:32 तक
26	**अमृत**·11:04 से
27	**सर्वार्थ**·05:51 तक, **मृत्यु**·08:41 से

❀ **सम्पूर्ण ज्येष्ठ मास** में जलमंदिर के मध्य संपादित उपचारों से श्रीहरि की सेवा करें। जल क्रीड़ा के उपयोगी सब सामग्री और भोग धरें।

❀ **माँ गंगा का स्वरूप – 1·** चतुर्भुजा, **2·** त्रिनेत्रा, **3·** एक हाथ में पूर्णकुम्भ, **4·** एक हाथ में श्वेत कमल, **5·** एक हाथमें अभयमुद्रा, **6·** एक हाथ में वरद मुद्रा, **7·** नदी नद से सुशोभित, **8·** श्वेतछत्र से सुशोभित, **9·** छरहरी देह युक्त, **10·** देव, ऋषि आदि से संस्तुत।
–(स्कन्दपुराण, काशीखण्ड– 27/142-145)

❀ **गंगा पूजा –** दश संख्या की वस्तु से गंगा पूजन का विशेष महत्व है। दशविध पुष्प, दशांग, दशविध फल, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूलादि से पूजा करें।

❀ **कलौ गंगा हि केवलम्–** कलियुग में मनुष्य के उद्धार के लिए एकमात्र गंगा ही साधन हैं–

ध्यानं कृते मोक्ष हेतुः त्रेतायां पुष्करं परम् ।
द्वापरे तद्वद् यज्ञाः कलौ गंगैव केवलम् ॥

गंगातट पर वास मात्र से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होती है–

वास एव हि गंगायां ब्रह्मज्ञानस्य कारणम्॥

ज्येष्ठ शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 28 मई से 11 जून, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 28:6:2025– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
मई	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	मई	28 मई से 11 जून, 2025
28	1 बु 2 बु	०२:०८ ५५:००	06:28 28:28	मृग·	५३:५१	27:09	धृति	४०:१८	21:44	बव	06:28	बाल	17:25	33:54	5:36	19:10	मि·25:19	15:44	अमृत	28	करवीर व्रत, गंगा दशाश्वमेध स्नानप्रारम्भ 10 तिथि यावत्
29	3 गु	५२:५४	26:46	आर्द्रा	५१:३१	26:13	शूल	३४:०४	19:14	तैति	15:34	गर	26:46	33:56	5:36	19:11	मिथुन	अहोरात्र	काण	29	**रम्भा तृतीया, श्री महाराणा प्रताप जयन्ती, हल्दीघाटी मेला**
30	4 शु	४९:३४	25:25	पुन·	५०:०५	25:38	गण्ड	२८:३१	17:00	वणि	14:02	विष	25:25	33:58	5:36	19:11	क·35:21	19:44	लुम्ब	30	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**
31	5 श	४७:१८	24:31	पुष्य	४९:४२	25:28	वृद्धि	२३:४८	15:07	बव	12:55	बाल	24:31	34:00	5:36	19:12	कर्क	अहोरात्र	मित्र	31	
जून	6 र	४६:१३	24:05	आश्ले·	५०:२९	25:47	ध्रुव	२०:००	13:35	कौल	12:13	तैति	24:05	34:02	5:35	19:12	सि·50:29	25:47	वज्र	जून	**श्री स्कन्दषष्ठी**, श्री अरण्य षष्ठी, श्री विन्ध्यवासिनी पूजा
2	7 चं	४६:२३	24:08	मघा	५२:३१	26:36	व्याघ·	१७:११	12:28	गर	12:02	वणि	24:08	34:04	5:35	19:13	सिंह	अहोरात्र	ध्वांक्ष	2	
3	8 मं	४७:५०	24:43	पू·फा·	५५:४८	27:54	हर्षण	१५:२३	11:44	विष	12:22	बव	24:43	34:05	5:35	19:13	सिंह	अहोरात्र	धूम्र	3	**श्री दुर्गाष्टमी, मेला क्षीरभवानी कश्मीरे**, श्रीधूमावती जयन्ती
4	9 बु	५०:२९	25:46	उ·फा·	६०:००	अहोरात्र	वज्र	१४:३३	11:24	बाल	13:11	कौल	25:46	34:07	5:35	19:14	कं·11:48	10:18	प्रवर्द्ध	4	**श्री महेश नवमी (माहेश्वरी समाज)**, श्रीहरि जयन्ती
5	10 गु	५४:११	27:15	उ·फा·	००:१४	05:40	सिद्धि	१४:३८	11:26	तैति	14:28	गर	27:15	34:08	5:35	19:14	कन्या	अहोरात्र	मातङ्ग	5	**श्रीगंगा दशहरा व्रतम्, बटुकभैरव जयन्ती**, श्रीगायत्री जयन्ती
6	11 शु	५८:४२	29:03	हस्त	०५:४०	07:50	व्यति·	१५:२८	11:46	वणि	16:07	विष	29:03	34:10	5:35	19:15	तु·38:40	21:02	अमृत	6	**श्रीनिर्जला एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त), श्रीसरसबिहारीजी पाटोत्सव**
7	12 श	६०:००	अहोरात्र	चित्रा	११:४९	10:18	वरी·	१६:५१	12:19	बव	18:02	बाल	29:34	34:11	5:34	19:15	तुला	अहोरात्र	काण	7	**श्रीनिर्जला भीमसेनी एकादशी (निम्बार्क), वन्जुली महाद्वादशी**
8	12 र	०३:४१	07:03	स्वाती	१८:२१	12:55	परिघ	१८:३१	12:59	बाल	07:03	कौल	20:03	34:12	5:34	19:15	तुला	अहोरात्र	लुम्ब	8	**प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भ (दक्षिण भारत)**
9	13 चं	०८:४३	09:04	विशा·	२४:५०	15:30	शिव	२०:०८	13:38	तैति	09:04	गर	22:00	34:13	5:34	19:16	वृ·08:14	08:52	मित्र	9	**वटसावित्री व्रत द्वितीय दिन**
10	14 मं	१३:२१	10:55	अनु·	३०:५०	17:54	सिद्ध	२१:२४	14:08	वणि	10:55	विष	23:43	34:14	5:34	19:16	वृश्चिक	अहोरात्र	वज्र	10	**पूर्णिमा (व्रत), वटसावित्री व्रतपूर्ति**
11	15 बु	१७:१४	12:28	ज्ये·	३६:०३	19:59	साध्य	२२:०४	14:24	बव	12:28	बाल	25:05	34:15	5:34	19:17	ध·36:03	19:59	ध्वांक्ष	11	**पूर्णिमा (स्नान–दान)**, ज्येष्ठाभिषेक, **श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा**

✵ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ✵

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
मई	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
28	1 बु	01:12:31:07	01:24:02:59	03:24:30:47	01:14:07:12	02:03:40:59	11:26:24:14	11:03:12:03	11:01:55:30	46:57:24	उ·21:41:07	+ 2:52	06:25
29	3 गु	01:13:28:26	02:08:05:32	03:25:02:57	01:16:01:41	02:03:54:36	11:27:23:35	11:03:16:22	11:01:52:19	46:58:24	उ·21:51:25	+ 2:46	07:20
30	4 शु	01:14:25:43	02:21:56:34	03:25:35:15	01:17:55:55	02:04:08:15	11:28:23:18	11:03:20:36	11:01:49:08	46:59:22	उ·22:01:20	+ 2:40	08:22
31	5 श	01:15:22:58	03:05:34:01	03:26:07:39	01:19:49:51	02:04:21:56	11:29:23:22	11:03:24:44	11:01:45:58	47:00:18	उ·22:10:53	+ 2:33	09:22
जून	6 र	01:16:20:13	03:18:56:34	03:26:40:11	01:21:43:24	02:04:35:38	00:00:23:47	11:03:28:46	11:01:42:47	47:01:12	उ·22:20:03	+ 2:25	10:22
2	7 चं	01:17:17:26	04:02:03:37	03:27:12:49	01:23:36:33	02:04:49:22	00:01:24:32	11:03:32:44	11:01:39:36	47:02:03	उ·22:28:50	+ 2:17	11:22
3	8 मं	01:18:14:38	04:14:55:19	03:27:45:34	01:25:29:13	02:05:03:08	00:02:25:35	11:03:36:35	11:01:36:25	47:02:52	उ·22:37:13	+ 2:09	12:18
4	9 बु	01:19:11:49	04:27:32:35	03:28:18:26	01:27:21:22	02:05:16:54	00:03:26:58	11:03:40:21	11:01:33:15	47:03:39	उ·22:45:13	+ 1:00	13:13
5	10 गु	01:20:08:59	05:09:57:06	03:28:51:24	01:29:12:56	02:05:30:42	00:04:28:38	11:03:44:01	11:01:30:04	47:04:23	उ·22:52:50	+ 1:51	14:06
6	11 शु	01:21:06:07	05:22:11:08	03:29:24:29	02:01:03:52	02:05:44:31	00:05:30:36	11:03:47:36	11:01:26:53	47:05:05	उ·23:00:02	+ 1:41	14:59
7	12 श	01:22:03:15	06:04:17:31	03:29:57:40	02:02:54:06	02:05:58:21	00:06:32:50	11:03:51:04	11:01:23:43	47:05:45	उ·23:06:51	+ 1:31	15:52
8	12 र	01:23:00:21	06:16:19:31	04:00:30:57	02:04:43:33	02:06:12:12	00:07:35:21	11:03:54:27	11:01:20:32	47:06:22	उ·23:13:15	+ 1:21	16:46
9	13 च	01:23:57:26	06:28:20:48	04:01:04:20	02:06:32:11	02:06:26:04	00:08:38:07	11:03:57:43	11:01:17:21	47:06:57	उ·23:19:16	+ 1:11	17:40
10	14 मं	01:24:54:31	07:10:25:17	04:01:37:50	02:08:19:55	02:06:39:57	00:09:41:09	11:04:00:54	11:01:14:10	47:07:29	उ·23:24:52	+ 0:00	18:34
11	15 बु	01:25:51:34	07:22:36:21	04:02:11:25	02:10:06:41	02:06:53:51	00:10:44:26	11:04:03:59	11:01:10:60	47:07:59	उ·23:30:03	+ 0:49	19:28

30 मई सूर्योदयकालीन तिथिः**4**

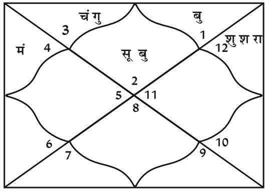

6 जून सूर्योदयकालीन तिथिः**11**

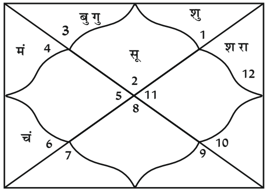

ज्येष्ठ शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 28 मई से 11 जून, 2025 ईस्वी

पक्षान्तः–कालः पश्चिम । ऋतुः ग्रीष्म । उत्तरायणं । सौम्यगोलः । ति·15 अयनांशाः 22:53:32

दिनाङ्क मई	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
28	1 बु 2 बु	।
29	3 गु	।
30	4 शु	**भद्रा 14:03–25:26 घं·**, उमाचतुर्थी (बंगाल), उत्तरभाद्रेशनिःघं·2:16।
31	5 श	महादेव विवाह (उड़ीसा), श्रुति पंचमी (जैन)।
जून	6 र	**गण्डान्तारम्भः 19:40**, आरोग्य षष्ठी, साँई टेऊँराम पुण्यतिथि।
2	7 चं	**भद्रारंभः 24:09 घं·**, **गण्डान्तः7:57**, मृगशिरायांबुधःघं·2:10।
3	8 मं	**भद्रांतः12:23 घं·**, अन्नपूर्णा अष्टमी, सिंहेकेतुः मीनेराहुः13:35①
4	9 बु	। ① मेला भन्दे के बालाजी (जयपुर)।
5	10 गु	विश्व पर्यावरण दिवस, मिथुनेबुधः घं·14:49।
6	11 शु	**भद्रा 16:08–29:04 घं·**, व्यतीपात पुण्यम्।
7	12 श	**चम्पाद्वादशी**, मुनि सुपार्श्वनाथ जयन्ती१२, मघायांसिंहेमङ्गलः घं·07:21।
8	12 र	मृगशिरायांरविः घं·13:51।
9	13 चं	आर्द्रायांबुधः घं·07:23, आर्द्रायांगुरुः घं·14:41।
10	14 मं	**भद्रा 10:55–23:44 घं·**, चम्पक चतुर्दशी।
11	15 बु	**गण्डान्तः13:31–26:27**, जलसेवा पूर्ति, वैवस्वत मन्वादि, बिल्व त्रिरात्रि व्रत, सन्त कबीर जयन्ती, सरयू जयन्ती।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
1	11:57–13:47
15	12:00–13:50

❀ ज्येष्ठ मास कृत्य ❀

❀ **गंगा दशहरा–** ज्येष्ठ, शुक्लपक्ष, दशमी, बुधवार, हस्त नक्षत्र, व्यतीपात योग, गर करण, आनंद योग, कन्या राशिस्थ चन्द्रमा, वृषभ राशिस्थ सूर्य, ये दस योग से गंगा दशमी कहलाती है। इस दिन गंगास्नान करने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है। यह नवमीविद्धा दशमी हो वा एकादशी विद्धा हो जिसमें योग अधिक हों, वही ग्रहण करना चाहिये। पूजन का विशेष मन्त्र है– **ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै स्वाहा**। इसी मन्त्र से भगवती गंगा का बार बार स्मरण कर पूजन पदार्थ अर्पित करे। गंगा दशहरा को अबूझ मुर्हूत्त माना जाता है, इस दिन किया जप, तप, दान आदि कोई भी कार्य अक्षय फल प्रदान करता है।

❀ **निर्जला एकादशी–** आज के दिन आचमन को छोड़कर अन्य किसी भी प्रकार से जल का ग्रहण नहीं किया जाता है। इसे करने से विष्णुलोक की प्राप्ति होती है। इस एक ही व्रत के प्रभाव से बारह द्वादशियों के व्रत करने का फल प्राप्त होता है। एकादशी व्रत करके द्वादशी में जलकुम्भ और शर्करा दान करे।

दान देते समय निम्नलिखित मन्त्र का प्रयोग करे–

देव देव हृषीकेश संसारार्णवतारक।
उदकुम्भप्रदानेन यास्यामि परमां गतिम्।।

❀ **त्रिविक्रम(वामन) पूजन–** ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी तिथि में भगवान् त्रिविक्रम विष्णु की दिन-रात पूजा की जाती है। इस पूजन के प्रभाव से गो-अयन यज्ञ का पुण्य प्राप्त होता है।

❀ **ज्येष्ठत्रय विचार–** शास्त्रों के अनुसार ज्येष्ठ कन्या, ज्येष्ठ लड़का तथा ज्येष्ठ मास ये तीनों ज्येष्ठ हों तो ज्येष्ठ मास में विवाह करना वर्जित है। इन तीनों में दो ज्येष्ठ हो तो विवाह मध्यम एक ज्येष्ठ हो तो शुभकारी तथा सुखप्रद होता है। यथा–

द्वौ ज्येष्ठे मध्यमौ प्रोक्तावेकं ज्येष्ठ सुखावहम्।
ज्येष्ठत्रयं न कुर्वीत विवाहे सर्व सम्मतम् ।।

ऋषि भारद्वाज तथा गर्ग के अनुसार ज्येष्ठ के कृत्तिकस्थ सूर्य में दश दिन तथा बृहस्पति के मत से तेरह दिन त्यागकर विवाहादि शुभकार्य करना चाहिए। ज्येष्ठमास्याद्य गर्भस्य शुभवर्ज्य स्त्रिया तथा। कृत्तिकास्थे रविं त्यक्तवा ज्येष्ठे ज्येष्ठस्य कारयेत् ।। ज्येष्ठे ज्येष्ठस्य कुर्वीत भास्करे चानले स्थिते । नोत्सवादीनि कार्याणि दिग्दिनानि च वर्जयेत् ।। दशाहं चैव गर्गस्तु त्रिदशाहं बृहस्पतिः ।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

मई	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
28	03:15	04:51	06:46	09:01	11:21	13:37	15:52	18:11	20:30	22:35	00:20	01:49
29	03:11	04:47	06:43	08:57	11:17	13:33	15:48	18:07	20:26	22:32	00:16	01:45
30	03:07	04:43	06:39	08:53	11:13	13:29	15:44	18:03	20:22	22:28	00:12	01:41
31	03:03	04:39	06:35	08:49	11:09	13:26	15:41	17:59	20:18	22:24	00:08	01:37
जून	02:59	04:35	06:31	08:45	11:05	13:22	15:37	17:55	20:14	22:20	00:04	01:33
2	02:55	04:31	06:27	08:41	11:01	13:18	15:33	17:52	20:10	22:16	00:00	01:30
3	02:52	04:27	06:23	08:37	10:57	13:14	15:29	17:48	20:07	22:12	23:56	01:26
4	02:48	04:24	06:19	08:33	10:53	13:10	15:25	17:44	20:03	22:08	23:53	01:22
5	02:44	04:20	06:15	08:29	10:49	13:06	15:21	17:40	19:59	22:04	23:49	01:18
6	02:40	04:16	06:11	08:25	10:46	13:02	15:17	17:36	19:55	22:00	23:45	01:14
7	02:36	04:12	06:07	08:21	10:42	12:58	15:13	17:32	19:51	21:56	23:41	01:10
8	02:32	04:08	06:03	08:18	10:38	12:54	15:09	17:28	19:47	21:52	23:37	01:06
9	02:28	04:04	05:59	08:14	10:34	12:50	15:05	17:24	19:43	21:48	23:33	01:02
10	02:24	04:00	05:55	08:10	10:30	12:46	15:01	17:20	19:39	21:45	23:29	00:58
11	02:20	03:56	05:52	08:06	10:26	12:42	14:57	17:16	19:35	21:41	23:25	00:54

मई	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
28	**सर्वार्थ**·27:09 तक, **अमृत**·06:28 तक, **सिद्ध**·06:28 से 28:28 तक
29	**द·ति**·26:13 से,**अमृत**·26:46 तक,**सर्वार्थ**·26:13से,**रवियोग**:26:13 से
30	**द·ति**·25:25 तक, **सर्वार्थ·रवियोग**:25:38 तक, **अमृत**· 25:25 तक
31	**मृत्यु**· 24:31 तक, **अमृत**· 24:31 से, **रवियोगः** 25:28 से
जून	**मृत्यु**· 24:05 तक, **रवियोगः** 25:47 तक
2	**मृत्यु**· 24:08 तक
3	**सिद्ध**· 24:43 तक, **रवियोगः** 27:54 से
4	**रवियोगः** अहोरात्र
5	**सिद्ध**· 27:15 तक, **रवियोगः** 05:40 तक, **रवियोगः** 05:40 से
6	**सिद्ध**· 29:03 तक, **रवियोगः** 07:50 तक, **मृत्यु**· 29:03 से
7	**द्विपुष्करः** 10:18 तक, **सर्वार्थ**· 10:18 से
8	**सिद्ध**· 07:03 से, **रवियोगः** 12:55 से
9	**सर्वार्थ**· 15:30 से, **रवियोगः** 15:30 से
10	**रवियोगः** 17:54 तक
11	**अमृत**· 12:28 से

व्रतों में **एकादशी** व्रत प्रधान है। एकादशी और भगवत्महोत्सव एक व्रत में गिने जाते हैं। जब तक एकादशी और भगवत्महोत्सव हों तब तक उपवास रखना चाहिये। दशमी को असुरों तथा एकादशी में देवताओं की उत्पत्ति हुई है, दशमी में भी अर्धरात्र का समय असुरों की उत्पत्ति का कारण है। अतः एकादशी में दशमी का वेध निषिद्ध माना जाता है।

जो सूर्योदय पूर्व 4 घटी (अर्धरात्रि निम्बार्क) के उपरान्त यदि दशमी हो तो निश्चय ही उस एकादशी को छोड़ कर द्वादशी में व्रत करे। वैष्णवाचार्यों ने पूर्वविद्धा तिथि का त्याग वैष्णवों का लक्षण माना है– पूर्वविद्धा तिथिस्त्यागो वैष्णवस्य हि लक्षणम्। इस नारदपंचरात्र के प्रमाणानुसार पूर्वविद्धा तिथि का त्याग ही वैष्णव का लक्षण है। अतः वैष्णव व्रतोपवासादि में पूर्वविद्धा तिथि छोड़ परविद्धा तिथि ही ग्राह्य है।

आषाढ़ कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 12 जून से 25 जून, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 12:6:2025– मार्गी गुरुःपश्चिमास्तः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
जून	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	जून	12 जून से 25 जून, 2025
12	1 गु	२0:0६	13:37	मूल	४0:१२	21:39	शुभ	२१:५५	14:20	कौल	13:37	तैति	26:00	34:16	5:34	19:17	धनु	अहोरात्र	धूम्र	12	
13	2 शु	२१:४७	14:17	पू·षा·	४३:११	22:51	शुक्ल	२0:५२	13:55	गर	14:17	वणि	26:25	34:17	5:34	19:17	म·58:44	29:04	प्रवर्द्ध	13	
14	3 श	२२:१२	14:27	उ·षा·	४४:५५	23:32	ब्रह्म	१८:४८	13:05	विष	14:27	बव	26:20	34:18	5:34	19:18	मकर	अहोरात्र	राक्षस	14	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय घं·21:57**
15	4 र	२१:२१	14:07	श्रवण	४५:२५	23:44	ऐन्द्र	१५:४३	11:52	बाल	14:07	कौल	25:45	34:19	5:34	19:18	मकर	अहोरात्र	गद	15	**मिथुन संक्रान्ति पुण्यकालं 14:09–19:18 घं·**
16	5 चं	१९:१८	13:18	धनि·	४४:४५	23:29	वैधृ·	११:४१	10:15	तैति	13:18	गर	24:43	34:19	5:35	19:18	कु·15:13	11:40	शुभ	16	कोकिला पंचमी (जैन), नागपंचमी बंगाल
17	6 मं	१६:0९	12:02	शत·	४३:0४	22:48	विष्कु·	0६:४४	08:16	वणि	12:02	विष	23:15	34:20	5:35	19:19	कुंभ	अहोरात्र	मृत्यु	17	
18	7 बु	१२:0३	10:24	पू·भा·	४0:३२	21:48	प्रीति आयु·	**0१:0१** **५३:३६**	**05:59** **27:25**	बव	10:24	बाल	21:27	34:20	5:35	19:19	मी·26:15	16:05	पद्म	18	श्रीकालाष्टमी
19	8 गु	0७:१0	08:27	उ·भा·	३७:१७	20:30	सौभा·	४७:४0	24:39	कौल	08:27	तैति	19:22	34:20	5:35	19:19	मीन	अहोरात्र	छत्र	19	
20	9 शु 10 शु	**0१:४0** **५४:0५**	**06:15** **27:53**	रेवती	३३:३२	19:00	शोभ·	४0:२१	21:43	गर	06:15	वणि	17:05	34:21	5:35	19:20	मे·33:32	19:00	श्रीवत्स	20	मुनि नमिनाथ जयन्ती१०
21	11 श	४९:३५	25:25	अश्वि·	२९:२७	17:22	अतिग·	३२:४६	18:42	बव	14:39	बाल	25:25	34:21	5:35	19:20	मेष	अहोरात्र	सौम्य	21	**योगिनी एकादशी (स्मार्त्त), विश्व योग दिवस**
22	12 र	४३:२३	22:57	भरणी	२५:१६	15:42	सुकर्मा	२५:0७	15:38	कौल	12:10	तैति	22:57	34:21	5:35	19:20	वृ·39:14	21:17	कालदंड	22	**योगिनी एकादशी (वैष्णव)**
23	13 चं	३७:२२	20:32	कृत्ति·	२१:१२	14:04	धृति	१७:३४	12:37	गर	09:44	वणि	20:32	34:21	5:36	19:20	वृष	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	23	**प्रदोष व्रतम्, मास शिवरात्रि**
24	14 मं	३१:४३	18:17	रोहि·	१७:२६	12:34	शूल	१0:१५	09:42	विष	07:23	बव	18:17	34:21	5:36	19:20	मि·45:44	23:54	मातङ्ग	24	
25	30 बु	२६:३८	16:15	मृग·	१४:११	11:17	गण्ड वृद्धि	**0३:२१** **५३:३९**	**06:56** **28:24**	नाग	16:15	किं	27:20	34:20	5:36	19:21	मिथुन	अहोरात्र	अमृत	25	**अमावस्या (देवकार्य, पितृकार्य)**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क जून	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
12	1 गु	01:26:48:37	08:04:56:57	04:02:45:06	02:11:52:24	02:07:07:45	00:11:47:57	11:04:06:57	11:01:07:49	47:08:27	उ·23:34:50	+ 0:37	20:20
13	2 शु	01:27:45:38	08:17:29:37	04:03:18:52	02:13:36:59	02:07:21:40	00:12:51:42	11:04:09:50	11:01:04:38	47:08:51	उ·23:39:12	+ 0:26	21:09
14	3 श	01:28:42:39	09:00:16:14	04:03:52:45	02:15:20:22	02:07:35:36	00:13:55:41	11:04:12:36	11:01:01:28	47:09:14	उ·23:43:09	+ 0:14	21:57
15	4 र	01:29:39:39	09:13:17:58	04:04:26:43	02:17:02:27	02:07:49:32	00:14:59:53	11:04:15:16	11:00:58:17	47:09:33	उ·23:46:42	+ 0:02	22:39
16	5 चं	02:00:36:38	09:26:35:16	04:05:00:46	02:18:43:08	02:08:03:28	00:16:04:17	11:04:17:49	11:00:55:06	47:09:50	उ·23:49:49	− 0:10	23:21
17	6 मं	02:01:33:36	10:10:07:47	04:05:34:55	02:20:22:19	02:08:17:25	00:17:08:54	11:04:20:16	11:00:51:55	47:10:05	उ·23:52:32	− 0:22	23:58
18	7 बु	02:02:30:34	10:23:54:27	04:06:09:09	02:21:59:55	02:08:31:22	00:18:13:43	11:04:22:37	11:00:48:45	47:10:17	उ·23:54:49	− 0:34	24:36
19	8 गु	02:03:27:31	11:07:53:27	04:06:43:28	02:23:35:48	02:08:45:19	00:19:18:44	11:04:24:52	11:00:45:34	47:10:26	उ·23:56:42	− 0:47	25:15
20	9 शु	02:04:24:27	11:22:02:22	04:07:17:52	02:25:09:50	02:08:59:16	00:20:23:56	11:04:26:59	11:00:42:23	47:10:33	उ·23:58:09	− 0:59	25:53
21	11 श	02:05:21:22	00:06:18:15	04:07:52:22	02:26:41:55	02:09:13:13	00:21:29:18	11:04:29:01	11:00:39:12	47:10:37	उ·23:59:11	− 1:12	26:38
22	12 र	02:06:18:17	00:20:37:48	04:08:26:56	02:28:11:54	02:09:27:11	00:22:34:52	11:04:30:56	11:00:36:02	47:10:38	उ·23:59:48	− 1:24	27:23
23	13 चं	02:07:15:11	01:04:57:10	04:09:01:36	02:29:39:38	02:09:41:07	00:23:40:36	11:04:32:44	11:00:32:51	47:10:37	उ·23:59:60	− 1:37	28:16
24	14 मं	02:08:12:05	01:19:12:34	04:09:36:20	03:01:04:58	02:09:55:04	00:24:46:30	11:04:34:25	11:00:29:40	47:10:34	उ·23:59:47	− 1:49	29:11
25	30 बु	02:09:08:58	02:03:20:43	04:10:11:09	03:02:27:44	02:10:09:01	00:25:52:34	11:04:36:00	11:00:26:29	47:10:27	उ·23:59:08	− 2:02	06:10

15 जून सूर्योदयकालीन तिथि:**4**

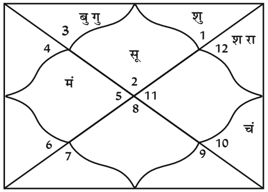

21 जून सूर्योदयकालीन तिथि:**11**

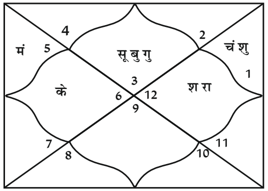

आषाढ़ कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 12 जून से 25 जून, 2025 ईस्वी

पक्षान्तः–कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म । उत्तरायणं ।
सौम्यगोलः । ति·30 अयनांशाः22:53:34

दिनाङ्क जून	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
12	1 गु	भद्रारंभः 26:26 घं., भरण्यांशुक्रः घं·16:39।
13	2 शु	।
14	3 श	भद्रांतः14:28 घं., अभिजितः 17:24–25:09।
15	4 र	मिथुनेरविः घं·14:09।
16	5 चं	पंचकारंभः 11:40, वैधृति पुण्यम्।
17	6 मं	पंचक, भद्रा 12:03–23:16 घं., पुनर्वसौबुधः घं·00:12।
18	7 बु	पंचक।
19	8 गु	पंचक।
20	9 शु 10 शु	पंचकान्तः19:00, भद्रा 17:05–27:53 घं., गण्डान्तः13:24–24:36।
21	11 श	मुनि नेमीनाथ जयन्ती।
22	12 र	आर्द्रायांरविः घं·14:46।
23	13 चं	भद्रारंभः 20:33 घं., कर्केबुधः घं·11:17।
24	14 मं	भद्रांतः7:24 घं.।
25	30 बु	पुष्येबुधः घं·21:13, कृत्तिकायांशुक्रः घं·22:50।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
1	12:01–13:51
30	12:03–13:53

※ आषाढ़ मास कृत्य ※

वृष्टिविचार– आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रतिपदा के दिन आकाश में वर्षा सम्बन्धी यदि पञ्चनिमित्त न दिखें, तो दो मास तक वृष्टि नहीं होती, ये पञ्चनिमित्त हैं– 1.बादल 2.गर्जन 3.वायु 4.विद्युत् तथा 5.वर्षण–

आषाढमासे प्रथमे च पक्षे निरभ्रदृष्टे रविमण्डले च।
विद्युन्नगजर्त्यथ नैव मेघो मासद्वयं तत्र न वर्षणं स्यात् ।।

योगिनी एकादशी– आषाढ कृष्ण एकादशी को योगिनी एकादशी कहते हैं। इस एकादशी व्रत के प्रभाव से कुष्ठनाश होता है। अतः इस व्रत को करने वाला त्वचारोग से रहित होता है– *आषाढे कृष्णपक्षे तु योगिनी–व्रतमाचरेत्। अस्य व्रतस्य पुण्येन कुष्ठो नश्यति वै ध्रुवम्।।*

वास्तु में विभिन्न दिशाओं में घर के ढ़लान (प्लव) का फल

पूर्व – आयु श्री सम्पत्ति बल वर्धक, सर्वसम्पतकरी, प्रासाद बनवाने वाली, राजपूज्यता दिलाए, आनन्ददायक, धनसम्पन्नता, लोकहितकारी भावना, विनयाचार, पुत्रपौत्र की बहुलता, सदा निरोगता, दानशीलता, प्रतिष्ठा, विशिष्ट जनों की सेवा। समृद्धिदायक।
आग्नेय – अग्निदाह का भय, शत्रुओं से सन्ताप, नित्य कलह। धननाशक।
दक्षिण – देवता और पुरुषों का नाश होता, जीवननाशक, नित्य रोगवृद्धि, धनहानि,
नैऋत्य – मृत्युदायक-रोग वृद्धिकारक, नित्य धनहानि, निर्धनता
पश्चिम – धन्यधान्य का विनाश, गृहकर्ता के कुल में शोक, दाह आदि बने रहते हैं, दारिद्रता
वायव्य – शत्रुवृद्धि, वैराग्यवृद्धि, गोत्र के परिजनों का क्षय, घर की कन्याओं का नाश, सदा दुःख और भय, जो यहाँ बसता है उसे खाया पीया पचता नहीं है, सन्ततिहर्त्री।
उत्तर – अत्यंत शुभ, पूज्या, नित्य लाभकारी, कुल में पुत्रपौत्रों की वृद्धि, सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली कामदा, सब भोग देने वाली भोगदा, सम्पत्तिदायक
ईशान – अत्यन्त शुभ, कुल का सुख, सती, सत्य, सौभाग्य आदि बढ़ाती है। धन अर्थ ऐश्वर्य और सम्पन्नता बढ़ाती है, धर्म बढ़ाती है, कल्याणप्रदायक।

ॐ नमो भगवते वास्तुपुरुषाय कपिलाय च।।
पृथ्वीधराय देवाय प्रधानपुरुषाय च । सकलगृहप्रासादपुष्करोद्यानकर्मणि ।।
गृहारम्भप्रथमकाले सर्वसिद्धिप्रदायक । सिद्धदेवमनुष्यैश्च पूज्यमानो दिवानिशम्।।
वास्तुपुरुष नमस्तेऽस्तु भूमिशय्यारत प्रभो । मद् गेहे धनधान्यादिसमृद्धिं कुरु सर्वदा ।।
– विश्वकर्मप्रकाश 1.94

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जून	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
12	02:16	03:52	05:48	08:02	10:22	12:39	14:54	17:12	19:31	21:37	23:21	00:50
13	02:12	03:48	05:44	07:58	10:18	12:35	14:50	17:08	19:27	21:33	23:17	00:46
14	02:08	03:44	05:40	07:54	10:14	12:31	14:46	17:05	19:23	21:29	23:13	00:43
15	02:05	03:41	05:36	07:50	10:10	12:27	14:42	17:01	19:20	21:25	23:09	00:39
16	02:01	03:37	05:32	07:46	10:06	12:23	14:38	16:57	19:16	21:21	23:06	00:35
17	01:57	03:33	05:28	07:42	10:02	12:19	14:34	16:53	19:12	21:17	23:02	00:31
18	01:53	03:29	05:24	07:38	09:59	12:15	14:30	16:49	19:08	21:13	22:58	00:27
19	01:49	03:25	05:20	07:34	09:55	12:11	14:26	16:45	19:04	21:09	22:54	00:23
20	01:45	03:21	05:16	07:31	09:51	12:07	14:22	16:41	19:00	21:05	22:50	00:19
21	01:41	03:17	05:12	07:27	09:47	12:03	14:18	16:37	18:56	21:01	22:46	00:15
22	01:37	03:13	05:09	07:23	09:43	11:59	14:14	16:33	18:52	20:58	22:42	00:11
23	01:33	03:09	05:05	07:19	09:39	11:55	14:10	16:29	18:48	20:54	22:38	00:07
24	01:29	03:05	05:01	07:15	09:35	11:52	14:07	16:25	18:44	20:50	22:34	00:03
25	01:25	03:01	04:57	07:11	09:31	11:48	14:03	16:22	18:40	20:46	22:30	00:00

जून	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
13	**मृत्यु**·14:17 तक
14	**द·ति**·14:27 से, **सिद्ध**·14:27 से, **सर्वार्थ**·23:32 से
15	**अमृत**·14:07 से
16	**अमृत**·13:18 तक, **सिद्ध**·13:18 से, **रवियोगः**23:29 से
17	**मृत्यु**·12:02 तक, **रवियोगः**22:48 तक **अमृत**·12:02 से, **त्रिपुष्करः**12:02 से 22:48 तक
18	**द·ति**·10:24 से, **सिद्ध**·10:24 तक, **मृत्यु**·10:24 से
19	**द·ति**·08:27 तक, **अमृत**·08:27 तक, **मृत्यु**·08:27 से **सर्वार्थ**·20:30 से
20	**सर्वार्थ**·19:00 तक,**अमृत**·06:15 तक,**सर्वार्थ**·19:00 से
21	**अमृत**·25:25 तक
22	**द·न**·15:42 तक, **त्रिपुष्करः**15:42 से 22:57 तक, (१)
23	**सर्वार्थ**·14:04 से (१) **सिद्ध**·22:57 से
25	**सर्वार्थ**·11:17 तक, **अमृत**·16:15 से

उत्तम सन्तान प्राप्ति हेतु गर्भाधान मुहूर्त्त का विचार

भद्रा करण, षष्ठी, पर्व दिन, रिक्ता तिथि, सन्ध्या समय, भौम, रवि, शनिवार एवं ऋतुदर्शन से 4 रात्रि, इन सबों को गर्भाधान में त्याग देना चाहिए। तीनों उत्तरा, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषा इन 11 नक्षत्रों में गर्भाधान करना उत्तम होता है।

रजोदर्शन से 4 दिन के बाद अपनी स्त्री के साथ मैथुन करने में तीनों गण्डान्त (तिथिगण्डान्त, नक्षत्रगण्डान्त और लग्नगण्डान्त), निधनतारा और जन्मतारा (अर्थात जन्मनक्षत्र और उससे 7,10,16,19,25वाँ नक्षत्र), मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती और मघा ये नक्षत्र, सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण का समय, व्यतीपात और वैधृति, माता और पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघयोग का पूर्वार्ध उत्पात से दूषित नक्षत्र, जन्म राशि से आठवीं राशि का लग्न एवं पापग्रह का लग्न 1,5,8,10,11 इन सबको त्याग देना चाहिए।

आषाढ़ शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 26 जून से 10 जुलाई, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 26:6:2025– मार्गी गुरुःपश्चिमास्त; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क
जून	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	जून
26	1 गु	२२:१८	14:32	आर्द्रा	११:३९	10:16	ध्रुव	५१:१९	26:08	बव	14:32	बाल	25:46	34:20	5:36	19:21	क·55:18	27:44	काण	26
27	2 शु	१८:५०	13:09	पुन·	०९:५८	09:36	व्याघ·	४६:२६	24:11	कौल	13:09	तैति	24:37	34:20	5:37	19:21	कर्क	अहोरात्र	लुम्ब	27
28	3 श	१६:२७	12:12	पुष्य	०९:१९	09:20	हर्षण	४२:२७	22:36	गर	12:12	वणि	23:53	34:19	5:37	19:21	कर्क	अहोरात्र	मित्र	28
29	4 र	१५:१३	11:43	आश्ले·	०९:४८	09:33	वज्र	३९:२७	21:24	विष	11:43	बव	23:38	34:19	5:37	19:21	सिं·09:48	09:33	वज्र	29
30	5 चं	१५:१५	11:44	मघा	११:३१	10:14	सिद्धि	३७:२७	20:36	बाल	11:44	कौल	23:56	34:18	5:38	19:21	सिंह	अहोरात्र	ध्वांक्ष	30
जुलाई	6 मं	१६:३३	12:15	पू·फा·	१४:३०	11:26	व्यति·	३६:२७	20:13	तैति	12:15	गर	24:42	34:17	5:38	19:21	कं·30:26	17:48	धूम्र	जुलाई
2	7 बु	१९:०४	13:16	उ·फा·	१८:३९	13:06	वरी·	३६:२२	20:11	वणि	13:16	विष	25:55	34:17	5:38	19:21	कन्या	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	2
3	8 गु	२२:३९	14:42	हस्त	२३:५१	15:11	परिघ	३७:०५	20:29	बव	14:42	बाल	27:33	34:16	5:39	19:21	तु·56:47	28:21	राक्षस	3
4	9 शु	२७:०४	16:28	चित्रा	२९:५१	17:35	शिव	३८:२३	21:00	कौल	16:28	तैति	29:26	34:15	5:39	19:21	तुला	अहोरात्र	मुसल	4
5	10 श	३१:५८	18:27	स्वाती	३६:१९	20:11	सिद्ध	४०:०१	21:40	गर	18:27	वणि	29:40	34:14	5:39	19:21	तुला	अहोरात्र	सिद्धि	5
6	11 र	३६:५८	20:27	विशा·	४२:४९	22:48	साध्य	४१:४०	22:20	वणि	07:27	विष	20:27	34:12	5:40	19:21	वृ·26:13	16:09	उत्पात	6
7	12 चं	४१:३६	22:19	अनु·	४८:५७	25:15	शुभ	४३:०१	22:53	बव	09:24	बाल	22:19	34:11	5:40	19:21	वृश्चिक	अहोरात्र	मानस	7
8	13 मं	४५:३१	23:53	ज्ये·	५४:२२	27:25	शुक्ल	४३:४९	23:12	कौल	11:09	तैति	23:53	34:10	5:41	19:21	ध·54:22	27:25	मुद्गर	8
9	14 बु	४८:२६	25:04	मूल	५८:४५	29:11	ब्रह्म	४३:५०	23:13	गर	12:31	वणि	25:04	34:09	5:41	19:21	धनु	अहोरात्र	ध्वज	9
10	15 गु	५०:११	25:46	पू·षा·	६०:००	अहोरात्र	ऐन्द्र	४२:५७	22:52	विष	13:28	बव	25:46	34:07	5:42	19:21	धनु	अहोरात्र	धाता	10

卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐

26 जून से 10 जुलाई, 2025

दिनाङ्क	व्रत–पर्व–उत्सव
26	**गुप्त नवरात्र आरम्भः**
27	**श्रीजगन्नाथ रथयात्रा**, श्रीरामबलराम रथोत्सव
28	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**
29	
30	श्रीद्वारकाधीश पाटोत्सव कांकरोली, साईं टेऊँराम जयन्ती
जुलाई	**श्रीस्कन्द षष्ठी**, कर्दमषष्ठी, मनसापूजा (बंगाल)
2	विवस्वत सप्तमी सूर्यपूजा
3	**श्रीदुर्गाष्टमी**, श्रीपरशुराम अष्टमी (उड़ीसा)
4	**आषाढ़ गुप्तनवरात्र समाप्तिः, भड़ल्या नवमी**
5	**गुप्तनवरात्रोत्थापन, आशादशमी**, गिरिजा पूजा
6	**श्रीहरिशयनी एकादशी (सर्वेषाम्), चातुर्मास्य व्रतारम्भः**
7	**श्रीवासुदेव द्वादशी**, रैवत·मन्वादि, हरिवासराभाव
8	**प्रदोष व्रतम्**
9	**श्रीशिवशयनचतुर्दशी**, चौमासी चौदस
10	**पूर्णिमा (व्रत, स्नान, दान), गुरुपूर्णिमा, वेदव्यास जयन्ती**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
जून	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
26	1 गु	02:10:05:51	02:17:18:44	04:10:46:03	03:03:47:44	02:10:22:57	00:26:58:48	11:04:37:29	11:00:23:19	47:10:18	उ·23:58:04	– 2:14	06:11
27	2 शु	02:11:02:43	03:01:04:14	04:11:21:02	03:05:04:49	02:10:36:52	00:28:05:11	11:04:38:50	11:00:20:08	47:10:07	उ·23:56:36	– 2:27	07:12
28	3 श	02:11:59:35	03:14:35:28	04:11:56:05	03:06:18:45	02:10:50:48	00:29:11:43	11:04:40:05	11:00:16:57	47:09:52	उ·23:54:42	– 2:39	08:13
29	4 र	02:12:56:26	03:27:51:26	04:12:31:13	03:07:29:20	02:11:04:44	01:00:18:24	11:04:41:13	11:00:13:46	47:09:36	उ·23:52:23	– 2:51	09:13
30	5 चं	02:13:53:18	04:10:51:52	04:13:06:25	03:08:36:19	02:11:18:40	01:01:25:13	11:04:42:14	11:00:10:36	47:09:16	उ·23:49:40	– 3:02	10:11
जुलाई	6 मं	02:14:50:09	04:23:37:15	04:13:41:42	03:09:39:29	02:11:32:36	01:02:32:11	11:04:43:09	11:00:07:25	47:08:54	उ·23:46:31	– 3:14	11:06
2	7 बु	02:15:47:00	05:06:08:51	04:14:17:03	03:10:38:35	02:11:46:32	01:03:39:17	11:04:43:57	11:00:04:14	47:08:30	उ·23:42:58	– 3:25	12:00
3	8 गु	02:16:43:51	05:18:28:38	04:14:52:28	03:11:33:20	02:12:00:28	01:04:46:31	11:04:44:37	11:00:01:03	47:08:03	उ·23:39:00	– 3:37	12:54
4	9 शु	02:17:40:42	06:00:39:08	04:15:27:58	03:12:23:28	02:12:14:23	01:05:53:53	11:04:45:11	10:29:57:53	47:07:34	उ·23:34:38	– 3:48	13:46
5	10 श	02:18:37:33	06:12:43:23	04:16:03:33	03:13:08:44	02:12:28:19	01:07:01:23	11:04:45:39	10:29:54:42	47:07:02	उ·23:29:51	– 3:58	14:40
6	11 र	02:19:34:24	06:24:44:47	04:16:39:12	03:13:48:48	02:12:42:14	01:08:09:01	11:04:45:59	10:29:51:31	47:06:28	उ·23:24:39	– 4:08	15:34
7	12 चं	02:20:31:16	07:06:47:18	04:17:14:55	03:14:23:26	02:12:56:09	01:09:16:45	11:04:46:12	10:29:48:20	47:05:51	उ·23:19:04	– 4:18	16:28
8	13 मं	02:21:28:07	07:18:54:34	04:17:50:42	03:14:52:19	02:13:10:04	01:10:24:37	11:04:46:19	10:29:45:09	47:05:12	उ·23:13:04	– 4:28	17:22
9	14 बु	02:22:24:59	08:01:09:47	04:18:26:33	03:15:15:12	02:13:23:58	01:11:32:36	11:04:46:19	10:29:41:59	47:04:30	उ·23:06:41	– 4:37	18:16
10	15 गु	02:23:21:52	08:13:35:44	04:19:02:28	03:15:31:51	02:13:37:51	01:12:40:42	वक्री 04:46:12	10:29:38:48	47:03:47	उ·22:59:53	– 4:46	19:04

29 जून सूर्योदयकालीन तिथि:**4**

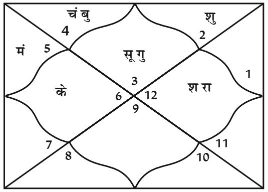

6 जुलाई सूर्योदयकालीन तिथि:**11**

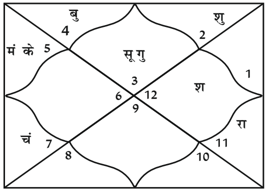

आषाढ़ शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 26 जून से 10 जुलाई, 2025 ईस्वी

पक्षान्तः– कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म । सौम्यगोलः । कर्कार्कतः
ऋतुःवर्षा दक्षिणायनं । ति·15 अयनांशः22:53:37

दिनाङ्क जून	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
26	1 गु	।
27	2 शु	।
28	3 श	**भद्रारंभः 23:54 घं·, गण्डान्तारम्भः 27:27।**
29	4 र	**भद्रांतः11:43 घं·, गण्डान्तः15:41।**
30	5 चं	श्री वल्लभाचार्य गोलोकगमन, पूर्वफल्गुन्यांमङ्गलः घं·15:54।
जुलाई	6 मं	**श्रीमहावीर स्वामी गर्भ कल्याणक**, व्यतीपात पुण्यम्।
2	7 बु	**भद्रा 13:16–25:56 घं·।**
3	8 गु	महिषघ्नी व्रत, सिंहेकेतुः कुम्भेराहुः घं·13:35।
4	9 शु	**स्वामी विवेकानन्द पुण्य दिवस**, कन्दर्प नवमी, ऐन्द्री पूजा।
5	10 श	**भद्रारंभः 31:28 घं·।**
6	11 र	**भद्रा 7:28–20:28 घं·**, श्रीविष्णुशयनोत्सव, पुनर्वसौरविः घं·16:29।
7	12 चं	रोहिण्यांशुक्रः घं·21:00।
8	13 मं	**गण्डान्तारम्भः 20:55।**
9	14 बु	**भद्रारंभः 25:04 घं·, गण्डान्तः9:55।**
10	15 गु	**भद्रांतः13:29 घं·, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, वायु धारिणी पूर्णिमा**, चाक्षुष·मन्वादि, कोकिला व्रत, वायु परीक्षण, वक्री शनिःघं·10:31।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
1	12:03–13:53
15	12:06–13:56

❀ आषाढ़ मास कृत्य ❀

❀ **आषाढ़ी गुप्त नवरात्रि**– आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी पर्यन्त गुप्त नवरात्रि होती है। इसमें भगवती का आराधन करना चाहिए। वासन्तिक (चैत्र) एवं शारदीय (आश्विन) नवरात्रि प्रकट होती हैं, व आषाढ़ी एवं माघी नवरात्रि गुप्त होती हैं।

– **चैत्रेऽश्विने तथाषाढे माघे कार्यो महोत्सवः नवरात्रे महाराज! पूजा कार्या विशेषतः।।** – श्रीमद्देवीभागवत, 3/24/21।।

गुप्त नवरात्रि में अपने इष्टदेव की आराधना, पाठ, जपादि कर्म परम सिद्धिदायक हो जाता है।

❀ **रथयात्रादर्शन**– आषाढ़ शुक्ल द्वितीया के दिन रथयात्रा उत्सव करें। तिथि का अभाव हो, अर्थात् द्वितीया तिथि न हो, तो केवल पुष्य नक्षत्र में ही उस उत्सव को नहीं करना चाहिये। क्योंकि, ''तिथि न होने पर जो मनुष्य (रथयात्रा आदि) कर्म करते हैं, उनका किया हुआ सब कर्म वृथा हो जाता है, और वे अपने को नरक में ले जाते हैं।''–ऐसा गर्गाचार्य का कथन है। द्विधाधिक होने पर दूसरे दिन तृतीया में उत्सव करें।

❀ **श्रीहरि(विष्णु) शयन**– आषाढ़ शुक्ल एकादशी श्रीहरिशयनी अथवा पद्मा कहलाती है। इस दिन से भगवान् विष्णु क्षीरसागर में शेषशैय्या पर चार मास के लिए शयन करते हैं। फलतः इन चार मासों में सभी प्रकार के शुभकर्म वर्जित हैं। श्रीविष्णु शयनोत्सव की रात्रि में श्रीभगवान् को पालकी में जलाशय के निकट ले जाकर पूजा करे। वस्त्र–चन्दनादि, छत्र, चामर, ध्वजा, पताकादि अर्पण कर भगवान् को सन्तुष्ट करे। **सुप्ते त्वयि जगन्नाथे जगत्सुप्तं भवेदिदम् । विबुद्धे त्वयि बुध्येत तत्सर्वं सचराचरम् ।**

(हे भगवान् विष्णु! आपके सोने से संसार सो जाता है। आपके जागने से यह चराचर जगत् जाग उठता है।)

❀ **चातुर्मास**– अभीष्ट फलप्राप्ति हेतु चातुर्मास में 4 माह के लिए लिये पदार्थों का त्याग और ग्रहण करे। स्वर्गप्राप्तिके लिये पुष्पादि भोगों का त्याग करे। देह–शुद्धि के लिये पंचगव्य पान करे, वंश–वृद्धिके लिये नियमित दूध का, सर्वपापक्षयपूर्वक सकल पुण्यफल प्राप्त करने के लिये एकभुक्त, नक्तव्रत, अयाचित भोजन या सर्वथा उपवास का व्रत ग्रहण करे।

❀ **गुरु पूर्णिमा** पर समस्त आचार्य परम्परा सहित निजगुरुदेव का पूजन करना चाहिये। यह पूर्णिमा मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्य है। परंतु दोनों दिन मध्याह्नव्यापिनी हो तो परदिन की पूर्णिमा ग्रहण करनी चाहिये।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जून	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
26	01:22	02:57	04:53	07:07	09:27	11:44	13:59	16:18	18:37	20:42	22:26	23:56
27	01:18	02:54	04:49	07:03	09:23	11:40	13:55	16:14	18:33	20:38	22:23	23:52
28	01:14	02:50	04:45	06:59	09:19	11:36	13:51	16:10	18:29	20:34	22:19	23:48
29	01:10	02:46	04:41	06:55	09:16	11:32	13:47	16:06	18:25	20:30	22:15	23:44
30	01:06	02:42	04:37	06:51	09:12	11:28	13:43	16:02	18:21	20:26	22:11	23:40
जुलाई	01:02	02:38	04:33	06:48	09:08	11:24	13:39	15:58	18:17	20:22	22:07	23:36
2	00:58	02:34	04:30	06:44	09:04	11:20	13:35	15:54	18:13	20:18	22:03	23:32
3	00:54	02:30	04:26	06:40	09:00	11:16	13:31	15:50	18:09	20:15	21:59	23:28
4	00:50	02:26	04:22	06:36	08:56	11:12	13:27	15:46	18:05	20:11	21:55	23:24
5	00:46	02:22	04:18	06:32	08:52	11:09	13:24	15:42	18:01	20:07	21:51	23:20
6	00:42	02:18	04:14	06:28	08:48	11:05	13:20	15:38	17:57	20:03	21:47	23:16
7	00:38	02:14	04:10	06:24	08:44	11:01	13:16	15:35	17:53	19:59	21:43	23:13
8	00:35	02:11	04:06	06:20	08:40	10:57	13:12	15:31	17:50	19:55	21:39	23:09
9	00:31	02:07	04:02	06:16	08:36	10:53	13:08	15:27	17:46	19:51	21:36	23:05
10	00:27	02:03	03:58	06:12	08:32	10:49	13:04	15:23	17:42	19:47	21:32	23:01

जून	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
26	**सर्वार्थ**·10:16 से (१) **रवियोग**:11:26 तक, **अमृत**·12:15 से
27	**सर्वार्थ**·09:36 तक, **मृत्यु**·13:09 तक (२) **मृत्यु**·13:16 से
28	**रवियोग**:09:20 से, **सिद्ध**·12:12 से (३) **रवियोग**:15:11 से
29	**रवियोग**:09:33 तक, **अमृत**·11:43 से
30	**अमृत**·11:44 तक, **रवियोग**:10:14 से, **सिद्ध**·11:44 से
जुलाई	**मृत्यु**·12:15 तक, **त्रिपुष्कर**:11:26 से 12:15 तक (१)
2	**द·ति**·13:16 से, **सिद्ध**·13:16 तक, **सर्वार्थ**·13:06 से, (२)
3	**द·ति**·14:42 तक, **अमृत**·14:42 तक, **मृत्यु**·14:42 से, (३)
4	**अमृत**·16:28 तक, **रवियोग**:17:35 तक
5	**सर्वार्थ**·20:11 तक, **मृत्यु**·18:27 तक, **अमृत**·18:27 से
6	**मृत्यु**·20:27 तक, **त्रिपुष्कर**:20:27 से 22:48 तक, (४)
7	**सर्वार्थ**·25:15 तक, **मृत्यु**·22:19 तक
8	**सिद्ध**·23:53 तक, **रवियोग**:27:25 से
9	**रवियोग**:29:11 तक (४) **रवियोग**:22:48 तक
10	**सिद्ध**·25:46तक

जन्मकुण्डली व प्रश्नलग्न से मृत्यु का ज्ञान

यदि प्रश्नकाल व जन्मकाल में 3,6,9,12 भाव में पापग्रह हो तो अपने कुल परम्परा के दोष से जातक को विष से, जल से व शस्त्र से, इन स्थानों में शनि हो तो जल में डूबने से, मंगल हो तो शस्त्र से, सूर्य हो तो अपने बन्धुवों से, राहु हो तो अपने पराक्रम से मृत्यु होती है। ग्रहों की इस स्थिति में शान्ति और पूजा तथा ब्राह्मण भोजन करवाने से अकालमृत्यु दोष का निवारण होता है। यदि स्वगृही हो तो अपने लोगों द्वारा, शत्रु गृही हो तो शत्रु द्वारा, मित्रक्षेत्री हो तो मित्रों द्वारा अरिष्ट फल की प्राप्ति होती है ।

सूर्यसंक्रान्ति से मासफल का ज्ञान–

जिस नक्षत्र में सूर्य की संक्रान्ति हो उसके पूर्व नक्षत्र से अपने नक्षत्र तक गिनें क्रमशः फल जैसे 1 से 3 नक्षत्र के बीच अपना नक्षत्र पड़े तो उस मास में यात्रा करना वर्जित, 4 से 9 तक भोग एवं सुख की प्राप्ति, 10 से 12 तक कष्ट, 13 से 18 तक वस्त्रादि लाभ, 19 से 21 तक धनधान्य की हानि तथा 22 से 27 तक में हो तो उस मास में धनधान्य में में लाभ होता है।

श्रावण कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 11 जुलाई से 24 जुलाई, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 11:7:2025– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपश्चिमोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
जुलाई	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	जुलाई	11 जुलाई से 24 जुलाई, 2025
11	1 शु	५०:४०	25:58	पू·षा·	०१:५९	06:30	वैधृ·	४१:०४	22:08	बाल	13:56	कौल	25:58	34:06	5:42	19:20	म·17:36	12:44	प्रवर्द्ध	11	**हिण्डोला प्रारम्भ, मैथिल नववर्ष आरम्भ**
12	2 श	४९:५३	25:40	उ·षा·	०३:५९	07:18	विष्कु·	३८:१०	20:59	तैति	13:52	गर	25:40	34:04	5:42	19:20	मकर	अहोरात्र	सुस्थिर	12	जयापार्वती व्रतारम्भ (गुजरात)
13	3 र	४७:५४	24:52	श्रवण	०४:४४	07:36	प्रीति	३४:१८	19:26	वणि	13:19	विष	24:52	34:02	5:43	19:20	कु·34:40	19:35	गद	13	
14	4 चं	४४:४८	23:39	धनि·	०४:१९	07:27	आयु·	२९:३०	17:31	बव	12:18	बाल	23:39	34:00	5:43	19:20	कुंभ	अहोरात्र	शुभ	14	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·21:57**
15	5 मं	४०:४५	22:02	शत·	०२:५०	06:52	सौभा·	२३:५४	15:17	कौल	10:52	तैति	22:02	33:59	5:44	19:20	मी·46:08	24:11	मृत्यु	15	**नाग पश्चमी (राजस्थान परम्परागत)**, मंगलागौरी पूजन
16	6 बु	३५:५४	20:06	पू·भा· उ·भा·	**००:२८** **५६:५४**	**05:55** **28:40**	शोभ·	१७:३६	12:47	गर	09:06	वणि	20:06	33:57	5:44	19:19	मीन	अहोरात्र	पद्म	16	मुनि नेमिनाथ जयन्तीः
17	7 गु	३०:२६	17:55	रेवती	५३:४१	27:13	अतिग·	१०:४४	10:03	विष	07:02	बव	17:55	33:55	5:45	19:19	मे·53:41	27:13	मित्र	17	**कालाष्टमी, कर्क संक्रान्ति पुण्यकालं 05:45–19:19**
18	8 शु	२४:३१	15:34	अश्वि·	४९:३९	25:37	सुकर्मा धृति	**०३:२७** **५२:२८**	**07:08** **28:07**	कौल	15:34	तैति	26:20	33:53	5:45	19:19	मेष	अहोरात्र	वज्र	18	इन्द्रसावर्णि·मन्वादि
19	9 श	१८:२१	13:06	भरणी	४५:२७	23:57	शूल	४८:१४	25:04	गर	13:06	वणि	23:51	33:51	5:46	19:18	वृ·59:24	29:31	ध्वांक्ष	19	
20	10 र	१२:०८	10:37	कृत्ति·	४१:१८	22:18	गण्ड	४०:३८	22:01	विष	10:37	बव	21:24	33:48	5:46	19:18	वृष	अहोरात्र	धूम्र	20	
21	11 चं	०६:०५	08:13	रोहि·	३७:२७	20:46	वृद्धि	३३:१५	19:05	बाल	08:13	कौल	19:03	33:46	5:47	19:18	वृष	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	21	**श्रीकामदा एकादशी (सर्वेषाम्), श्रावण सोमवार व्रत**
22	12 मं 13 मं	**००:२३** **५४:५३**	**05:57** **27:54**	मृग·	३४:०२	19:24	ध्रुव	२६:१३	16:17	तैति	05:57	गर	16:53	33:44	5:47	19:17	मि·05:40	08:03	राक्षस	22	**प्रदोष व्रतम्**, मंगलागौरी पूजन
23	14 बु	५०:५१	26:08	आर्द्रा	३१:१८	18:19	व्याघ·	१९:४३	13:41	विष	14:58	बव	26:08	33:42	5:48	19:17	मिथुन	अहोरात्र	मुसल	23	**मास शिवरात्रि व्रतम्**
24	30 गु	४७:१९	24:44	पुन·	२९:२४	17:34	हर्षण	१३:५३	11:21	चतु	13:22	नाग	24:44	33:39	5:48	19:16	क·14:47	11:43	सिद्धि	24	**हरियाली अमावस्या (देव–पितृकार्य)**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क जुलाई	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
11	1 शु	02:24:18:45	08:26:14:41	04:19:38:27	वक्री 15:42:05	02:13:51:43	01:13:48:54	11:04:45:58	10:29:35:37	47:03:00	उ·22:52:42	– 4:55	19:53
12	2 श	02:25:15:38	09:09:08:12	04:20:14:30	03:15:45:45	02:14:05:35	01:14:57:12	11:04:45:37	10:29:32:26	47:02:12	उ·22:45:08	– 5:03	20:36
13	3 र	02:26:12:32	09:22:17:09	04:20:50:36	03:15:42:44	02:14:19:26	01:16:05:37	11:04:45:09	10:29:29:16	47:01:21	उ·22:37:10	– 5:10	21:17
14	4 चं	02:27:09:26	10:05:41:37	04:21:26:47	03:15:33:05	02:14:33:16	01:17:14:08	11:04:44:35	10:29:26:05	47:00:29	उ·22:28:49	– 5:18	21:57
15	5 मं	02:28:06:21	10:19:20:55	04:22:03:02	03:15:16:51	02:14:47:05	01:18:22:44	11:04:43:53	10:29:22:54	46:59:34	उ·22:20:05	– 5:24	22:34
16	6 बु	02:29:03:16	11:03:13:38	04:22:39:20	03:14:54:16	02:15:00:53	01:19:31:27	11:04:43:05	10:29:19:43	46:58:36	उ·22:10:58	– 5:31	23:12
17	7 गु	03:00:00:13	11:17:17:41	04:23:15:42	03:14:25:41	02:15:14:39	01:20:40:16	11:04:42:11	10:29:16:32	46:57:37	उ·22:01:29	– 5:36	23:50
18	8 शु	03:00:57:10	00:01:30:23	04:23:52:08	03:13:51:36	02:15:28:24	01:21:49:10	11:04:41:09	10:29:13:22	46:56:36	उ·21:51:37	– 5:41	24:31
19	9 श	03:01:54:07	00:15:48:36	04:24:28:37	03:13:12:37	02:15:42:08	01:22:58:09	11:04:40:01	10:29:10:11	46:55:33	उ·21:41:23	– 5:46	25:16
20	10 र	03:02:51:06	01:00:08:51	04:25:05:11	03:12:29:31	02:15:55:51	01:24:07:14	11:04:38:46	10:29:06:60	46:54:27	उ·21:30:48	– 5:50	26:05
21	11 चं	03:03:48:05	01:14:27:06	04:25:41:47	03:11:43:13	02:16:09:32	01:25:16:25	11:04:37:25	10:29:03:49	46:53:20	उ·21:19:50	– 5:54	27:01
22	12 मं	03:04:45:06	01:28:39:53	04:26:18:28	03:10:54:42	02:16:23:11	01:26:25:40	11:04:35:57	10:29:00:38	46:52:11	उ·21:08:31	– 5:57	27:58
23	14 बु	03:05:42:07	02:12:44:03	04:26:55:12	03:10:05:06	02:16:36:49	01:27:35:01	11:04:34:22	10:28:57:28	46:51:00	उ·20:56:51	– 5:00	29:00
24	30 गु	03:06:39:09	02:26:36:55	04:27:31:59	03:09:15:42	02:16:50:25	01:28:44:27	11:04:32:41	10:28:54:17	46:49:47	उ·20:44:50	– 6:01	06:01

14 जुलाई सूर्योदयकालीन तिथि:4

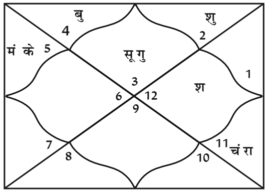

21 जुलाई सूर्योदयकालीन तिथि:11

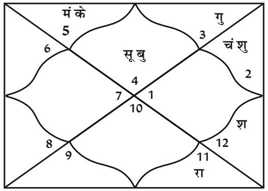

श्रावण कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 11 जुलाई से 24 जुलाई, 2025 ईस्वी

पक्षान्तः–कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म कर्कार्कतः ऋतुःवर्षा । सौम्यगोलः । दक्षिणायनं । ति·30 अयनांशा:22:52:46

दिनाङ्क जुलाई	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
11	1 शु	**अभिजितारम्भः 25:08,** वक्री बुधः घं·17:48।
12	2 श	**अभिजितान्तः 08:55, अशून्य शयन व्रतम्।**
13	3 र	**पंचकारंभः 19:35, भद्रा 13:20–24:53 घं·।**
14	4 चं	**पंचक, श्रावण सोमवार व्रत।**
15	5 मं	**पंचक,** हरदेवजी पूजा (जयपुरे)।
16	6 बु	**पंचक, भद्रारंभः 20:07 घं·।**
17	7 गु	**पंचक, भद्रांतः07:03, गण्डान्तारम्भः21:37, भानुसप्तमी,** कर्केरविः06:06।
18	8 शु	**पंचकान्तः03:14, गण्डान्तः08:50।**
19	9 श	**भद्रारंभः 23:52 घं·,** मृगशिरायांशुक्रः घं·13:25।
20	10 र	**भद्रांतः10:38 घं·,** पुष्येरविः घं·17:58।
21	11 चं	।
22	12 मं 13 मं	**भद्रारंभः 27:54 घं·,** उत्तरफल्गुन्यांमङ्गलः घं·19:56।
23	14 बु	**भद्रांतः14:59 घं·।**
24	30 गु	**श्रीसरसमाधुरी जयन्ती शुकपीठ** (जयपुर), दैवसावर्णि·मन्वादि।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
1	12:06–13:54
30	12:06–13:52

❀ श्रावण मास कृत्य ❀

❀ **नागपंचमी–** जयपुर में श्रावण कृष्णपक्ष की पंचमी को नागपंचमी मनाई जाती है, अन्य क्षेत्रों में परम्पराभेद से श्रावण शुक्लपक्ष अथवा भाद्र कृष्ण की पञ्चमी को मनाई जाती है। यह षष्ठीयुक्ता शुभ होती है, ***''पञ्चमी नागपूजायां कार्या षष्ठीसमन्विता।*** आज सर्पों की पूजा करे। घर के मुख्य दरवाजे के दोनों पार्श्वों में नागों के चित्र सटाकर अथवा गोबर से नागों की आकृति बनाकर अनन्त आदि नागों की पूजा दूध, घी, नैवेद्य, दधि, अक्षत, दूर्वा, कुशा, गन्ध, पुष्प आदि से करके प्रार्थना करे कि हमारे जीवन में सर्पों का भय न हो। भविष्यपुराण में कहा है कि प्रत्येक पञ्चमी तिथि में नागपूजा करे। सर्पस्तोत्र के पाठ से कालसर्पदोष एवं सर्पशाप की शान्ति होती है। **सर्पस्तोत्र –**

ब्रह्मलोके च ये सर्पाः शेषनागपुरोगमाः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥1॥
विष्णुलोके च ये सर्पा वासुकिप्रमुखाश्च ये। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥2॥
रुद्रलोके च ये सर्पास्तक्षकप्रमुखास्तथा। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥3॥
खाण्डवस्य तथा दाहे स्वर्ग ये च समाश्रिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥4॥
सर्पसत्रै च ये सर्पा आस्तिकेन च रक्षिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥5॥
मलये चैव ये सर्पाः कर्कोटकप्रमुखाश्च ये। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥6॥
धर्मलोके च ये सर्पा वैतरण्यां समाश्रिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥7॥
ये सर्पाः पार्वतीयेषु दरीसंधिषु संस्थिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥8॥
ग्रामे वा यदि वारण्ये ये सर्पाः प्रचरन्ति हि । नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥9॥
पृथिव्यां चैव ये सर्पा ये सर्पा बिलसंस्थिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥10॥
रसातले च ये सर्पा अनन्ताद्या महाबलाः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥11॥

❀ **सर्प गायत्री --** भुजङ्गेशाय विद्महे सर्पराजाय धीमहि । तन्नो नागः प्रचोदयात् ।

शकुन के आधार पर वर्षा विचारः–

1. गोरैया धूल में स्नान करे या चातक बोले तो शीघ्र वर्षा होती है। **2.** शतभिषा नक्षत्र के दिन दक्षिण हवा जोर से बहे तो शीघ्र वर्षा होती है। **3.** गाय या गिरगिट सूर्य की ओर देखे, कुत्ता घर से बाहर जाने को अधिक उद्यत हो तो वर्षा होती है। **4.** पशु, कुत्ता खुरों से मिट्टी खोदे, आधी रात को मुर्गा बोले तो शीघ्र वर्षा होती है। **5.** लाल चीटी अंडों के साथ ऊपर की ओर चढ़े अथवा शमी वृक्ष पर चढ़े तो वर्षा होती हैं। 6. गोबर में अधिक कीड़ा हो जाए, धूप में तेजी रहे, पपीहा बोले तो शीघ्र वर्षा होती है। 7. जहाँ तहाँ बगुला पंख फैलाकर पंक्ति में दिखे तो 2–3 प्रहरों के बीच वर्षा होती है। 8. मक्खी, भ्रमर-पंक्ति में उड़े, गोबर की ओर जाय तो वर्षा होती है। 9. गुड़, नमक, मक्खन (घी), अनायास पिघले तो वर्षा होती है।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जुलाई	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
11	00:23	01:59	03:54	06:08	08:29	10:45	13:00	15:19	17:38	19:43	21:28	22:57
12	00:19	01:55	03:50	06:04	08:25	10:41	12:56	15:15	17:34	19:39	21:24	22:53
13	00:15	01:51	03:46	06:01	08:21	10:37	12:52	15:11	17:30	19:35	21:20	22:49
14	00:11	01:47	03:43	05:57	08:17	10:33	12:48	15:07	17:26	19:31	21:16	22:45
15	00:07	01:43	03:39	05:53	08:13	10:29	12:44	15:03	17:22	19:27	21:12	22:41
16	00:03	01:39	03:35	05:49	08:09	10:25	12:40	14:59	17:18	19:24	21:08	22:37
17	23:59	01:35	03:31	05:45	08:05	10:22	12:36	14:55	17:14	19:20	21:04	22:33
18	23:55	01:31	03:27	05:41	08:01	10:18	12:33	14:51	17:10	19:16	21:00	22:29
19	23:51	01:27	03:23	05:37	07:57	10:14	12:29	14:47	17:06	19:12	20:56	22:25
20	23:47	01:23	03:19	05:33	07:53	10:10	12:25	14:44	17:02	19:08	20:52	22:21
21	23:43	01:19	03:15	05:29	07:49	10:06	12:21	14:40	16:58	19:04	20:48	22:18
22	23:39	01:15	03:11	05:25	07:45	10:02	12:17	14:36	16:55	19:00	20:44	22:14
23	23:36	01:12	03:07	05:21	07:41	09:58	12:13	14:32	16:51	18:56	20:41	22:10
24	23:32	01:08	03:03	05:17	07:38	09:54	12:09	14:28	16:47	18:52	20:37	22:06

जुलाई	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
11	**सिद्ध**·25:58 तक, **मृत्यु**·25:58 से
12	**त्रिपुष्कर**:07:18 तक, **सर्वार्थ**·07:18 से
13	**सिद्ध**·24:52 तक
14	**अमृत**·23:39 से
15	**मृत्यु**·22:02 से
16	**द·ति**·20:06 तक, **अमृत**·20:06 तक, **रवियोग**:05:55 से 28:40 तक, **सिद्ध**·20:06 से
17	**द·ति**·6, **सर्वार्थ**· अहोरात्र, **अमृत**·17:55 से
18	**सर्वार्थ**·25:37 तक, **अमृत**·15:34 से
19	**सिद्ध**·13:06 तक, **मृत्यु**·13:06 से
20	**अमृत**·10:37 तक, **मृत्यु**·10:37 से
21	**सर्वार्थ**·20:46 तक, **सिद्ध**·08:13 तक, **मृत्यु**·08:13 से, **सर्वार्थ**·20:46 से
22	**अमृत**·**द्विपुष्कर**:05:57 तक, **सिद्ध**·05:57–27:54
24	**सर्वार्थ**· अहोरात्र, **सिद्ध**·24:44 तक

卐 **अशून्यशयन व्रत** का आरम्भ श्रावण मास में होता है। इसके प्रभावसे विवाहविच्छेद की संभावना नष्ट हो जाती है। श्रावण में जो श्री शिव–पार्वती की युग्मपूजा करेगा उसका शुभ विवाह होगा और उपवासपूर्वक श्रावण कृष्ण द्वितीया की रात्रि में जो श्री विष्णुलक्ष्मी की पूजा बिस्तर पर करेंगी उनका विवाह–विच्छेद नहीं होगा–

यथा त्वशून्यं तव देव तल्पं समं हि लक्ष्म्या वरदाच्युतेश।
सत्येन तेनामितवीर्य विष्णो गार्हस्थ्यनाशो मम नास्तु देव।

हे विष्णु! आप और लक्ष्मीजी का गृहस्थ जीवन कभी नष्ट नहीं होता, आपकी पूजासे मेरा भी नष्ट न हो।

卐 **नागपंचमी** को नागों और सर्पों की पूजा कर कालसर्प दोष से मुक्ति की प्रार्थना की जायेगी। सर्पदोष निवारक वैदिक मन्त्र –

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये ऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

श्रावण शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 25 जुलाई से 9 अगस्त, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 25:7:2025– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, वक्री बुधःपश्चिमास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत-पर्व-उत्सव 卐
जुलाई	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	जुलाई	25 जुलाई से 9 अगस्त 2025
25	1 शु	४४:५०	23:45	पुष्य	२८:२८	17:12	वज्र	०८:४९	09:20	किं	12:11	बव	23:45	33:37	5:49	19:16	कर्क	अहोरात्र	उत्पात	25	जीवन्तिका पूजन
26	2 श	४३:३१	23:14	आश्ले·	२८:४१	17:18	सिद्धि	०४:३७	07:40	बाल	11:25	कौल	23:14	33:34	5:49	19:15	सिं·28:41	17:18	मानस	26	**सिंजारा**, स्वामी श्रीकरपात्री जयन्ती
27	3 र	४३:२६	23:13	मघा	३०:०६	17:52	व्यति· वरी·	०१:२४ ५७:४८	06:23 29:30	तैति	11:09	गर	23:13	33:31	5:50	19:15	सिंह	अहोरात्र	मुद्गर	27	**हरियाली तीज**, झूलनोत्सव, तीज मेला जयपुर
28	4 चं	४४:३९	23:42	पू·फा·	३२:४६	18:57	परिघ	५७:५९	29:02	वणि	11:23	विष	23:42	33:29	5:50	19:14	कं·48:38	25:18	ध्वज	28	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**, मेला बूढ़ी तीज जयपुर, **श्रावण सोमवार**
29	5 मं	४७:०५	24:41	उ·फा·	३६:३८	20:30	शिव	५७:४१	28:56	बव	12:08	बाल	24:41	33:26	5:51	19:14	कन्या	अहोरात्र	धाता	29	**नागपञ्चमी** (मतान्तरे अन्यक्षेत्रे), **मंगलागौरी पूजन**
30	6 बु	५०:३६	26:06	हस्त	४१:३६	22:30	सिद्ध	५८:१४	29:09	कौल	13:20	तैति	26:06	33:23	5:52	19:13	कन्या	अहोरात्र	आनन्द	30	**श्रीस्कन्दषष्ठी**, श्रीकल्कि जयन्ती, श्रीनेमीनाथ जयन्ती
31	7 गु	५४:५९	27:51	चित्रा	४७:२६	24:50	साध्य	५९:२४	29:38	गर	14:56	वणि	27:51	33:20	5:52	19:12	तु·14:25	11:38	सुस्थिर	31	**श्री तुलसीदास जयन्ती**, कुमारी पूजा, मोक्ष सप्तमी (जैन)
अगस्त	8 शु	५९:५३	29:50	स्वाती	५३:४८	27:24	शुभ	६०:००	अहोरात्र	विष	16:49	बव	29:50	33:18	5:53	19:12	तुला	अहोरात्र	गद	अगस्त	**श्रीदुर्गाष्टमी**, जीवन्तिका पूजन
2	9 श	६०:००	अहोरात्र	विशा·	६०:००	अहोरात्र	शुभ	००:५५	06:15	बाल	18:50	कौल	29:54	33:15	5:53	19:11	वृ·43:42	23:22	शुभ	2	**कौमारी नवमी**
3	9 र	०४:५३	07:51	विशा·	००:१८	06:01	शुक्ल	०२:३३	06:55	कौल	07:51	तैति	20:49	33:12	5:54	19:11	वृश्चिक	अहोरात्र	उत्पात	3	श्रीहरि जयन्ती
4	10 चं	०९:३४	09:44	अनु·	०६:३२	08:31	ब्रह्म	०३:५७	07:29	गर	09:44	वणि	22:34	33:09	5:54	19:10	वृश्चिक	अहोरात्र	मानस	4	**कलश दशमी**, **श्रावण सोमवार व्रत**
5	11 मं	१३:३५	11:21	ज्ये·	१२:०७	10:46	ऐन्द्र	०४:४९	07:50	विष	11:21	बव	24:00	33:06	5:55	19:09	ध·12:07	10:46	मुद्गर	5	**श्रीपवित्रा एकादशी (सर्वेषाम्)**
6	12 बु	१६:३६	12:34	मूल	१६:४५	12:37	वैधृ·	०४:५८	07:54	बाल	12:34	कौल	24:59	33:03	5:55	19:08	धनु	अहोरात्र	ध्वज	6	**प्रदोष व्रत**, श्रीदामोदर द्वादशी
7	13 गु	१८:२७	13:19	पू·षा·	२०:१५	14:02	विष्कु·	०४:१३	07:37	तैति	13:19	गर	25:30	32:59	5:56	19:08	म·35:57	20:19	धाता	7	**श्रीशिव पवित्रारोपण**, आखेट त्रयोदशी (उड़ीसा)
8	14 शु	१९:०४	13:34	उ·षा·	२२:३२	14:57	प्रीति आयु·	०२:२९ ५७:१७	06:56 29:51	वणि	13:34	विष	25:29	32:56	5:56	19:07	मकर	अहोरात्र	आनन्द	8	**पूर्णिमा (व्रत)**, चरण जयन्ती, जीवन्तिका पूजन
9	15 श	१८:२३	13:18	श्रवण	२३:३३	15:22	सौभा·	५६:०२	28:22	बव	13:18	बाल	24:59	32:53	5:57	19:06	कु·53:37	27:24	प्रवर्द्ध	9	**श्रावण पूर्णिमा (स्नान,दान)**, **रक्षाबन्धन**, **श्रावणी उपाकर्म**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	वक्री बुधः	गुरुः	शुक्रः	वक्री शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
जुलाई	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
25	1 शु	03:07:36:12	03:10:16:23	04:28:08:50	03:08:27:43	02:17:03:59	01:29:53:57	11:04:30:54	10:28:51:06	46:48:33	उ·20:32:28	– 6:03	06:02
26	2 श	03:08:33:16	03:23:41:02	04:28:45:44	03:07:42:13	02:17:17:31	02:01:03:33	11:04:29:00	10:28:47:55	46:47:16	उ·20:19:46	– 6:04	07:03
27	3 र	03:09:30:21	04:06:50:11	04:29:22:42	03:07:00:12	02:17:31:01	02:02:13:13	11:04:27:00	10:28:44:44	46:45:58	उ·20:06:43	– 6:04	08:02
28	4 चं	03:10:27:27	04:19:43:55	04:29:59:43	03:06:22:30	02:17:44:30	02:03:22:59	11:04:24:54	10:28:41:33	46:44:38	उ·19:53:21	– 6:03	08:59
29	5 मं	03:11:24:34	05:02:23:05	05:00:36:48	03:05:49:51	02:17:57:55	02:04:32:50	11:04:22:41	10:28:38:23	46:43:17	उ·19:39:39	– 6:02	09:54
30	6 बु	03:12:21:42	05:14:49:15	05:01:13:56	03:05:22:50	02:18:11:19	02:05:42:45	11:04:20:22	10:28:35:12	46:41:54	उ·19:25:37	– 6:01	10:48
31	7 गु	03:13:18:51	05:27:04:40	05:01:51:07	03:05:01:53	02:18:24:40	02:06:52:46	11:04:17:58	10:28:32:01	46:40:30	उ·19:11:16	– 5:58	11:41
अगस्त	8 शु	03:14:16:02	06:09:12:07	05:02:28:22	03:04:47:18	02:18:37:59	02:08:02:52	11:04:15:27	10:28:28:50	46:39:04	उ·18:56:36	– 5:55	12:34
2	9 श	03:15:13:13	06:21:14:49	05:03:05:40	03:04:39:15	02:18:51:15	02:09:13:02	11:04:12:50	10:28:25:39	46:37:36	उ·18:41:38	– 5:52	13:28
3	9 र	03:16:10:26	07:03:16:24	05:03:43:01	मार्गी 04:37:48	02:19:04:29	02:10:23:17	11:04:10:08	10:28:22:29	46:36:08	उ·18:26:22	– 5:48	14:22
4	10 चं	03:17:07:40	07:15:20:50	05:04:20:25	03:04:42:54	02:19:17:40	02:11:33:36	11:04:07:19	10:28:19:18	46:34:37	उ·18:10:47	– 5:43	15:16
5	11 मं	03:18:04:55	07:27:31:30	05:04:57:53	03:04:54:27	02:19:30:48	02:12:44:00	11:04:04:26	10:28:16:07	46:33:06	उ·17:54:55	– 5:38	16:09
6	12 बु	03:19:02:12	08:09:51:27	05:05:35:24	03:05:12:16	02:19:43:53	02:13:54:29	11:04:01:26	10:28:12:56	46:31:33	उ·17:38:45	– 5:32	16:59
7	13 गु	03:19:59:30	08:22:23:15	05:06:12:58	03:05:36:09	02:19:56:55	02:15:05:02	11:03:58:21	10:28:09:45	46:29:59	उ·17:22:19	– 5:25	17:48
8	14 शु	03:20:56:49	09:05:08:51	05:06:50:36	03:06:05:51	02:20:09:54	02:16:15:39	11:03:55:11	10:28:06:34	46:28:24	उ·17:05:35	– 5:18	18:34
9	15 श	03:21:54:09	09:18:09:30	05:07:28:16	03:06:41:05	02:20:22:50	02:17:26:21	11:03:51:55	10:28:03:24	46:26:47	उ·16:48:35	– 5:11	19:15

28 जुलाई सूर्योदयकालीन तिथि:4

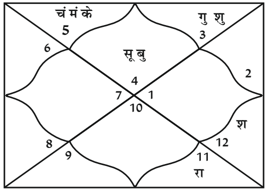

5 अगस्त सूर्योदयकालीन तिथि:11

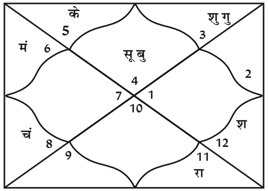

श्रावण शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 25 जुलाई से 9 अगस्त, 2025 ईस्वी

दिनाङ्क जुलाई	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
25	1 शु	मिथुनेशुक्रः घं·07:57।
26	2 श	**गण्डान्तः11:14–23:24, रोटक व्रत।**
27	3 र	मधुश्रवा तीज, व्यतीपात पुण्यम्।
28	4 चं	**भद्रा 11:24–23:43 घं·**, कन्यायांमङ्गलः घं·06:05।
29	5 मं	तक्षक पूजा।
30	6 बु	आर्द्रायांशुक्रः घं·25:34।
31	7 गु	**भद्रारंभः27:52 घं·**, पंचदिवसीय श्रीडिग्गी कल्याणजी यात्रारम्भ (जयपुर)।
अगस्त	8 शु	**भद्रांतः16:50 घं·।**
2	9 श	।
3	9 र	आश्लेषयांरविः घं·18:19, मार्गी बुधः घं·०१:४७।
4	10 चं	**भद्रारंभः 22:35 घं·, गण्डान्तारम्भः 28:14।**
5	11 मं	**भद्रांतः11:21 घं·, गण्डान्तः17:16।**
6	12 बु	**पवित्रारोपण**, बुद्ध द्वादशी, वैधृति पुण्यम्।
7	13 गु	।
8	14 शु	**भद्रा 13:34–25:30 घं·, अभिजितः 08:45–16:35**, पुनर्वसौगुरुः घं·08:15।
9	15 श	**पञ्चकारंभः** 27:24, **श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, संस्कृत दिवस**, अमरनाथ यात्रा।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
1	12:06–13:52
15	12:04–13:47

❀ श्रावण मास कृत्य ❀

❀ **उपाकर्म (श्रावणी)**– श्रावण पूर्णिमा के दिन अथवा हस्त नक्षत्र युक्त श्रावण शुक्ल पंचमी के दिन श्रावणीकर्म किया जाता है। यदि पूर्णिमा भद्रा या ग्रहण से दूषित हो, तभी हस्त एवं पञ्चमी के योग में श्रावणी कर्म किया जाता है – ***भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपति हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी।।*** (पूर्णिमा में भद्रा होने पर श्रावणी और होलिकादाह नहीं करते हैं।) शुक्ल यजुर्वेदी उपनीत द्विज श्रावण पूर्णिमा को ही श्रावणी करते हैं। विधिपूर्वक वेदारम्भ कर्म का नाम उपाकर्म या श्रावणी–कर्म है। द्विजों को इस दिन अधिकाधिक गायत्री जप करना चाहिए। इस दिन ऋषि–तर्पण भी करने से ऋषितेज की प्राप्ति होती है।

❀ **रक्षाबन्धन मुहूर्त** – श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन रक्षाबन्धन का पर्व मनाया जाता है। **मुहूर्त– 9 अगस्त को 13:18 तक**

रक्षा बन्धन का मंत्र इस प्रकार से है– **येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।**

रक्षाबन्धन पर्व भद्रारहित अपराह्नकाल में कहा गया है। पूर्णिमा न्यूनतम त्रिमुहूर्तव्यापिनी होनी चाहिए। इससे कम होने पर पूर्व दिन प्रदोष काल में रक्षा बन्धन करने का विधान है (धर्मसिन्धु)।

❀ सदन्त शिशु जन्मफल एवं शान्ति विधि ❀

यदि शिशु का दाँत सहित जन्म होता है तो वह माता, पिता, अपना, मामा एवं स्वकुल का विनाशक होता है। अतः यत्न करके कल्याणार्थ इसकी शान्ति करानी चाहिए। सर्व प्रथम बालक को सर्वोषधि से स्नान तदनन्तर शुद्ध जल से स्नान कराकर माता–पिता एवं बालक सहित धाता, अग्नि, सोम, वायु, पर्वत और केशव भगवान विष्णु की प्रतिमाओं की पूजा कलश पर स्थापित कर करें। तदनन्तर नवग्रह तथा कुल देवताओं की पूजा करनी चाहिये। संकल्प में *'सदन्त जनन सूचित सर्वारिष्टेत्यादि शान्त्यर्थ''* जोड़ना चाहिये। पूजन के बाद प्रत्येक स्थापित देव मन्त्रों से यथाशक्ति 1000 या 100 या 28 आहूति देकर हवन करना चाहिये। अन्त में ब्राह्मण भोजन कराकर यथाशक्ति दक्षिणा दे। यथा ––

मातरं पितरं खादेदात्मानं वापि मातुलान्।
सदन्तं बालकं विद्याद्राक्षसं तत्कुलान्तकृत् ।।
देवदेवं केशवं च वृद्धि सोमं समीरणम्।
धातरं च विधातारं कुलदेवं नवग्रहान् ।।
यजेत्तल्लिंगजैर्मन्त्रैः नाममन्त्रैरथापि वा।
यथा शक्ति सहस्रं वा शतं वाथाष्ट विंशतिः ।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जुलाई	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
25	23:28	01:04	02:59	05:13	07:34	09:50	12:05	14:24	16:43	18:48	20:33	22:02
26	23:24	01:00	02:55	05:09	07:30	09:46	12:01	14:20	16:39	18:44	20:29	21:58
27	23:20	00:56	02:51	05:06	07:26	09:42	11:57	14:16	16:35	18:40	20:25	21:54
28	23:16	00:52	02:47	05:02	07:22	09:38	11:53	14:12	16:31	18:36	20:21	21:50
29	23:12	00:48	02:43	04:58	07:18	09:34	11:49	14:08	16:27	18:32	20:17	21:46
30	23:08	00:44	02:39	04:54	07:14	09:30	11:45	14:04	16:23	18:28	20:13	21:42
31	23:04	00:40	02:36	04:50	07:10	09:26	11:41	14:00	16:19	18:24	20:09	21:38
अगस्त	23:00	00:36	02:32	04:46	07:06	09:22	11:37	13:56	16:15	18:21	20:05	21:34
2	22:56	00:32	02:28	04:42	07:02	09:18	11:33	13:52	16:11	18:17	20:01	21:30
3	22:52	00:28	02:24	04:38	06:58	09:15	11:30	13:48	16:07	18:13	19:57	21:26
4	22:48	00:24	02:20	04:34	06:54	09:11	11:26	13:44	16:03	18:09	19:53	21:22
5	22:44	00:20	02:16	04:30	06:50	09:07	11:22	13:40	15:59	18:05	19:49	21:18
6	22:40	00:16	02:12	04:26	06:46	09:03	11:18	13:36	15:55	18:01	19:45	21:14
7	22:36	00:12	02:08	04:22	06:42	08:59	11:14	13:33	15:51	17:57	19:41	21:10
8	22:32	00:08	02:04	04:18	06:38	08:55	11:10	13:29	15:47	17:53	19:37	21:06
9	22:28	00:04	02:00	04:14	06:34	08:51	11:06	13:25	15:44	17:49	19:33	21:03

जुलाई	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
25	**सिद्ध**·23:45 तक, **मृत्यु**·23:45 से
27	**सिद्ध**·23:13 तक, **रवियोग**:17:52 से
28	**रवियोग**:18:57 तक, अमृत 23:42 से
29	**रवियोग**:20:30 से, **मृत्यु**·24:41 से
30	द·ति·26:06 तक, **सर्वार्थ·रवियोग**: 22:30 तक, **अमृत**·26:06 तक, **सिद्ध**·26:06 से
अगस्त	**रवियोग**:27:24 से, **अमृत**·29:50 से
2	**सिद्ध**·अहोरात्र, **रवियोग**:अहोरात्र
3	**रवियोग**: अहोरात्र, **अमृत**·07:51 से
4	**सर्वार्थ**·08:31 तक, **अमृत**·09:44 तक, **रवियोग**: अहोरात्र **सिद्ध**·09:44 से
5	**मृत्यु**·11:21 तक, **रवियोग**:10:46 तक, **अमृत**·11:21 से
6	**सिद्ध**·12:34 तक, **मृत्यु**·12:34 से
7	**अमृत**·13:19 तक, **मृत्यु**·13:19 से, **रवियोग**:14:02 से
8	**अमृत**·13:34 तक, **रवियोग**:14:57 तक, **सर्वार्थ**·14:57 से
9	**सर्वार्थ**·15:22 तक, **मृत्यु**·13:18 तक, **अमृत**·13:18 से

पारणा की अनिवार्यता– वारव्रत और श्रीगणेश (संकष्टी) चतुर्थीव्रत में रात्रि में भोजन करना आवश्यक है। पारणा व्रत का अंग है। पारणा दूसरे के अन्न से न करे –

व्रतेरात्रिभोजनमेवकार्यम्। (धर्मसिन्धु)

उदयातिथि का महत्व– स्नान, जप, दान, नवरात्र पाठ का हवन उदयातिथि में ही होता है। यह सम्पूर्ण दिन ग्राह्य होती है–

यां तिथिम् समनुप्राप्य उदयं यातिभास्करः।
सा तिथिःसकला ज्ञेया स्नान दान जपादिषु।

प्रदोष व्रत– सूर्यास्त बाद त्रयोदशी यदि प्रदोषकाल में हो तो उसी दिन प्रदोष व्रत होता है। यह कभी द्वादशी तिथि में प्रदोषकाल में मिलती है तो कभी त्रयोदशी के दिन सायंकाल में मिलती है। जब दोनों दिन प्रदोषकाल में त्रयोदशी हो तो परा (बाद वाली) ग्राह्य है। प्रदोष व्रत से संतानप्राप्ति, ऋणमुक्ति, समृद्धि, कष्टनिवारण तथा शिवसान्निध्य की प्राप्ति होती है।

भाद्रपद कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 10 अगस्त से 23 अगस्त, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 10:8:2025– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अगस्त	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	अगस्त	10 अगस्त से 23 अगस्त, 2025
10	1 र	१६:३०	12:33	धनि·	२३:२३	15:18	शोभ·	५१:२३	26:30	कौल	12:33	तैति	24:00	32:50	5:57	19:05	कुंभ	अहोरात्र	मातङ्ग	10	गोगामेड़ी मेला आरम्भ, अशून्यशयन व्रत
11	2 चं	१३:३०	11:22	शत·	२२:०७	14:49	अतिग·	४५:५३	24:19	गर	11:22	वणि	22:37	32:47	5:58	19:05	कुंभ	अहोरात्र	अमृत	11	
12	3 मं	०९:३२	09:47	पू·भा·	१९:५६	13:57	सुकर्मा	३९:४०	21:50	विष	09:47	बव	20:52	32:43	5:58	19:04	मी·05:33	08:11	काण	12	**संकष्टी गणेशचतुर्थी चन्द्रोदय घं·21:10, कज्जली तीज**
13	4 बु 5 बु	०४:४६ ५४:३७	07:53 29:44	उ·भा·	१६:५७	12:46	धृति	३२:५२	19:08	बाल	07:53	कौल	18:50	32:40	5:59	19:03	मीन	अहोरात्र	लुम्ब	13	नाग पंचमी (गुजरात), कोकिला पंचमी (जैन)
14	6 गु	५३:३१	27:24	रेवती	१३:२२	11:20	शूल	२५:३७	16:14	गर	16:34	वणि	27:24	32:36	5:59	19:02	मे·13:22	11:20	मित्र	14	**श्रीहल षष्ठी,**
15	7 शु	४७:२३	24:57	अश्वि·	०९:२४	09:45	गण्ड	१८:०३	13:13	विष	14:10	बव	24:57	32:33	6:00	19:01	मेष	अहोरात्र	वज्र	15	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मार्त्त), श्रीकालाष्टमी**
16	8 श	४१:११	22:29	भरणी	०५:१२	08:05	वृद्धि	१०:२१	10:09	बाल	11:42	कौल	22:29	32:30	6:00	19:00	वृ·19:09	13:40	ध्वांक्ष	16	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव), गोकुलाष्टमी**
17	9 र	३५:०९	20:04	कृत्ति· रोहि·	०१:०१ ५६:०५	06:25 28:51	ध्रुव व्याघ·	०२:४० ५२:३३	07:05 28:06	तैति	09:15	गर	20:04	32:26	6:01	18:59	वृष	अहोरात्र	धूम्र	17	**नन्दोत्सव, सिंह संक्रान्ति पुण्यकालं 10:37–16:57 घं·**
18	10 चं	२९:२७	17:48	मृग·	५३:३३	27:27	हर्षण	४८:०४	25:15	वणि	06:54	विष	17:48	32:23	6:01	18:59	मि·25:15	16:07	आनन्द	18	
19	11 मं	२४:१८	15:45	आर्द्रा	५०:३८	26:17	वज्र	४१:२४	22:35	बाल	15:45	कौल	26:50	32:19	6:02	18:58	मिथुन	अहोरात्र	सुस्थिर	19	**श्रीअजा एकादशी (सर्वेषाम्)**
20	12 बु	१९:५२	13:59	पुन·	४८:३१	25:27	सिद्धि	३५:२२	20:11	तैति	13:59	गर	25:13	32:15	6:02	18:57	मि·33:58	19:37	गद	20	**प्रदोष व्रतम्,** गौवत्स द्वादशी, **पर्यूषण पर्व आरम्भ** (श्वेताम्बर)
21	13 गु	१६:१८	12:34	पुष्य	४७:२१	24:59	व्यति·	३०:०५	18:05	वणि	12:34	विष	24:01	32:12	6:03	18:56	कर्क	अहोरात्र	शुभ	21	**मासशिवरात्रि व्रतम्,** अघोर चतुर्दशी, कलियुगादि·१३
22	14 शु	१३:४७	11:34	आश्ले·	४७:१६	24:58	वरी·	२५:४०	16:19	शकु	11:34	चतु	23:14	32:08	6:03	18:55	सिं·47:16	24:58	मृत्यु	22	**अमावस्या (पितृकार्य),** पिठैरी अमावस (जैन)
23	30 श	१२:२६	11:02	मघा	४८:२३	25:25	परिघ	२२:११	14:56	नाग	11:02	किं	22:57	32:05	6:04	18:54	सिंह	अहोरात्र	पद्म	23	**कुशोत्पाटिनी अमावस्या (देवकार्य)**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	वक्री शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
अगस्त	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
10	1 र	03 :22 :51 :31	10:01:25:42	05:08:05:60	03:07:21:35	02:20:35:43	02:18:37:07	11:03:48:34	10:28:00:13	46:25:10	उ·16:31:18	– 5:02	19:56
11	2 चं	03 :23 :48 :55	10:14:57:13	05:08:43:47	03:08:07:03	02:20:48:32	02:19:47:57	11:03:45:08	10:27:57:02	46:23:31	उ·16:13:46	– 4:53	20:32
12	3 मं	03 :24 :46 :20	10:28:43:02	05:09:21:36	03:08:57:12	02:21:01:18	02:20:58:51	11:03:41:38	10:27:53:51	46:21:51	उ·15:55:58	– 4:44	21:10
13	4 बु	03 :25 :43 :46	11:12:41:22	05:09:59:29	03:09:51:45	02:21:14:00	02:22:09:50	11:03:38:02	10:27:50:40	46:20:10	उ·15:37:55	– 4:34	21:48
14	6 गु	03 :26 :41 :14	11:26:49:53	05:10:37:25	03:10:50:26	02:21:26:39	02:23:20:52	11:03:34:21	10:27:47:29	46:18:28	उ·15:19:37	– 4:23	22:26
15	7 शु	03 :27 :38 :43	00:11:05:41	05:11:15:25	03:11:52:58	02:21:39:14	02:24:31:58	11:03:30:36	10:27:44:19	46:16:45	उ·15:01:04	– 4:12	23:11
16	8 श	03 :28 :36 :14	00:25:25:27	05:11:53:27	03:12:59:08	02:21:51:45	02:25:43:09	11:03:26:47	10:27:41:08	46:15:02	उ·14:42:17	– 4:01	23:56
17	9 र	03 :29 :33 :47	01:09:45:25	05:12:31:32	03:14:08:39	02:22:04:12	02:26:54:23	11:03:22:53	10:27:37:57	46:13:17	उ·14:23:16	– 3:48	24:51
18	10 चं	04 :00 :31 :21	01:24:01:44	05:13:09:40	03:15:21:20	02:22:16:35	02:28:05:41	11:03:18:55	10:27:34:46	46:11:31	उ·14:04:01	– 3:36	25:46
19	11 मं	04 :01 :28 :56	02:08:11:05	05:13:47:52	03:16:36:56	02:22:28:54	02:29:17:02	11:03:14:52	10:27:31:35	46:09:45	उ·13:44:32	– 3:22	26:48
20	12 बु	04:02:26:34	02:22:10:31	05:14:26:06	03:17:55:16	02:22:41:09	03:00:28:28	11:03:10:46	10:27:28:24	46:07:58	उ·13:24:51	– 3:09	27:49
21	13 गु	04 :03 :24 :13	03:05:57:37	05:15:04:23	03:19:16:08	02:22:53:19	03:01:39:57	11:03:06:36	10:27:25:14	46:06:09	उ·13:04:57	– 2:54	28:51
22	14 शु	04 :04 :21 :54	03:19:30:34	05:15:42:44	03:20:39:23	02:23:05:25	03:02:51:30	11:03:02:22	10:27:22:03	46:04:21	उ·12:44:50	– 2:40	29:51
23	30 श	04:05:19:37	04:02:48:17	05:16:21:07	03:22:04:49	02:23:17:27	03:04:03:06	11:02:58:04	10:27:18:52	46:02:31	उ·12:24:31	– 2:24	06:49

13 अगस्त सूर्योदयकालीन तिथि:4

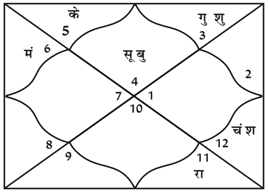

19 अगस्त सूर्योदयकालीन तिथि:**11**

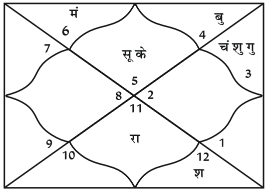

भाद्रपद कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 10 अगस्त से 23 अगस्त, 2025 ईस्वी

पक्षान्तः– कालःउत्तर । ऋतुः वर्षा । दक्षिणायनं । सौम्यगोलः । ति·30 अयनांशाः22:52:51

दिनाङ्क अगस्त	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
10	1 र	पंचक।
11	2 चं	**पंचक, भद्रारंभः22:38 घं·**, पुनर्वसौशुक्रःघं·10:09।
12	3 मं	**पंचक, भद्रांतः9:48 घं·, सातूड़ी तीज, बहुलाचतुर्थी।**
13	4 बु 5 बु	**पंचक, गण्डान्तारम्भः29:43**, हस्तेमङ्गलः घं·06:25।
14	6 गु	**पंचकान्तः11:21, भद्रारंभः27:24, गण्डान्तः16:58।**
15	7 शु	**भद्रांतः14:11 घं·**, भारतीय स्वतंत्रता दिवस।
16	8 श	।
17	9 र	**गोगानवमी**, मघायांसिंहेरविःघं·16:57।
18	10 चं	**भद्रा 6:55–17:49 घं·।**
19	11 मं	आश्लेषयांबुधः घं·07:06, कर्केशुक्रः घं·20:35।
20	12 बु	**बछ बारस**, अघोर द्वादशी, व्यतीपात पुण्यम् ⓽
21	13 गु	**भद्रा 12:35–24:01 घं·।** ⓽ पूर्वभाद्रेशनिःघं·12:17।
22	14 शु	**गण्डान्तारम्भः 18:56**, पुष्येशुक्रः घं·15:44।
23	30 श	**गण्डान्तः7:02**, लोहार्गल यात्रा, सतीपूजन (अग्रवंश), राणीसती दादी माँ मेला (झुंझुनू), सप्तपुरी अमावस्या (उड़ीसा), आलोक अमावस्या।

❀ सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण के प्राकट्योत्सव जन्माष्टमी का संक्षिप्त कृत्य ❀

जन्माष्टमी को पूरा दिन यथाशक्ति कठोर व्रत रखे। प्रातःकाल उठकर स्नानादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर व्रत का निम्न संकल्प करे – ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य अमुक नामसंवत्सरे सूर्य दक्षिणायने वर्षतौ भाद्रपदमासे कृष्णपक्षे श्रीकृष्णजन्माष्टम्यां तिथौ अमुक वासरे _ नामाहं मम चतुर्वर्गसिद्धिद्वारा श्रीकृष्णदेवप्रीतये जन्माष्टमीव्रताङ्गत्वेन श्रीकृष्णदेवस्य यथामिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये।

केले के खम्भे, आम-अशोक के पल्लव, बहुविध पुष्पादि से श्रीठाकुरजी की दिव्य झाँकी सजाए, सारा दिन संकीर्तन आदि से श्रीकृष्णचन्द्र परमानंदकंद की भक्ति करे। रात्रि में पञ्चामृत एवं दुग्धाभिषेक के साथ माता देवकीसहित श्रीबालकृष्ण का षोडशोपचार से पूजन करे। विविध शृङ्गारादिक वस्तुओं से विशेषरूप से अलंकृत करे। **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'**-इस मन्त्र से पूजन करता हुआ सुसज्जित करके भगवान् को सुन्दर सजे हुए हिंडोले में प्रतिष्ठित करे। अन्नरहित नैवेद्य तथा सुस्वादु मिष्टान्न, नमकीन पदार्थों, फल, पुष्पों और नारियल, छुहारे, अनार, पंजीरी, नारियल के मिष्टान्न तथा नाना प्रकार के मेवे का प्रसाद सजाकर श्रीभगवान् को अर्पण करे। पूजन में देवकी, वसुदेव, वासुदेव, बलदेव, नन्द, यशोदा और लक्ष्मी-इन सबका क्रमशः नाम निर्दिष्ट करना चाहिये। अन्त में **'प्रणमे देवजननीं त्वया जातस्तु वामनः।'** वसुदेव को तथा **'कृष्णो नमस्तुभ्यं नमो नमः।। सपुत्राघ्र्यं प्रदत्तं मे गृहाणेमं नमोऽस्तु ते।'** से देवकी को अर्घ्य दे और **'धर्माय धर्मेश्वराय धर्मपतये धर्मसम्भवाय गोविन्दाय नमो नमः।'** से श्रीकृष्ण को 'पुष्पांजलि' अर्पण करे। विशेषार्घ्य प्रदानपूर्वक धूप, दीप, नैवेद्य नीराजनपर्यन्त सेवा सम्पादन करके पुष्पाञ्जलि अर्पण करे। जन्मोत्सव के पश्चात् कर्पूरादि प्रज्जवलित कर समवेत स्वर से भगवान् की आरती-स्तुति करे, पश्चात् प्रसाद वितरण करे। तत्पश्चात् **'सोमाय सोमेश्वराय सोमपतये सोमसम्भवाय सोमाय नमो नमः।'** से चन्द्रमा का पूजन करे और फिर शंख में जल, फल, कुश, कुसुम और गन्ध डालकर दोनों घुटने जमीन में लगावे और **'क्षीरोदार्णवसंभूत अत्रिनेत्रसमुद्भव। गृहाणार्घ्यं शशांकेमं रोहिण्या सहितो मम।। ज्योत्स्नापते नमस्तुभ्यं नमस्ते ज्योतिषां पते। नमस्ते रोहिणीकान्त अर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम्'** से चन्द्रमा को अर्घ्य दे।

इसके द्वितीय दिन अर्थात् नवमी को दधिकांदो या (नन्दमहोत्सव) किया जाता है। इस समय भगवान् पर कपूर, हल्दी, दही, घी, जल, तेल तथा केसर आदि चढ़ाकर लोग परस्पर विलेपन तथा सेचन करते हैं। वाद्य यन्त्रों से कीर्तन करते हैं तथा मिठाइयाँ बाँटते हैं।

इस प्रकार नन्दनन्दन भगवान् श्रीकृष्ण का प्राकट्योत्सव प्रीतिपूर्वक सम्पन्न करे।

ति	श्राद्धकाल घं·मि·
1	12:04–13:47
30	12:01–13:41

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अगस्त	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
10	22:24	00:00	01:56	04:10	06:30	08:47	11:02	13:21	15:40	17:45	19:29	20:59
11	22:20	23:56	01:52	04:06	06:27	08:43	10:58	13:17	15:36	17:41	19:25	20:55
12	22:17	23:53	01:48	04:02	06:23	08:39	10:54	13:13	15:32	17:37	19:22	20:51
13	22:13	23:49	01:44	03:58	06:19	08:35	10:50	13:09	15:28	17:33	19:18	20:47
14	22:09	23:45	01:40	03:54	06:15	08:31	10:46	13:05	15:24	17:29	19:14	20:43
15	22:05	23:41	01:36	03:50	06:11	08:27	10:42	13:01	15:20	17:25	19:10	20:39
16	22:01	23:37	01:32	03:46	06:07	08:23	10:38	12:57	15:16	17:21	19:06	20:35
17	21:57	23:33	01:28	03:42	06:03	08:19	10:34	12:53	15:12	17:17	19:02	20:31
18	21:53	23:29	01:24	03:38	05:59	08:15	10:30	12:49	15:08	17:13	18:58	20:27
19	21:49	23:25	01:20	03:35	05:55	08:11	10:26	12:45	15:04	17:09	18:54	20:23
20	21:45	23:21	01:16	03:31	05:51	08:07	10:22	12:41	15:00	17:05	18:50	20:19
21	21:41	23:17	01:12	03:27	05:47	08:03	10:18	12:37	14:56	17:01	18:46	20:15
22	21:37	23:13	01:08	03:23	05:43	08:00	10:14	12:33	14:52	16:58	18:42	20:11
23	21:33	23:09	01:05	03:19	05:39	07:56	10:11	12:29	14:48	16:54	18:38	20:07

अगस्त	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
10	**मृत्यु**·12:33 से, **द्विपुष्कर**:12:33 से 15:18 तक
11	**मृत्यु**·11:22 तक
12	**सिद्ध**·09:47 तक, **सर्वार्थ**·13:57 से
14	**द·ति**·27:24 तक, **सर्वार्थ**·अहोरात्र, **रवियोग**:11:20 से
15	**सर्वार्थ· रवियोग**:09:45 तक, **मृत्यु**·24:57 तक
16	**सिद्ध**·22:29 से
17	**अमृत**·20:04 से
18	**द·ति**·17:48 तक, **सर्वार्थ**·27:27 तक, **अमृत**·17:48 तक, **सिद्ध**·17:48 से
19	**मृत्यु**·15:45 तक, **अमृत**·15:45 से **त्रिपुष्कर**:26:17 से
20	**सिद्ध**·13:59 तक, **मृत्यु**·13:59 से
21	**सर्वार्थ**·24:59तक, **अमृत**·12:34तक, **मृत्यु**·12:34से
22	**अमृत**·11:34 तक
23	**मृत्यु**·11:02 तक, **अमृत**·11:02 से

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी के दिन नराकृति परब्रह्म स्वराटपुरुष भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का जन्मोत्सव है। "इस दिन चारों वर्णों को यथाशक्ति उपवास करना चाहिये।. जो जानकर भी श्रीकृष्णजन्माष्टमी का व्रत नहीं करते हैं वे वनमें सर्प और व्याघ्र होते हैं। हे द्विजोत्तम्! जो मनुष्य **श्रीकृष्णजन्माष्टमी** के दिन भोजन कर लेता है, उसका वह भोजन नहीं है किंतु वह तीनों लोकों के पाप को भक्षण करता है इसमें कुछ भी संदेह नहीं है।" **–स्कन्द पुराण** "

सप्तमी सहित अष्टमी यत्नपूर्वक वर्जित करें और बिना रोहिणी नक्षत्र के नवमी सहित अष्टमी का व्रत करें।" **–ब्रह्मवैवर्त**

"पूर्व सप्तमी से विद्ध अष्टमी नवमी के दिन सूर्योदय में मुहूर्त्त मात्र भी हो तो वह अष्टमी संपूर्ण होती है। नवमी के दिन यदि कला, काष्ठा वा मुहूर्त्त मात्र भी अष्टमी तिथि हो तो वही अष्टमी ग्राह्य है, परंतु सप्तमी सहित अष्टमी कभी ग्रहण नहीं करना चाहिये।" **–पद्मपुराण**

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतः क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः।

भाद्रपद शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 24 अगस्त से 7 सितम्बर, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 24:8:2025– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत-पर्व-उत्सव 卐
अगस्त	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	अगस्त	24 अगस्त से 7 सितम्बर, 2025
24	1 र	१२:२०	11:00	पू·फा·	५०:४६	26:23	शिव	१९:४२	13:57	बव	11:00	बाल	23:10	32:01	6:04	18:53	सिंह	अहोरात्र	छत्र	24	चन्द्रदर्शन, मौन व्रत प्रारम्भ (जैन)
25	2 चं	१३:३१	11:29	उ·फा·	५४:२२	27:49	सिद्ध	१८:१३	13:22	कौल	11:29	तैति	23:55	31:57	6:05	18:52	कं·06:32	08:41	श्रीवत्स	25	मेला रुणीचा रामदेवरा आरम्भ जैसलमेर
26	3 मं	१५:५६	12:27	हस्त	५९:०५	29:43	साध्य	१७:४१	13:10	गर	12:27	वणि	25:06	31:53	6:05	18:51	कन्या	अहोरात्र	सौम्य	26	**हरितालिका तीज, श्रीवाराह जयन्ती, चतुर्थी चन्द्रदर्शन निषेध**
27	4 बु	१९:२७	13:52	चित्रा	६०:००	अहोरात्र	शुभ	१८:००	13:18	विष	13:52	बव	26:43	31:50	6:06	18:50	तु·31:47	18:49	कालदंड	27	**श्रीमहागणपति चतुर्थी,** मोतीडूंगरी गणेशजी मेला जयपुर
28	5 गु	२३:५०	15:38	चित्रा	०४:४२	07:59	शुक्ल	१८:६०	13:42	बाल	15:38	कौल	28:36	31:46	6:06	18:49	तुला	अहोरात्र	सुस्थिर	28	**श्रीऋषि पञ्चमी, पर्यूषण पर्वारम्भ (दिगम्बर जैन)**, सप्तर्षि पूजा
29	6 शु	२८:४७	17:37	स्वाती	१०:५८	10:30	ब्रह्म	२०:२६	14:17	तैति	17:37	गर	30:07	31:42	6:07	18:48	तुला	अहोरात्र	गद	29	**श्रीबलराम जयन्ती, श्रीलोलार्क सूर्यषष्ठी (पञ्चगव्य प्राशन)**
30	7 श	३३:५३	19:40	विशा·	१७:२९	13:07	ऐन्द्र	२२:००	14:55	गर	05:39	वणि	19:40	31:38	6:07	18:47	वृ·00:51	06:27	शुभ	30	देवनारायणजी का मेला, सन्तानसप्तमी, सूर्यसप्तमी
31	8 र	३८:४०	21:35	अनु·	२३:४९	15:39	वैधृ·	२३:२५	15:29	विष	08:38	बव	21:35	31:35	6:07	18:45	वृश्चिक	अहोरात्र	मृत्यु	31	**श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, दूर्वाष्टमी,** बुधाष्टमी
सितम्बर	9 चं	४२:४७	23:15	ज्ये·	२९:३५	17:58	विष्कु·	२४:२१	15:52	बाल	10:27	कौल	23:15	31:31	6:08	18:44	ध·29:35	17:58	पद्म	सितम्बर	श्रीमद्भागवत सप्ताहारम्भ, अदुःख नवमी, तालनवमी (बंगाल)
2	10 मं	४५:५५	24:30	मूल	३४:२७	19:55	प्रीति	२४:३६	15:59	तैति	11:55	गर	24:30	31:27	6:08	18:43	धनु	अहोरात्र	छत्र	2	**बाबा श्री रामदेव जयन्ती, श्री तेजा दशमी, सुगंध दशमी**
3	11 बु	४७:५४	25:18	पू·षा·	३८:१३	21:26	आयु·	२३:५९	15:44	वणि	12:57	विष	25:18	31:23	6:09	18:42	म·53:59	27:44	श्रीवत्स	3	**श्रीपद्मा जलझूलनी एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त), डोल ग्यारस**
4	12 गु	४८:३८	25:36	उ·षा·	४०:४६	22:28	सौभा·	२२:२५	15:07	बव	13:31	बाल	25:36	31:19	6:09	18:41	मकर	अहोरात्र	सौम्य	4	**श्रीपद्मा एकादशी (निम्बार्क), श्रीवामन द्वादशी, श्रीविजया महाद्वादशी**
5	13 शु	४८:०४	25:23	श्रवण	४२:०४	22:59	शोभ·	१९:५०	14:06	कौल	13:33	तैति	25:23	31:15	6:10	18:40	मकर	अहोरात्र	धूम्र	5	**प्रदोष व्रतम्**
6	14 श	४६:१८	24:41	धनि·	४२:१०	23:02	अतिग·	१६:१५	12:40	गर	13:05	वणि	24:41	31:11	6:10	18:39	कु·12:14	11:04	प्रवर्द्ध	6	**श्रीअनन्त चतुर्दशी,** पाली व्रत (वरुण)
7	15 र	४३:२४	23:32	शत·	४१:०८	22:38	सुकर्मा	११:४४	10:52	विष	12:10	बव	23:32	31:07	6:11	18:38	कुंभ	अहोरात्र	राक्षस	7	**पूर्णिमा (व्रत-स्नान-दान), पितृपक्ष आरम्भ, चन्द्रग्रहण**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क अगस्त	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
24	1 र	04:06:17:21	04:15:50:26	05:16:59:33	03:23:32:18	02:23:29:23	03:05:14:46	11:02:53:43	10:27:15:41	46:00:41	उ·12:04:00	− 2:09	06:49
25	2 चं	04:07:15:07	04:28:37:27	05:17:38:02	03:25:01:40	02:23:41:15	03:06:26:30	11:02:49:19	10:27:12:30	45:58:50	उ·11:43:18	− 1:53	07:45
26	3 मं	04:08:12:55	05:11:10:32	05:18:16:35	03:26:32:49	02:23:53:03	03:07:38:17	11:02:44:52	10:27:09:19	45:56:58	उ·11:22:25	− 1:36	08:40
27	4 बु	04:09:10:45	05:23:31:33	05:18:55:10	03:28:05:35	02:24:04:45	03:08:50:07	11:02:40:21	10:27:06:08	45:55:06	उ·11:01:21	− 1:19	09:33
28	5 गु	04:10:08:37	06:05:43:03	05:19:33:48	03:29:39:52	02:24:16:22	03:10:02:01	11:02:35:48	10:27:02:58	45:53:13	उ·10:40:06	− 1:02	10:26
29	6 शु	04:11:06:30	06:17:47:60	05:20:12:29	04:01:15:33	02:24:27:54	03:11:13:58	11:02:31:12	10:26:59:47	45:51:20	उ·10:18:41	− 0:44	11:21
30	7 श	04:12:04:26	06:29:49:46	05:20:51:13	04:02:52:32	02:24:39:21	03:12:25:59	11:02:26:34	10:26:56:36	45:49:26	उ·09:57:06	− 0:26	12:15
31	8 र	04:13:02:23	07:11:52:17	05:21:29:60	04:04:30:43	02:24:50:42	03:13:38:03	11:02:21:53	10:26:53:25	45:47:31	उ·09:35:21	− 0:08	13:08
सितम्बर	9 चं	04:14:00:23	07:23:59:15	05:22:08:50	04:06:10:01	02:25:01:58	03:14:50:10	11:02:17:09	10:26:50:14	45:45:37	उ·09:13:28	+ 0:11	14:02
2	10 मं	04:14:58:24	08:06:13:55	05:22:47:42	04:07:50:19	02:25:13:09	03:16:02:20	11:02:12:24	10:26:47:03	45:43:41	उ·08:51:25	+ 0:30	14:54
3	11 बु	04:15:56:28	08:18:39:06	05:23:26:38	04:09:31:34	02:25:24:13	03:17:14:34	11:02:07:37	10:26:43:53	45:41:45	उ·08:29:14	+ 0:50	15:42
4	12 गु	04:16:54:33	09:01:17:06	05:24:05:36	04:11:13:40	02:25:35:12	03:18:26:51	11:02:02:48	10:26:40:42	45:39:49	उ·08:06:54	+ 1:09	16:30
5	13 शु	04:17:52:40	09:14:09:34	05:24:44:38	04:12:56:33	02:25:46:05	03:19:39:11	11:01:57:57	10:26:37:31	45:37:52	उ·07:44:27	+ 1:29	17:11
6	14 श	04:18:50:50	09:27:17:25	05:25:23:42	04:14:40:08	02:25:56:52	03:20:51:34	11:01:53:05	10:26:34:20	45:35:55	उ·07:21:52	+ 1:50	17:52
7	15 र	04:19:49:02	10:10:40:49	05:26:02:49	04:16:24:22	02:26:07:33	03:22:03:60	11:01:48:12	10:26:31:09	45:33:57	उ·06:59:09	+ 2:10	18:30

27 अगस्त सूर्योदयकालीन तिथिः4

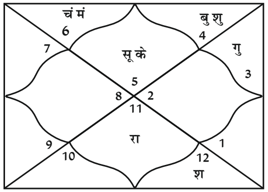

3 सितम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः11

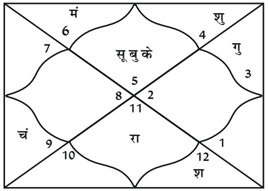

दिनाङ्क अगस्त	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
24	1 र	वीर जन्मोत्सव (जैन)।
25	2 चं	श्री शंकरदेव तिथि (आसाम)।
26	3 मं	**भद्रारंभः 25:07 घं·, रोट तीज, श्री श्यामाचरण जयन्ती शुकपीठ (जयपुर)**, रूद्रसावर्णि·मन्वादि।
27	4 बु	**भद्रांतः13:53 घं·, सौभाग्य चतुर्थी, वरदा चतुर्थी।**
28	5 गु	संवत्सरी पंचमी (जैन), गर्ग जयन्ती, अंगिरा जयन्ती, रक्षा पंचमी (बंगाल), मघायांसिंहेबुधः घं·11:18।
29	6 शु	चन्दन षष्ठी (जैन), ललिता षष्ठी (गुजरात)।
30	7 श	**भद्रारंभः 19:41 घं·।** (१) वैधृति पुण्यम्।
31	8 र	**भद्रांतः 8:40**, स्वामी श्रीहरिदास जयन्ती, दधीचि जयन्ती, अपराजिता पूजा, पूर्वफल्गुन्यांरविःघं·13:26 (१)
सितम्बर	9 चं	**गण्डान्तः11:25–24:30।**
2	10 मं	दशावतार व्रत, आश्लेषयांशुक्रः घं·18:48।
3	11 बु	**भद्रा 12:58–25:19 घं·**, चित्रायांमङ्गलः घं·02:12।
4	12 गु	**अभिजितः 16:14–24:06, श्रवण द्वादशी**, लवणरहित भोजन, हरिवासराभाव, भुवनेश्वरी जयन्ती (२)
5	13 शु	पूर्वफल्गुन्यांबुधःघं·11:45। (२) पूर्वफल्गुन्यांकेतुःघं·11:25।
6	14 श	**पंचकारंभः 11:04, भद्रारंभः 24:42 घं·**, विश्वकर्मा पूजन, इन्द्रगोविन्द पूजा (उड़ीसा), कदली व्रत।
7	15 र	**पंचक, भद्रांतः12:10 घं·, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, चन्द्रग्रहण भारत में दृश्य, पूर्णिमा श्राद्ध अमावस्या को, कुमारीणां साँझी–सन्ध्या पूजनारम्भः**, श्रीमद्भागवत सप्ताह समाप्त।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
1	12:01–13:41
15	11:53–13:33

❀ भाद्रपद मास कृत्य ❀

❀ **हरितालिका तीज व्रत**– भाद्रपद शुक्ल तृतीया यदि उदयकाल में मुहूर्त्तमात्र हो, तो भी परा ग्राह्य है। यदि क्षय के कारण द्वितीया में हो तो द्वितीयायुता ग्राह्य होती है। दो दिन होने पर परातिथि ग्राह्य है।

तत्र मुहूर्त्तमात्रा ततो न्यूनापि परा ग्राह्या। यदा क्षयवशात्परदिने नास्ति तदा द्वितीयायुतापि ग्राह्या।।

❀ **श्रीअनन्त चतुर्दशी व्रत**– भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी तिथि के दिन अनन्तव्रत में मध्याह्न में भगवान् अनन्त की पूजा करे। इस व्रत में चौदह गाँठ की डोर में अनन्त भगवान् की स्थापना करके भुजा में धारण किया जाता है।

❀ **श्रीवामन द्वादशी** – भाद्रपद में शुक्ल द्वादशी के दिन अभिजित् मुहूर्त में अर्थात् श्रवण नक्षत्र के प्रथम पाद में ग्रह नक्षत्र तारा आदि अनुकूल होने पर द्वादशी को मध्याह्न में वामन भगवान् के आविर्भाव का उत्सव मनावें। श्रीसनकादिकों की आज्ञा है – भाद्रपद शुक्ला द्वादशी श्रवण युक्त हो तो उसे महाद्वादशी समझें, एकादशी तथा द्वादशी दोनों दिन उपवास करें। यहाँ विधि का लोप नहीं समझना चाहिये, क्योंकि दोनों के देवता एक ही हैं। अतः एकादशी व्रत का पारणा किये बिना द्वादशी का व्रत कर सकते हैं। श्रीवामन भगवान् को पञ्चामृत से महास्नान कराकर महाभोग समर्पण करें। गायन–वादन द्वारा श्रीवामन जयन्ती उत्सव मनावें प्रसाद वितरण करें।

❀ **पाली व्रत भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी**– तालाब, जलाशय(पाली) के समीप वरुण दम्पत्ति को अर्घ्य दे, समुद्र की भी प्रार्थना करे। इस भविष्यपुरणोक्त व्रत से व्रती समस्त पातकों से मुक्त हो जाता है और वरुण वारुणी का पूजन करने वाले को अचल भूमि की प्राप्ति होती है। शतभिषा नक्षत्र के जातक नक्षत्रस्वामी वरुणदेव की प्रसन्नता हेतु कर सकते हैं। **अर्घ्य में** – पुष्प, फल, वस्त्र, दीपक, महावर, चन्दन, अनाग्नि, पाक तिल चावल मिश्रित सिद्धान्न, खजूर, नारियल, बिजौरा, नींबू, किशमिश, अनार, सुपारी, ककड़ी आदि यथोपलब्ध सामग्री रखे।

अर्घ्य मन्त्र – वरुणाय नमस्तुभ्यं नमस्ते यादसां पते। अपाम्पते नमस्तुभ्यं रसानां पतये नमः।।

प्रार्थना मन्त्र – मा क्लेदं मा च दौर्गन्ध्यं वैरस्यं मा मुखेऽस्तु मे। वरुणो वारुणीभर्ता वरदोऽस्तु सदा मम।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अगस्त	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
24	21:29	23:05	01:01	03:15	05:35	07:52	10:07	12:25	14:44	16:50	18:34	20:03
25	21:25	23:01	00:57	03:11	05:31	07:48	10:03	12:21	14:40	16:46	18:30	19:59
26	21:21	22:57	00:53	03:07	05:27	07:44	09:59	12:17	14:36	16:42	18:26	19:55
27	21:17	22:53	00:49	03:03	05:23	07:40	09:55	12:14	14:32	16:38	18:22	19:51
28	21:13	22:49	00:45	02:59	05:19	07:36	09:51	12:10	14:28	16:34	18:18	19:47
29	21:09	22:45	00:41	02:55	05:15	07:32	09:47	12:06	14:24	16:30	18:14	19:43
30	21:05	22:41	00:37	02:51	05:11	07:28	09:43	12:02	14:21	16:26	18:10	19:40
31	21:01	22:37	00:33	02:47	05:07	07:24	09:39	11:58	14:17	16:22	18:06	19:36
सितम्बर	20:57	22:33	00:29	02:43	05:03	07:20	09:35	11:54	14:13	16:18	18:03	19:32
2	20:54	22:29	00:25	02:39	04:59	07:16	09:31	11:50	14:09	16:14	17:59	19:28
3	20:50	22:26	00:21	02:35	04:55	07:12	09:27	11:46	14:05	16:10	17:55	19:24
4	20:46	22:22	00:17	02:31	04:51	07:08	09:23	11:42	14:01	16:06	17:51	19:20
5	20:42	22:18	00:13	02:27	04:48	07:04	09:19	11:38	13:57	16:02	17:47	19:16
6	20:38	22:14	00:09	02:23	04:44	07:00	09:15	11:34	13:53	15:58	17:43	19:12
7	20:34	22:10	00:05	02:19	04:40	06:56	09:11	11:30	13:49	15:54	17:39	19:08

अगस्त	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐
24	**मृत्यु**·11:00 तक, **सर्वार्थ**·26:23 से, **त्रिपुष्कर**:26:23 से
25	**मृत्यु**·11:29 तक, **रवियोग**:27:49 से
26	**सिद्ध**·12:27 तक, **रवियोग**:29:43 तक
28	**सिद्ध**·15:38 तक, **रवियोग**:07:59 से
29	**सिद्ध**·17:37 तक, **रवियोग**:10:30 तक, **मृत्यु**·17:37 से
30	**त्रिपुष्कर**:13:07 तक
31	**सिद्ध**·21:35 तक
सितम्बर	**रवियोग**:17:58 से, **अमृत**·23:15 से
2	**द·ति**·24:30 तक, **रवियोग**:19:55 तक, **रवियोग**:19:55 से
3	**अमृत**·25:18 तक, **रवियोग**:21:26 तक, **सिद्ध**·25:18 से
4	**अमृत**·25:36 से
5	**सर्वार्थ**·22:59 तक, **रवियोग**:22:59 से, **अमृत**·25:23 से
6	**सिद्ध**·24:41 तक, **रवियोग**:23:02 तक, **मृत्यु**·24:41 से
7	**अमृत**·23:32 तक, **मृत्यु**·23:32 से

❀ **भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी** को श्रीगणेशजी प्रकटे, *नभस्ये मासि शुक्लायां चतुर्थ्यां मम जन्मनि। दूर्वाभिः नामभिः पूजां तर्पणं विधिवत् चरेत्।।* श्रीगणेशजी को दूर्वा व शमी और मंदार के पुष्प बहुत प्रिय है। दूर्वा नरक नाशक, वंशवर्धक, आयुवर्धक, तेजवर्धक होती है– *हरिता श्वेतवर्णा वा पंचत्रिपत्र संयुताः। दूर्वांकुरा मया दत्ता एकविंशतिः सम्मिताः।*

❀ **श्रीगणेश चतुर्थी** पर चन्द्र दर्शन निषिद्ध है। दूसरों से कड़वे और अपशब्द सुनकर व्यक्ति कलंक मुक्त हो पाता है।

गणेशजी का मन्त्र– "ॐ गं गणपतये नमः" है। श्रीगणेशजी की आराधना निम्न क्रम में करे **1**· षोडशोपचार पूजन, **2**· श्रीगणेश स्तवराज पाठ, **3**· श्रीगणेश कवच का पाठ, **4**· श्रीगणपति अथर्वशीर्ष पाठ, **5**· श्रीगणेश शतनाम पाठ और **6**· श्रीगणेश सहस्रनाम का पाठ करें।

आश्विन कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 8 सितम्बर से 21 सितम्बर, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 8:9:2025– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क
सितम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सितम्बर
8	1 चं	३९:३२	22:00	पू·भा·	३९:०८	21:50	धृति	०६:२१	08:43	बाल	10:48	कौल	22:00	31:03	6:11	18:37	मी·24:42	16:04	मुसल	8
9	2 मं	३४:५१	20:08	उ·भा·	३६:१९	20:43	शूल गण्ड	००:१४ ५३:१८	06:17 27:36	तैति	09:05	गर	20:08	31:00	6:11	18:35	मीन	अहोरात्र	सिद्धि	9
10	3 बु	२९:३१	18:00	रेवती	३२:५१	19:20	वृद्धि	४६:१८	24:43	वणि	07:05	विष	18:00	30:56	6:12	18:34	मे·32:51	19:20	उत्पात	10
11	4 गु	२३:४३	15:41	अश्वि·	२८:५७	17:47	ध्रुव	३८:४५	21:42	बाल	15:41	कौल	26:29	30:52	6:12	18:33	मेष	अहोरात्र	मानस	11
12	5 शु	१७:३९	13:16	भरणी	२४:४७	16:08	व्याघ·	३१:०१	18:37	तैति	13:16	गर	24:03	30:48	6:13	18:32	वृ·38:44	21:42	मुद्गर	12
13	6 श	११:३०	10:49	कृत्ति·	२०:३४	14:27	हर्षण	२३:१५	15:31	वणि	10:49	विष	21:36	30:44	6:13	18:31	वृष	अहोरात्र	ध्वज	13
14	7 र 8 र	०५:३१ ५४:२३	08:26 30:11	रोहि·	१६:३२	12:51	वज्र	१५:३९	12:29	बव	08:26	बाल	19:17	30:40	6:14	18:30	मि·44:41	24:06	धाता	14
15	9 चं	५४:४६	28:09	मृग·	१२:५३	11:23	सिद्धि	०८:२२	09:35	तैति	17:07	गर	28:09	30:36	6:14	18:29	मिथुन	अहोरात्र	आनन्द	15
16	10 मं	५०:२२	26:24	आर्द्रा	०९:४९	10:10	व्यति· वरी·	०१:३१ ५३:४८	06:51 28:22	वणि	15:13	विष	26:24	30:32	6:15	18:27	क·53:01	27:27	सुस्थिर	16
17	11 बु	४६:५१	24:59	पुन·	०७:२९	09:15	परिघ	४९:४७	26:10	बव	13:38	बाल	24:59	30:28	6:15	18:26	कर्क	अहोरात्र	गद	17
18	12 गु	४४:२२	24:00	पुष्य	०६:०४	08:41	शिव	४५:०५	24:17	कौल	12:25	तैति	24:00	30:24	6:15	18:25	कर्क	अहोरात्र	शुभ	18
19	13 शु	४३:०३	23:29	आश्ले·	०५:४४	08:33	सिद्ध	४१:१९	22:47	गर	11:40	वणि	23:29	30:20	6:16	18:24	सिं·05:44	08:33	मृत्यु	19
20	14 श	४२:५९	23:28	मघा	०६:३४	08:54	साध्य	३८:३२	21:41	विष	11:24	बव	23:28	30:16	6:16	18:23	सिंह	अहोरात्र	पद्म	20
21	30 र	४४:१२	23:58	पू·फा·	०८:३९	09:44	शुभ	३६:४४	20:58	चतु	11:39	नाग	23:58	30:12	6:17	18:22	कं·24:23	16:02	छत्र	21

व्रत–पर्व–उत्सव

दिनाङ्क	8 सितम्बर से 21 सितम्बर, 2025
8	प्रतिपदा श्राद्ध, ग्रहण वेध
9	द्वितीया श्राद्ध, अशून्यशयन व्रत, ग्रहण वेध
10	तृतीया श्राद्ध, संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय घं·20:23
11	चतुर्थी श्राद्ध
12	पञ्चमी श्राद्ध, षष्ठी श्राद्ध, भरणी श्राद्ध,
13	सप्तमी श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मीव्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समापन
14	अष्टमी श्राद्ध, जीवितपुत्रिका व्रत, व्यतीपात पुण्यम्
15	नवमी श्राद्ध, मातृनवमी श्राद्ध, अन्वष्टका श्राद्ध
16	दशमी श्राद्ध
17	श्रीइन्दिरा एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त), एकादशी श्राद्ध
18	श्रीइन्दिरा एकादशी (निम्बार्क), द्वादशी श्राद्ध, संन्यासी–यति श्राद्ध
19	त्रयोदशी श्राद्ध, प्रदोष व्रतम्, मासशिवरात्रि व्रतम्
20	चतुर्दशी श्राद्ध (केवल शस्त्रहत पितरों के लिए)
21	अमावस्या (देव–पितृकार्य), सर्वपितृ श्राद्ध, महालय समाप्ति

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	वक्री शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
सितम्बर	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
8	1 चं	04:20:47:15	10:24:19:09	05:26:41:59	04:18:09:11	02:26:18:07	03:23:16:29	11:01:43:18	10:26:27:58	45:31:59	उ·06:36:20	+ 2:31	19:07
9	2 मं	04:21:45:31	11:08:11:02	05:27:21:12	04:19:54:31	02:26:28:36	03:24:29:01	11:01:38:22	10:26:24:47	45:30:01	उ·06:13:24	+ 2:52	19:45
10	3 बु	04:22:43:49	11:22:14:27	05:28:00:28	04:21:40:18	02:26:38:57	03:25:41:36	11:01:33:26	10:26:21:37	45:28:02	उ·05:50:22	+ 3:13	20:23
11	4 गु	04:23:42:09	00:06:26:46	05:28:39:47	04:23:26:30	02:26:49:13	03:26:54:15	11:01:28:29	10:26:18:26	45:26:03	उ·05:27:14	+ 3:34	21:05
12	5 शु	04:24:40:31	00:20:44:53	05:29:19:09	04:25:13:02	02:26:59:21	03:28:06:56	11:01:23:32	10:26:15:15	45:24:04	उ·05:03:60	+ 3:55	21:50
13	6 श	04:25:38:55	01:05:05:19	05:29:58:33	04:26:59:51	02:27:09:23	03:29:19:40	11:01:18:34	10:26:12:04	45:22:04	उ·04:40:41	+ 4:17	22:41
14	7 र	04:26:37:22	01:19:24:06	06:00:38:01	04:28:46:54	02:27:19:18	04:00:32:27	11:01:13:36	10:26:08:53	45:20:05	उ·04:17:17	+ 4:38	23:36
15	9 चं	04:27:35:51	02:03:37:39	06:01:17:31	05:00:34:09	02:27:29:05	04:01:45:17	11:01:08:39	10:26:05:42	45:18:05	उ·03:53:48	+ 4:00	24:35
16	10 मं	04:28:34:22	02:17:42:50	06:01:57:04	05:02:21:31	02:27:38:46	04:02:58:09	11:01:03:41	10:26:02:32	45:16:04	उ·03:30:15	+ 5:22	25:37
17	11 बु	04:29:32:55	03:01:36:55	06:02:36:40	05:04:08:59	02:27:48:19	04:04:11:05	11:00:58:44	10:25:59:21	45:14:04	उ·03:06:38	+ 5:44	26:39
18	12 गु	05:00:31:30	03:15:17:44	06:03:16:19	05:05:56:28	02:27:57:45	04:05:24:03	11:00:53:46	10:25:56:10	45:12:03	उ·02:42:57	+ 6:05	27:40
19	13 शु	05:01:30:08	03:28:43:48	06:03:56:01	05:07:43:56	02:28:07:04	04:06:37:04	11:00:48:48	10:25:52:59	45:10:03	उ·02:19:13	+ 6:27	28:39
20	14 श	05:02:28:48	04:11:54:23	06:04:35:45	05:09:31:18	02:28:16:15	04:07:50:08	11:00:43:50	10:25:49:48	45:08:02	उ·01:55:26	+ 6:49	29:36
21	30 र	05:03:27:30	04:24:49:30	06:05:15:33	05:11:18:29	02:28:25:18	04:09:03:14	11:00:38:53	10:25:46:37	45:06:00	उ·01:31:37	+ 7:11	06:31

11 सितम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:4

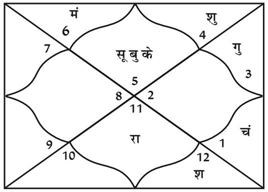

17 सितम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:11

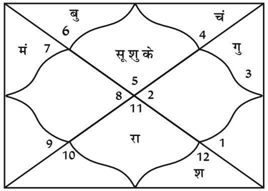

आश्विन कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 8 सितम्बर से 21 सितम्बर, 2025 ईस्वी

पक्षान्तः– कालः उत्तर । ऋतुःवर्षा कन्यार्कतः ऋतुःशरद । दक्षिणायनं । सौम्यगोलः । ति·30 अयनांशाः 22:52:55

दिनाङ्क सितम्बर	तिथि वार	व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार
8	1 चं	**पंचक**, जैन क्षमावाणी पर्व, पड़वा ढोक।
9	2 मं	**पंचक।**
10	3 बु	**पञ्चकान्तः19:21, भद्रा 7:06–18:01 घं·, गण्डान्तः13:43–24:58।**
11	4 गु	**।**
12	5 शु	चन्द्रषष्ठी व्रत चन्द्रोदये घं·21:50, उत्तरफल्गुन्यांबुधःघं·25:55।
13	6 श	**भद्राः10:50–21:37,** मघायांसिंहेशुक्रःघं·19:41, तुलायांमङ्गलःघं·07:14।
14	7 र 8 र	**श्रीकालाष्टमी,** उत्तरफल्गुन्यांरविःघं·07:19, कन्यायांबुधःघं·22:44।
15	9 चं	**जीवितपुत्रिका व्रत पारणा।**
16	10 मं	**भद्रा 15:14–26:24 घं·,** व्यतीपात पुण्यम्।
17	11 बु	**कन्या संक्रान्ति पुण्यकालं 12:21–18:26 घं·,** कन्यायांरविःघं·17:21।
18	12 गु	**गण्डान्तारम्भः 26:34, वैष्णवानां एकादशी श्राद्ध,** मघा श्राद्ध।
19	13 शु	**भद्रारंभः 23:29 घं·, गण्डान्तः14:36।**
20	14 श	**भद्रांतः11:25 घं·,** हस्तेबुधः घं·12:51।
21	30 र	**पितृ विसर्जन, चतुर्दशी पूर्णिमा अमावस्या श्राद्ध।**

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
1	11:56–13:33
30	11:52–13:26

❀ सर्वश्रेष्ठ कर्म है श्राद्ध ❀

ब्रह्म पुराण–जो अपनी संपत्ति के अनुकूल व्यय करता हुआ श्राद्ध करता है वह ब्रह्माण्ड को प्रसन्न कर लेता है। श्राद्ध का फल कभी भी व्यर्थ नहीं जाता––*न किंचिद् व्यर्थतां व्रजेत्॥* जो लोग देवता, पितर, अग्नि और ब्राह्मण की पूजा करते हैं वे सभी प्राणियों के आत्मा विष्णु की ही आराधना करते हैं–– *विष्णुमेव यजन्ति ते।*– यमस्मृति। **इच्छा शक्ति होने पर श्राद्ध कराना पहाड़ तोड़ना नहीं बल्कि फूल तोड़ने जैसा कार्य है।**

देव कार्य से भी महत्त्वपूर्ण है श्राद्ध कार्य – देवता से पूर्व पितरों का पूजन करना चाहिए। पितृपूजा देवपूजा से अधिक महत्त्वपूर्ण है––*देवकार्यादपि सदा पितृकार्यं विशिष्यते। देवताभ्यः पितृनां हि पूर्वमाप्यायनं शुभम्।* (ब्रह्मवैवर्त)। ब्रह्मपुराण और अधिक महत्त्व को बतलाते हुए कहता है यदि कोई शाक से भी श्राद्ध करता है तो उसके कुल में कोई कष्ट नहीं भोगता–– *शाकैरपि यथाविधिः।*

अ**शक्ति में श्राद्ध कैसे करायें** नौकरी में छुट्टी न मिलने की स्थिति में, कारागार में रहने पर, रोग से ग्रस्त रहने पर या अन्य किसी भी अवरोध के होने पर सुयोग्य ब्राह्मण को संकल्पपूर्वक धन दे कर श्राद्ध कराना चाहिए– *राजकार्येनियुक्तस्य बन्धनिग्रहवर्तिनः । व्यसनेषु च सर्वेषु श्राद्धं विप्रेणकारयेत्॥* –धर्मसिन्धु, परि.3 **श्राद्ध त्याग का दुष्परिणाम** आदित्य पुराण में है कि जो लोग मन में यह सोचते हैं कि पितर नहीं होते हैं श्राद्ध क्या करना? ऐसे लोगों के परिवार का रक्त पितृगण पीते हैं– *न सन्ति पितरश्चेति कृत्वा मनसि यो नरः। श्राद्धन् न कुरुते तत्र तस्य रक्तं पिबन्ति ते॥* वंश हीनता और निर्धनता से बचने के लिए श्राद्ध अवश्य करना चाहिए। सुमन्तु मुनि ने भी कहा है कि– "**श्राद्ध से पुण्यशाली अन्य कोई कर्म नहीं है**" – श्राद्धात्परतरं नान्यत् श्रेयस्करमुदाहृतम्।

❀ श्राद्धतिथि पर अन्नदानात्मक सांकल्पिक श्राद्ध ❀

यदि श्रद्धतिथि पर ब्राह्मण भोजन कराना सम्भव न हो तो निम्न विधि से संकल्प करके सूखे अन्न, घृत, चीनी, नमक आदि षड् रस वस्तुओं को दक्षिणा सहित श्राद्ध भोजन के निमित्त ब्राह्मण को दे देना चाहिये–

❀ **प्रतिज्ञासंकल्प**– हाथ में तिल, जल लेकर संकल्प करे –

ॐ अद्य ... देशकालसंकीर्त्य... अमुक गोत्रः अमुक नामाहं अस्मत् पिता/ पितामहानां/ माता/... क्षुधापिपासानिवृत्तिपूर्वम् अक्षयतृप्ति सम्पादनार्थं सोपस्करम् आमान्नदानात्मकं सांकल्पिक श्राद्धं करिष्ये।

हाथ से संकल्प–जल जमीन पर छोड़े।

❀ **आमान्नदानका संकल्प–** अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर हाथ में मोटक, तिल, जल लेकर आमान्नदान का निम्न संकल्प करे–

ॐ अद्य अमुक गोत्राय पित्रे (पितृ का नाम) शर्माय/वर्माय/गुप्ताय सांकल्पिक श्राद्धे एक/त्रि/पंच ब्राह्मणभोजनतृप्तिपर्याप्तं इदमन्नं ते नमः

कहकर संकल्पजल आमान्न सामग्री पर छोड़ दे और आमान्न ब्राह्मण को प्रदान करे तथा दक्षिणा भी दे।

❀ **पितरों की तृप्ति हेतु वस्त्र** आदि **दान का संकल्प –**

ॐ ...देशकाल संकीर्त्य... अमुक गोत्रः अमुक नामाहं अमुकगोत्राणां अस्मत् पिता/पितामहः/ (पितृ का नाम) शर्मा/वर्मा/गुप्तानां श्राद्धे क्षुधापिपासानिवृत्तिपूर्वम् अक्षयतृप्तिप्राप्त्यर्थम् असद्गतीनां सद्गतिप्राप्तये सद्गतीनाञ्च अपुनरावर्तिविष्णवादिलोकप्राप्तिकामनया शास्त्रोक्त फल प्राप्त्यर्थं वस्त्रं दक्षिणाद्रव्यं च अमुकगोत्राय–नामाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

सितम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
8	20:30	22:06	00:01	02:16	04:36	06:52	09:07	11:26	13:45	15:50	17:35	19:04
9	20:26	22:02	23:57	02:12	04:32	06:49	09:03	11:22	13:41	15:46	17:31	19:00
10	20:22	21:58	23:53	02:08	04:28	06:45	08:59	11:18	13:37	15:43	17:27	18:56
11	20:18	21:54	23:50	02:04	04:24	06:41	08:56	11:14	13:33	15:39	17:23	18:52
12	20:14	21:50	23:46	02:00	04:20	06:37	08:52	11:10	13:29	15:35	17:19	18:48
13	20:10	21:46	23:42	01:56	04:16	06:33	08:48	11:06	13:25	15:31	17:15	18:44
14	20:06	21:42	23:38	01:52	04:12	06:29	08:44	11:03	13:21	15:27	17:11	18:40
15	20:02	21:38	23:34	01:48	04:08	06:25	08:40	10:59	13:17	15:23	17:07	18:36
16	19:58	21:34	23:30	01:44	04:04	06:21	08:36	10:55	13:13	15:19	17:03	18:32
17	19:54	21:30	23:26	01:40	04:00	06:17	08:32	10:51	13:10	15:15	16:59	18:29
18	19:50	21:26	23:22	01:36	03:56	06:13	08:28	10:47	13:06	15:11	16:55	18:25
19	19:47	21:22	23:18	01:32	03:52	06:09	08:24	10:43	13:02	15:07	16:52	18:21
20	19:43	21:19	23:14	01:28	03:48	06:05	08:20	10:39	12:58	15:03	16:48	18:17
21	19:39	21:15	23:10	01:24	03:44	06:01	08:16	10:35	12:54	14:59	16:44	18:13

सित·	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
8	**सिद्ध**·22:00 तक, **मृत्यु**·22:00 से,
9	**सर्वार्थ**·20:43 तक, **अमृत**·20:08 तक, **सिद्ध**·20:08 से
10	**मृत्यु**·18:00 तक,
11	**सर्वार्थ**·17:47 तक, **मृत्यु**·15:41 तक, **सिद्ध**·15:41 से
12	**सिद्ध**·13:16 से, **रवियोगः**16:08 से,
13	**अमृत**·10:49 तक, **रवियोगः**14:27 तक, **त्रिपुष्कर**:10:49 से 14:27 तक, **सर्वार्थ**·14:27 से
14	**सिद्ध**· 08:26 से, **रवियोगः**12:51 तक,
15	**सर्वार्थ**·11:23 तक, **अमृत**·28:09 से,
16	**मृत्यु**·26:24 से,
17	**अमृत**·24:59 तक, **सिद्ध**·24:59 से,
18	**सर्वार्थ**·08:41 तक, **अमृत**·24:00 से,
19	**अमृत**·23:29 से,
20	**सिद्ध**·23:28 तक, **मृत्यु**·23:28 से,
21	**अमृत**·23:58 तक, **सर्वार्थ**·09:44 से, **मृत्यु**·23:58 से

कन्याराशिस्थ सूर्य और **आश्विन कृष्णपक्ष** का जब सम्मिलन होता है तब एक त्रिकोण में सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी की स्थिति बनती है और पितृगण सीधे धरती पर उतर आते हैं। यह खगोलीय स्थिति **पितृपक्ष** के लिए अनिवार्य होती है। अदृष्ट भाग दिखने वाले से करोड़ों करोड़ गुणा महत्वपूर्ण है। अतः **वेद–शास्त्र को प्रमाण मानकर श्राद्ध करना चाहिए।** संतुष्ट पितृगण राज्य, वंश और आयु प्रदान करते हैं। जिस वंश में पितृगण मुक्त नहीं होते, उसके वंशधर मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकते। मोक्ष तो बड़ी बात है उनका पुनर्जन्म तक नहीं होता, अंततः श्रीमद्भागवत का सप्ताहयज्ञ कराना पड़ता है।

"जिनके घर श्राद्ध नहीं होता उनके कुल में वीर पुत्र उत्पन्न नहीं होते, कोई निरोग नहीं रहता, दीर्घायु नहीं होती और किसी तरह का कल्याण नहीं होता।" –मार्कण्डेयपुराण

न तत्र वीराः जायन्ते निरोगी न शतायुषः।
न तत्र श्रेयः कांक्षन्ते यत्र श्राद्धः विवर्जितः॥

आश्विन शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 22 सितम्बर से 7 अक्टूबर, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 22:9:2025– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	व्रत-पर्व-उत्सव
सितम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सित·	22 सितम्बर से 7 अक्टूबर 2025
22	1 चं	४६:४0	24:57	उ·फा·	११:५९	11:05	शुक्ल	३५:५५	20:39	बव	12:23	बाल	24:57	30:07	6:17	18:20	कन्या	अहोरात्र	श्रीवत्स	22	शारदीय नवरात्रारम्भ, कलशस्थापना, शैलपुत्री दर्शन, ध्वजा रोपण
23	2 मं	५0:१५	26:24	हस्त	१६:२७	12:52	ब्रह्म	३५:५९	20:41	बाल	13:37	कौल	26:24	30:03	6:18	18:19	तु·49:05	25:56	सौम्य	23	ब्रह्मचारिणीदेवी दर्शन
24	3 बु	५४:४३	28:11	चित्रा	२१:५४	15:04	ऐन्द्र	३६:४५	21:00	तैति	15:14	गर	28:11	29:59	6:18	18:18	तुला	अहोरात्र	कालदंड	24	चन्द्रघण्टादेवी दर्शन
25	4 गु	५९:४५	30:12	स्वाती	२८:0३	17:32	वैधृ·	३८:0१	21:31	वणि	17:11	विष	30:12	29:55	6:19	18:17	तुला	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	25	वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी, कूष्माण्डादेवी दर्शन, रथोत्सव चतुर्थी
26	5 शु	६0:00	अहोरात्र	विशा·	३४:३३	20:08	विष्कु·	३९:३१	22:07	बव	19:15	बाल	60:00	29:51	6:19	18:16	वृ·17:55	13:29	मातङ्ग	26	उपांग ललिता व्रत, ललिता पंचमी
27	5 श	0४:५४	08:17	अनु·	४0:५८	22:43	प्रीति	४0:५५	22:41	बाल	08:17	कौल	21:17	29:47	6:19	18:15	वृश्चिक	अहोरात्र	अमृत	27	स्कन्दमातादेवी दर्शन
28	6 र	0९:४७	10:15	ज्ये·	४६:५३	25:05	आयु·	४१:५४	23:06	तैति	10:15	गर	23:08	29:43	6:20	18:13	ध·46:53	25:05	काण	28	कात्यायनीदेवी दर्शन, छठ मेला आमेर
29	7 चं	१४:0१	11:57	मूल	५१:५९	27:08	सौभा·	४२:१६	23:15	वणि	11:57	विष	24:38	29:39	6:20	18:12	धनु	अहोरात्र	लुम्ब	29	कालरात्रिदेवी दर्शन, श्री सरस्वती आवाहन (मूलेषु)
30	8 मं	१७:१६	13:15	पू·षा·	५६:00	28:45	शोभ·	४१:४८	23:04	बव	13:15	बाल	25:44	29:35	6:21	18:11	धनु	अहोरात्र	मित्र	30	महाष्टमी, महागौरी दर्शन, श्री सरस्वती पूजन (पू·षाढ़ासु)
अक्टूबर	9 बु	१९:२१	14:06	उ·षा·	५८:५१	29:54	अतिग·	४0:२४	22:31	कौल	14:06	तैति	26:19	29:31	6:21	18:10	म·11:48	11:05	वज्र	अक्टू·	महानवमी, सिद्धिदात्री दर्शन, सरस्वती बलिदान (उ·षाढ़ासु) ①
2	10 गु	२0:११	14:26	श्रवण	६0:00	अहोरात्र	सुकर्मा	३७:६0	21:34	गर	14:26	वणि	26:25	29:27	6:22	18:09	मकर	अहोरात्र	ध्वांक्ष	2	विजयादशमी, नवरात्र व्रतपारणा, सरस्वती विसर्जन (श्रवणेषु)
3	11 शु	१९:४४	14:16	श्रवण	00:२४	06:32	धृति	३४:३६	20:12	विष	14:16	बव	25:59	29:23	6:22	18:08	कु·30:45	18:40	धूम्र	3	श्री पापाङ्कुशा एकादशी (सर्वेषाम्)
4	12 श	१८:0३	13:36	धनि· शत·	00:४६ ५९:१५	06:41 30:23	शूल	३0:१४	18:28	बाल	13:36	कौल	25:06	29:19	6:23	18:06	कुंभ	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	4	प्रदोष व्रतम्, श्रीपद्मनाभद्वादशी
5	13 र	१५:१४	12:29	पू·भा·	५८:१३	29:41	गण्ड	२४:६0	16:23	तैति	12:29	गर	23:46	29:15	6:23	18:05	मी·43:45	23:53	सुस्थिर	5	① पाठ हवन पूर्णाहुति महाबलिदान
6	14 चं	११:२७	10:59	उ·भा·	५५:३५	28:38	वृद्धि	१८:५९	13:59	वणि	10:59	विष	22:06	29:11	6:24	18:04	मीन	अहोरात्र	गद	6	शरदपूर्णिमा, पूर्णिमा (व्रत), कोजागरी लक्ष्मी पूजा
7	15 मं	0६:५१	09:08	रेवती	५२:१५	27:18	ध्रुव	१२:२0	11:20	बव	09:08	बाल	20:07	29:07	6:24	18:03	मे·52:15	27:18	शुभ	7	पूर्णिमा (स्नान-दान), सत्यनारायण पूर्णिमा, वाल्मीकि जयन्ती

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क सितम्बर	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
22	1 चं	05:04:26:14	05:07:29:57	06:05:55:23	05:13:05:26	02:28:34:13	04:10:16:23	11:00:33:55	10:25:43:26	45:03:59	उ·01:07:45	+ 7:33	06:32
23	2 मं	05:05:25:01	05:19:57:14	06:06:35:17	05:14:52:06	02:28:43:00	04:11:29:35	11:00:28:59	10:25:40:16	45:01:58	उ·00:43:52	+ 7:54	07:26
24	3 बु	05:06:23:50	06:02:13:33	06:07:15:13	05:16:38:26	02:28:51:40	04:12:42:50	11:00:24:03	10:25:37:05	44:59:56	उ·00:19:56	+ 8:16	08:19
25	4 गु	05:07:22:41	06:14:21:40	06:07:55:12	05:18:24:24	02:29:00:11	04:13:56:07	11:00:19:08	10:25:33:54	44:57:55	द·00:04:00	+ 8:37	09:13
26	5 शु	05:08:21:34	06:26:24:44	06:08:35:14	05:20:09:54	02:29:08:34	04:15:09:27	11:00:14:13	10:25:30:43	44:55:53	द·00:27:57	+ 8:59	10:07
27	5 श	05:09:20:30	07:08:26:22	06:09:15:19	05:21:54:56	02:29:16:48	04:16:22:49	11:00:09:20	10:25:27:32	44:53:52	द·00:51:55	+ 9:20	11:01
28	6 र	05:10:19:28	07:20:30:32	06:09:55:27	05:23:39:24	02:29:24:54	04:17:36:14	11:00:04:29	10:25:24:21	44:51:50	द·01:15:53	+ 9:41	11:54
29	7 चं	05:11:18:28	08:02:40:41	06:10:35:37	05:25:23:16	02:29:32:51	04:18:49:42	10:29:59:38	10:25:21:10	44:49:48	द·01:39:51	+10:02	12:47
30	8 मं	05:12:17:31	08:14:59:54	06:11:15:51	05:27:06:28	02:29:40:39	04:20:03:11	10:29:54:50	10:25:17:60	44:47:47	द·02:03:48	+10:22	13:35
अक्टूबर	9 बु	05:13:16:36	08:27:30:45	06:11:56:07	05:28:48:57	02:29:48:19	04:21:16:44	10:29:50:03	10:25:14:49	44:45:45	द·02:27:45	+10:43	14:23
2	10 गु	05:14:15:43	09:10:15:17	06:12:36:27	06:00:30:37	02:29:55:49	04:22:30:19	10:29:45:18	10:25:11:38	44:43:43	द·02:51:40	+11:03	15:07
3	11 शु	05:15:14:53	09:23:14:47	06:13:16:49	06:02:11:26	03:00:03:11	04:23:43:56	10:29:40:36	10:25:08:27	44:41:42	द·03:15:33	+11:23	15:48
4	12 श	05:16:14:04	10:06:29:50	06:13:57:14	06:03:51:19	03:00:10:23	04:24:57:36	10:29:35:55	10:25:05:16	44:39:40	द·03:39:24	+11:42	16:27
5	13 र	05:17:13:18	10:20:00:15	06:14:37:43	06:05:30:12	03:00:17:26	04:26:11:19	10:29:31:17	10:25:02:05	44:37:39	द·04:03:13	+12:01	17:04
6	14 चं	05:18:12:34	11:03:45:03	06:15:18:14	06:07:07:59	03:00:24:19	04:27:25:03	10:29:26:42	10:24:58:54	44:35:38	द·04:26:59	+12:20	17:41
7	15 मं	05:19:11:52	11:17:42:33	06:15:58:48	06:08:44:36	03:00:31:03	04:28:38:50	10:29:22:09	10:24:55:44	44:33:37	द·04:50:42	+12:39	18:19

25 सितम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:4

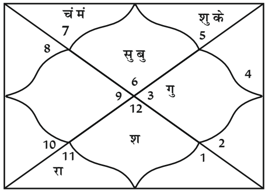

3 अक्टूबर सूर्योदयकालीन तिथि:11

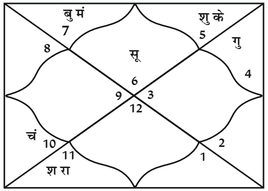

आश्विन शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 22 सितम्बर से 7 अक्टूबर, 2025 ईस्वी

दिनाङ्क (सितम्बर)	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
22	1 चं	**दुर्गा सप्तशती पाठारम्भ, महाराजा श्री अग्रसेन जयन्ती।**
23	2 मं	स्वात्यांमङ्गलः घं·09:18।
24	3 बु	पूर्वफल्गुन्यांशुक्रः घं·18:38।
25	4 गु	**भद्रा 17:11–30:13 घं.**, वैधृति पुण्यम्, मान चतुर्थी (उड़ीसा)।
26	5 शु	।
27	5 श	हस्तेरविः घं·22:25।
28	6 र	**गण्डान्तारम्भः 18:31**, कुम्भेशनिः घं·05:00, चित्रायांबुधः घं·02:01।
29	7 चं	**भद्रा 11:57–24:40 घं., गण्डान्तः7:38, बिल्वसप्तमी।**
30	8 मं	**दुर्गाष्टमी।**
अक्टूबर	9 बु	**अभिजितारम्भः 23:39, दुर्गा महानवमी**, दक्षसावर्णि·मन्वादि, तुलायांबुधः23:15।
2	10 गु	**भद्रारंभः 26:25 घं., अभिजितान्तः 07:32, श्रीसुदर्शनादि सर्वायुध पूजा,**
3	11 शु	**पंचकारंभः 18:40, भद्रांतः14:16 घं.**, जगद्गुरु श्रीमाधवाचार्य जयन्ती।
4	12 श	**पंचक**, दुग्ध दान।
5	13 र	**पंचक**, स्वात्यांबुधः घं·23:39, उत्तरफल्गुन्यांशुक्रः घं·15:53।
6	14 चं	**पंचक, भद्रा 10:59–22:06 घं., महारास पूर्णिमा, श्री लक्ष्मी–इन्द्र–कुबेर पूजा।**
7	15 मं	**पञ्चकान्तः27:19, गण्डान्तारम्भः 21:40, कार्तिकस्नान आरम्भ**, मेला श्रीसालासर बालाजी। **श्रीअपराजिता पूजा**, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शताब्दी, महात्मा गाँधी–लालबहादुर शास्त्री जयन्ती, कर्केगुरुः 20:04।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
1	11:52–13:26
15	11:49–13:20

❀ आश्विन मास कृत्य ❀

❀ **शारदीय नवरात्रि**– आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त्। प्रथम दिन वैधृति एवं चित्रा रहित शुभमुहूर्त में कलशस्थापन करें।

❀ **नवरात्र घटस्थापना मुहूर्त** – सूर्योदय से 10 घटी पर्यन्त श्रेष्ठ 06:17-10:17, अभिजित् काल 11:55 - 12:43 ❀

नवरात्रि में देवी की प्रीति हेतु श्रीसप्तशती पाठ करें व अखण्ड दीप निम्न मन्त्र से प्रज्वलित करें –

अखण्डदीपकं देव्याः प्रीतये नवरात्रिकम्। प्रज्वालयेद् अहोरात्रं एकचित्तं दृढव्रतः।।

❀ **विजयादशमी निर्णय**– उदये दशमीकिञ्चित् सम्पूर्णैकादशी यदि श्रवणः यदा काले सा तिथिः विजयाऽभिधः।। अन्यञ्च–

इषस्य दशमी शुक्ला पूर्वविद्धा न कारयेत्। श्रवणेनापि संयुक्ता राज्ञां पट्टाभिषेचने।।

सूर्योदये यदा राजन दृश्यते दशमी तिथिः। आश्विने मासि शुक्ले तु विजयां ता विदुर्बुधा ।।

विजयादशमी अपराह्णव्यापिनी श्रवण नक्षत्र युक्त ग्राह्य होने से इस वर्ष 2 अक्टू. को विजयादशमी, आयुधपूजन, राज्याभिषेक आदि शास्त्रानुसार होगा। **शमी वृक्ष पूजन**– दशहरा के दिन शमीवृक्ष पूजन से पाप, दुःस्वप्न तथा यात्राकष्ट का निवारण होता है।

❀ **पापांकुशा एकादशी** (पद्मपुराण) – पापी पुरुषों के पापों को वश में करने के लिए आश्विन शुक्ल एकादशी अंकुश के समान है। इसी कारण इसका नाम 'पापांकुशा' है। यह स्वर्ग और मोक्ष को देने वाली, शरीर को नीरोग रखने वाली, सुन्दरी, सुशीला, स्त्री, सदाचारी पुत्र और सुस्थिर धन देने वाली है। दिन में भगवान् का पूजन और रात्रि में उनके सम्मुख जागरण करके दूसरे दिन पूर्वाह्न में पारण करके व्रत को समाप्त करे।

❀ **शरद पूर्णिमा** –आज मनुष्यों को आयु देने वाली चन्द्र किरणों का वर्षण होता है। आज की रात में भगवती लक्ष्मी जागने वाले अपने भक्तों को ढूंढती रहती हैं– ***को जागर्ति इति भाषिणी!*** **मेरी आराधना में कौन जाग रहा है, उसे मैं धन समृद्धि दूंगी।** यही कोजागरी है। कोजागरी में ऐरावत हाथी पर सवार लक्ष्मी की पूजा करे। शरदपूर्णिमा को **रासोत्सव** करे। नारद पुराण में कहा है– **'हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! जो रासलीला महोत्सव करता है उसके मन में जब तक इन्द्र का राज्य है तब तक श्रीकृष्ण भगवान् परम भक्ति देते हैं।'** ''वह पूर्णिमा विद्ध होकर अधिक हो तो पर दिन में करे। चतुर्दशी विद्धा अमावस्या और पूर्णिमा को कभी ग्रहण न करे।'', यह ब्रह्मवैवर्त में कहा है।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

सितम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
22	19:35	21:11	23:06	01:20	03:40	05:57	08:12	10:31	12:50	14:55	16:40	18:09
23	19:31	21:07	23:02	01:16	03:37	05:53	08:08	10:27	12:46	14:51	16:36	18:05
24	19:27	21:03	22:58	01:12	03:33	05:49	08:04	10:23	12:42	14:47	16:32	18:01
25	19:23	20:59	22:54	01:09	03:29	05:45	08:00	10:19	12:38	14:43	16:28	17:57
26	19:19	20:55	22:50	01:05	03:25	05:41	07:56	10:15	12:34	14:39	16:24	17:53
27	19:15	20:51	22:46	01:01	03:21	05:37	07:52	10:11	12:30	14:36	16:20	17:49
28	19:11	20:47	22:43	00:57	03:17	05:33	07:49	10:07	12:26	14:32	16:16	17:45
29	19:07	20:43	22:39	00:53	03:13	05:29	07:45	10:03	12:22	14:28	16:12	17:41
30	19:03	20:39	22:35	00:49	03:09	05:25	07:41	09:59	12:18	14:24	16:08	17:37
अक्टूबर	18:59	20:35	22:31	00:45	03:05	05:21	07:37	09:56	12:14	14:20	16:04	17:33
2	18:55	20:31	22:27	00:41	03:01	05:18	07:33	09:52	12:10	14:16	16:00	17:29
3	18:51	20:27	22:23	00:37	02:57	05:14	07:29	09:48	12:06	14:12	15:56	17:25
4	18:47	20:23	22:19	00:33	02:53	05:10	07:25	09:44	12:03	14:08	15:52	17:22
5	18:43	20:19	22:15	00:29	02:49	05:06	07:21	09:40	11:59	14:04	15:48	17:18
6	18:40	20:15	22:11	00:25	02:45	05:02	07:17	09:36	11:55	14:00	15:45	17:14
7	18:36	20:12	22:07	00:21	02:41	04:58	07:13	09:32	11:51	13:56	15:41	17:10

सित·	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
22	**सिद्ध**·24:57 तक, **मृत्यु**·24:57 से
23	**अमृत**·26:24 तक, **द्विपुष्कर**:12:52 से 26:24 तक
24	**मृत्यु**·28:11 तक, **रवियोग**:15:04 से
25	**मृत्यु**·30:12 तक, **रवियोग**:17:32 तक, **सिद्ध**·30:12 से
26	**सर्वार्थ**·20:08 से, **रवियोग**:20:08 से
27	**मृत्यु**·08:17 तक, **रवियोग**: अहोरात्र, **अमृत**·08:17 से
28	**मृत्यु**·10:15 तक,**रवियोग**:25:05 तक, **सर्वार्थ**·25:05 तक
29	**द·ति**·11:57 से, **मृत्यु**·11:57 तक
30	**द·ति**·13:15 तक, **सिद्ध**·13:15 तक, **रवियोग**:28:45 से
अक्टू	**रवियोग**:29:54 तक, रवियोग:29:54 से
2	**सिद्ध**·14:26 तक, **रवियोग**:अहोरात्र
3	**सर्वार्थ·रवियोग**:06:32 तक,**सिद्ध**·14:16 तक,**मृत्यु**·14:16 से
4	**द्विपुष्कर**:सूर्योदयःसे 06:41 तक
5	**सिद्ध**·12:29 तक, **रवियोग**:29:41 तक, **सर्वार्थ**·29:41,
6	**अमृत**·10:59 से

❀ नवार्ण मन्त्र की व्यापकता ❀

मूल– "ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"

यह सांसारिक सुख और मोक्ष दोनों को देने वाला मन्त्र है। इस मन्त्र का जप किसी भी वर्ण, जाति, धर्म, सम्प्रदाय वाला व्यक्ति कर सकता है। यह गायत्री मन्त्र की तरह अपने भीतर गुप्तरूप से 24 वर्णाक्षरों को समेटे है। ऐ, म्, ह, र, ई, म्, क, ल, ई, म्, च, आ, म, उ, म्, ड, आ, य, ऐ, व, इ, च्, च, ए। सावित्री मन्त्र की तरह इसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश समाहित हैं। यह ब्रह्मस्वरूपिणी महाशक्ति का मन्त्र है, जो सगुणरूप में महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती होती है। ॐ रहित नवार्ण का जप श्रेयस्कर है। इसी से सप्तशती का सम्पुटित पाठ, हवन किया जाता है। यह भगवती महाशक्ति का ब्रह्ममय विग्रह है।

कार्तिक कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 8 अक्टूबर से 21 अक्टूबर, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 8:10:2025– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपश्चिमोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	☴ व्रत–पर्व–उत्सव ☴
अक्टूबर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	अक्टूबर	8 अक्टूबर से 21 अक्टूबर, 2025
8	1 बु 2 बु	०१:३४ ५४:१९	07:03 28:47	अश्वि·	४८:२६	25:47	व्याघ· हर्षण	०५:१० ५२:३०	08:29 29:29	कौल	07:03	तैति	17:55	29:03	6:25	18:02	मेष	अहोरात्र	मृत्यु	8	**त्याग व्रतारम्भ, आकाश दीपदान आरम्भ,** अशून्यशयन व्रत
9	3 गु	४९:५३	26:22	भरणी	४४:१८	24:08	वज्र	४९:५३	26:23	वणि	15:34	विष	26:22	28:59	6:25	18:01	वृ·58:15	29:43	पद्म	9	गुरु रामदास जयन्ती
10	4 शु	४३:४९	23:57	कृत्ति·	४०:०५	22:28	सिद्धि	४२:०४	23:15	बव	13:09	बाल	23:57	28:55	6:26	18:00	वृष	अहोरात्र	छत्र	10	**करवा चौथ, करक संकष्टी चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·20:29**
11	5 श	३७:५३	21:36	रोहि·	३५:६०	20:50	व्यति·	३४:२१	20:11	कौल	10:45	तैति	21:36	28:51	6:26	17:59	वृष	अहोरात्र	श्रीवत्स	11	श्रीललिता चतुर्थी व्रत
12	6 र	३२:१८	19:22	मृग·	३२:१४	19:20	वरी·	२६:५४	17:12	गर	08:27	वणि	19:22	28:47	6:27	17:58	मि·04:03	08:04	सौम्य	12	**श्रीस्कन्द षष्ठी**
13	7 चं	२७:१६	17:22	आर्द्रा	२९:००	18:03	परिघ	१९:५१	14:24	बव	17:22	बाल	28:27	28:43	6:27	17:57	मिथुन	अहोरात्र	कालदंड	13	**श्रीअहोई अष्टमी, श्रीकालाष्टमी**
14	8 मं	२२:५६	15:38	पुन·	२६:३०	17:04	शिव	१३:२३	11:49	कौल	15:38	तैति	26:54	28:39	6:28	17:56	क·12:02	11:17	प्रवर्द्ध	14	दाम्पत्य अष्टमी
15	9 बु	१९:३०	14:16	पुष्य	२४:५२	16:25	सिद्ध	०७:३५	09:31	गर	14:16	वणि	25:44	28:35	6:28	17:54	कर्क	अहोरात्र	मातङ्ग	15	
16	10 गु	१७:०६	13:19	आश्ले·	२४:१६	16:11	साध्य शुभ	०२:३६ ५५:५७	07:31 29:53	विष	13:19	बव	25:01	28:31	6:29	17:53	सिं·24:16	16:11	अमृत	16	
17	11 शु	१५:५२	12:50	मघा	२४:४९	16:25	शुक्ल	५५:२५	28:39	बाल	12:50	कौल	24:47	28:27	6:30	17:52	सिंह	अहोरात्र	काण	17	**श्रीरमा एकादशी (सर्वेषाम्), श्रीगोवत्सद्वादशी** (प्रदोषे)
18	12 श	१५:५४	12:52	पू·फा·	२६:३७	17:09	ब्रह्म	५३:१७	27:49	तैति	12:52	गर	25:04	28:23	6:30	17:51	कं·42:16	23:25	लुम्ब	18	**प्रदोष व्रतम्, धनत्रयोदशी, यमनिमित्त चौमुखा दीपदान**
19	13 र	१७:१४	13:24	उ·फा·	२९:४०	18:23	ऐन्द्र	५२:०९	27:22	वणि	13:24	विष	25:52	28:19	6:31	17:50	कन्या	अहोरात्र	मित्र	19	**धन्वन्तरि जयन्ती, नरक चतुर्दशी, रूपचौदस, मासशिवरात्रि**
20	14 चं	१९:४८	14:27	हस्त	३३:५२	20:04	वैधृ·	५१:५४	27:17	शकु	14:27	चतु	27:07	28:15	6:31	17:49	कन्या	अहोरात्र	वज्र	20	**दीपावली** (प्रदोष–मध्यरात्रिव्यापी अमावस्या में), **सायं दीपदान**
21	30 मं	२३:३०	15:56	चित्रा	३९:०८	22:11	विष्कु·	५२:२५	27:30	नाग	15:56	किं	28:49	28:11	6:32	17:48	तु·06:22	09:05	ध्वांक्ष	21	**अमावस्या (देव–पितृकार्य),** श्रीमहावीर निर्वाण

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क अक्टूबर	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
8	1 बु	05:20:11:13	00:01:50:26	06:16:39:25	06:10:19:58	03:00:37:37	04:29:52:40	10:29:17:40	10:24:52:33	44:31:36	द·05:14:22	+12:57	18:58
9	3 गु	05:21:10:36	00:16:05:50	06:17:20:05	06:11:53:58	03:00:44:02	05:01:06:32	10:29:13:13	10:24:49:22	44:29:35	द·05:37:58	+13:15	19:43
10	4 शु	05:22:10:01	01:00:25:29	06:18:00:48	06:13:26:31	03:00:50:16	05:02:20:26	10:29:08:49	10:24:46:11	44:27:34	द·06:01:30	+13:32	20:29
11	5 श	05:23:09:28	01:14:45:40	06:18:41:33	06:14:57:31	03:00:56:21	05:03:34:22	10:29:04:29	10:24:43:00	44:25:34	द·06:24:57	+13:49	21:25
12	6 र	05:24:08:58	01:29:02:27	06:19:22:22	06:16:26:51	03:01:02:15	05:04:48:21	10:29:00:12	10:24:39:49	44:23:34	द·06:48:19	+14:05	22:21
13	7 चं	05:25:08:30	02:13:12:31	06:20:03:14	06:17:54:23	03:01:07:59	05:06:02:22	10:28:55:59	10:24:36:39	44:21:34	द·07:11:35	+14:21	23:24
14	8 मं	05:26:08:04	02:27:12:53	06:20:44:09	06:19:19:59	03:01:13:33	05:07:16:26	10:28:51:50	10:24:33:28	44:19:34	द·07:34:46	+14:37	24:25
15	9 बु	05:27:07:41	03:11:01:04	06:21:25:07	06:20:43:33	03:01:18:56	05:08:30:31	10:28:47:45	10:24:30:17	44:17:35	द·07:57:51	+14:51	25:27
16	10 गु	05:28:07:19	03:24:35:14	06:22:06:07	06:22:04:53	03:01:24:09	05:09:44:39	10:28:43:43	10:24:27:06	44:15:36	द·08:20:49	+15:06	26:28
17	11 शु	05:29:07:00	04:07:54:12	06:22:47:11	06:23:23:52	03:01:29:11	05:10:58:49	10:28:39:46	10:24:23:55	44:13:37	द·08:43:41	+15:19	27:26
18	12 श	06:00:06:44	04:20:57:36	06:23:28:18	06:24:40:20	03:01:34:03	05:12:13:01	10:28:35:53	10:24:20:44	44:11:39	द·09:06:25	+15:33	28:22
19	13 र	06:01:06:29	05:03:45:48	06:24:09:28	06:25:54:04	03:01:38:43	05:13:27:16	10:28:32:04	10:24:17:33	44:09:41	द·09:29:01	+15:45	29:17
20	14 चं	06:02:06:17	05:16:19:56	06:24:50:40	06:27:04:55	03:01:43:13	05:14:41:32	10:28:28:20	10:24:14:23	44:07:44	द·09:51:29	+15:57	30:11
21	30 मं	06:03:06:07	05:28:41:51	06:25:31:56	06:28:12:40	03:01:47:32	05:15:55:51	10:28:24:40	10:24:11:12	44:05:47	द·10:13:49	+16:08	07:04

10 अक्टूबर सूर्योदयकालीन तिथि:**4**

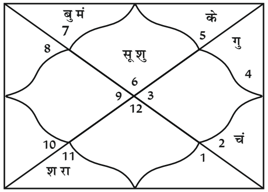

17 अक्टूबर सूर्योदयकालीन तिथि:**11**

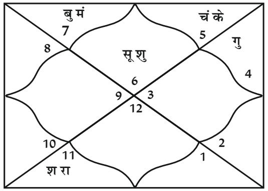

कार्तिक कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 8 अक्टूबर से 21 अक्टूबर, 2025 ईस्वी

पक्षान्तः– कालः उत्तर । ऋतुः शरद । दक्षिणायनं ।
सौम्यगोलः तुलार्कतः याम्यगोलः । ति·30 अयनांशाः 22:52:60

दिनाङ्क अक्टूबर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
8	1 बु 2 बु	**गण्डान्तः08:57**, कन्यायांशुक्रः घं·08:56।
9	3 गु	**भद्रा 15:35–26:23 घं·।**
10	4 शु	दशरथ चतुर्थी (बंगाल)।
11	5 श	व्यतीपात पुण्यम्, चित्रायांरविः घं·10:42।
12	6 र	**भद्रा 19:23–30:19 घं·**, विशाखायांमङ्गलः घं·04:43।
13	7 चं	।
14	8 मं	श्रीराधाकुण्ड स्नान (गोवर्धन), प्रथमाष्टमी (उड़ीसा), विशाखायांबुधः18:02।
15	9 बु	**भद्रारंभः 25:45 घं·।**
16	10 गु	**भद्रांतः13:20 घं·, गण्डान्तः10:13–22:13**, हस्तेशुक्रः घं·11:37।
17	11 शु	। ⑨ कामेश्वरी जयन्ती, श्रीपद्मप्रभ जयन्ती१३।
18	12 श	**धनतेरस, तुला संक्रान्ति पुण्यकालं 06:30–12:10**, तुलायांरविःघं·03:48।
19	13 र	**भद्रा 13:25–25:52 घं·, नरकनिमित्त चौमुखा दीपदान, श्रीहनुमान जयन्ती** (14 सायंकाले मेषलग्ने) ⑨
20	14 चं	**श्री लक्ष्मी–गणेश–सरस्वती–इन्द्र–कुबेर पूजा, उल्कादान, महाकाली पूजा** निशीथे, वैधृति पुण्यम्।
21	30 मं	प्रातः अभ्यंग औषध स्नान।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
1	11:48–13:19
30	11:47–13:15

ॐ ❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀ ॐ

दीपावली लक्ष्मीपूजन मुहूर्त्त 20 अक्टूबर 2025

ॐ ❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀ ॐ

❀ प्रदोषकाल –
17:49 – 20:13

❀ सर्वश्रेष्ठ स्थिर वृष लग्न –
19:20 – 21:16

वृष लग्न में सिंह नवांश–
19:29 – 19:40

वृष लग्न में वृष नवांश –
20:06 – 20:18

❀ रात्रिकालीन सिंह लग्न –
रात्रि 01:50 – 04:07

❀ कार्तिक मास कृत्य ❀

कार्तिक मास श्रीकृष्ण भागवान को अ**त्यधिक प्रिय है।** जो गृहस्थ कार्तिक मास में व्रत नहीं करता है, उसके इष्ट-पूर्तादि सब कर्म नाश हो जाते हैं। संन्यासी हो, विधवा हो, अथवा बालक ही क्यों न हो, ये वैष्णव होने पर कार्तिक में व्रत न करें तो वे नरक को अवश्य जाते हैं। अतः कार्तिक में स्नान दान ध्यान आदि नियमपूर्वक अवश्य करें। **कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी** को श्रीधन्वन्तरि भगवान् का पूजन करें। संध्या समय धर्मराज के निमित्त घृत दीपक प्रज्वलित करें। **कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी** को प्रातःकाल तैलाभ्यंग करके स्नान करें तथा रात्रि को दीप दान करें।

❀ कार्तिक अ**मावस्या दीपावली- उबटन प्रयोग-** चतुर्दशी, अमावस्या या प्रतिपदा में से किसी भी दिन प्रातःकाल में स्वाति नक्षत्र हो तो उबटन अवश्य लगावें, इससे शीतकाल तक स्वास्थ्य बना रहता है (ब्रह्मपुराण)। **सफेद रंग की प्रधानता-** पूजनकर्त्ता को श्वेत वस्त्र व सफेदमाला पहननी चाहिए- *सित वस्त्रोपशोभिना।।* सफेद चूने (सुधा) से दीवाल को लीपना चाहिए- *सुधाधवलिताकार्या पुष्पमालोपशोभिता।* दीपावली को प्रदोषकाल में भगवती लक्ष्मी, इन्द्र एवं कुबेर की पूजा व दीपोत्सव करें। लक्ष्मीपूजन में प्रदोषकाल मुख्य है और अर्धरात्रिकाल गौण है। **लक्ष्मी प्रार्थना मंत्र- नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात्।।** निर्णय सिन्धु के अनुसार पहले लक्ष्मी पूजन करे, बाद में दीप दान करे। ***प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा ततः क्रमात्। दीप वृक्षाश्च दातव्याः शक्त्या देवगृहेषु च।।*** चौराहे, नदी, पर्वत, वृक्ष, गृह, गोशाला तथा चबूतरा आदि सभी जगहों पर दीप जलाना चाहिए। कमल और पान के पत्ते की माला भगवती लक्ष्मी को अतिशय प्रिय है। लाजा, गुड़, मिष्ठान्न, मेवा, देवी को चढ़ाएं और प्रसाद खाएं। कार्तिक मास में आकाश दीपदान करने वाले को समस्त दानों का फल मधुसूदन देते हैं।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अक्टूबर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
8	18:32	20:08	22:03	00:17	02:37	04:54	07:09	09:28	11:47	13:52	15:37	17:06
9	18:28	20:04	21:59	00:13	02:34	04:50	07:05	09:24	11:43	13:48	15:33	17:02
10	18:24	20:00	21:55	00:09	02:30	04:46	07:01	09:20	11:39	13:44	15:29	16:58
11	18:20	19:56	21:51	00:05	02:26	04:42	06:57	09:16	11:35	13:40	15:25	16:54
12	18:16	19:52	21:47	00:02	02:22	04:38	06:53	09:12	11:31	13:36	15:21	16:50
13	18:12	19:48	21:43	23:58	02:18	04:34	06:49	09:08	11:27	13:32	15:17	16:46
14	18:08	19:44	21:39	23:54	02:14	04:30	06:45	09:04	11:23	13:28	15:13	16:42
15	18:04	19:40	21:35	23:50	02:10	04:26	06:41	09:00	11:19	13:25	15:09	16:38
16	18:00	19:36	21:32	23:46	02:06	04:22	06:37	08:56	11:15	13:21	15:05	16:34
17	17:56	19:32	21:28	23:42	02:02	04:18	06:34	08:52	11:11	13:17	15:01	16:30
18	17:52	19:28	21:24	23:38	01:58	04:14	06:30	08:48	11:07	13:13	14:57	16:26
19	17:48	19:24	21:20	23:34	01:54	04:10	06:26	08:44	11:03	13:09	14:53	16:22
20	17:44	19:20	21:16	23:30	01:50	04:07	06:22	08:41	10:59	13:05	14:49	16:18
21	17:40	19:16	21:12	23:26	01:46	04:03	06:18	08:37	10:55	13:01	14:45	16:14

अक्टूबर	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
8	**अमृत**·07:03 तक, **सिद्ध**· 07:03 से
9	**अमृत**·26:22 तक, **मृत्यु**· 26:22 से
10	**अमृत**·23:57 तक
11	**सर्वार्थ**·20:50 तक, **मृत्यु**·21:36 तक, **अमृत**·21:36 से
12	**मृत्यु**·19:22 तक, **रवियोगः**19:20 से
13	द·ति·17:22 से, **मृत्यु**·17:22 तक, **रवियोगः**18:03 तक
14	द·ति·15:38 तक, **सिद्ध**·15:38 तक
16	**सिद्ध**·13:19 तक
17	**सिद्ध**·12:50 तक, **मृत्यु**·12:50 से
18	द·ति·12:52 तक
19	**सर्वार्थ**·18:23 तक, **सिद्ध**·13:24 तक, **सर्वार्थ**·18:23 से
20	द·न·20:04 से, **अमृत**·14:27 से
21	**मृत्यु**·15:56 से

❀ दीपावली का समय– दीपावली में दीपप्रदीपन और लक्ष्मीपूजा के तीन काल महत्वपूर्ण हैं – प्रदोषकाल, वृष और सिंह लग्न। सूर्यास्त के एक घण्टा बारह मिनट बाद तक प्रदोषकाल श्रेष्ठ होता है। इसके तत्काल बाद वृषलग्न होता है और सिंहलग्न प्रायः ढलती रात में आता है।

❀ पूजन सामग्री– धूप, गोघृतदीप, नैवेद्य,ऋतुफल, वस्त्र, रोली, मिष्ठान्न, लाजा, पंचामृत, बिल्व पत्र, कमल, कनेर, जाती, चम्पा, जूही, मालती, पारिजात पुष्प, तुलसी आदि।

❀ हवन– दीपावली की रात्रि में आम, बेल, अनार की लकड़ी पर खीर, बेलफल, लाजा,कमलगट्टा, लोंग, इलायची, कमलपुष्प से हवन करने का अमोघ फल होता है। **श्रीसूक्त के मन्त्रों का पाठ–हवन चमत्कारी होता है।** बिल्ववृक्ष के **मूल** में बैठकर जो श्रीसूक्त का जप करता है एक वर्ष के भीतर सुखी, धनाढ्य, प्रभावशाली हो जाता है। **"श्रीम्"** एकाक्षर मन्त्र का जप हवनकर्ता समृद्ध, दानदाता हो जाता है।

कार्तिक शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 22 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 22:10:2025– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपश्चिमोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क
अक्टूबर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	अक्टूबर
22	1 बु	२८:०५	17:46	स्वाती	४५:०९	24:36	प्रीति	५३:३०	27:56	बव	17:46	बाल	30:33	28:07	6:32	17:48	तुला	अहोरात्र	धूम्र	22
23	2 गु	३३:१३	19:50	विशा·	५१:३६	27:12	आयु·	५४:५३	28:30	बाल	06:47	कौल	19:50	28:03	6:33	17:47	वृ·34:58	20:32	प्रवर्द्ध	23
24	3 शु	३८:३१	21:58	अनु·	५८:०५	29:48	सौभा·	५६:१५	29:04	तैति	03:54	गर	21:58	27:59	6:34	17:46	वृश्चिक	अहोरात्र	राक्षस	24
25	4 श	४३:३०	23:58	ज्ये·	६०:००	अहोरात्र	शोभ·	५७:१८	29:30	वणि	10:59	विष	23:58	27:56	6:34	17:45	वृश्चिक	अहोरात्र	मुसल	25
26	5 र	४७:४८	25:42	ज्ये·	०४:०७	08:14	अतिग·	५७:४८	29:42	बव	12:52	बाल	25:42	27:52	6:35	17:44	ध·04:07	08:14	काण	26
27	6 चं	५१:०७	27:03	मूल	०९:२५	10:22	सुकर्मा	५७:३०	29:36	कौल	14:26	तैति	27:03	27:48	6:36	17:43	धनु	अहोरात्र	लुम्ब	27
28	7 मं	५३:१७	27:55	पू·षा·	१३:४३	12:05	धृति	५६:१८	29:07	गर	15:32	वणि	27:55	27:44	6:36	17:42	म·29:37	18:27	मित्र	28
29	8 बु	५४:१०	28:17	उ·षा·	१६:५०	13:21	शूल	५४:०७	28:16	विष	16:09	बव	28:17	27:41	6:37	17:41	मकर	अहोरात्र	वज्र	29
30	9 गु	५३:४५	28:08	श्रवण	१८:४३	14:07	गण्ड	५०:५६	27:00	बाल	16:16	कौल	28:08	27:37	6:38	17:40	कु·49:12	26:18	ध्वज	30
31	10 शु	५२:०८	27:29	धनि·	१९:२१	14:23	वृद्धि	४६:४६	25:21	तैति	15:52	गर	27:29	27:33	6:38	17:40	कुंभ	अहोरात्र	धाता	31
नवम्बर	11 श	४९:२२	26:24	शत·	१८:५०	14:11	ध्रुव	४१:४३	23:20	वणि	14:59	विष	26:24	27:30	6:39	17:39	कुंभ	अहोरात्र	आनन्द	नवम्बर
2	12 र	४५:३८	24:55	पू·भा·	१७:१६	13:34	व्याघ·	३५:५२	21:00	बव	13:42	बाल	24:55	27:26	6:40	17:38	मी·02:45	07:45	सुस्थिर	2
3	13 चं	४१:०४	23:06	उ·भा·	१४:४९	12:36	हर्षण	२९:२०	18:24	कौल	12:02	तैति	23:06	27:22	6:40	17:37	मीन	अहोरात्र	गद	3
4	14 मं	३५:५१	21:02	रेवती	११:३८	11:20	वज्र	२२:१४	15:35	गर	10:05	वणि	21:02	27:19	6:41	17:37	मे·11:38	11:20	शुभ	4
5	15 बु	३०:११	18:46	अश्वि·	०७:५४	09:51	सिद्धि	१४:४४	12:35	विष	07:55	बव	18:46	27:15	6:42	17:36	मेष	अहोरात्र	मृत्यु	5

卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐

22 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 2025

दिनाङ्क	व्रत–पर्व–उत्सव
22	**श्रीगोवर्धन पूजा , अन्नकूटमहोत्सव, गौ क्रीडा, बलिराज पूजा,**
23	**भ्रातृ द्वितीया, भैया दूज, यम द्वितीया,** चित्रगुप्त पूजा
24	
25	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी,** छठ व्रतारम्भ नहाय खाय (बिहार)
26	**लाभ पंचमी,** श्रीसूर्यषष्ठी छठ व्रत द्वितीयदिन (खरना)
27	श्रीसूर्यषष्ठी छठ व्रतम् (सायंकालीन अर्घ्यदान)
28	अरुणोदये द्वितीयअर्घ्यदान, श्रीसूर्यषष्ठी छठ व्रतपारणा
29	**श्रीगोपाष्टमी, दुर्गाष्टमी, बुधाष्टमी**
30	**अक्षय नवमी, श्रीआँवला नवमी,** जगधात्री पूजा (बंगाल)
31	
नवम्बर	**श्रीदेवप्रबोधिनी एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त) , श्रीतुलसी विवाह**
2	**श्रीदेवप्रबोधिनी एकादशी (निम्बार्क) ,** चातुर्मास्य व्रत समाप्तिः
3	**प्रदोष व्रतम्,** श्रीराधावल्लभजी पाटोत्सव (वृन्दावन)
4	**श्रीवैकुण्ठचतुर्दशी व्रतम्,** श्रीकाशीविश्वनाथ प्रतिष्ठादिवस
5	**कार्तिक पूर्णिमा (व्रत–स्नान–दान) , देव दीपावली, भीष्मपंचक समाप्त**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	वक्री शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
अक्टूबर	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
22	1 बु	06:04:05:59	06:10:53:60	06:26:13:15	06:29:17:06	03:01:51:39	05:17:10:12	10:28:21:06	10:24:08:01	44:03:51	द·10:36:00	+16:19	07:05
23	2 गु	06:05:05:53	06:22:59:21	06:26:54:37	07:00:17:59	03:01:55:36	05:18:24:35	10:28:17:36	10:24:04:50	44:01:55	द·10:58:02	+16:29	07:59
24	3 शु	06:06:05:49	07:05:01:14	06:27:36:02	07:01:15:06	03:01:59:21	05:19:38:60	10:28:14:11	10:24:01:39	43:59:59	द·11:19:53	+16:38	08:53
25	4 श	06:07:05:48	07:17:03:33	06:28:17:30	07:02:08:11	03:02:02:54	05:20:53:27	10:28:10:51	10:23:58:28	43:58:05	द·11:41:35	+16:47	09:46
26	5 र	06:08:05:49	07:29:10:03	06:28:59:01	07:02:56:58	03:02:06:17	05:22:07:56	10:28:07:36	10:23:55:17	43:56:11	द·12:03:06	+16:54	10:39
27	6 चं	06:09:05:51	08:11:23:59	06:29:40:35	07:03:41:13	03:02:09:27	05:23:22:28	10:28:04:27	10:23:52:07	43:54:17	द·12:24:26	+17:01	11:29
28	7 मं	06:10:05:56	08:23:48:15	07:00:22:12	07:04:20:39	03:02:12:27	05:24:37:01	10:28:01:23	10:23:48:56	43:52:24	द·12:45:35	+17:08	12:17
29	8 बु	06:11:06:03	09:06:25:09	07:01:03:53	07:04:55:00	03:02:15:14	05:25:51:36	10:27:58:25	10:23:45:45	43:50:32	द·13:06:32	+17:13	13:03
30	9 गु	06:12:06:12	09:19:16:25	07:01:45:36	07:05:23:60	03:02:17:50	05:27:06:13	10:27:55:32	10:23:42:34	43:48:41	द·13:27:17	+17:18	13:44
31	10 शु	06:13:06:23	10:02:23:01	07:02:27:23	07:05:47:23	03:02:20:13	05:28:20:53	10:27:52:45	10:23:39:23	43:46:50	द·13:47:49	+17:22	14:25
नवम्बर	11 श	06:14:06:37	10:15:45:10	07:03:09:12	07:06:04:56	03:02:22:25	05:29:35:34	10:27:50:03	10:23:36:12	43:45:01	द·14:08:08	+17:25	15:01
2	12 र	06:15:06:52	10:29:22:19	07:03:51:05	07:06:16:26	03:02:24:25	06:00:50:17	10:27:47:27	10:23:33:02	43:43:12	द·14:28:13	+17:27	15:37
3	13 चं	06:16:07:09	11:13:13:10	07:04:33:01	वक्री 06:21:43	03:02:26:13	06:02:05:02	10:27:44:58	10:23:29:51	43:41:24	द·14:48:05	+17:28	16:15
4	14 मं	06:17:07:28	11:27:15:43	07:05:15:00	07:06:20:41	03:02:27:49	06:03:19:49	10:27:42:34	10:23:26:40	43:39:37	द·15:07:42	+17:29	16:53
5	15 बु	06:18:07:49	00:11:27:23	07:05:57:02	07:06:13:16	03:02:29:13	06:04:34:38	10:27:40:16	10:23:23:29	43:37:52	द·15:27:05	+17:29	17:36

25 अक्टूबर सूर्योदयकालीन तिथि:4

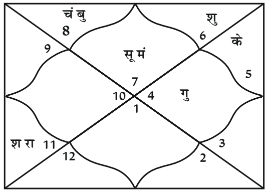

1 नवम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:11

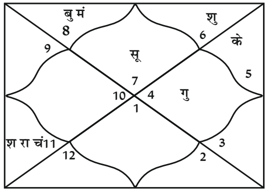

कार्तिक शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 22 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 2025 ईस्वी

पक्षान्तः– कालः उत्तर । ऋतुः शरद । दक्षिणायनं । यास्यगोलः । ति·15 अयनांशः 22:53:02

दिनाङ्क अक्टूबर	तिथि वार	卐 व्रत-पर्वोत्सव भद्रादिविचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
22	1 बु	जैन नवसंवत् 2552 आरम्भः, वृश्चिकेबुधः घं·23:26 , मार्गपाली।
23	2 गु	**कलमदान पूजा**, विश्वकर्मा पूजा, यमुना स्नान।
24	3 शु	स्वात्यांरविः घं·20:16।
25	4 श	**भद्रा 11:00–23:59 घं·, गण्डान्तारम्भः 25:39।**
26	5 र	**गण्डान्तः14:48**, सौभाग्यपञ्चमी, पाण्डव पंचमी, ज्ञान पंचमी (जैन), अनुराधायांबुधः घं·18:54।
27	6 चं	चित्रायांशुक्रः घं·05:57, वृश्चिकेमङ्गलः घं·17:56।
28	7 मं	**भद्रारंभः 27:55 घं·**, कल्पादि, श्रीकार्तवीर्यसहस्रार्जुन जयन्ती।
29	8 बु	**भद्रांतः16:10 घं·, अभिजितः 07:05–15:01 घं·।**
30	9 गु	**पंचकारंभः 26:18**, कृतयुगादि, कूष्माण्ड नवमी, रंगनाथ जयन्ती।
31	10 शु	**पंचक।**
नवम्बर	11 श	**पंचक, भद्रा 15:00–26:24, भीष्मपंचक आरम्भ**, तुलायांशुक्रः14:38, अनुराधायांमङ्गलः12:59।
2	12 र	गरुड़ द्वादशी, तमस·मन्वादि।
3	13 चं	**गण्डान्तारम्भः 29:41**, वक्री बुधः घं·06:44।
4	14 मं	**पंचकान्तः11:21, भद्रारंभः21:02 घं·, गण्डान्तः16:59 घं·, त्रिपुरोत्सव**, चौमासी चौदस जैन।
5	15 बु	**भद्रांतः07:56 घं·, सत्यनारायण पूर्णिमा, आद्य श्रीमद्भगवन् निम्बार्काचार्य जयन्ती, कार्तिकेय जयन्ती**, कार्तिक स्नान समाप्तिः, व्यतीपात पुण्यम्, औत्तम·मन्वादि, गुरुनानक जयन्ती।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
1	11:47–13:15
15	11:49–13:14

❀ कार्तिक मास कृत्य ❀

❀ **यमद्वितीया**- कार्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन यमद्वितीया होती है। आज के दिन यमुना जी में स्नान कर यम का पूजन करने से यमलोक का दर्शन नहीं होता है। आज बहन का सत्कार करना चाहिए।

❀ **सूर्यषष्ठी (छठ व्रत)**- षष्ठी तिथि में सायं सूर्यार्घ्य दान तथा सप्तमी तिथि में उदित सूर्य को अर्घ्य दान देकर पारणा की जाती है। यह व्रत त्रिदिनात्मक होता है। बिहार में यह प्रमुख पर्व है।

❀ **कार्तिक शुक्ल नवमी** - धात्री नवमी को आंवला वृक्ष की छाया में बैठकर भोजन करे, आंवला वृक्षारोपण करे। ''पीपल और आंवले को अगल बगल लगावे, बड़े हो जाने पर पीपल से धात्री का विवाह करे। इससे वही पुण्य होता है जो श्री तुलसी शालग्राम विवाह कराने का होता है।''-व्रतराज

❀ **कार्तिक शुक्ल प्रबोधिनी एकादशी**- रात्रि में स्नानादि करके शयन करते हुए भगवान् श्रीहरि का अभिषेक कर, नृत्य-गीत-वाद्य और पुरुषसूक्त व विष्णुस्तोत्रों से भगवान् को जगावे। **उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविंद उत्तिष्ठ गरुडध्वज। उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मंगलं कुरु।।** आज श्रीविष्णु एवं तुलसीजी का विवाह सम्पन्न करे।

❀ **भीष्मपंचक (पचभीकम)** - यह व्रत प्रबोधिनी एकादशी से पूर्णिमा तक होता है। गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्यादि से लक्ष्मीनारायण का पूजन करके पाँच दिन तक निराहार, फलाहार, एकभुक्त, या नक्त व्रत करे। पूजन में सामान्य पूजा के सिवा- पहले दिन भगवान् के हृदय का कमल पुष्पों से, दूसरे दिन कटिप्रदेश का बिल्वपत्रों से, तीसरे दिन घुटनों का केतकी (केवड़े) पुष्पों से, चौथे दिन चरणों का चमेली पुष्पों से और पाँचवें दिन सम्पूर्ण अंग का तुलसी की मंजरियों से पूजन करे। नित्यप्रति *'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'* के सौ, हजार या यथाशक्ति जप करे और व्रतान्त में पारणा के समय ब्राह्मणदम्पति को भोजन कराकर स्वयं भोजन करे।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अक्टूबर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
22	17:36	19:12	21:08	23:22	01:42	03:59	06:14	08:33	10:51	12:57	14:41	16:10
23	17:32	19:08	21:04	23:18	01:38	03:55	06:10	08:29	10:48	12:53	14:37	16:06
24	17:28	19:04	21:00	23:14	01:34	03:51	06:06	08:25	10:44	12:49	14:33	16:03
25	17:24	19:00	20:56	23:10	01:30	03:47	06:02	08:21	10:40	12:45	14:29	15:59
26	17:21	18:56	20:52	23:06	01:26	03:43	05:58	08:17	10:36	12:41	14:26	15:55
27	17:17	18:53	20:48	23:02	01:22	03:39	05:54	08:13	10:32	12:37	14:22	15:51
28	17:13	18:49	20:44	22:58	01:19	03:35	05:50	08:09	10:28	12:33	14:18	15:47
29	17:09	18:45	20:40	22:54	01:15	03:31	05:46	08:05	10:24	12:29	14:14	15:43
30	17:05	18:41	20:36	22:50	01:11	03:27	05:42	08:01	10:20	12:25	14:10	15:39
31	17:01	18:37	20:32	22:46	01:07	03:23	05:38	07:57	10:16	12:21	14:06	15:35
नवम्बर	16:57	18:33	20:28	22:43	01:03	03:19	05:34	07:53	10:12	12:17	14:02	15:31
2	16:53	18:29	20:24	22:39	00:59	03:15	05:30	07:49	10:08	12:13	13:58	15:27
3	16:49	18:25	20:20	22:35	00:55	03:11	05:26	07:45	10:04	12:09	13:54	15:23
4	16:45	18:21	20:16	22:31	00:51	03:07	05:22	07:41	10:00	12:05	13:50	15:19
5	16:41	18:17	20:13	22:27	00:47	03:03	05:18	07:37	09:56	12:01	13:46	15:15

नवम्बर	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
22	**अमृत**·17:46 तक, **सिद्ध**·17:46 से
23	**अमृत**·19:50 से, **सर्वार्थ**·27:12 से, **रवियोग**:27:12 से
24	**सर्वार्थ**· 29:48 तक, **अमृत**· 21:58 से, **रवियोग**: अहोरात्र
25	**सिद्ध**·23:58 तक, **रवियोग**: अहोरात्र, **मृत्यु**·23:58 से
26	**अमृत**·25:42 तक,**रवियोग**:08:14 तक,**सर्वार्थ**·08:14 से
27	**सिद्ध**·27:03 तक, **रवियोग**:10:22 से, **मृत्यु**·27:03 से
28	**अमृत**·27:55 तक, **रवियोग**:12:05 तक, **त्रिपुष्कर**:12:05 से 27:55 तक, **सिद्ध**·27:55 से
30	**मृत्यु**·28:08 तक, **रवियोग**:14:07 से, **सिद्ध**·28:08 से
31	**रवियोग**:14:23 तक, रवियोग:14:23 से, **सिद्ध**·27:29 से
1	**द·ति**·26:24 से, **अमृत**·26:24 तक, **रवियोग**:14:11 तक **त्रिपुष्कर**:26:24 से
2	**द·ति**·24:55 तक, **त्रिपुष्कर**:13:34 तक, **सर्वार्थ**·13:34 से, **सिद्ध**·24:55 से
3	**रवियोग**:12:36 से
4	**रवियोग**:11:20 तक, **सर्वार्थ**·11:20 से
5	**अमृत**·18:46 से

जो पाप आदि अपकर्म से तार दे उसे तीर्थ कहते हैं– तारयति पापादिकेभ्यः। जहाँ जाने, दर्शन करने से लौकिक-पारलौकिक दुःखोंसे मुक्ति मिलती हो उसे तीर्थ कहते हैं। गुरु, ऋषि की तप-स्थली, जल-प्रवाह और पवित्र क्षेत्र का सम्मिलन तीर्थ कहलाता है। भक्त, गुरु, माता-पिता, पति-पत्नी यह छह भी तीर्थ हैं। गुरु ज्ञान मूर्ति होने से तीर्थ होते हैं।

तीर्थ भेद– तपस्वी ब्राह्मण चलता फिरता जंगम तीर्थ है। पवित्र भाव मानस तीर्थ हैं। पृथ्वी पर विद्यमान पूज्यस्थल भौम तीर्थ हैं।

तीर्थ यात्रा का फल– भगवान परशुराम जी ने अपने तेज हरण के बाद तीर्थ यात्रा कर पुनः सभी लोकों को प्राप्त कर लिया।

तीर्थ यात्रा तप है पिकनिक नहीं– बिना जूता चप्पल पहने पैदल, उपवास पूर्वक, स्नान करके तीर्थदर्शन से अपूर्व फल की प्राप्ति होती है। तीर्थ में किया पाप वज्रलेप हो जाता है।

मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 6 नवम्बर से 20 नवम्बर, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 6:11:2025– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपश्चिमास्तः, वक्री बुधःपश्चिमोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	✠ व्रत–पर्व–उत्सव ✠
नवम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	नवम्बर	6 नवम्बर से 20 नवम्बर, 2025
6	1 गु	२४:१५	16:25	भरणी कृत्ति·	०३:५० ५५:४९	08:14 30:34	व्यति· वरी·	०६:५८ ५२:०९	09:29 29:05	कौल	16:25	तैति	27:12	27:12	6:42	17:35	वृ·17:48	13:49	पद्म	6	**कार्तिकमास व्रत पारणा**
7	2 शु	१८:१५	14:01	रोहि·	५५:३१	28:55	परिघ	५१:१८	27:14	गर	14:01	वणि	24:50	27:08	6:43	17:35	वृष	अहोरात्र	मित्र	7	अशून्य शयन व्रत
8	3 श	१२:२५	11:42	मृग·	५१:४०	27:24	शिव	४३:४२	24:13	विष	11:42	बव	22:35	27:05	6:44	17:34	मि·23:32	16:09	वज्र	8	संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·20:09
9	4 र	०६:५५	09:31	आर्द्रा	४८:१८	26:04	सिद्ध	३६:२९	21:20	बाल	09:31	कौल	20:30	27:01	6:45	17:33	मिथुन	अहोरात्र	ध्वांक्ष	9	
10	5 चं 6 चं	०१:५९ ५५:४९	07:33 29:53	पुन·	४५:३७	25:00	साध्य	२९:४६	18:40	तैति	07:33	गर	18:39	26:58	6:45	17:33	क·31:13	19:14	धूम्र	10	सुविधानाथ जयन्ती, दीक्षा दिवस (जैन)
11	7 मं	५४:२८	28:33	पुष्य	४३:४७	24:17	शुभ	२३:४२	16:15	विष	17:33	बव	28:33	26:55	6:46	17:32	कर्क	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	11	
12	8 बु	५२:१२	27:39	आश्ले·	४२:५६	23:57	शुक्ल	१८:२५	14:09	बाल	16:03	कौल	27:39	26:52	6:47	17:32	सिं·42:56	23:57	राक्षस	12	**श्रीकालभैरवाष्टमी, श्री कालाष्टमी, बुधाष्टमी**
13	9 गु	५१:०६	27:14	मघा	४३:१४	24:05	ब्रह्म	१३:५९	12:23	तैति	15:23	गर	27:14	26:48	6:48	17:31	सिंह	अहोरात्र	मुसल	13	श्री जम्भेश्वर पुण्य दिवस (विश्नोई)
14	10 शु	५१:१७	27:19	पू·फा·	४४:४४	24:42	ऐन्द्र	१०:३०	11:01	वणि	15:12	विष	27:19	26:45	6:48	17:31	सिंह	अहोरात्र	सिद्धि	14	महावीर स्वामी तपकल्याणक दिवस (जैन)
15	11 श	५२:४६	27:56	उ·फा·	४७:३०	25:49	वैधृ·	०८:०१	10:02	बव	15:33	बाल	27:56	26:42	6:49	17:30	कं·00:17	06:56	उत्पात	15	**श्रीउत्पन्ना एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त)**
16	12 र	५५:२९	29:02	हस्त	५१:२८	27:25	विष्कु·	०६:३२	09:27	कौल	16:25	तैति	29:02	26:39	6:50	17:30	कन्या	अहोरात्र	मानस	16	**श्रीउत्पन्ना एकादशी (निम्बार्क)**
17	13 चं	५९:१९	30:34	चित्रा	५६:३०	29:27	प्रीति	०५:५७	09:14	गर	17:45	वणि	30:34	26:36	6:51	17:29	तु·23:51	16:23	मुद्गर	17	**प्रदोष व्रतम्, संक्रान्ति पुण्यकालं 06:51–12:10**
18	14 मं	६०:००	अहोरात्र	स्वाती	६०:००	अहोरात्र	आयु·	०६:१२	09:20	विष	19:30	बव	60:00	26:33	6:52	17:29	तुला	अहोरात्र	ध्वज	18	**मासशिवरात्रि व्रतम्, संत ज्ञानेश्वर पुण्यतिथि**
19	14 बु	०४:०१	08:29	स्वाती	०२:२२	07:49	सौभा·	०७:०४	09:42	शकु	08:29	चतु	31:30	26:30	6:52	17:29	वृ·52:09	27:44	धूम्र	19	**अमावस्या (पितृकार्य)**
20	30 गु	०९:१६	10:35	विशा·	०८:४६	10:23	शोभ·	०८:२०	10:13	नाग	10:35	किं	23:40	26:27	6:53	17:28	वृश्चिक	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	20	**अमावस्या (देवकार्य)**

✳ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ✳

दिनाङ्क नवम्बर	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	वक्री बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मिःसे	चन्द्रोदयः
6	1 गु	06:19:08:12	00:25:45:06	07:06:39:08	07:05:59:32	03:02:30:25	06:05:49:29	10:27:38:05	10:23:20:18	43:36:07	द·15:46:12	+17:27	18:21
7	2 शु	06:20:08:37	01:10:05:26	07:07:21:16	07:05:39:36	03:02:31:25	06:07:04:22	10:27:35:60	10:23:17:07	43:34:23	द·16:05:04	+17:25	19:14
8	3 श	06:21:09:04	01:24:24:25	07:08:03:28	07:05:13:43	03:02:32:12	06:08:19:16	10:27:34:00	10:23:13:57	43:32:41	द·16:23:40	+17:22	20:09
9	4 र	06:22:09:32	02:08:38:26	07:08:45:43	07:04:42:14	03:02:32:47	06:09:34:13	10:27:32:08	10:23:10:46	43:30:59	द·16:41:59	+17:19	21:10
10	5 चं	06:23:10:03	02:22:44:19	07:09:28:01	07:04:05:40	03:02:33:10	06:10:49:11	10:27:30:21	10:23:07:35	43:29:19	द·17:00:02	+17:14	22:12
11	7 मं	06:24:10:35	03:06:39:16	07:10:10:23	07:03:24:37	03:02:33:21	06:12:04:11	10:27:28:41	10:23:04:24	43:27:40	द·17:17:47	+17:08	23:14
12	8 बु	06:25:11:09	03:20:21:07	07:10:52:47	07:02:39:50	03:02:33:20	06:13:19:13	10:27:27:08	10:23:01:13	43:26:03	द·17:35:14	+17:02	24:16
13	9 गु	06:26:11:45	04:03:48:19	07:11:35:15	07:01:52:10	वक्री 02:33:06	06:14:34:16	10:27:25:41	10:22:58:02	43:24:27	द·17:52:23	+16:54	25:15
14	10 शु	06:27:12:22	04:17:00:03	07:12:17:46	07:01:02:34	03:02:32:40	06:15:49:22	10:27:24:21	10:22:54:52	43:22:52	द·18:09:14	+16:46	26:12
15	11 श	06:28:13:01	04:29:56:17	07:13:00:20	07:00:12:04	03:02:32:01	06:17:04:29	10:27:23:07	10:22:51:41	43:21:19	द·18:25:45	+16:37	27:07
16	12 र	06:29:13:42	05:12:37:45	07:13:42:58	06:29:21:52	03:02:31:11	06:18:19:37	10:27:21:60	10:22:48:30	43:19:47	द·18:41:58	+16:26	28:02
17	13 चं	07:00:14:25	05:25:05:55	07:14:25:39	06:28:33:05	03:02:30:08	06:19:34:48	10:27:20:59	10:22:45:19	43:18:18	द·18:57:50	+16:15	28:55
18	14 मं	07:01:15:09	06:07:22:55	07:15:08:23	06:27:46:42	03:02:28:53	06:20:49:60	10:27:20:06	10:22:42:08	43:16:49	द·19:13:22	+16:03	29:50
19	14 बु	07:02:15:55	06:19:31:27	07:15:51:10	06:27:03:37	03:02:27:26	06:22:05:14	10:27:19:19	10:22:38:57	43:15:23	द·19:28:34	+15:51	30:44
20	30 गु	07:03:16:42	07:01:34:41	07:16:34:01	06:26:24:39	03:02:25:46	06:23:20:29	10:27:18:39	10:22:35:47	43:13:58	द·19:43:25	+15:37	07:37

9 नवम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः4

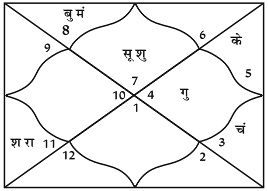

15 नवम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः11

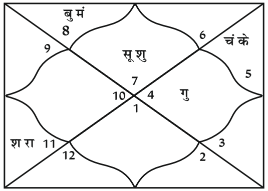

मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 6 नवम्बर से 20 नवम्बर, 2025 ईस्वी

पक्षान्तः– कालः पूर्व । ऋतुःशरद वृश्चिकार्कतः ऋतुःहेमन्त । दक्षिणायनं । याम्यगोलः । ति·30 अयनांशाः 22:53:4

दिनाङ्क नवम्बर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
6	1 गु	स्वात्यांशुक्रः घं·23:03।
7	2 शु	**भद्रारंभः 24:51 घं·**, विशाखायांरविः घं·03:19।
8	3 श	**भद्रांतः11:42 घं·**, सौभाग्य सुन्दरी व्रत।
9	4 र	।
10	5 चं 6 चं	**भद्रारंभः 29:53 घं·।**
11	7 मं	**भद्रांतः17:10 घं·**, विशाखायांबुधः घं·09:28।
12	8 बु	**गण्डान्तः18:00–29:57।**
13	9 गु	अनलानवमी (उड़ीसा), अन्वष्टका श्राद्ध, वक्री गुरुःघं·06:37।
14	10 शु	**भद्रा 15:13–27:20 घं·।**
15	11 श	वैधृति पुण्यम्, तुलायांबुधः घं·12:40।
16	12 र	।
17	13 चं	**भद्रारंभः 30:35 घं·**, वृश्चिकेरविः घं·01:09, विशाखायांशुक्रः घं·15:01।
18	14 मं	**भद्रांतः19:30 घं·।**
19	14 बु	।
20	30 गु	अनुराधायांरविः घं·08:12, ज्येष्ठायांमङ्गलः घं·10:20।

ति	**श्राद्धकाल** घं·मि·
1	11:49–13:14
30	11:54–13:17

✻ मार्गशीर्ष मास कृत्य ✻

इसके नाम से ही सिद्ध होता है कि यह मासों में शीर्ष पर स्थित होने के कारण अग्रणी एवं महत्त्वपूर्ण है। ***तत्रादौ मार्गशीर्षे तु प्रभातस्नानपूर्वकम्। पूजयेद्राधिकाकृष्णौ भक्त्या परमया सुधीः।। (वाराहपुराण)*** मार्गशीर्ष मास में प्रभातकाल में स्नानादिपूर्वक परम अनन्य भक्ति के साथ श्रीराधाकृष्ण की समर्चना करें।

✻ आठ-महाद्वादशी ✻

उन्मीलिनी, वञ्जुलिनी, त्रिस्पर्शा, पक्षवर्धिनी, जया, विजया, जयन्ती और **पापनाशिनी ये आठ महाद्वादशियां पुण्यप्रद हैं** और सम्पूर्ण पापों को हरण करने वाली हैं। *उन्मीलिनी वञ्जुलिनी त्रिस्पर्शा पक्षवर्द्धिनी। जया च विजया चैव जयन्ती पापनाशिनी।। द्वादश्योऽष्टौ महापुण्याः सर्वपापहरा द्विज।। (ब्रह्मवैवर्त)* इनका योग जानने का क्रम निम्नप्रकार से हैं –

1.जैसे एकादशी पूर्ण हो दूसरे दिन भी कुछ एकादशी हो, तो वह महाद्वादशी '**उन्मीलिनी**' कहलाती है।

2.एकादशी तथा द्वादशी सम्पूर्ण हो और फिर त्रयोदशी को भी कुछ अवशिष्ट हो, तो '**वञ्जुलिनी**' महाद्वादशी होती है।

3.प्रातःकाल एकादशी हो फिर द्वादशी का क्षय होकर रात्रि शेष में त्रयोदशी हो, तो वह महाद्वादशी '**त्रिस्पर्शा** होती है।

4.अमावस्या या पूर्णिमा तिथि यदि दो हो जाय तो वह महाद्वादशी '**पक्षवर्द्धिनी**' नाम से कही जाती है।

5.किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी यदि पुनर्वसु नक्षत्र से युक्त हो तो वह '**जया**' नाम महाद्वादशी होती है।

6.किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी यदि श्रवण नक्षत्र से युक्त हो तो वह '**विजया**' नाम की महाद्वादशी होती है।

7.किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी रोहिणी नक्षत्र से युक्त हो, तो वह '**जयन्ती**' नाम की महाद्वादशी कहलाती है।

8.किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी पुष्य नक्षत्र से युक्त हो तो वह '**पापनाशिनी**' महाद्वादशी कहलाती है।

अतः इन आठों महाद्वादशियों में से किसी का भी योग आ जावे तो शुद्धा वेध रहित एकादशी को भी छोड़कर महाद्वादशी में व्रत करना चाहिये।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

नवम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
6	16:37	18:13	20:09	22:23	00:43	02:59	05:14	07:33	09:52	11:57	13:42	15:11
7	16:33	18:09	20:05	22:19	00:39	02:55	05:10	07:29	09:48	11:54	13:38	15:07
8	16:29	18:05	20:01	22:15	00:35	02:52	05:06	07:25	09:44	11:50	13:34	15:03
9	16:25	18:01	19:57	22:11	00:31	02:48	05:03	07:21	09:40	11:46	13:30	14:59
10	16:21	17:57	19:53	22:07	00:27	02:44	04:59	07:17	09:36	11:42	13:26	14:55
11	16:17	17:53	19:49	22:03	00:23	02:40	04:55	07:13	09:32	11:38	13:22	14:51
12	16:13	17:49	19:45	21:59	00:19	02:36	04:51	07:09	09:28	11:34	13:18	14:47
13	16:09	17:45	19:41	21:55	00:15	02:32	04:47	07:05	09:24	11:30	13:14	14:43
14	16:05	17:41	19:37	21:51	00:11	02:28	04:43	07:01	09:20	11:26	13:10	14:39
15	16:01	17:37	19:33	21:47	00:07	02:24	04:39	06:58	09:16	11:22	13:06	14:35
16	15:57	17:33	19:29	21:43	00:03	02:20	04:35	06:54	09:12	11:18	13:02	14:32
17	15:53	17:29	19:25	21:39	23:59	02:16	04:31	06:50	09:09	11:14	12:58	14:28
18	15:50	17:26	19:21	21:35	23:56	02:12	04:27	06:46	09:05	11:10	12:54	14:24
19	15:46	17:22	19:17	21:31	23:52	02:08	04:23	06:42	09:01	11:06	12:51	14:20
20	15:42	17:18	19:13	21:27	23:48	02:04	04:19	06:38	08:57	11:02	12:47	14:16

नव·	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
7	**मृत्यु**·14:01 तक
8	**सिद्ध**·11:42 से
9	**अमृत**·09:31 से
10	**अमृत**· 07:33 तक, **सिद्ध**· 07:33 से, **सर्वार्थ**· 25:00 तक, **रवियोगः** 25:00 से
11	**अमृत**·28:33 तक, **रवियोगः** 24:17 तक, **सर्वार्थ**· 24:17 से, **सिद्ध**· 28:33 से
12	**मृत्यु**·27:39 तक
13	**मृत्यु**·27:14 तक, **सिद्ध**·27:14 से
14	**सिद्ध**·27:19 से
15	**द·ति**·27:56 से, **अमृत**·27:56 तक
16	**द·ति**·29:02 तक, **सर्वार्थ**·27:25 तक **द्विपुष्कर**·27:25 से 29:02 तक, **सिद्ध**·29:02 से
20	**सिद्ध**·10:35 तक, **सर्वार्थ**·10:23 से

✻ **व्रत के भेद–** व्रत के तीन भेद होते हैं, 1· एकभुक्त व्रत, 2·नक्तव्रत और 3·अयाचितव्रत।

✻ **एकभुक्त व्रत–** में रात्रि में उपवास कर दूसरे दिन दोपहर बाद पारणा करते हैं– *मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या एकभुक्ते सदा तिथिः।*

✻ **नक्तव्रत–** दिन में उपवास रहकर रात्रि में पारणा करते हैं। इसमें प्रदोष में पारणा की जाती है– *प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या तिथिः नक्तव्रते सदा।*

✻ **अयाचित व्रत–** बिना मांगे जो कुछ मिल जाये उसे खाकर रहना, न मिले तो नहीं खाना अयाचित व्रत कहलाता है। दूसरों से प्राप्त व्रत भी अयाचित कहलाता है। इसमें केवल उपवास होता है पूजन गौण होता है।

✻ **व्रत निषेध–** अधिक मास, क्षय मास, गुरु, शुक्र के अस्त होने पर नया व्रत आरम्भ नहीं करते हैं न ही उद्यापन करते हैं।

✻ **व्रत में ग्राह्य–** सावा, नीवार, सिंघाड़ा, तिल, कंद, आलू, केला, नारियल, हरड़, पिपली, आवंला, गन्ना रस हमेशा व्रत में ग्राह्य होता है।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 21 नवम्बर से 4 दिसम्बर, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 21:11:2025– वक्री गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपश्चिमास्तः, वक्री बुधःपश्चिमास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	✠ व्रत–पर्व–उत्सव ✠
नवम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	नव·	21 नवम्बर से 4 दिसम्बर, 2025
21	1 शु	१४:३९	12:45	अनु·	१५:१७	13:01	अतिग·	०९:४१	10:46	बव	12:45	बाल	25:48	26:25	6:54	17:28	वृश्चिक	अहोरात्र	राक्षस	21	भैरव षट्रात्र उत्सव आरम्भ (महाराष्ट्र)
22	2 श	१९:४१	14:47	ज्ये·	२१:२९	15:30	सुकर्मा	१०:४९	11:14	कौल	14:47	तैति	27:42	26:22	6:55	17:28	ध·21:29	15:30	मुसल	22	
23	3 र	२४:०२	16:32	मूल	२७:००	17:44	धृति	११:२७	11:30	गर	16:32	वणि	29:15	26:19	6:55	17:27	धनु	अहोरात्र	सिद्धि	23	**रम्भा तृतीया**
24	4 चं	२७:२३	17:54	पू·षा·	३१:३३	19:34	शूल	११:२२	11:29	विष	17:54	बव	30:23	26:17	6:56	17:27	म·47:31	25:57	उत्पात	24	**अंगारकी वैनायकी गणेश चतुर्थी**
25	5 मं	२९:३३	18:46	उ·षा·	३४:५८	20:56	गण्ड	१०:२४	11:07	बाल	18:46	कौल	30:58	26:14	6:57	17:27	मकर	अहोरात्र	मानस	25	**विवाह पञ्चमी, श्री सीताराम विवाहोत्सव**
26	6 बु	३०:२६	19:08	श्रवण	३७:०९	21:49	वृद्धि	०८:२९	10:22	कौल	07:01	तैति	19:08	26:12	6:58	17:27	मकर	अहोरात्र	छत्र	26	चम्पा षष्ठी, अन्नपूर्णा व्रतारम्भ, **श्री स्कन्दषष्ठी**
27	7 गु	३०:०२	18:59	धनि·	३८:०५	22:13	ध्रुव	०५:३४	09:12	गर	07:08	वणि	18:59	26:09	6:59	17:27	कु·07:45	10:05	श्रीवत्स	27	विष्णुसप्तमी, त्रितयसप्तमी, नन्दासप्तमी
28	8 शु	२८:२४	18:21	शत·	३७:४९	22:07	व्याघ· हर्षण	०१:४१ ५५:१२	07:40 29:45	बव	18:21	बाल	29:50	26:07	6:59	17:27	कुंभ	अहोरात्र	सौम्य	28	**श्री दुर्गाष्टमी,**
29	9 श	२५:३८	17:16	पू·भा·	३६:३०	21:36	वज्र	५१:१४	27:30	कौल	17:16	तैति	28:33	26:05	7:00	17:26	मी·21:55	15:46	कालदंड	29	महानन्दा नवमी, कल्पादि
30	10 र	२१:५५	15:47	उ·भा·	३४:१५	20:43	सिद्धि	४४:५२	24:58	गर	15:47	वणि	26:54	26:03	7:01	17:26	मीन	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	30	
दिसम्बर	11 चं	१७:२२	13:59	रेवती	३१:१३	19:31	व्यति·	३७:५५	22:12	विष	13:59	बव	24:58	26:01	7:02	17:26	मे·31:13	19:31	मातङ्ग	दिस·	**मोक्षदा एकादशी (सर्वेषाम्), श्री गीता जयन्ती,** व्यतीपात पुण्यम्
2	12 मं	१२:११	11:55	अश्वि·	२७:३७	18:06	वरी·	३०:३०	19:15	बाल	11:55	कौल	22:49	25:59	7:03	17:26	मेष	अहोरात्र	अमृत	2	**प्रदोष व्रतम्, व्यञ्जन द्वादशी**
3	13 बु	०६:३३	09:41	भरणी	२३:३८	16:30	परिघ	२२:४६	16:10	तैति	09:41	गर	20:30	25:57	7:03	17:26	वृ·37:36	22:06	काण	3	① श्री त्रिपुरभैरवी जयन्ती, श्री अन्नपूर्णा जयन्ती
4	14 गु 15 गु	००:४० ५४:०५	07:20 28:58	कृत्ति·	१९:२६	14:51	शिव	१४:५३	13:01	वणि	07:20	विष	18:08	25:55	7:04	17:26	वृष	अहोरात्र	लुम्ब	4	**पूर्णिमा (व्रत–स्नान–दान), श्री दत्तात्रेय जयन्ती (प्रदोषे)** ①

✱ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ✱

दिनाङ्क नवम्बर	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	वक्री बुधः रा अं क वि	वक्री गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
21	1 शु	07:04:17:31	07:13:36:09	07:17:16:55	06:25:50:29	03:02:23:55	06:24:35:46	10:27:18:05	10:22:32:36	43:12:35	द·19:57:54	+15:22	07:38
22	2 श	07:05:18:21	07:25:39:50	07:17:59:52	06:25:21:39	03:02:21:52	06:25:51:05	10:27:17:39	10:22:29:25	43:11:14	द·20:12:01	+15:07	08:31
23	3 र	07:06:19:13	08:07:49:15	07:18:42:53	06:24:58:37	03:02:19:36	06:27:06:25	10:27:17:19	10:22:26:14	43:09:54	द·20:25:46	+14:51	09:24
24	4 चं	07:07:20:07	08:20:07:27	07:19:25:56	06:24:41:40	03:02:17:09	06:28:21:47	10:27:17:06	10:22:23:03	43:08:37	द·20:39:09	+14:33	10:11
25	5 मं	07:08:21:01	09:02:37:07	07:20:09:04	06:24:30:59	03:02:14:30	06:29:37:10	10:27:16:60	10:22:19:53	43:07:22	द·20:52:08	+14:15	10:59
26	6 बु	07:09:21:58	09:15:20:17	07:20:52:14	06:24:26:40	03:02:11:39	07:00:52:35	10:27:17:01	10:22:16:42	43:06:09	द·21:04:45	+13:57	11:40
27	7 गु	07:10:22:55	09:28:18:21	07:21:35:28	06:24:28:41	03:02:08:36	07:02:08:01	10:27:17:08	10:22:13:31	43:04:58	द·21:16:57	+13:37	12:21
28	8 शु	07:11:23:54	10:11:31:56	07:22:18:46	06:24:36:58	03:02:05:22	07:03:23:29	10:27:17:23	10:22:10:20	43:03:49	द·21:28:46	+13:17	12:59
29	9 श	07:12:24:54	10:25:00:54	07:23:02:06	06:24:51:22	03:02:01:57	07:04:38:58	10:27:17:44	10:22:07:09	43:02:43	द·21:40:10	+12:56	13:35
30	10 र	07:13:25:55	11:08:44:20	07:23:45:30	06:25:11:42	03:01:58:20	07:05:54:28	10:27:18:12	10:22:03:59	43:01:39	द·21:51:09	+12:34	14:12
दिसम्बर	11 चं	07:14:26:58	11:22:40:38	07:24:28:58	06:25:37:44	03:01:54:32	07:07:10:00	10:27:18:47	10:22:00:48	43:00:37	द·22:01:44	+12:11	15:29
2	12 मं	07:15:28:02	00:06:47:31	07:25:12:29	06:26:09:13	03:01:50:33	07:08:25:34	10:27:19:29	10:21:57:37	42:59:38	द·22:11:53	+11:48	15:30
3	13 बु	07:16:29:07	00:21:02:09	07:25:56:03	06:26:45:54	03:01:46:22	07:09:41:08	10:27:20:18	10:21:54:26	42:58:41	द·22:21:36	+11:24	16:15
4	14 गु	07:17:30:13	01:05:21:19	07:26:39:40	06:27:27:30	03:01:42:02	07:10:56:44	10:27:21:13	10:21:51:15	42:57:46	द·22:30:54	+10:59	17:04

24 नवम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः4

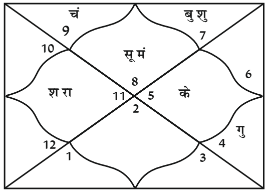

1 दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः11

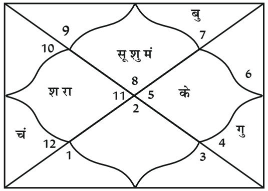

मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 21 नवम्बर से 4 दिसम्बर, 2025 ईस्वी

पक्षान्तः– कालः पूर्व । ऋतुः हेमन्त । दक्षिणायनं ।
याम्यगोलः । ति·15 अयनांशाः 22:53:6

卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐

दिनाङ्क नवम्बर	तिथि वार	व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार
21	1 शु	भगवान् पुष्पदन्त जन्म व तप कल्याणक।
22	2 श	**गण्डान्तः8:55–22:06।**
23	3 र	**भद्रारंभः 29:17 घं·।**
24	4 चं	**भद्रांतः17:54 घं·।** ⑨ मार्गी बुधःघं·20:21, मार्गी शनिःघं·11:52।
25	5 मं	**अभिजितः 14:38–22:36,** श्रीबिहारीजी प्राकट्योत्सव वृंदावन, वृश्चिकेशुक्रःघं·14:19 ⑨
26	6 बु	श्रीमार्तण्ड भैरवोत्थापन (महाराष्ट्र)।
27	7 गु	**पंचकारंभः 10:05, भद्रा 18:60–30:43 घं·,** मित्रसप्तमी।
28	8 शु	**पंचक,** अनुराधायांशुक्रः घं·05:59।
29	9 श	**पंचक,** मुनि पुष्पदन्त जयन्ती९।
30	10 र	**पंचक, भद्रारंभः 26:55 घं·।**
दिसम्बर 1	11 चं	**पंचकान्तः19:32, भद्रांतः13:59 घं·, गण्डान्तः13:51–25:11,** मल्लिनाथ जयन्ती११।
2	12 मं	**श्रीदेवर्षि नारद जयन्ती, मत्स्यद्वादशी,** अखण्डद्वादशी।
3	13 बु	**भद्रा 15:58–27:06घं·,** ज्येष्ठायांरविः घं·11:21।
4	14 गु 15 गु	**भद्रा 7:21–18:10, सत्यनारायण पूर्णिमा,** अरहनाथ जयन्ती१४, संभवनाथ जयन्ती१५।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
1	11:54–13:17
15	12:00–13:23

❀ वारों में करणीय अनुकूल कार्य ❀

❀ **रविवार** को राज्याभिषेक, उत्सव, वाहन क्रय-विक्रय, सेवा नौकरी, गो, अग्नि, मन्त्र से सम्बन्धित कर्म, औषध, शास्त्र, स्वर्ण, ताँबा, ऊन, चमड़ा, काष्ठ, युद्ध और व्यापारादि से सम्बन्धित कार्य करना चाहिए। चित्रकला, धातुकला, आभूषण निर्माण, बाजार सम्बन्धी कार्य भी रविवार को होता है।

❀ **सोमवार** को शंख, कमल, मोती, चाँदी, ईख, भोजन सम्बन्धी कार्य, स्त्री, वृक्ष, कृषि-कर्म, जल, आभूषण, गीत, यज्ञ, दुग्ध, पुष्प, विद्यारम्भ, वास्तुकर्म, नृत्यारम्भ आदि कार्य करना चाहिए।

❀ **मंगलवार** को भेद नीति, झूठ, चोरी, आरोप, जहर, अग्नि, शस्त्र, बंधन, अभिघात, युद्ध, कपट, दंभ, सैन्यकर्म, खनिज कर्म, स्वर्ण, धातु, मूँगा, रक्त एवं लाल वस्तु से सम्बन्धित कार्य किया जाता है।

❀ **बुधवार** को विद्या, चातुर्य, पुण्य, कल्प, शिल्पविद्या, नौकरी, लेखन लिपि, धातुकर्म, स्वर्ण, युक्ति, मित्रता, व्यायाम, वाद विवाद, गणितविद्या, वेदाध्ययन, नैपुण्य कर्म आदि से सम्बन्धित कार्य करना चाहिए।

❀ **गुरूवार** को धार्मिक, पौष्टिक, यंत्र, विद्या, मांगल्य सुवर्ण, वस्त्र, घर, यात्रा, रथ, घोड़ा, औषध, आभूषण, उद्यान सम्बन्धित व शुभकार्य करना चाहिए।

❀ **शुक्रवार** को स्त्री, संगीत, शय्या, मणि, रत्न, गंध, वस्त्र, उत्सव, अलंकार, भूमि, व्यापार, गौ, द्रव्य, कोष, कृषि, हीरा, मोती, चाँदी, सुगन्ध, उद्यान, पुष्प, रचनात्मक, अश्वकर्म आदि अनेक शुभ कार्य किये जाते हैं।

❀ **शनिवार** को लोहा, पत्थर, जस्ता, शीशा, पीतल, नौकर, शस्त्र, झूठ, पाप, चोरी, विष, निंद्यकर्म, शराब, निर्माणादि, वाहन क्रय, गृहप्रवेश, दीक्षा, स्थिर कर्म, गदहा, ऊँट, तुलादान, शनि सम्बन्धित कार्य किया जाता है।

❀ बाल दृष्टि (नजर) दोष निवारण ❀

छोटे, सुकुमार, सुन्दर, सजे, हंसमुख और वाचाल बच्चों पर दृष्टि (नजर) दोष लग जाने से वे बीमार हो जाते हैं, या रुदन करने लगते हैं।

दृष्टिदोष उतारने की भस्मधारण विधि– हवन के भस्म या पवित्राग्नि भस्म को अभिमंत्रित कर बच्चे के शिर, ललाट, हृदय आदि अंगों पर लगाना चाहिए। मंत्र यह है–

वासुदेवो जगन्नाथः पूतना तर्जनो हरिः।
रक्षतु त्वरितो बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।1।
कृष्ण रक्ष शिशुं शंख-मधु-कैटभमर्दन।
प्रातः संगव-मध्याह्न-सायांह्नेषु संध्ययोः ।2।
महानिशि सदा रक्ष कंसारिष्टनिषूदन।
पद्मोरगपिशाचांश्च ग्रहान्मातृग्रहानपि ।3।
बालग्रहान् विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्।
त्राहि-त्राहि हरे! नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ।4।

दृष्टिदोष उतारने की यन्त्रधारण विधि– भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही या लाल स्याही से निम्न मंत्र को लिखकर उसे धूप-दीप दिखाकर बालक के बाहुमूल में बाँधने से नजर दूर होता है।

रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर ।
ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

नवम्बर	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
21	15:38	17:14	19:09	21:23	23:44	02:00	04:15	06:34	08:53	10:58	12:43	14:12
22	15:34	17:10	19:05	21:20	23:40	01:56	04:11	06:30	08:49	10:54	12:39	14:08
23	15:30	17:06	19:01	21:16	23:36	01:52	04:07	06:26	08:45	10:50	12:35	14:04
24	15:26	17:02	18:57	21:12	23:32	01:48	04:03	06:22	08:41	10:46	12:31	14:00
25	15:22	16:58	18:53	21:08	23:28	01:44	03:59	06:18	08:37	10:42	12:27	13:56
26	15:18	16:54	18:50	21:04	23:24	01:40	03:55	06:14	08:33	10:38	12:23	13:52
27	15:14	16:50	18:46	21:00	23:20	01:37	03:51	06:10	08:29	10:34	12:19	13:48
28	15:10	16:46	18:42	20:56	23:16	01:33	03:48	06:06	08:25	10:30	12:15	13:44
29	15:06	16:42	18:38	20:52	23:12	01:29	03:44	06:02	08:21	10:26	12:11	13:40
30	15:02	16:38	18:34	20:48	23:08	01:25	03:40	05:59	08:17	10:23	12:07	13:36
दिसम्बर 1	14:58	16:34	18:30	20:44	23:04	01:21	03:36	05:55	08:13	10:19	12:03	13:32
2	14:54	16:30	18:26	20:40	23:00	01:17	03:32	05:51	08:09	10:15	11:59	13:28
3	14:50	16:26	18:22	20:36	22:56	01:13	03:28	05:47	08:05	10:11	11:55	13:24
4	14:46	16:22	18:18	20:32	22:52	01:09	03:24	05:43	08:01	10:07	11:51	13:20

卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐

नव·	योग
21	**द·न**·13:01 से, **सर्वार्थ**·13:01 तक, **सिद्ध**·12:45 तक, **मृत्यु**·12:45 से
23	**सर्वार्थ**·17:44 तक, **सिद्ध**·16:32 तक, **रवियोगः**17:44 से
24	**रवियोगः**19:34 तक, **अमृत**·17:54 से
25	**मृत्यु**·18:46 से, **रवियोगः**20:56 से
26	**अमृत**·19:08 तक, **रवियोगः**21:49 तक, **सिद्ध**·19:08 से
27	**अमृत**·18:59 से
28	**अमृत**·18:21 से, **रवियोगः**22:07 से
29	**द·ति**·17:16 से, **सिद्ध**·17:16 तक, **रवियोगः** अहोरात्र, **मृत्यु**·17:16 से
30	**द·ति**·15:47 तक, **सर्वार्थ**·20:43 तक, **अमृत**·15:47 तक, **रवियोगः**20:43 तक, **मृत्यु**·15:47 से
दिस· 1	**सिद्ध**·13:59 तक, **मृत्यु**·13:59 से
2	**सर्वार्थ**·18:06 तक,**अमृत**·11:55 तक,**सिद्ध**·11:55 से,**रवियोगः**18:06 से
3	**मृत्यु**·09:41 तक, **रवियोगः** अहोरात्र, **सर्वार्थ**·16:30 से
4	**मृत्यु**·07:20 तक, **रवियोगः**14:51 तक, **सिद्ध**·07:20 से· तक

श्रीकृष्ण ने गीताजी में कहा है कि *"मासानां मार्गशीर्षोऽहं"* अतः यह माह अत्यंत पवित्र है। मार्गशीर्ष में यत्नपूर्वक तुलसी के पवित्र वन में जाकर परम भक्ति से भगवान् श्रीविष्णु की पूजा करें।

श्रीमोक्षदा एकादशी एवं **श्रीगीता जयन्ती** मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी के दिन कुरुक्षेत्र में भगवान् ने अर्जुन को युद्धकाल में मोह होने पर श्रीगीताजी का उपदेश किया। मार्गशीर्ष शुक्ल द्वादशी **श्रीव्यंजन द्वादशी** कहलाती है, विभिन्न व्यञ्जनों का श्रीठाकुर जी को भोग लगावें। इसी दिन कल्पभेद से **श्रीनारद जयन्ती** होती है, भक्ति–ज्ञान–वैराग्य आदि समस्त साधनों का समस्त लोकों में घूम–घूमकर प्रचार करने वाले कीर्तनकला विशेषज्ञ देवर्षिवर्य श्रीनारद जी सभी जीवों पर समान भाव रखते हुए सबका हितचिन्तन किया करते हैं।

पौष कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 5 दिसम्बर से 19 दिसम्बर, 2025 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 5:12:2025– वक्री गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपश्चिमास्तः, मार्गी बुधःपूर्वोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
दिसम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	दिसम्बर	5 दिसम्बर से 19 दिसम्बर, 2025
5	1 शु	४८:५९	26:41	रोहि·	१५:१७	13:12	सिद्ध साध्य	०६:६० ५२:१८	09:53 30:48	बाल	15:49	कौल	26:41	25:53	7:05	17:27	मि·43:17	24:24	मित्र	5	श्रीरसिकमाधुरी जयन्ती (जयपुर)
6	2 श	४३:३५	24:32	मृग·	११:२२	11:39	शुभ	५१:५५	27:52	तैति	13:35	गर	24:32	25:52	7:06	17:27	मिथुन	अहोरात्र	वज्र	6	**33वां शौर्य दिवस**
7	3 र	३८:४५	22:37	आर्द्रा	०७:५३	10:16	शुक्ल	४५:००	25:07	वणि	11:32	विष	22:37	25:50	7:06	17:27	क·50:42	27:23	ध्वांक्ष	7	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं**·20:00
8	4 चं	३४:४०	20:59	पुन·	०५:०३	09:08	ब्रह्म	३८:४२	22:36	बव	09:45	बाल	20:59	25:49	7:07	17:27	कर्क	अहोरात्र	धूम्र	8	
9	5 मं	३१:२९	19:43	पुष्य	०३:०१	08:20	ऐन्द्र	३३:०६	20:23	कौल	08:18	तैति	19:43	25:47	7:08	17:27	कर्क	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	9	
10	6 बु	२९:२१	18:53	आश्ले·	०१:५६	07:55	वैधृ·	२८:२१	18:29	गर	07:15	वणि	18:53	25:46	7:09	17:27	सिं·01:56	07:55	राक्षस	10	वैधृति पुण्यम्
11	7 गु	२८:२६	18:32	मघा	०१:५९	07:57	विष्कु·	२४:३२	16:58	बव	18:32	बाल	30:31	25:45	7:09	17:28	सिंह	अहोरात्र	मुसल	11	**श्रीकालाष्टमी**
12	8 शु	२८:४७	18:41	पू·फा·	०३:१३	08:27	प्रीति	२१:४२	15:51	कौल	18:41	तैति	30:56	25:44	7:10	17:28	कं·18:44	14:40	सिद्धि	12	
13	9 श	३०:२६	19:21	उ·फा·	०५:४३	09:28	आयु·	१९:५१	15:07	गर	19:21	वणि	30:11	25:43	7:11	17:28	कन्या	अहोरात्र	उत्पात	13	अष्टका श्राद्ध
14	10 र	३३:१९	20:31	हस्त	०९:२६	10:58	सौभा·	१८:५८	14:47	वणि	07:52	विष	20:31	25:42	7:11	17:28	तु·41:43	23:53	मानस	14	
15	11 चं	३७:१९	22:08	चित्रा	१४:१५	12:54	शोभ·	१८:५६	14:46	बव	09:16	बाल	22:08	25:41	7:12	17:29	तुला	अहोरात्र	मुद्गर	15	**श्रीसफला एकादशी (सर्वेषाम्)**
16	12 मं	४२:०९	24:04	स्वाती	१९:५९	15:13	अतिग·	१९:३६	15:03	कौल	11:04	तैति	24:04	25:40	7:13	17:29	तुला	अहोरात्र	ध्वज	16	सुरूपा द्वादशी (गुजरात), **धनु मलमास प्रारम्भ**
17	13 बु	४७:३०	26:13	विशा·	२६:१९	29:45	सुकर्मा	२०:४४	15:31	गर	13:07	वणि	26:13	25:40	7:13	17:30	वृ·09:42	11:06	धाता	17	**प्रदोष व्रतम्**
18	14 गु	५२:५७	28:25	अनु·	३२:५२	20:23	धृति	२२:०४	16:04	विष	15:19	बव	28:25	25:39	7:14	17:30	वृश्चिक	अहोरात्र	आनन्द	18	**मासशिवरात्रि व्रतम्**
19	30 शु	५८:०१	30:27	ज्ये·	३९:१२	22:55	शूल	२३:१७	16:33	चतु	17:28	नाग	30:27	25:39	7:15	17:30	ध·39:12	22:55	सुस्थिर	19	**अमावस्या (देव–पितृकार्य)**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क दिसम्बर	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	वक्री गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
5	1 शु	07:18:31:20	01:19:41:20	07:27:23:22	06:28:13:45	03:01:37:30	07:12:12:22	10:27:22:16	10:21:48:05	42:56:55	द·22:39:45	+10:34	17:59
6	2 श	07:19:32:29	02:03:58:15	07:28:07:06	06:29:04:22	03:01:32:48	07:13:28:00	10:27:23:25	10:21:44:54	42:56:05	द·22:48:10	+10:08	18:57
7	3 र	07:20:33:38	02:18:08:44	07:28:50:54	06:29:59:07	03:01:27:56	07:14:43:40	10:27:24:40	10:21:41:43	42:55:19	द·22:56:07	+ 9:41	20:00
8	4 चं	07:21:34:49	03:02:09:44	07:29:34:45	07:00:57:45	03:01:22:54	07:15:59:21	10:27:26:03	10:21:38:32	42:54:35	द·23:03:38	+ 9:14	21:02
9	5 मं	07:22:36:00	03:15:58:45	08:00:18:40	07:02:00:00	03:01:17:41	07:17:15:03	10:27:27:32	10:21:35:21	42:53:54	द·23:10:42	+ 8:47	22:04
10	6 बु	07:23:37:13	03:29:33:52	08:01:02:38	07:03:05:40	03:01:12:19	07:18:30:47	10:27:29:08	10:21:32:11	42:53:15	द·23:17:17	+ 8:19	23:05
11	7 गु	07:24:38:26	04:12:53:52	08:01:46:40	07:04:14:31	03:01:06:48	07:19:46:31	10:27:30:51	10:21:28:60	42:52:40	द·23:23:26	+ 7:50	24:03
12	8 शु	07:25:39:41	04:25:58:18	08:02:30:45	07:05:26:20	03:01:01:07	07:21:02:17	10:27:32:40	10:21:25:49	42:52:07	द·23:29:06	+ 7:21	24:59
13	9 श	07:26:40:56	05:08:47:29	08:03:14:54	07:06:40:55	03:00:55:17	07:22:18:04	10:27:34:36	10:21:22:38	42:51:37	द·23:34:18	+ 6:52	25:55
14	10 र	07:27:42:12	05:21:22:28	08:03:59:06	07:07:58:07	03:00:49:19	07:23:33:52	10:27:36:39	10:21:19:28	42:51:10	द·23:39:02	+ 6:22	26:49
15	11 चं	07:28:43:29	06:03:45:03	08:04:43:21	07:09:17:43	03:00:43:12	07:24:49:41	10:27:38:48	10:21:16:17	42:50:46	द·23:43:17	+ 5:52	27:43
16	12 मं	07:29:44:47	06:15:57:38	08:05:27:40	07:10:39:35	03:00:36:56	07:26:05:30	10:27:41:03	10:21:13:06	42:50:25	द·23:47:04	+ 5:21	28:37
17	13 बु	08:00:46:05	06:28:03:07	08:06:12:03	07:12:03:33	03:00:30:32	07:27:21:21	10:27:43:25	10:21:09:55	42:50:07	द·23:50:21	+ 4:50	29:31
18	14 गु	08:01:47:25	07:10:04:51	08:06:56:29	07:13:29:29	03:00:24:01	07:28:37:13	10:27:45:54	10:21:06:44	42:49:52	द·23:53:10	+ 4:19	30:23
19	30 शु	08:02:48:45	07:22:06:37	08:07:40:58	07:14:57:14	03:00:17:22	07:29:53:06	10:27:48:29	10:21:03:34	42:49:40	द·23:55:30	+ 3:48	07:16

8 दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:**4**

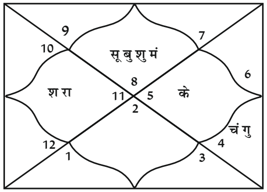

15 दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:**11**

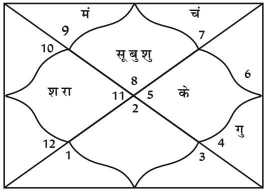

पौष कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 5 दिसम्बर से 19 दिसम्बर, 2025 ईस्वी

दिनाङ्क दिसम्बर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
5	1 शु	।
6	2 श	।
7	3 र	भद्रा 11:33–22:37 घं·, वृश्चिकेबुधःघं·07:33।
8	4 चं	ज्येष्ठायांशुक्रः घं·20:06, मूलेधनुषिमङ्गलः घं·21:00।
9	5 मं	गण्डान्तारम्भः 25:59।
10	6 बु	गण्डान्तः13:53, भद्रा 18:54–30:38 घं·, अनुराधायांबुधः घं·12:19।
11	7 गु	।
12	8 शु	।
13	9 श	।
14	10 र	भद्रा 7:53–20:32 घं·।
15	11 चं	श्रीपार्श्वनाथ जन्मकल्याणक जयन्ती (जैन) ११, श्रीचन्द्रप्रभ जयन्ती११।
16	12 मं	धनु संक्रान्ति पुण्यकालं 13:11–17:29 घं·, मुनि शीतलनाथ जयन्ती१२ ⑦
17	13 बु	भद्रारंभः 26:14 घं·। ⑦ मूलेधनुषिरविः घं·13:12।
18	14 गु	भद्रांतः15:20 घं·।
19	30 शु	गण्डान्तः16:19–29:32, जयप्रभु विजय पुण्यत्रिस्तुति (जैन), मूलेधनुषिशुक्रःघं·09:29।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
1	12:01–13:23
30	12:08–13:30

❀ धनु मलमास ❀

बृहस्पति ग्रह की धनु एवं मीन राशि में सूर्य के प्रवेश करते ही खरमास दोष लगता है। अतः समस्त शुभकर्म वर्जित हो जाते हैं। 16 दिसम्बर 2025, 06:59 बजे से, 14 जनवरी 2026 दिन 14:53 बजे तक धनु संक्रान्ति जनित खरमास/मलमास दोष रहेगा।

❀ मासों में करणीय दान ❀

(विष्णुधर्मोत्तरे)

चैत्र – चित्र व वस्त्रदान से सौभाग्य प्राप्ति
वैशाख – पूआदान से स्वर्ग प्राप्ति
ज्येष्ठ – छत्रदान से कामनापूर्ति
आषाढ़–चन्दन, कर्पूर से महाफल प्राप्ति
श्रावण– वस्त्रदान से कीर्ति महाफल प्राप्ति
भाद्रपद – गुड़ दान से कफ/रोगमुक्ति
आश्विन – घृतदान से रूपवान हो
कार्तिक – दीपदान से उज्वलता प्राप्ति
मार्गशीर्ष – लवणदान से सौभाग्य प्राप्ति
पौष – स्वर्णदान से परापुष्टि प्राप्ति
माघ – तिलदान से यमलोक न जाना पड़े
फाल्गुन– प्रियंगुदान से भूतल पर प्रिय हो

❀ प्राणायाम की दुर्लभ एवं पूर्ण विधि ❀

क्रमः--1. पूरक, 2. अन्तः-कुम्भक, 3. रेचक, 4. बाह्य कुम्भक

पूरक – तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए सम गति से श्वास अन्दर लेना।

अन्तः-**कुम्भक** – तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए श्वास अन्दर रोकना।

रेचक – तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए सम गति से श्वास बाहर त्यागना।

बाह्य कुम्भक–तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए श्वास बाहर त्यागकर रोकना।

गायत्री मन्त्र का ही विस्तारित रूप है सावित्री मन्त्र। प्राणायाम में जप हेतु **सावित्री मन्त्र–**

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्य धीमहि। धि यो यो नः प्रचोदयात्॥

ॐ आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वर्॥ ॐ॥

''स्वर्॥ ॐ'' का उच्चारण है ''स्वरोम्''॥

बाह्य कुम्भक कष्टदायक होता है, अतः अधिकाँश जगह लिखा नहीं होता है। बाह्य कुम्भक जितना कष्टदायक होता है उतने ही पिछले और वर्तमान जन्मों के प्रकट (क्रियमाण) और छुपे हुए (सञ्चित) कुसंस्कार नष्ट होते हैं और सद्-बुद्धि बढती है। प्राणायाम वैदिक सन्ध्यावन्दन का अनिवार्य भाग है। प्रातः (और सम्भव हो तो सन्ध्याकाल में भी) नित्यकर्म के पश्चात न्यूनतम तीन प्राणायाम बाएँ नाक से और तीन दाहिने नाक से करने चाहिएः बारी-बारी से, अर्थात पहले बाएँ, फिर दाँए, फिर बाएँ..। बाह्य कुम्भक अचेतन मन के कुसंस्कारों को ध्वस्त करने और पूर्ण चैतन्य बनने का सर्वोत्तम साधन है। जो जनेऊ नहीं पहनते हैं वे उतने ही काल तक अपने इष्टदेव के मन्त्र का जप कर सकते हैं।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

दिसम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
5	14:42	16:18	18:14	20:28	22:48	01:05	03:20	05:39	07:57	10:03	11:47	13:16
6	14:38	16:14	18:10	20:24	22:45	01:01	03:16	05:35	07:53	09:59	11:43	13:13
7	14:35	16:11	18:06	20:20	22:41	00:57	03:12	05:31	07:49	09:55	11:39	13:09
8	14:31	16:07	18:02	20:16	22:37	00:53	03:08	05:27	07:45	09:51	11:35	13:05
9	14:27	16:03	17:58	20:12	22:33	00:49	03:04	05:23	07:42	09:47	11:32	13:01
10	14:23	15:59	17:54	20:09	22:29	00:45	03:00	05:19	07:38	09:43	11:28	12:57
11	14:19	15:55	17:50	20:05	22:25	00:41	02:56	05:15	07:34	09:39	11:24	12:53
12	14:15	15:51	17:46	20:01	22:21	00:37	02:52	05:11	07:30	09:35	11:20	12:49
13	14:11	15:47	17:42	19:57	22:17	00:33	02:48	05:07	07:26	09:31	11:16	12:45
14	14:07	15:43	17:39	19:53	22:13	00:29	02:45	05:03	07:22	09:27	11:12	12:41
15	14:03	15:39	17:35	19:49	22:09	00:26	02:41	04:59	07:18	09:23	11:08	12:37
16	13:59	15:35	17:31	19:45	22:05	00:22	02:37	04:56	07:14	09:19	11:04	12:33
17	13:55	15:31	17:27	19:41	22:01	00:18	02:33	04:52	07:10	09:15	11:00	12:29
18	13:51	15:27	17:23	19:37	21:57	00:14	02:29	04:48	07:06	09:11	10:56	12:25
19	13:47	15:23	17:19	19:33	21:53	00:10	02:25	04:44	07:02	09:08	10:52	12:21

दिसम्बर	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
5	**सिद्ध**·26:41 तक, **मृत्यु**·26:41 से
6	**द्विपुष्कर**:11:39 तक
7	**सिद्ध**·22:37 तक
8	**सर्वार्थ**·09:08 से, **अमृत**·20:59 से
9	**सर्वार्थ**·08:20 से, **मृत्यु**·19:43 से
10	**अमृत**·18:53 तक, **रवियोग**:07:55 से, **सिद्ध**·18:53 से
11	**रवियोग**:07:57 तक, **अमृत**·18:32 से
12	**अमृत**·18:41 से
13	**द·ति**·19:21 से, **सिद्ध**·19:21 तक, **मृत्यु**·19:21 से
14	**द·ति**·20:31 तक, **सर्वार्थ**·10:58 तक, **अमृत**·20:31 तक
15	**सिद्ध**·22:08 तक, **मृत्यु**·22:08 से
16	**अमृत**·24:04 तक, **त्रिपुष्कर**:15:13 से 24:04 तक
17	**मृत्यु**·26:13 तक, **सर्वार्थ**·29:45 से
18	**सर्वार्थ**·20:23 तक, **मृत्यु**·28:25 तक, **सिद्ध**·28:25 से

❀ **व्रत परिभाषा–**ऋषि,मुनि व परमाचार्यों द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त विषय के संकल्प विशेष को व्रत कहते हैं। अतः सामान्य व्यक्ति नया व्रत नहीं बना सकता।
अभियुक्तप्रसिद्धिविषयो यः संकल्पविशेषः स एव व्रतम्।

❀ **व्रत के अंग–** किसी भी व्रत के तीन अंग होते हैं 1· उपवास, 2· पूजन और 3· पारणा। तत् पूजनोपवासपारणारूपम्। वस्तुतः उपवास ही मुख्य रूप से व्रत होता है पर पूजन और पारणा के बिना यह पूर्ण नहीं होता है। "उपवासएवव्रतम्"

❀ **व्रत फल–** व्रत करने से जीवन में अलभ्य का लाभ तथा असाध्य की प्राप्ति होती है।

❀ **व्रत नाशक तत्व–** बारबार जल पीना, पान खाना, दिन में सोना, मैथुन, मिथ्याभाषण, जुआ खेलना, पाप करना, दो बार अल्पाहार लेना मना है।

❀ **व्रत में अनिवार्य–** प्रत्येक व्रत के देवता की पूजा अवश्य करनी चाहिए। क्षमा, सत्य, दया, दान, शौच, इन्द्रियनिग्रह, देवपूजा, हवन, संतोष और अचौर्य ये दशतत्व व्रत में अनिवार्य।

पौष शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 20 दिसम्बर 2025 से 3 जनवरी 2026

ग्रहस्थितिः 20:12:2025– वक्री गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वास्तः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपश्चिमास्तः, मार्गी बुधःपूर्वोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	ॐ व्रत–पर्व–उत्सव ॐ
दिसम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	दिसम्बर	20 दिसम्बर 2025 से 3 जनवरी 2026
20	1 श	६0:00	अहोरात्र	मूल	४४:५६	25:14	गण्ड	२४:0५	16:53	किं	19:22	बव	60:00	25:39	7:15	17:31	धनु	अहोरात्र	गद	20	
21	1 र	0२:२१	08:12	पू·षा·	४९:४५	27:10	वृद्धि	२४:१५	16:58	बव	08:12	बाल	20:55	25:38	7:16	17:31	धनु	अहोरात्र	शुभ	21	
22	2 चं	0५:४0	09:32	उ·षा·	५३:२७	16:39	ध्रुव	२३:३४	16:42	कौल	09:32	तैति	22:01	25:38	7:16	17:32	म·05:47	09:35	मृत्यु	22	
23	3 मं	0७:४७	10:24	श्रवण	५५:५६	29:39	व्याघ·	२१:५९	16:04	गर	10:24	वणि	22:37	25:38	7:17	17:32	मकर	अहोरात्र	लुम्ब	23	**वैनायकी गणेश चतुर्थी**, यतीन्द्रसूरीश्वर पुण्यत्रिस्तुति (जैन)
24	4 बु	0८:३७	10:44	धनि·	५७:१0	30:09	हर्षण	१९:२४	15:03	विष	10:44	बव	22:42	25:38	7:17	17:33	कु·26:42	17:58	मित्र	24	
25	5 गु	0८:१0	10:34	शत·	५७:१२	30:11	वज्र	१५:४९	13:38	बाल	10:34	कौल	22:17	25:39	7:18	17:33	कुंभ	अहोरात्र	वज्र	25	भारतरत्न महामना पण्डित श्रीमदनमोहन मालवीय जयन्ती
26	6 शु	0६:२९	09:54	पू·भा·	५६:0८	29:45	सिद्धि	११:१८	11:50	तैति	09:54	गर	21:23	25:39	7:18	17:34	मी·41:30	23:54	ध्वांक्ष	26	**अनरुपा षष्ठी (बंगाल)**
27	7 श 8 श	0३:४१ ५६:१४	08:47 31:16	उ·भा·	५४:0६	28:57	व्यति· वरी·	0५:५५ ५३:५१	09:41 31:13	वणि	08:47	विष	20:05	25:39	7:19	17:35	मीन	अहोरात्र	धूम्र	27	श्रीराजेन्द्रसूरीश्वर स्तुति (जैन)
28	9 र	५५:२२	29:28	रेवती	५१:१६	27:50	परिघ	५३:0१	28:31	बाल	18:25	कौल	29:28	25:40	7:19	17:35	मे·51:16	27:50	प्रवर्द्ध	28	**श्रीदुर्गाष्टमी**, शाकम्भरी देवी नवरात्र प्रारम्भ
29	10 चं	५0:११	27:24	अश्वि·	४७:४८	26:27	शिव	४५:४४	25:37	तैति	16:28	गर	27:24	25:40	7:20	17:36	मेष	अहोरात्र	राक्षस	29	आचार्य जिनानन्द सागर पुण्य खरतरगच्छ (जैन)
30	11 मं	४४:३४	25:10	भरणी	४३:५४	24:54	सिद्ध	३८:0६	22:34	वणि	14:18	विष	25:10	25:41	7:20	17:37	वृ·57:53	30:29	मुसल	30	**पुत्रदा एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त)**, सूर्यपूजा साम्बदशमी (उड़ीसा)
31	12 बु	३८:४३	22:50	कृत्ति·	३९:४६	23:15	साध्य	३0:१५	19:26	बव	12:00	बाल	22:50	25:42	7:20	17:37	वृष	अहोरात्र	सिद्धि	31	**पुत्रदा एकादशी (निम्बार्क)**, **श्रीकूर्म द्वादशी**
जनवरी	13 गु	३२:५0	20:29	रोहि·	३५:३६	21:35	शुभ	२२:२१	16:17	कौल	09:39	तैति	20:29	25:43	7:21	17:38	वृष	अहोरात्र	उत्पात	जनवरी	**प्रदोष व्रतम्**, मुनि धर्मनाथ जयन्ती१३
2	14 शु	२७:0९	18:12	मृग·	३१:३८	20:00	शुक्ल	१४:३४	13:11	वणि	18:12	विष	29:07	25:44	7:21	17:39	मि·03:35	08:47	मानस	2	पूर्णिमा व्रत
3	15 श	२१:५0	16:05	आर्द्रा	२८:0४	18:35	ब्रह्म ऐन्द्र	0७:0४ ५२:५४	10:11 31:20	बव	16:05	बाल	27:08	25:45	7:21	17:39	मिथुन	अहोरात्र	मुद्गर	3	पौष पूर्णिमा (स्नान–दान), माघ स्नानारम्भ

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	वक्री गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
दिसम्बर	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
20	1 श	08:03:50:05	08:04:12:14	08:08:25:31	07:16:26:42	03:00:10:36	08:01:08:59	10:27:51:10	10:21:00:23	42:49:31	द·23:57:21	+ 3:17	08:04
21	1 र	08:04:51:27	08:16:25:01	08:09:10:08	07:17:57:45	03:00:03:42	08:02:24:53	10:27:53:57	10:20:57:12	42:49:25	द·23:58:43	+ 2:45	08:05
22	2 चं	08:05:52:48	08:28:47:50	08:09:54:48	07:19:30:17	02:29:56:42	08:03:40:48	10:27:56:51	10:20:54:01	42:49:22	द·23:59:35	+ 2:13	08:52
23	3 मं	08:06:54:11	09:11:23:07	08:10:39:31	07:21:04:10	02:29:49:36	08:04:56:44	10:27:59:50	10:20:50:51	42:49:22	द·23:59:59	+ 1:42	09:36
24	4 बु	08:07:55:34	09:24:12:35	08:11:24:18	07:22:39:21	02:29:42:23	08:06:12:41	10:28:02:56	10:20:47:40	42:49:25	द·23:59:53	+ 1:10	10:16
25	5 गु	08:08:56:57	10:07:17:19	08:12:09:09	07:24:15:43	02:29:35:05	08:07:28:38	10:28:06:08	10:20:44:29	42:49:31	द·23:59:17	+ 0:38	10:57
26	6 शु	08:09:58:21	10:20:37:35	08:12:54:03	07:25:53:10	02:29:27:41	08:08:44:36	10:28:09:26	10:20:41:18	42:49:40	द·23:58:13	+ 0:06	11:33
27	7 श	08:10:59:45	11:04:12:55	08:13:39:00	07:27:31:39	02:29:20:12	08:10:00:35	10:28:12:50	10:20:38:08	42:49:53	द·23:56:39	− 0:25	12:10
28	9 र	08:12:01:10	11:18:02:04	08:14:24:01	07:29:11:05	02:29:12:39	08:11:16:34	10:28:16:20	10:20:34:57	42:50:08	द·23:54:36	− 0:57	13:25
29	10 चं	08:13:02:35	00:02:03:07	08:15:09:05	08:00:51:22	02:29:05:00	08:12:32:33	10:28:19:56	10:20:31:46	42:50:26	द·23:52:04	− 1:28	13:25
30	11 मं	08:14:03:60	00:16:13:32	08:15:54:13	08:02:32:27	02:28:57:18	08:13:48:34	10:28:23:38	10:20:28:36	42:50:47	द·23:49:03	− 1:00	14:10
31	12 बु	08:15:05:25	01:00:30:18	08:16:39:25	08:04:14:17	02:28:49:32	08:15:04:34	10:28:27:25	10:20:25:25	42:51:12	द·23:45:32	− 2:31	14:55
1	13 गु	08:16:06:50	01:14:50:02	08:17:24:40	08:05:56:46	02:28:41:42	08:16:20:35	10:28:31:18	10:20:22:14	42:51:39	द·23:41:33	− 3:02	15:49
2	14 शु	08:17:08:15	01:29:08:47	08:18:09:58	08:07:39:52	02:28:33:49	08:17:36:36	10:28:35:17	10:20:19:03	42:52:09	द·23:37:06	− 3:32	16:45
3	15 श	08:18:09:40	02:13:22:54	08:18:55:20	08:09:23:32	02:28:25:54	08:18:52:39	10:28:39:21	10:20:15:53	42:52:42	द·23:32:09	− 4:03	17:47

24 दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:4

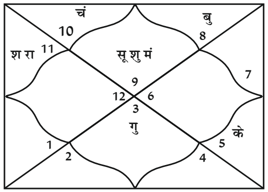

30 दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:11

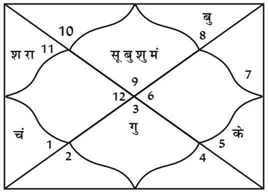

पौष शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 20 दिसम्बर 2025 से 3 जनवरी 2026

पक्षान्तः– कालः पूर्व । ऋतुः हेमन्त । दक्षिणायनं । याम्यगोलः । ति·15 अयनांशः 22:53:10

दिनाङ्क दिसम्बर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
20	1 श	ज्येष्ठायांबुधः घं·10:50।
21	1 र	मिथुनेगुरुः घं·20:27।
22	2 चं	**अभिजितः 22:19–30:19 घं·।**
23	3 मं	**भद्रारंभः 22:38 घं·**, स्वामी श्रद्धानन्द पुण्य दिवस।
24	4 बु	**पंचकारंभः 17:58, भद्रांतः10:45 घं·**, मुनि विमलनाथ जयन्ती४।
25	5 गु	**पंचक**, अटलबिहारी वाजपेयी जयन्ती।
26	6 शु	**पंचक**, पूर्वाषाढ़ेमङ्गलः घं·21:12।
27	7 श 8 श	**पंचक, भद्रा 8:48–20:05 घं·**, व्यतीपात पुण्यम्।
28	9 र	**पंचकान्तः27:50, गण्डान्तारम्भः 22:09**, मूलेधनुषिबुधःघं·19:05।
29	10 चं	**गण्डान्तः9:31**, श्रीहरि जयन्ती, अजितनाथ जयन्ती१०, पूर्वाषाढ़ेरविः14:09 ①
30	11 मं	**भद्रा 14:19–25:10 घं·।**, ① पूर्वाषाढ़ेशुक्रःघं·22:20।
31	12 बु	**श्रीरामजन्मभूमौ अयोध्यायां श्रीरामललस्य द्वितीय·प्रतिष्ठादिवसोत्सवः·भारतवर्षे** ②
जनवरी 1	13 गु	ईस्वी 2026 आरम्भ, धर्मसावर्णि·मन्वादि। ② मुनि अभिनंदननाथ जयन्ती१२।
2	14 शु	**भद्रा 18:13–29:08 घं·।**
3	15 श	**श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, लोहड़ी, शाकम्भरी जयन्ती।**

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
1	12:09–13:31
15	12:15–13:38

❀ भूमि सम्बन्धी समस्त अवरोध निवारक अचूक प्रयोग ❀

– *'नवग्रह विज्ञान'*

भूमि के क्रय विक्रय व भवननिर्माण सम्बन्धी समस्त अवरोधों-विघ्नबाधाओं के निवारण हेतु श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के पृथ्वी स्तोत्र/भूमिदेवी महास्तोत्र का 1200 पाठ एक दुर्लभ एवं अविफल प्रयोग है। इसे इच्छित संकल्पपूर्वक स्वयं या ब्राह्मण द्वारा कराना चाहिए। जन्मकुण्डली के लग्न या चन्द्र से चतुर्थ भाव पर जब मंगल का गोचर होता है या दृष्टि पड़ती है तब भूमि संबंधी कार्य का योग बनता हैं। **प्रारूप संकल्प** - देशकाल संकीर्त्य अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुक नामाहं मम भूमिसम्बन्धी क्रय-विक्रय-भवननिर्माण सम्बन्धी समस्त विघ्नबाधा-शत्रुकृतअवरोध निवारणार्थं उत्तमोत्तम मूल्ये भूमि विक्रयार्थं / उत्तमोत्तम शुभभूमि प्राप्त्यर्थं / सर्वबाधानिवृत्ति पूर्वकं ग्रहादीनां स्थितिवशात् उत्पन्नदोषेण च विघ्नानां प्रशमनपूर्वकं श्रीभूमिदेवी प्रीत्यर्थं श्रीभूमिदेवी महास्तोत्रस्य द्वादश शत पाठ कर्माहं करिष्ये/ब्राह्मणानां कारयिष्ये।

ध्यान-

श्वेतपंकजवर्णाभां शरच्चन्द्रनिभाननाम्।
चन्दनोत्क्षिप्तसर्वांगीं रत्नभूषणभूषिताम्।
रत्नाधारां रत्नगर्भां रत्नाकरसमन्विताम्।
वह्निशुद्धांशुकाधानां सस्मितां वन्दितां भजे।

श्वेतकमल के समान आभा युक्त, शरदपूर्णिमा के चन्द्रमा के समान मुख वाली, जिनके सम्पूर्ण अंग चन्दन से लिप्त हैं, जो रत्नमय अलंकारों से सुशोभित हैं, रत्नों की आधारस्वरूपा हैं, रत्नगर्भा हैं व रत्नों के आकर (खान) से समन्वित हैं। जो अग्नि सदृश शुद्ध वस्त्र धारण किए हैं, मुस्कान से युक्त हैं व सभी के द्वारा वन्दित हैं। मैं ऐसी पृथ्वीदेवी का ध्यान करता हूँ।

पृथ्वीस्तोत्र-

श्रीनारायण उवाच

जये जये जलाधारे जलशीले जलप्रदे।
यज्ञसूकरजाये त्वं जयं देहि जयावहे ॥
मङ्गले मङ्गलाधारे माङ्गल्ये मङ्गलप्रदे।
मङ्गलार्थं मङ्गलेशे मङ्गलं देहि मे भवे ॥
सर्वाधारे च सर्वज्ञे सर्वशक्तिसमन्विते।
सर्वकामप्रदे देवि सर्वेष्टं देहि मे भवे ॥
पुण्यस्वरूपे पुण्यानां बीजरूपे सनातनि।
पुण्याश्रये पुण्यवतामालये पुण्यदे भवे ॥
सर्वशस्यालये सर्वशस्याढ्ये सर्वशस्यदे।
सर्वशस्यहरे काले सर्वशस्यात्मिके भवे॥
भूमे भूमिपसर्वस्वे भूमिपालपरायणे ।
भूमिपानां सुखकरे भूमिं देहि च भूमिदे ॥
इदं स्तोत्रं महापुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
कोटिजन्मसु स भवेद्बलवान्भूमिपेश्वरः॥
भूमिदानकृतं पुण्यं लभ्यते पठनाज्जनैः।
भूमिदानहरात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः॥
अम्बुवाची भूकरणपापात्स मुच्यते ध्रुवम्।
अन्यकूपे कूपखननपापात्स मुच्यते ध्रुवम्॥
परभूमिहरात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः।
भूमौ वीर्यत्यागपापाद्भूमौ दीपादिस्थापनात्॥
पापेन मुच्यते सोऽपि स्तोत्रस्य पठनान्मुने।
अश्वमेधशतं पुण्यं लभते नात्र संशयः ॥
भूमिदेव्या महास्तोत्रं सर्वकल्याणकारकम्॥
॥ इति भूमिदेवीमहास्तोत्रम् ॥

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

दिसम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
20	13:43	15:19	17:15	19:29	21:49	00:06	02:21	04:40	06:58	09:04	10:48	12:17
21	13:39	15:15	17:11	19:25	21:45	00:02	02:17	04:36	06:54	09:00	10:44	12:13
22	13:35	15:11	17:07	19:21	21:41	23:58	02:13	04:32	06:50	08:56	10:40	12:09
23	13:31	15:07	17:03	19:17	21:38	23:54	02:09	04:28	06:47	08:52	10:36	12:05
24	13:27	15:03	16:59	19:13	21:34	23:50	02:05	04:24	06:43	08:48	10:32	12:02
25	13:24	15:00	16:55	19:09	21:30	23:46	02:01	04:20	06:39	08:44	10:28	11:58
26	13:20	14:56	16:51	19:05	21:26	23:42	01:57	04:16	06:35	08:40	10:24	11:54
27	13:16	14:52	16:47	19:02	21:22	23:38	01:53	04:12	06:31	08:36	10:21	11:50
28	13:12	14:48	16:43	18:58	21:18	23:34	01:49	04:08	06:27	08:32	10:17	11:46
29	13:08	14:44	16:39	18:54	21:14	23:30	01:45	04:04	06:23	08:28	10:13	11:42
30	13:04	14:40	16:35	18:50	21:10	23:26	01:41	04:00	06:19	08:24	10:09	11:38
31	13:00	14:36	16:31	18:46	21:06	23:22	01:37	03:56	06:15	08:20	10:05	11:34
1	12:56	14:32	16:28	18:42	21:02	23:19	01:34	03:52	06:11	08:16	10:01	11:30
2	12:52	14:28	16:24	18:38	20:58	23:15	01:30	03:48	06:07	08:12	09:57	11:26
3	12:48	14:24	16:20	18:34	20:54	23:11	01:26	03:45	06:03	08:08	09:53	11:22

दिसम्बर	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
20	**अमृत·** अहोरात्र
21	**द·ति·**08:12 से, **मृत्यु·**08:12 तक,**त्रिपुष्करः** 27:10–31:16
22	**द·ति·**09:32 तक, **मृत्यु·**09:32 तक, **सर्वार्थ·रवियोगः**16:39 से
23	**सिद्ध·**10:24 तक, **रवियोगः**29:39 तक
25	**सिद्ध·**10:34 तक, **रवियोगः**30:11 तक
26	**सिद्ध·**09:54 तक, **मृत्यु·**09:54 से
27	**रवियोगः**28:57 से, **सिद्ध·**08:47 से
28	**रवियोगः**27:50 तक, **सर्वार्थ·रवियोगः**27:50 से,**अमृत·**29:28 से
29	**अमृत·**27:24 तक, **रवियोगः** अहोरात्र, **सिद्ध·**27:24 से
30	**मृत्यु·**25:10 तक, **रवियोगः**24:54 तक, **सर्वार्थ·**24:54 से, **अमृत·**25:10 से, **त्रिपुष्करः**25:10–31:20
31	**सर्वार्थ·** अहोरात्र, **सिद्ध·** 22:50 तक, **मृत्यु·** 22:50 से
1	**अमृत·**20:29 तक, **मृत्यु·**20:29 से, **रवियोगः**21:35 से
2	**अमृत·**18:12 तक, **रवियोगः**20:00 तक,
3	**मृत्यु·**20:29 तक, **अमृत·**20:29 से,

द्विज का दाहिना कान पवित्र होता है।

कान में वेदमन्त्र सुनते सुनते प्रभास आदि तीर्थ, गंगा आदि नदियों का पावित्र्य और प्रभाव रहता है– ***प्रभासादीनि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा। द्विजस्य दक्षिणे कर्णे नित्यं तिष्ठन्ति देवताः॥*** इसी कान से दीक्षा ग्रहण की जाती है। इसी के ऊपर हमेशा यज्ञोपवीत चढ़ाकर मल–मूत्र का त्याग किया करते हैं। कर्णवेध के समय इसी में स्वर्णकुण्डल धारण किया जाता है। पराशर स्मृति में लिखा है कि छींक, थूक, दांत खोदने के बाद दाहिना कान स्पर्श करना चाहिए– ***क्षुते निष्ठीविते चैव दंतश्लिष्टे तथाऽनृते। पतितानाम् च संभाषे दक्षिणम् श्रवणं स्पृशेत्॥***

पैर की द्वितीय उंगली में चांदी की अंगूठी पहनने की रीति प्राचीनकाल में थी। इससे मानसिक शान्ति बनी रहती है। मणि, मन्त्र और औषधि का प्रभाव अतुलनीय होता है।

माघ कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 4 जनवरी से 18 जनवरी, 2026 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 4:1:2026– वक्री गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वास्तः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	व्रत–पर्व–उत्सव
जनवरी	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	जनवरी	4 जनवरी से 18 जनवरी, 2026
4	1 र	१७:०६	14:12	पुन·	२५:०५	17:23	वैधृ·	५३:२७	28:44	कौल	14:12	तैति	25:22	25:46	7:22	17:40	क·10:46	11:40	ध्वज	4	वैधृति पुण्यम्
5	2 चं	१३:०८	12:37	पुष्य	२२:५२	16:31	विष्कु·	४७:३६	26:24	गर	12:37	वणि	23:57	25:47	7:22	17:41	कर्क	अहोरात्र	धाता	5	सौभाग्य सुन्दरी व्रत
6	3 मं	१०:०४	11:24	आश्ले·	२१:३५	16:00	प्रीति	४२:३४	24:23	विष	11:24	बव	22:56	25:49	7:22	17:42	सिं·21:35	16:00	आनन्द	6	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी**, चन्द्रोदय घं·20:55
7	4 बु	०८:०६	10:36	मघा	२१:२३	15:55	आयु·	३८:२५	22:44	बाल	10:36	कौल	37:33	25:50	7:22	17:42	सिंह	अहोरात्र	सुस्थिर	7	
8	5 गु	०७:१९	10:18	पू·फा·	२२:२१	16:19	सौभा·	३५:१५	21:28	तैति	10:18	गर	22:23	25:52	7:22	17:43	कं·37:47	22:29	गद	8	
9	6 शु	०७:५०	10:30	उ·फा·	२४:३५	17:12	शोभ·	३३:०५	20:36	वणि	10:30	विष	22:47	25:53	7:22	17:44	कन्या	अहोरात्र	शुभ	9	
10	7 श	०९:३८	11:14	हस्त	२८:०३	18:36	अतिग·	३१:५३	20:08	बव	11:14	बाल	23:47	25:55	7:23	17:45	कन्या	अहोरात्र	मृत्यु	10	**श्रीकालाष्टमी, श्रीमद् रामानन्दाचार्य जयन्ती**
11	8 र	१२:४०	12:27	चित्रा	३२:३९	20:26	सुकर्मा	३१:३५	20:01	कौल	12:27	तैति	25:13	25:57	7:23	17:46	तु·00:13	07:28	पद्म	11	
12	9 चं	१६:४७	14:06	स्वाती	३८:१४	22:40	धृति	३२:०३	20:12	गर	14:06	वणि	27:03	25:59	7:23	17:46	तुला	अहोरात्र	छत्र	12	**स्वामी श्री विवेकानन्द जयन्ती**, अन्वष्टका श्राद्ध
13	10 मं	२१:४३	16:04	विशा·	४४:२८	25:10	शूल	३३:०४	20:36	विष	16:04	बव	29:08	26:01	7:23	17:47	वृ·27:52	18:32	श्रीवत्स	13	
14	11 बु	२७:०८	18:14	अनु·	५१:०२	27:48	गण्ड	३४:२३	21:08	बाल	18:14	कौल	31:19	26:03	7:23	17:48	वृश्चिक	अहोरात्र	सौम्य	14	**श्री षट्तिला एकादशी (सर्वेषाम्), मकर संक्रान्ति**
15	12 गु	३२:३४	20:24	ज्ये·	५७:२८	30:22	वृद्धि	३५:४२	21:39	तैति	20:24	गर	07:23	26:05	7:23	17:49	ध·57:28	18:22	कालदंड	15	तिल द्वादशी, श्रीशीतलनाथ जयन्ती (जैन)
16	13 शु	३७:३७	22:25	मूल	६०:००	अहोरात्र	ध्रुव	३६:४१	22:03	गर	09:23	वणि	22:25	26:07	7:23	17:50	धनु	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	16	**प्रदोष व्रतम्, मास शिवरात्रि व्रतम्**
17	14 श	४१:५३	24:08	मूल	०३:२४	08:44	व्याघ·	३७:०७	22:13	विष	11:20	बव	24:08	26:10	7:23	17:51	धनु	अहोरात्र	गद	17	भगवान ऋषभनाथ मोक्ष कल्याणक१४
18	30 र	४५:०६	25:25	पू·षा·	०८:२९	10:46	हर्षण	३६:४७	22:05	चतु	12:49	नाग	25:25	26:12	7:22	17:51	म·24:35	17:12	शुभ	18	**अमावस्या (देव–पितृकार्य)**, मौनी अमावस्या

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	वक्री गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
जनवरी	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मिःसे	
4	1 र	08:19:11:05	02:27:29:11	08:19:40:46	08:11:07:41	02:28:17:56	08:20:08:41	10:28:43:31	10:20:12:42	42:53:18	द·23:26:44	– 4:33	18:50
5	2 चं	08:20:12:30	03:11:24:48	08:20:26:16	08:12:52:17	02:28:09:55	08:21:24:44	10:28:47:47	10:20:09:31	42:53:57	द·23:20:51	– 5:02	19:53
6	3 मं	08:21:13:55	03:25:07:31	08:21:11:48	08:14:37:15	02:28:01:54	08:22:40:46	10:28:52:07	10:20:06:21	42:54:38	द·23:14:30	– 5:31	20:55
7	4 बु	08:22:15:20	04:08:35:43	08:21:57:25	08:16:22:33	02:27:53:50	08:23:56:47	10:28:56:33	10:20:03:10	42:55:22	द·23:07:40	– 5:00	21:54
8	5 गु	08:23:16:44	04:21:48:31	08:22:43:04	08:18:08:08	02:27:45:46	08:25:12:48	10:29:01:05	10:19:59:59	42:56:09	द·23:00:23	– 6:28	22:51
9	6 शु	08:24:18:07	05:04:45:48	08:23:28:47	08:19:53:56	02:27:37:41	08:26:28:48	10:29:05:41	10:19:56:48	42:56:59	द·22:52:39	– 6:56	23:47
10	7 श	08:25:19:31	05:17:28:13	08:24:14:34	08:21:39:55	02:27:29:36	08:27:44:48	10:29:10:23	10:19:53:38	42:57:51	द·22:44:27	– 7:23	24:42
11	8 र	08:26:20:53	05:29:57:10	08:25:00:23	08:23:26:00	02:27:21:31	08:29:00:47	10:29:15:10	10:19:50:27	42:58:46	द·22:35:49	– 7:50	25:36
12	9 चं	08:27:22:15	06:12:14:42	08:25:46:16	08:25:12:06	02:27:13:26	09:00:16:45	10:29:20:01	10:19:47:16	42:59:43	द·22:26:43	– 8:16	26:30
13	10 मं	08:28:23:37	06:24:23:29	08:26:32:12	08:26:58:10	02:27:05:22	09:01:32:42	10:29:24:58	10:19:44:06	43:00:43	द·22:17:12	– 8:42	27:24
14	11 बु	08:29:24:58	07:06:26:38	08:27:18:12	08:28:44:08	02:26:57:17	09:02:48:39	10:29:29:59	10:19:40:55	43:01:46	द·22:07:14	– 9:07	28:17
15	12 गु	09:00:26:18	07:18:27:36	08:28:04:14	09:00:29:58	02:26:49:12	09:04:04:35	10:29:35:06	10:19:37:44	43:02:50	द·21:56:50	– 9:31	29:10
16	13 शु	09:01:27:38	08:00:30:23	08:28:50:20	09:02:15:36	02:26:41:07	09:05:20:30	10:29:40:17	10:19:34:34	43:03:58	द·21:46:01	– 9:55	30:00
17	14 श	09:02:28:57	08:12:38:31	08:29:36:29	09:04:00:59	02:26:33:02	09:06:36:24	10:29:45:32	10:19:31:23	43:05:07	द·21:34:46	–10:18	30:47
18	30 र	09:03:30:15	08:24:55:08	09:00:22:42	09:05:46:04	02:26:24:58	09:07:52:17	10:29:50:52	10:19:28:12	43:06:19	द·21:23:07	–10:40	07:34

7 जनवरी सूर्योदयकालीन तिथिः**4**

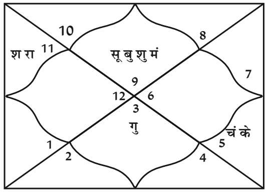

14 जनवरी सूर्योदयकालीन तिथिः**11**

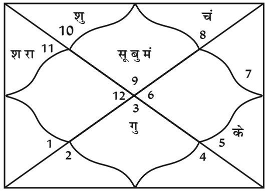

माघ कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 4 जनवरी से 18 जनवरी, 2026 ईस्वी

पक्षान्तः– कालःपूर्व । ऋतुः हेमन्त दक्षिणायनं मकरार्कतः ऋतुः शिशिर उत्तरायणं । याम्यगोलः । तिः30 अयनांशाः 22:53:13

दिनाङ्क जनवरी	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
4	1 र	।
5	2 चं	**भद्रारंभः 23:57 घं·**, पूर्वाषाढ़ेबुधः घं·13:44।
6	3 मं	**गण्डान्तः10:06–21:57, भद्रांतः11:24 घं·, तिलकुट चौथ।**
7	4 बु	।
8	5 गु	। ⓟ गंगासागर स्नान, मलमास समाप्त, पोंगल (केरल), मकरेबुधः 25:37।
9	6 शु	**भद्रा 10:31–22:49 घं·**, उत्तराषाढ़ेशुक्रः घं·10:57।
10	7 श	**श्रीस्वामी विवेकानन्द जयन्ती** (तिथि)।
11	8 र	उत्तराषाढ़ेरविः घं·15:18, मकरेशुक्रः घं·26:07।
12	9 चं	**भद्रारंभः 27:03 घं·**, राष्ट्रीय युवा दिवस, उत्तराषाढ़ेबुधः घं·27:19।
13	10 मं	**भद्रांतः16:04 घं·**, उत्तराषाढ़ेमङ्गलः घं·11:30।
14	11 बु	**मकर संक्रान्ति पुण्यकालं 07:23–17:48 घं·**, मकरेरविः घं·21:05, ⓟ
15	12 गु	**गण्डान्तारम्भः 23:45।**
16	13 शु	**गण्डान्तः12:60, भद्रारंभः 22:26 घं·**, मेरु त्रयोदशी (जैन)।
17	14 श	**भद्रांतः11:20 घं·**, मकरेमङ्गलः घं·19:38।
18	30 र	**अभिजितारम्भः 29:59**, द्वापरयुगादि, मेला हरिद्वार, प्रयाग।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
1	12:15–13:38
30	12:19–13:45

❀ मकर संक्रान्ति कृत्य ❀

❀ मकर संक्रान्ति- सूर्यसिद्धान्तीय गणना से सूर्य 14 जनवरी को 21 बजके 05 मिनट पर मकर में प्रवेश करेगा अतः मकर संक्रान्ति 14 जनवरी को ही होगी, उसी दिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक पुण्यकाल स्नान दान होगा। अतः **संशयरहित होकर मकर संक्रान्ति 14 जनवरी 2024 को ही मनाएं।** मकर संक्रान्ति से ही देवताओं का दिन आरम्भ होता है। यहीं से उत्तरायण का शुभारम्भ होता है। **मकर संक्रान्ति को स्नान न करने वाला व्यक्ति जन्म-जन्मान्तर में रोगी तथा निर्धन होता है-**

रविसंक्रमणे प्राप्ते न स्नायाद्यस्तु मानवः । सप्तजन्मनि रोगी स्यान्निर्धनश्चैव जायते। (धर्मसिन्धु)

यह भगवान सूर्य नारायण का विशेष व्रत है। अतः **मकर संक्रान्ति के दिन स्नान, दान, हवन करने का शुभफल जन्मजन्मान्तर में भगवान् श्री सूर्यनारायण द्वारा प्रदान किया जाता है-** *संक्रान्तौ यानि दत्तानि हव्यकव्यानि दातृभिः। तानि नित्यं ददात्यर्कः पुनर्जन्मनि जन्मनि। (धर्मसिन्धु)* **मकर संक्रान्ति** के दिन शिवलिंग का घी से अभिषेक करने का विशेषफल होता है। स्वर्ण दान तथा तिल से भरे पात्र का दान करना अक्षय फल देता है। इस दिन श्रीआदित्यहृदयस्तोत्र के पाठ करें और भगवान् श्रीसूर्यनारायण को तांबे के कलश में लाल चन्दन, लाल पुष्प, चावल, तिल डालकर अर्घ्य देवें। *अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणः। तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः* // - गीता8/24

मकर राशि में सूर्य के प्रवेश के साथ ही देवमार्ग खुलता है। अनेक आकाशीय वीथियों का वर्णन वैदिक वांग्मय में वर्णित है। उत्तरायण शुभ आत्मा का सहचर पथ है। इस पथ पर आरूढ़ आत्मा भटकती नहीं, शुभलोक में जाती है।

स्कन्दपुराण में वर्णित श्रीसूर्यनारायण की स्तुति श्रीजयादित्य अष्टकम् के 1200 पाठ करने से सूर्य भगवान् प्रसन्न होते हैं व सूर्यजनित अशुभ फल, विशेषतः त्वचा, नेत्र सम्बन्धी रोग-व्याधि, धन, राजकार्य आदि समस्या में लाभ होता है।

❀ षट्तिला एकादशी - माघ कृष्ण एकादशी को प्रातः स्नान करके '**श्रीकृष्ण**' इस मन्त्र के 8, 28, 108 या 1000 जप करे। उपवास रखे। रात्रि में जागरण और हवन करे। भगवान का पूजन करे और '**सुब्रह्मण्य नमस्तेऽस्तु महापुरुषपूर्वज । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं लक्ष्म्या सह जगत्पते ।।**' इस मन्त्र से अर्घ्य दे। 'षट्तिला' एकादशी में 1. तिलों के जल से स्नान करे, 2. पिसे हुए तिलों का उबटन करे, 3. तिलों का हवन करे, 4. तिल मिला हुआ जल पीये, 5. तिलों का दान करे और 6. तिलों के बने (लड्डू, बर्फी आदि) का भोजन करे तो पापों का नाश हो जाता है।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जनवरी	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
4	12:44	14:20	16:16	18:30	20:50	23:07	01:22	03:41	05:59	08:04	09:49	11:18
5	12:40	14:16	16:12	18:26	20:46	23:03	01:18	03:37	05:56	08:00	09:45	11:14
6	12:36	14:12	16:08	18:22	20:42	22:59	01:14	03:33	05:52	07:57	09:41	11:10
7	12:32	14:08	16:04	18:18	20:38	22:55	01:10	03:29	05:48	07:53	09:37	11:06
8	12:28	14:04	16:00	18:14	20:34	22:51	01:06	03:25	05:44	07:49	09:33	11:02
9	12:24	14:00	15:56	18:10	20:30	22:47	01:02	03:21	05:40	07:45	09:29	10:58
10	12:20	13:56	15:52	18:06	20:26	22:43	00:58	03:17	05:36	07:41	09:25	10:54
11	12:16	13:52	15:48	18:02	20:22	22:39	00:54	03:13	05:32	07:37	09:21	10:51
12	12:12	13:48	15:44	17:58	20:19	22:35	00:50	03:09	05:28	07:33	09:17	10:47
13	12:09	13:45	15:40	17:54	20:15	22:31	00:46	03:05	05:24	07:29	09:13	10:43
14	12:05	13:41	15:36	17:50	20:11	22:27	00:42	03:01	05:20	07:25	09:10	10:39
15	12:01	13:37	15:32	17:46	20:07	22:23	00:38	02:57	05:16	07:21	09:06	10:35
16	11:57	13:33	15:28	17:43	20:03	22:19	00:34	02:53	05:12	07:17	09:02	10:31
17	11:53	13:29	15:24	17:39	19:59	22:15	00:30	02:49	05:08	07:13	08:58	10:27
18	11:49	13:25	15:20	17:35	19:55	22:11	00:26	02:45	05:04	07:09	08:54	10:23

जनवरी	卐 सर्वार्थसिद्धि, रवि आदि योग 卐
4	**द·ति·** 14:12 से, **मृत्यु·** 14:12 तक, **सर्वार्थ·** 17:23 से, **त्रिपुष्करः** 14:12 से 17:23 तक
5	**द·ति·** 12:37 तक, **सर्वार्थ·** 16:31 तक, **मृत्यु·** 12:37 तक
6	**सर्वार्थ·** 16:00 तके, **सिद्ध·** 11:24 तक
8	**द·न·उफा·**16:19 से, **सिद्ध·**10:18 तक, **रवियोगः**16:19 से
9	**सिद्ध·** 10:30 तक, **रवियोगः**17:12 तक, **मृत्यु·**10:30 से
11	**सिद्ध·** 12:27 तक
12	**अमृत·** 14:06 से
13	**मृत्यु·** 16:04 से
14	**सर्वार्थ·** 27:48 तक, **अमृत·** 18:14 तक, **सिद्ध·**18:14 से
15	**द·ति·** 20:24 तक, **अमृत·** 20:24 से
16	**अमृत·** 22:25 से
17	**सिद्ध·** 24:08 तक, **मृत्यु·** 24:08 से
18	**अमृत·** 25:25 तक, **सर्वार्थ·** 10:46 से, **मृत्यु·** 25:25 से

❀ माघमास में स्नान दान व्रत नियम का महत्व ❀

पद्मपुराण के उत्तरखण्ड में माघमास के माहात्म्य का वर्णन करते हुए कहा है कि व्रत, दान और तपस्या से भी भगवान् श्रीहरि को उतनी प्रसन्नता नहीं होती, जितनी कि माघ महीने में स्नानमात्र से होती है। इसलिये स्वर्गलाभ, सभी पापों से मुक्ति और भगवान् वासुदेव की प्रीति प्राप्त करने के लिये प्रत्येक मनुष्य को माघ स्नान करना चाहिये। *(पद्मपुराण)* माघमास में पूर्णिमा को जो व्यक्ति ब्रह्मवैवर्त पुराण दान करता है, उसे ब्रह्मलोक प्राप्ति होती है। *(मत्स्यपुराण 53/35)* माघ मास में स्नान, दान, उपवास और भगवान् माधव की पूजा अत्यन्त फलदायी है।

महाभारत के अनुशासनपर्व में कहा है- हे भरतश्रेष्ठ ! माघमास की अमावास्या को प्रयागराज में तीन करोड़ दस हजार अन्य तीर्थों का समागम होता है। जो नियमपूर्वक उत्तम व्रत का पालन करते हुए माघमास में प्रयाग में स्नान करता है, वह सब पापों से मुक्त होकर स्वर्ग में जाता है। *(महा, अनु)* जो माघमास में ब्राह्मणों को तिल दान करता है, वह समस्त जन्तुओं से भरे हुए नरक का दर्शन नहीं करता। जो माघ मास को नियमपूर्वक एक समय के भोजन से व्यतीत करता है, वह धनवान् कुल में जन्म लेकर अपने कुटुम्बीजनों में महत्त्व को प्राप्त होता है। *(महा,अनु)*

माघ शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 19 जनवरी से 1 फरवरी, 2026 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 19:1:2026– वक्री गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वास्तः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपश्चिमास्तः, मार्गी बुधःपूर्वास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	व्रत–पर्व–उत्सव
जनवरी	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	जनवरी	19 जनवरी से 1 फरवरी, 2026 ईस्वी
19	1 चं	४७:०७	26:13	उ·षा·	१२:२८	12:22	वज्र	३५:३२	21:35	किं	13:53	बव	26:13	26:15	7:22	17:52	मकर	अहोरात्र	काण	19	**गुप्त नवरात्र आरम्भः**, श्रीमद् वल्लभाचार्य जयन्ती
20	2 मं	४७:५१	26:30	श्रवण	१५:१६	13:28	सिद्धि	३३:१९	20:42	बाल	14:25	कौल	26:30	26:17	7:22	17:53	कु·46:11	25:50	लुम्ब	20	
21	3 बु	४७:१७	26:17	धनि·	१६:४८	14:05	व्यति·	३०:०७	19:25	तैति	14:27	गर	26:17	26:20	7:22	17:54	कुंभ	अहोरात्र	मित्र	21	**गौरी तृतीया**, व्यतीपात पुण्यम्
22	4 गु	४५:३०	25:34	शत·	१७:०८	14:13	वरी·	२५:५७	17:44	वणि	13:59	विष	25:34	26:22	7:22	17:55	कुंभ	अहोरात्र	वज्र	22	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**, उमा चतुर्थी, तिल चौथ, कुन्द चतुर्थी
23	5 शु	४२:३७	24:24	पू·भा·	१६:१९	13:53	परिघ	२०:५३	15:43	बव	13:02	बाल	24:24	26:25	7:22	17:56	मी·01:38	08:01	ध्वांक्ष	23	**वसन्तपंचमी, श्रीसरस्वती पूजन, श्रीगोविन्ददेवजी पाटोत्सव जयपुर**
24	6 श	३८:४७	22:52	उ·भा·	१४:३१	13:10	शिव	१५:०१	13:22	कौल	11:40	तैति	22:52	26:28	7:21	17:57	मीन	अहोरात्र	धूम्र	24	मन्दार षष्ठी
25	7 र	३४:१०	21:01	रेवती	११:५२	12:06	सिद्ध	०८:२९	10:45	गर	09:59	वणि	21:01	26:31	7:21	17:57	मे·11:52	12:06	प्रवर्द्ध	25	**भानुसप्तमी**, श्री देवनारायण जयन्ती, ब्रह्मसावर्णि·मन्वादि
26	8 चं	२८:५६	18:55	अश्वि·	०८:३३	10:46	साध्य शुभ	**०१:२३** **५२:२९**	**07:54** **28:53**	विष	08:00	बव	18:55	26:34	7:21	17:58	मेष	अहोरात्र	राक्षस	26	**श्री दुर्गाष्टमी व्रतम्**, श्री भीष्माष्टमी (मध्याह्नव्यापिनी)
27	9 मं	२३:१८	16:39	भरणी	०४:४५	09:14	शुक्ल	४६:०७	25:47	कौल	16:39	तैति	27:28	26:37	7:20	17:59	वृ·18:45	14:50	मुसल	27	**गुप्त नवरात्र समाप्तिः**, महानन्दा नवमी, श्री हरि जयन्ती
28	10 बु	१७:२६	14:18	कृत्ति· रोहि·	**००:४०** **५५:४९**	**07:36** **29:56**	ब्रह्म	३८:१५	22:38	गर	14:18	वणि	25:07	26:40	7:20	18:00	वृष	अहोरात्र	सिद्धि	28	**गुप्त नवरात्रोत्थापन**, मुनि श्री अजीतनाथ जयन्ती (जैन)
29	11 गु	११:३३	11:57	मृग·	५२:२९	28:19	ऐन्द्र	३०:२६	19:30	विष	11:57	बव	22:48	26:43	7:20	18:01	मि·24:28	17:07	मृत्यु	29	**जया एकादशी (सर्वेषाम्)**, भीष्मोद्देशेन श्राद्धतर्पणं
30	12 शु	०५:५३	09:40	आर्द्रा	४८:४९	26:51	वैधृ·	२२:५२	16:28	बाल	09:40	कौल	20:35	26:46	7:19	18:02	मिथुन	अहोरात्र	पद्म	30	**प्रदोष व्रतम्, श्री भीष्म द्वादशी**, तिलद्वादशी, श्रीवाराह द्वादशी
31	13 श 14 श	**००:३७** **५५:१८**	**07:33** **29:40**	पुन·	४५:४२	25:35	विष्कु·	१५:३९	13:34	तैति	07:33	गर	18:35	26:49	7:19	18:03	क·31:25	19:53	छत्र	31	श्री रामचरण स्नेही जयन्ती, मुनि श्री गोरखनाथ जयन्ती
फरवरी	15 र	५२:००	28:06	पुष्य	४३:१९	24:38	प्रीति	०८:५७	10:53	विष	16:50	बव	28:06	26:52	7:18	18:03	कर्क	अहोरात्र	श्रीवत्स	फरवरी	**माघी पूर्णिमा (व्रत–स्नान–दान), होलिका रोपण, माघस्नान समाप्त**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	वक्री गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
जनवरी	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
19	1 चं	09:04:31:32	09:07:22:55	09:01:08:57	09:07:30:48	02:26:16:56	09:09:08:09	10:29:56:17	10:19:25:02	43:07:32	द·21:11:03	−11:01	07:34
20	2 मं	09:05:32:48	09:20:04:00	09:01:55:16	09:09:15:07	02:26:08:55	09:10:24:00	11:00:01:46	10:19:21:51	43:08:48	द·20:58:35	−11:22	08:13
21	3 बु	09:06:34:04	10:02:59:50	09:02:41:38	09:10:58:57	02:26:00:56	09:11:39:51	11:00:07:20	10:19:18:40	43:10:06	द·20:45:43	−11:42	08:53
22	4 गु	09:07:35:18	10:16:11:09	09:03:28:03	09:12:42:16	02:25:52:59	09:12:55:40	11:00:12:57	10:19:15:30	43:11:26	द·20:32:27	−12:01	09:30
23	5 शु	09:08:36:32	10:29:37:52	09:04:14:31	09:14:24:60	02:25:45:05	09:14:11:28	11:00:18:40	10:19:12:19	43:12:48	द·20:18:48	−12:20	10:06
24	6 श	09:09:37:45	11:13:19:11	09:05:01:03	09:16:07:03	02:25:37:14	09:15:27:14	11:00:24:26	10:19:09:08	43:14:12	द·20:04:47	−12:37	11:21
25	7 र	09:10:38:56	11:27:13:34	09:05:47:37	09:17:48:23	02:25:29:26	09:16:43:00	11:00:30:16	10:19:05:58	43:15:38	द·19:50:23	−12:54	11:21
26	8 चं	09:11:40:07	00:11:18:48	09:06:34:14	09:19:28:56	02:25:21:42	09:17:58:44	11:00:36:10	10:19:02:47	43:17:05	द·19:35:37	−13:10	12:02
27	9 मं	09:12:41:17	00:25:32:08	09:07:20:55	09:21:08:35	02:25:14:01	09:19:14:28	11:00:42:08	10:18:59:36	43:18:35	द·19:20:30	−13:25	12:47
28	10 बु	09:13:42:25	01:09:50:22	09:08:07:38	09:22:47:18	02:25:06:25	09:20:30:10	11:00:48:10	10:18:56:26	43:20:06	द·19:05:01	−13:39	13:37
29	11 गु	09:14:43:33	01:24:09:55	09:08:54:24	09:24:24:59	02:24:58:54	09:21:45:50	11:00:54:16	10:18:53:15	43:21:38	द·18:49:12	−13:53	14:33
30	12 शु	09:15:44:39	02:08:26:49	09:09:41:14	09:26:01:32	02:24:51:28	09:23:01:30	11:01:00:26	10:18:50:04	43:23:12	द·18:33:02	−14:05	15:32
31	13 श	09:16:45:44	02:22:37:38	09:10:28:06	09:27:36:52	02:24:44:07	09:24:17:08	11:01:06:39	10:18:46:54	43:24:48	द·18:16:32	−14:17	16:36
फरवरी	15 र	09:17:46:48	03:06:39:21	09:11:15:01	09:29:10:53	02:24:36:52	09:25:32:45	11:01:12:56	10:18:43:43	43:26:25	द·17:59:43	−14:28	17:39

22 जनवरी सूर्योदयकालीन तिथि:**4**

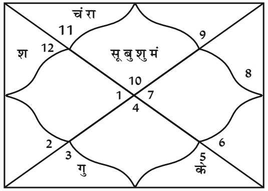

29 जनवरी सूर्योदयकालीन तिथि:**11**

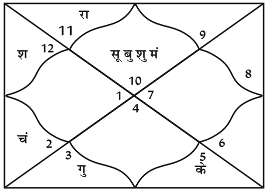

माघ शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 19 जनवरी से 1 फरवरी, 2026 ईस्वी

पक्षान्तः– कालः दक्षिण । ऋतुः शिशिर । उत्तरायणं ।
याम्यगोलः । ति·15 अयनांशा: 22:53:15

दिनाङ्क जनवरी	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
19	1 चं	**अभिजितान्तः 14:03**, श्रवणायांशुक्रः घं·23:50, मीनेशनिः घं·13:30।
20	2 मं	**पंचकारंभः 25:50**, श्रवणायांबुधः घं·17:47।
21	3 बु	**पंचक**।
22	4 गु	**पंचक, भद्रा 13:59–25:34 घं·**।
23	5 शु	**पंचक**, मदनोत्सव, रतिकाममहोत्सव, नेताजी सुभाषचन्द्रबोस जयन्ती।
24	6 श	**पंचक, गण्डान्तारम्भः 30:24**, दरिद्रहरण षष्ठी (स्कान्दे), श्रवणायांरविः घं·16:06। ⓙ मर्यादा महोत्सव (जैन)।
25	7 र	**पंचकान्तः12:06, भद्रारंभः 21:01 घं·, गण्डान्तः17:47, अचला सप्तमी, रथसप्तमी**, मेला तामड़िया भैरूंजी (चाकसू)ⓙ
26	8 चं	**भद्रांतः8:00 घं·**, भीष्मोदेशेन श्राद्धतर्पणं, **श्री गणतन्त्र दिवस, ध्वजारोहण, परेड**।
27	9 मं	।
28	10 बु	**भद्रारंभः 25:08 घं·**, धनिष्ठायांबुधः घं·15:25।
29	11 गु	**भद्रांतः 11:57 घं·**, मरू महोत्सव 4 दिन (जैसलमेर), मेला बेणेश्वर प्रारम्भ 10 दिन (डूंगरपुर)।
30	12 शु	दीर्घायुलाभाय तिलसे विष्णुपूजन, सन्तानद्वादशी, वैधृति पुण्यम्, धनिष्ठायांशुक्रःघं·13:16, श्रवणायांमङ्गलःघं·17:10।
31	13 श 14 श	**भद्रारंभः २९:४१ घं·**, विश्वकर्मा जयन्ती, मुनि धर्मनाथ जयन्ती, श्री जिनेन्द्र रथयात्रा (जैन), कल्पादि१३।
फरवरी 1	15 र	**भद्रांतः16:51 घं·, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी राजराजेश्वरी ललिता जयन्ती**, गुरु रविदास जयन्ती, बेणेश्वर मुख्यमेला डूंगरपुर, कुम्भेबुधः घं·20:03।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
1	12:19–13:45
15	12:20–13:48

❀ वसन्त पञ्चमी सरस्वती पूजन ❀

विद्यार्थी यदि एक पीत पुष्प चढ़ाकर भगवती सरस्वती का कोई स्तोत्र पाठ करले तब भी वह विद्या के क्षेत्र में सफलता को प्राप्त करता है। सरस्वती देवी की आराधना से साधारण व्यक्ति को विशिष्ट प्रतिभा प्राप्त होती है और विशिष्ट बुद्धि वाला अतीन्द्रिय ज्ञान सम्पन्न हो जाता है।

❀ वैदिक मन्त्र ❀

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञम् वष्टु धिया वसुः ।। *ऋग्वेद 1/3/10*
ॐ चोदयित्री सुनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्। यज्ञम् दधे सरस्वती ।। *ऋग्वेद 1/3/11*
ॐ अम्बितमे नदीतमे देवीतमे सरस्वती। अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि।।*1/41/16*

❀ महर्षि आश्वलायन कृत स्तोत्र ❀

ॐ चतुर्मुख-मुखाम्भोज-वनहंस-वधूर्मम । मानसे रमतां नित्यं सर्वशुक्ला सरस्वती ।।
ॐ नमस्ते शारदे देवि काश्मीर-पुर-वासिनी । त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे ।।
ॐ अक्षसूत्र-धरा पाश- पुस्तक- धारिणी । मुक्ताहार-समायुक्ता वाचि तिष्ठतु मे सदा ।।
ॐ कम्बुकण्ठी सुताम्रोष्ठी सर्वाभरणभूषिता । महासरस्वती देवी जिह्वाग्रे संनिविश्यताम् ।।
ॐ या श्रद्धा धारणा मेधा वाग्देवी विधिवल्लभा। भक्तजिह्वाग्र-सदना शमादि-गुणदायिनी ।।
ॐ नमामि यामिनीनाथ लेखालंकृत-कुन्तलाम् । भवानीं भव- संताप -निर्वापण -सुधानदीम् ।।

❀ सरस्वती - स्तोत्र ❀

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्रवस्त्रावृता। या वीणा वर दण्ड मण्डित करा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता। सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।
शुक्लां ब्रह्म विचारसार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं। वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फटिकमालिकां च दधतीम् पद्मासनेसंस्थितां। वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।
सरस्वति महाभागे विद्ये कमल-लोचने । विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोस्तुते ।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जनवरी	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
19	11:45	13:21	15:16	17:31	19:51	22:07	00:22	02:41	05:00	07:05	08:50	10:19
20	11:41	13:17	15:12	17:27	19:47	22:03	00:18	02:37	04:56	07:01	08:46	10:15
21	11:37	13:13	15:09	17:23	19:43	21:59	00:14	02:33	04:52	06:57	08:42	10:11
22	11:33	13:09	15:05	17:19	19:39	21:55	00:10	02:29	04:48	06:54	08:38	10:07
23	11:29	13:05	15:01	17:15	19:35	21:52	00:07	02:25	04:44	06:50	08:34	10:03
24	11:25	13:01	14:57	17:11	19:31	21:48	00:03	02:21	04:40	06:46	08:30	09:59
25	11:21	12:57	14:53	17:07	19:27	21:44	23:59	02:17	04:36	06:42	08:26	09:55
26	11:17	12:53	14:49	17:03	19:23	21:40	23:55	02:14	04:32	06:38	08:22	09:51
27	11:13	12:49	14:45	16:59	19:19	21:36	23:51	02:10	04:28	06:34	08:18	09:47
28	11:09	12:45	14:41	16:55	19:15	21:32	23:47	02:06	04:24	06:30	08:14	09:43
29	11:05	12:41	14:37	16:51	19:11	21:28	23:43	02:02	04:21	06:26	08:10	09:39
30	11:01	12:37	14:33	16:47	19:07	21:24	23:39	01:58	04:17	06:22	08:06	09:35
31	10:57	12:33	14:29	16:43	19:03	21:20	23:35	01:54	04:13	06:18	08:02	09:31
फरवरी	10:53	12:29	14:25	16:39	18:59	21:16	23:31	01:50	04:09	06:14	07:58	09:28

जनवरी	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
19	**सिद्धः** 26:13 तक, **सर्वार्थः** 12:22 से, **मृत्युः** 26:13 से
20	**अमृतः** 26:30 तक, **द्विपुष्करः**13:28 से 26:30 तक
21	द·न·ध· 14:05 तक, **मृत्युः**26:17 तक, **रवियोगः**14:05 से
22	**मृत्युः** 25:34 तक, **रवियोगः**14:13 तक, **सिद्धः**25:34 से
23	**रवियोगः** 13:53 से, **सिद्धः** 24:24 से
24	**अमृतः** 22:52 तक, **रवियोगः** अहोरात्र
25	**रवियोगः** 12:06 तक, **सर्वार्थः** 12:06 से, **सिद्धः** 21:01 से
27	**सर्वार्थः** 09:14 से, **रवियोगः** 09:14 से
28	**सर्वार्थः** 07:36 तक, **रवियोगः** अहोरात्र, **सर्वार्थः** अहोरात्र, **अमृतः** 14:18 से
29	द·ति· 11:57 से
30	द·ति·09:40 तक,**मृत्युः**09:40तक, **सर्वार्थः·रवियोगः**26:51 से
31	**रवियोगः** 25:35 तक, **सिद्धः** 07:33 से 29:40 तक
फरवरी	**सर्वार्थः** 24:38 तक, **अमृतः**28:06 तक, **मृत्युः** 28:06 से

❀ **माघ शुक्ल प्रतिपदा से नवमी** तक **गुप्त नवरात्रि** की आराधना चलती है।

❀ कुंदचतुर्थी, **तिलचतुर्थी** में गणेश जी को तिल का लड्डू चढ़ाया जाता है। गौरी माता को कुंद अर्पित किया जाता है।

❀**माघ शुक्ल पंचमी** के दिन विद्या की अधिष्ठात्री भगवती सरस्वती का पूजन करें। नैवेद्य भी अधिकाधिक पीले व्यंजनों का भोग लगावें। **वसंत पंचमी** के दिन से संवत् होलिका गाड़कर उसमें ईंधन डालने की प्रक्रिया लोक में शुरू होती है जो होलिकादाह के दिन जलाई जाती है।

❀**माघी पूर्णिमा** को कल्पवास की समाप्ति व भगवती ललिता महात्रिपुरसुन्दरी की जयन्ती मनाई जाती है। माघी पूर्णिमा को पितृलोक का द्वार खुला रहता है, इस दिन दान–धर्म, श्राद्ध–तर्पण का अपूर्व महत्व है। माघ स्नान और दान का मास है।

फाल्गुन कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 2 फरवरी से 17 फरवरी, 2026 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 2:2:2026– वक्री गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपश्चिमास्तः, मार्गी बुधःपश्चिमोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	ॐ व्रत–पर्व–उत्सव ॐ
फरवरी	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	फरवरी	2 फरवरी से 17 फरवरी, 2026
2	1 चं	४९:0१	26:54	आश्ले·	४१:४९	24:01	आयु· सौभा·	0२:५४ ५४:४१	08:27 30:19	बाल	15:27	कौल	26:54	26:56	7:18	18:04	सिं·41:49	24:01	सौम्य	2	ब्रज महोत्सव 3 दिन भरतपुर (2 फरवरी)
3	2 मं	४७:0८	26:09	मघा	४१:२२	23:50	शोभ·	५३:११	28:33	तैति	14:27	गर	26:09	26:59	7:17	18:05	सिंह	अहोरात्र	कालदंड	3	
4	3 बु	४६:२७	25:52	पू·फा·	४२:0५	24:07	अतिग·	४९:४३	27:10	वणि	13:56	विष	25:52	27:02	7:17	18:06	कं·57:26	30:15	प्रवर्द्ध	4	
5	4 गु	४७:0४	26:06	उ·फा·	४४:0२	24:53	सुकर्मा	४७:१५	26:10	बव	13:54	बाल	26:06	27:06	7:16	18:07	कन्या	अहोरात्र	मातङ्ग	5	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं· 21:37**
6	5 शु	४८:५७	26:50	हस्त	४७:१४	26:09	धृति	४५:४७	25:34	कौल	14:24	तैति	26:50	27:09	7:16	18:07	कन्या	अहोरात्र	अमृत	6	श्रीमहाकाल शिवनवरात्र महोत्सव (उज्जैन)
7	6 श	५२:0३	28:04	चित्रा	५१:३६	27:53	शूल	४५:१३	25:20	गर	15:24	वणि	28:04	27:13	7:15	18:08	तु·19:18	14:58	काण	7	
8	7 र	५६:१४	29:44	स्वाती	५६:५९	30:02	गण्ड	४५:३0	25:26	विष	16:50	बव	29:44	27:16	7:14	18:09	तुला	अहोरात्र	लुम्ब	8	श्रीनाथजी पाटोत्सव (नाथद्वारा), विश्व महिला दिवस
9	8 चं	६0:00	अहोरात्र	विशा·	६0:00	अहोरात्र	वृद्धि	४६:२४	25:47	बाल	18:41	कौल	60:00	27:20	7:14	18:10	वृ·46:32	25:51	मित्र	9	**श्रीकालाष्टमी**
10	8 मं	0१:१३	07:42	विशा·	0३:0९	08:28	ध्रुव	४७:४२	26:18	कौल	07:42	तैति	20:45	27:23	7:13	18:11	वृश्चिक	अहोरात्र	श्रीवत्स	10	**सीताष्टमी**
11	9 बु	0६:३६	09:51	अनु·	0९:४१	11:05	व्याघ·	४९:0६	26:51	गर	09:51	वणि	25:55	27:27	7:12	18:11	वृश्चिक	अहोरात्र	सौम्य	11	समर्थ गुरु रामदास जयन्ती
12	10 गु	११:६0	12:00	ज्ये·	१६:१२	13:40	हर्षण	५0:१७	27:18	विष	12:00	बव	25:00	27:31	7:12	18:12	ध·16:12	13:40	कालदंड	12	स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती (आर्यसमाज)
13	11 शु	१६:५७	13:57	मूल	२२:१७	16:06	वज्र	५0:५९	27:35	बाल	13:57	कौल	26:50	27:34	7:11	18:13	धनु	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	13	**विजया एकादशी (सर्वेषाम्)**, श्रेयांसनाथ जयन्ती११
14	12 श	२१:0६	15:37	पू·षा·	२७:३५	18:12	सिद्धि	५0:५८	27:33	तैति	15:37	गर	28:16	27:38	7:10	18:14	म·43:45	24:40	मातङ्ग	14	**शनि प्रदोष व्रतम्**
15	13 र	२४:११	16:50	उ·षा·	३१:५१	19:54	व्यति·	५0:0६	27:12	वणि	16:50	विष	29:15	27:42	7:09	18:14	मकर	अहोरात्र	अमृत	15	**श्रीमहाशिवरात्रि व्रतम् सर्वत्रशिवपूजन–अभिषेक**
16	14 चं	२६:0४	17:34	श्रवण	३४:५६	21:07	वरी·	४८:१५	26:27	शकु	17:34	चतु	29:45	27:46	7:09	18:15	मकर	अहोरात्र	सिद्धि	16	मुनि वासुपूज्य जयन्ती१४
17	30 मं	२६:३९	17:47	धनि·	३६:४७	21:50	परिघ	४५:२५	25:18	नाग	17:47	किं	29:42	27:50	7:08	18:16	कु·06:02	09:33	उत्पात	17	**अमावस्या (देव–पितृकार्य), भौमवती अमावस्या**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क फरवरी	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	वक्री गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
2	1 चं	09:18:47:51	03:20:29:21	09:12:01:59	10:00:43:28	02:24:29:43	09:26:48:20	11:01:19:16	10:18:40:32	43:28:04	द·17:42:35	−14:38	18:42
3	2 मं	09:19:48:53	04:04:05:41	09:12:48:59	10:02:14:32	02:24:22:40	09:28:03:54	11:01:25:39	10:18:37:22	43:29:44	द·17:25:07	−14:47	19:42
4	3 बु	09:20:49:53	04:17:27:01	09:13:36:03	10:03:43:55	02:24:15:43	09:29:19:26	11:01:32:06	10:18:34:11	43:31:25	द·17:07:22	−14:55	20:41
5	4 गु	09:21:50:52	05:00:32:50	09:14:23:09	10:05:11:32	02:24:08:54	10:00:34:57	11:01:38:37	10:18:31:00	43:33:08	द·16:49:18	−15:03	21:37
6	5 शु	09:22:51:50	05:13:23:21	09:15:10:17	10:06:37:13	02:24:02:12	10:01:50:27	11:01:45:10	10:18:27:50	43:34:52	द·16:30:57	−15:09	22:33
7	6 श	09:23:52:46	05:25:59:31	09:15:57:29	10:08:00:50	02:23:55:37	10:03:05:55	11:01:51:47	10:18:24:39	43:36:36	द·16:12:19	−15:15	23:27
8	7 र	09:24:53:41	06:08:23:02	09:16:44:43	10:09:22:14	02:23:49:09	10:04:21:22	11:01:58:26	10:18:21:28	43:38:23	द·15:53:25	−15:20	24:22
9	8 चं	09:25:54:34	06:20:36:15	09:17:31:59	10:10:41:14	02:23:42:50	10:05:36:46	11:02:05:09	10:18:18:18	43:40:10	द·15:34:14	−15:23	25:16
10	8 मं	09:26:55:26	07:02:42:02	09:18:19:18	10:11:57:39	02:23:36:39	10:06:52:10	11:02:11:54	10:18:15:07	43:41:58	द·15:14:47	−15:27	26:10
11	9 बु	09:27:56:17	07:14:43:37	09:19:06:40	10:13:11:19	02:23:30:37	10:08:07:32	11:02:18:43	10:18:11:56	43:43:47	द·14:55:05	−15:29	27:03
12	10 गु	09:28:57:06	07:26:44:44	09:19:54:04	10:14:22:01	02:23:24:43	10:09:22:52	11:02:25:34	10:18:08:46	43:45:37	द·14:35:09	−15:30	27:56
13	11 शु	09:29:57:54	08:08:49:17	09:20:41:30	10:15:29:32	02:23:18:58	10:10:38:10	11:02:32:27	10:18:05:35	43:47:28	द·14:14:57	−15:31	28:42
14	12 श	10:00:58:40	08:21:00:36	09:21:28:59	10:16:33:38	02:23:13:22	10:11:53:27	11:02:39:24	10:18:02:24	43:49:20	द·13:54:32	−15:30	29:29
15	13 र	10:01:59:25	09:03:21:37	09:22:16:30	10:17:34:05	02:23:07:56	10:13:08:42	11:02:46:22	10:17:59:14	43:51:13	द·13:33:53	−15:29	30:11
16	14 चं	10:03:00:07	09:15:54:48	09:23:04:03	10:18:30:39	02:23:02:40	10:14:23:56	11:02:53:24	10:17:56:03	43:53:06	द·13:13:01	−15:27	30:50
17	30 मं	10:04:00:49	09:28:42:00	09:23:51:38	10:19:23:02	02:22:57:33	10:15:39:08	11:03:00:27	10:17:52:52	43:55:01	द·12:51:57	−15:25	07:29

5 फरवरी सूर्योदयकालीन तिथिः4

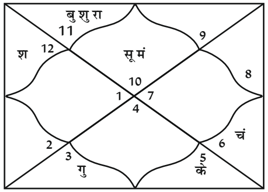

13 फरवरी सूर्योदयकालीन तिथिः11

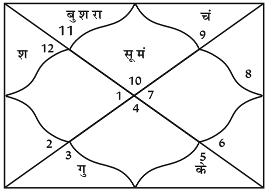

फाल्गुन कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 2 फरवरी से 17 फरवरी, 2026 ईस्वी

पक्षान्तः- कालः दक्षिण । ऋतुः शिशिर । उत्तरायणं । याम्यगोलः । ति·30 अयनांशा: 22:53:17

दिनाङ्क फरवरी	तिथि वार	卐 व्रत-पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
2	1 चं	**गण्डान्तः18:09-29:56।**
3	2 मं	।
4	3 बु	**भद्रा 13:57-25:52 घं·**, कुम्भेशुक्रः घं·20:14।
5	4 गु	।
6	5 शु	धनिष्ठायांरविः घं·18:22, शतभिषायांबुधः घं·09:07।
7	6 श	**भद्रारंभः 28:05 घं·।**
8	7 र	**भद्रांतः16:52 घं·।**
9	8 चं	अष्टका श्राद्ध।
10	8 मं	शतभिषायांशुक्रः घं·03:27।
11	9 बु	**भद्रारंभः 22:56 घं·, गण्डान्तारम्भः 31:03।**
12	10 गु	**भद्रांतः12:00 घं·**, गण्डान्तः20:18।
13	11 शु	**कुम्भ संक्रान्ति पुण्यकाल 12:42-18:13 घं·**, कुम्भेरविः घं·08:01।
14	12 श	। ⑨ व्यतीपात पुण्यम्।
15	13 र	**भद्रा 16:50-29:16 घं·, अभिजितः 13:30-21:35**, बैद्यनाथ जयन्ती, ⑨
16	14 चं	धनिष्ठायांमङ्गलः घं·15:18।
17	30 मं	**पंचकारंभः 09:33**, पूर्वभाद्रेबुधः घं·25:32।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
1	12:20-13:48
30	12:18-13:49

❀ श्रीशिवपंचाक्षरी मन्त्रप्रयोगविधिः ❀

❀ **विनियोगः-** ॐ अस्य श्रीशिवपंचाक्षरीमंत्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिः छन्दः शिवो देवता, मं बीजं, यं शक्तिः, वां कीलकं, सदाशिवकृपाप्रसादोपलब्धिपूर्वक अखिलपुरुषार्थ सिद्धये जपे विनियोगः ।

❀ **ऋष्यादिन्यासः** ॐ अस्य श्रीशिवपंचाक्षरीमंत्रस्य वामदेवर्षये नमः- शिरसि। ॐ पंक्तिछन्दसे नमः- मुखे। ॐ शिवाय देवतायै नमः- हृदये।
ॐ मं बीजाय नमः- गुह्ये। ॐ यं शक्तये नमः- पादयोः। ॐ वां कीलकाय नमः- नाभौ। ॐ सदाशिव कृपाप्रसादोपलब्धिपूर्वक अखिलपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगाय नमः- सर्वांगे।

❀ अथ **करन्यासः**ॐ ॐ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नं नमः तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ मं नमः मध्यमाभ्यां नमः। ॐ शिं नमः अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ वां नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ यं नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

❀ अथ **हृदयादिन्यासः** ॐ ॐ नमः हृदयाय नमः। ॐ नं नमः शिरसे स्वाहा। ॐ मं नमः शिखायै वषट्। ॐ शिं नमः कवचाय हुम्। ॐ वां नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं नमः अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।

❀ अथ **ध्यानम् :** ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं। रत्नाकल्पोज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नं। पद्मासीनं समन्तात्स्तुतम् अमरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं। विश्वाद्यं विश्वबन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।

❀ **श्रीशिव पंचाक्षर मन्त्रः-** **ॐ नमः शिवाय**

❀ फाल्गुन मास कृत्य ❀

❀ **महाशिवरात्रि व्रत-** फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को मध्यरात्रि में चतुर्दशी विद्यमान् होने पर महाशिवरात्रि व्रत होता है। यह त्रयोदशी विद्धा श्रेष्ठ होती है- ***पूर्वविद्धैवकर्तव्याशिवरात्रिः*** *(निर्णयसिन्धु)।* **1.** यदि दोनों दिन अर्धरात्रि में चतुर्दशी न हो तब दूसरे दिन व्रत करें। **2.** यदि दोनों दिन अर्धरात्रि में चतुर्दशी हो तो पूर्व दिन व्रत करें। ऐसा हेमाद्रि और कौस्तुभ का वचन है। **3.** परातिथि अर्थात् चतुर्दशी उदया में ही महाशिवरात्रि करनी चाहिए यह मत माधव, निर्णयसिन्धु और पुरुषार्थचिन्तामणि आदि बहुतों का है। **4.** यदि पूर्व दिन मध्यरात्रि में चतुर्दशी हो, दूसरे दिन मध्यरात्रि में न हो तो पूर्वदिन ही व्रत करना चाहिए। **5.** पूर्व मध्यरात्रि में न हो और अगले दिन मध्यरात्रि में चतुर्दशी हो तो पर (अगले) दिन ही व्रत करना चाहिए। **6.** महाशिवरात्रि की पारणा चतुर्दशी में ही की जाती है।

यह व्रत नित्य और काम्य दोनों है अर्थात् इसे प्रतिवर्ष शिव की आराधना के रूप में किया जा सकता है। साथ ही पुत्र प्राप्ति तथा दीर्घायु प्राप्ति की कामना से भी इसे किया जाता है। काम्य व्रत में 12 वर्ष अथवा 24 वर्ष का संकल्प लिया जाता है- ***एवमेतद् व्रतं कुर्यात् प्रतिसंवत्सरं व्रती। द्वादशाब्दिकमेव स्याच्चतुर्विंशाब्दिकं तु वा।।***

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

फरवरी	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
2	10:49	12:25	14:21	16:35	18:55	21:12	23:27	01:46	04:05	06:10	07:54	09:24
3	10:46	12:22	14:17	16:31	18:51	21:08	23:23	01:42	04:01	06:06	07:50	09:20
4	10:42	12:18	14:13	16:27	18:48	21:04	23:19	01:38	03:57	06:02	07:47	09:16
5	10:38	12:14	14:09	16:23	18:44	21:00	23:15	01:34	03:53	05:58	07:43	09:12
6	10:34	12:10	14:05	16:19	18:40	20:56	23:11	01:30	03:49	05:54	07:39	09:08
7	10:30	12:06	14:01	16:15	18:36	20:52	23:07	01:26	03:45	05:50	07:35	09:04
8	10:26	12:02	13:57	16:12	18:32	20:48	23:03	01:22	03:41	05:46	07:31	09:00
9	10:22	11:58	13:53	16:08	18:28	20:44	22:59	01:18	03:37	05:42	07:27	08:56
10	10:18	11:54	13:49	16:04	18:24	20:40	22:55	01:14	03:33	05:38	07:23	08:52
11	10:14	11:50	13:45	16:00	18:20	20:36	22:51	01:10	03:29	05:34	07:19	08:48
12	10:10	11:46	13:41	15:56	18:16	20:32	22:47	01:06	03:25	05:30	07:15	08:44
13	10:06	11:42	13:37	15:52	18:12	20:28	22:43	01:02	03:21	05:26	07:11	08:40
14	10:02	11:38	13:34	15:48	18:08	20:24	22:39	00:58	03:17	05:22	07:07	08:36
15	09:58	11:34	13:30	15:44	18:04	20:20	22:35	00:54	03:13	05:18	07:03	08:32
16	09:54	11:30	13:26	15:40	18:00	20:16	22:31	00:50	03:09	05:15	06:59	08:28
17	09:50	11:26	13:22	15:36	17:56	20:13	22:27	00:46	03:05	05:11	06:55	08:24

फरवरी	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
2	**सिद्ध·** 26:54 तक, **मृत्यु·** 26:54 से
3	**अमृत·** 26:09 तक, **सिद्ध·** 26:09 से
4	**मृत्यु·**25:52 तक
5	द·न·उफा· 24:53 तक, **मृत्यु·** 26:06 तक, **सिद्ध·** 26:06 से
6	**सिद्ध·** 26:50 से
7	**अमृत·**28:04 तक, **सर्वार्थ·रवियोगः** 27:53 से
8	**रवियोगः** 30:02 तक, **सिद्ध·** 29:44 से
10	**सिद्ध·** 07:42 तक
11	**सर्वार्थ·** 11:05 तक
12	**सिद्ध·** 12:00 तक
13	**सिद्ध·** 13:57 तक, **मृत्यु·** 13:57 से
15	**सर्वार्थ·** 19:54 तक, **सिद्ध·** 16:50 तक
16	**सर्वार्थ·** 21:07 तक, **अमृत·** 17:34 से
17	**मृत्यु·** 17:47 से

विवाह लग्न से कन्या का सुख विचार

शुक्र सास, सूर्य ससुर, लग्न अपना शरीर, लग्न से सातवाँ का स्वामी पति और चन्द्रमा मन होता है। विवाह के समय इन ग्रहों का बल विचार करके ज्योतिषी को विवाहोत्तर उस कन्या के सास आदि परिवार का सुख बतलाना चाहिए। अर्थात विवाहकाल में यदि शुक्र अपनी उच्च 12 राशि, अपनी 2,7 राशि, अपने मित्र की 3,10,11 राशि का हो तथा शुभ मित्र से दृष्ट होकर केन्द्र त्रिकोण में पड़ा हो तो विवाह के बाद उस कन्या को सास का सुख उत्तम होगा।

सूर्य बली हो तो ससुर का सुख उत्तम होगा, विवाहलग्न बली हो तो शारीरिक सुख उत्तम रहेगा, सप्तम का स्वामी बलवान हो तो पति से उत्तम सुख और प्रेम की प्राप्ति होती है एवं चन्द्रमा बली हो तो वधू अपने परिवार (सास, ससुर, पति, देवर, जेठ आदि के) व्यवहार से सदा प्रसन्नचित्त रहती है।

फाल्गुन शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 18 फरवरी से 3 मार्च, 2026 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 18:2:2026– वक्री गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपश्चिमास्तः, मार्गी बुधःपश्चिमोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	व्रत–पर्व–उत्सव
फरवरी	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	फरवरी	18 फरवरी से 3 मार्च 2026
18	1 बु	२५:५७	17:30	शत·	३७:२३	22:04	शिव	४१:३७	23:46	बव	17:30	बाल	29:10	27:53	7:07	18:16	कुंभ	अहोरात्र	मानस	18	पयो व्रतारम्भ
19	2 गु	२४:०२	16:43	पू·भा·	३६:५०	21:50	सिद्ध	३६:५३	21:51	कौल	16:43	तैति	28:09	27:57	7:06	18:17	मी·22:05	15:56	मुद्गर	19	**फूलेरा दौज,** खाटूश्याम मेला आरम्भ
20	3 शु	२१:०२	15:30	उ·भा·	३५:१५	21:11	साध्य	३१:१९	19:37	गर	15:30	वणि	26:45	28:01	7:05	18:18	मीन	अहोरात्र	ध्वज	20	मधूक तृतीया
21	4 श	१७:०६	13:55	रेवती	३२:४८	20:12	शुभ	२५:०२	17:05	विष	13:55	बव	24:59	28:05	7:04	18:19	मे·32:48	20:12	धाता	21	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**
22	5 र	१२:२४	12:01	अश्वि·	२९:३८	18:55	शुक्ल	१८:१०	14:19	बाल	12:01	कौल	22:57	28:09	7:03	18:19	मेष	अहोरात्र	आनन्द	22	
23	6 चं	०७:०६	09:53	भरणी	२५:५६	17:25	ब्रह्म	१०:५०	11:22	तैति	09:53	गर	20:45	28:13	7:03	18:20	वृ·39:57	23:01	सुस्थिर	23	गोरूपिणी छठ बंगाल
24	7 मं 8 मं	**०१:२४ ५४:०३**	**07:35 29:12**	कृत्ति·	२१:५४	15:47	ऐन्द्र वैधृ·	**०३:११ ५२:१०**	**08:18 20:10**	वणि	07:35	विष	28:24	28:17	7:02	18:21	वृष	अहोरात्र	गद	24	**श्रीदुर्गाष्टमी, होलाष्टक प्रारम्भ,** कल्याणसप्तमी
25	9 बु	४९:३२	26:50	रोहि·	१७:४५	14:07	विष्कु·	४७:३३	26:02	बाल	16:01	कौल	26:50	28:21	7:01	18:21	मि·45:41	25:17	शुभ	25	ब्रज–बरसाना में होली आरम्भ
26	10 गु	४३:५१	24:32	मृग·	१३:४२	12:28	प्रीति	३९:५६	22:58	तैति	13:40	गर	24:32	28:25	7:00	18:22	मिथुन	अहोरात्र	मृत्यु	26	लट्ठमार होली (नन्दगाँव)
27	11 शु	३८:३४	22:25	आर्द्रा	०९:५७	10:57	आयु·	३२:३८	20:02	वणि	11:27	विष	22:25	28:29	6:59	18:22	क·52:25	27:57	पद्म	27	**श्रीआमलकी एकादशी (सर्वेषाम्)**
28	12 श	३३:५४	20:31	पुन·	०६:४१	09:38	सौभा·	२५:४८	17:17	बव	09:26	बाल	20:31	28:33	6:58	18:23	कर्क	अहोरात्र	छत्र	28	**जया महाद्वादशी** (पुन०), श्रीगोविन्द द्वादशी
मार्च	13 र	३०:००	18:57	पुष्य	०४:०८	08:36	शोभ·	१९:३५	14:47	कौल	07:41	तैति	18:57	28:37	6:57	18:24	कर्क	अहोरात्र	श्रीवत्स	मार्च	**प्रदोष व्रतम्,** नन्द त्रयोदशी व्रत
2	14 चं	२७:०३	17:45	आश्ले·	०२:२५	07:54	अतिग·	१४:०५	12:34	वणि	17:45	विष	29:19	28:41	6:56	18:24	सिं·02:25	07:54	सौम्य	2	**पूर्णिमा व्रतम्, होलिका दहन (२९:१९ बाद)**
3	15 मं	२५:११	16:59	मघा	०१:४३	07:36	सुकर्मा	०९:२६	10:41	बव	16:59	बाल	28:47	28:45	6:55	18:25	सिंह	अहोरात्र	कालदंड	3	**फाल्गुन पूर्णिमा (स्नान–दान), धुलण्डी**

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	वक्री गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
फरवरी	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
18	1 बु	10:05:01:28	10:11:44:21	09:24:39:15	10:20:10:59	02:22:52:36	10:16:54:18	11:03:07:33	10:17:49:42	43:56:56	द·12:30:40	–15:21	07:28
19	2 गु	10:06:02:06	10:25:02:15	09:25:26:55	10:20:54:13	02:22:47:49	10:18:09:26	11:03:14:42	10:17:46:31	43:58:51	द·12:09:11	–15:17	08:03
20	3 शु	10:07:02:43	11:08:35:18	09:26:14:36	10:21:32:27	02:22:43:13	10:19:24:32	11:03:21:52	10:17:43:21	44:00:47	द·11:47:30	–15:12	08:39
21	4 श	10:08:03:17	11:22:22:22	09:27:02:19	10:22:05:24	02:22:38:48	10:20:39:37	11:03:29:04	10:17:40:10	44:02:44	द·11:25:39	–15:07	09:56
22	5 र	10:09:03:50	00:06:21:38	09:27:50:04	10:22:32:48	02:22:34:33	10:21:54:40	11:03:36:19	10:17:36:59	44:04:42	द·11:03:37	–15:00	09:55
23	6 चं	10:10:04:21	00:20:30:36	09:28:37:51	10:22:54:23	02:22:30:29	10:23:09:41	11:03:43:35	10:17:33:49	44:06:40	द·10:41:25	–14:53	10:40
24	7 मं	10:11:04:50	01:04:46:21	09:29:25:40	10:23:09:54	02:22:26:36	10:24:24:40	11:03:50:53	10:17:30:38	44:08:38	द·10:19:03	–14:46	11:25
25	9 बु	10:12:05:18	01:19:05:32	10:00:13:30	10:23:19:10	02:22:22:54	10:25:39:38	11:03:58:14	10:17:27:27	44:10:37	द·09:56:31	–14:37	12:21
26	10 गु	10:13:05:43	02:03:24:17	10:01:01:22	वक्री 23:22:01	02:22:19:23	10:26:54:33	11:04:05:35	10:17:24:17	44:12:37	द·09:33:51	–14:28	13:17
27	11 शु	10:14:06:07	02:17:38:52	10:01:49:16	10:23:18:22	02:22:16:04	10:28:09:26	11:04:12:59	10:17:21:06	44:14:36	द·09:11:02	–14:19	14:20
28	12 श	10:15:06:29	03:01:46:01	10:02:37:11	10:23:08:13	02:22:12:56	10:29:24:18	11:04:20:24	10:17:17:55	44:16:37	द·08:48:05	–14:08	15:24
मार्च	13 र	10:16:06:48	03:15:42:52	10:03:25:07	10:22:51:39	02:22:10:00	11:00:39:08	11:04:27:50	10:17:14:45	44:18:37	द·08:25:01	–13:57	16:27
2	14 चं	10:17:07:06	03:29:27:06	10:04:13:05	10:22:28:51	02:22:07:16	11:01:53:55	11:04:35:18	10:17:11:34	44:20:38	द·08:01:49	–13:46	17:29
3	15 मं	10:18:07:22	04:12:57:01	10:05:01:04	10:22:00:09	02:22:04:43	11:03:08:41	11:04:42:47	10:17:08:23	44:22:39	द·07:38:31	–13:34	18:28

21 फरवरी सूर्योदयकालीन तिथिः**4**

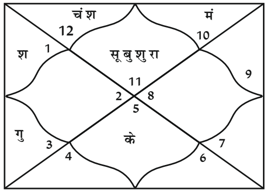

27 फरवरी सूर्योदयकालीन तिथिः**11**

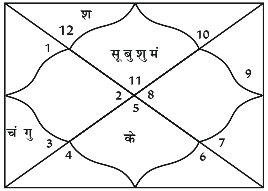

फाल्गुन शुक्लपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 18 फरवरी से 3 मार्च, 2026 ईस्वी

पक्षान्तः – कालः दक्षिण । ऋतुः शिशिर । उत्तरायणं । याम्यगोलः । ति·15 अयनांशा: 22:53:19

दिनाङ्क फरवरी	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
18	1 बु	**पंचक**, उत्तरभाद्रेशनिः घं·20:15।
19	2 गु	**पंचक**, शतभिषायांरविः घं·22:07।
20	3 शु	**पंचक**, **भद्रारंभः 26:46 घं·**, पूर्वभाद्रेशुक्रः घं·18:32।
21	4 श	**पंचकान्तः20:12, भद्रांतः13:55 घं·, गण्डान्तः14:29–25:54।**
22	5 र	।
23	6 चं	। ① सन्त दादूदयाल जयन्ती।
24	7 मं 8 मं	**भद्रा 7:36–18:25 घं·**, वैधृति पुण्यम्, अर्कपुटसप्तमी व्रत, कामदा सप्तमी, ①
25	9 बु	कुम्भेमङ्गलः घं·00:21।
26	10 गु	फागु दशमी (उड़ीसा), वीर सावरकर पुण्यतिथि, वक्री बुधःघं·12:57।
27	11 शु	**भद्रा 11:27–22:25 घं·**, रंगभरी एकादशी, मुख्यमेला खाटूश्याम।
28	12 श	श्रीनृसिंह द्वादशी, खाटूश्याम मेला समाप्त, मीनेशुक्रः घं·18:31।
मार्च	13 र	**गण्डान्तारम्भः 26:03।**
2	14 चं	**गण्डान्तः13:47, भद्रा 17:46–29:19 घं·**, हुताशनी।
3	15 मं	**श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, होलिका विभूतिधारणम्, डोलोत्सव, श्रीचैतन्यमहाप्रभु जयन्ती**, सावर्णि·मन्वादि, गणगौर पूजन आरम्भ, हाथीउत्सव जयपुर, होलाष्टक समाप्त, उत्तरभाद्रेशुक्रः घं·10:41।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
1	12:18–13:49
15	12:14–13:48

❀ फाल्गुन कृत्य ❀

फाल्गुन पूर्णिमा को भद्रा रहित प्रदोष काल होलिकादहन का मुख्यकाल है। यथा *'सा प्रदोष व्यापिनी भद्रा रहिता ग्राह्या'*। होलिका दहन भद्रा, प्रतिपदा और चतुर्दशी में शास्त्रनिषिद्ध है। इस वर्ष 2 मार्च को 17:45 पर पूर्णिमा तिथि लग रही है तथा फाल्गुन पूर्णिमा 3 मार्च को ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण है। अतः 2-3 मार्च की रात्रि में **निम्न दो मुहूर्त्त में होलिका दहन शास्त्रसम्मत है**–

❀ भद्रापुच्छ ❀

रात्रि में 01:16 - 02:25

❀ भद्रावसाने सूर्योदयात्पूर्वे ❀

05:19 - 06:55

विस्तृत होली निर्णय पर्वादि निर्णय लेख में

❀ जयन्ती ❀

कुछ समय से एक अपप्रचार हुआ है कि जयन्ती शब्द केवल मरणशील लोगों के सन्दर्भ में प्रयुक्त होता है। जबकि जयन्ती के अर्थ हैं- पताका, इन्द्र की पुत्री, दुर्गा। जयन्ती - जि जये + शतृ + डीप् अर्थात्- वह जिसकी जय हो। कोई भी अर्थ मर्त्य मानव को सूचित नहीं करता। जयन्ती किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के आरंभ/घटित होने की वार्षिक तिथि पर होने वाले उत्सव को कहते हैं। जैसे किसी की जन्मतिथि पर मनाया जानेवाला उत्सव चाहे वह भगवान् हों या मनुष्य। जन्माष्टमी भी जयन्ती-व्रत है।

जयन्त्याम् उपवासश्च महापातकनाशनः। सर्वैः कार्यो महाभक्त्या पूजनीयश्च केशवः।। (भविष्य पुराण, विष्णुधर्मोत्तर0) - *"श्रीकृष्ण जयन्ती का व्रत महापातक का विनाश कर देता है। अतः भक्तिपूर्वक यह व्रत करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण का पूजन करें।"* ; *"रोहिणी नक्षत्र संयुक्ता जन्माष्टमी जयन्ती कहलाती है।"* - विष्णुधर्मोत्तर पुराण0। श्रीजीव गोस्वामीजी के मत में तो श्रीकृष्ण जन्माष्टमी ही एकमात्र जयन्ती है।

कलियुग में सात चिरंजीवी शास्त्रों में बताये गये हैं। *'अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः। कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरंजीविनः।।'* इनमें व्यासजी, हनुमानजी व परशुरामजी के जन्मोत्सव शास्त्र में जयन्ती नाम से ही प्रसिद्ध हैं। पराशर सहिंता में "हनुमान जयन्ती" का विधान दिया है। अतः श्रीहनुमान जयन्ती आदि अवसरों पर जयन्ती शब्द पर विवाद करना शास्त्रविमुखता का परिचायक है। चिरंजीवी परशुरामजी, हनुमानजी, वेदव्यास जी का जन्मदिवस भी जयंती ही कहलाता हैं। इसलिए जयंती का अर्थ हुआ जन्मोत्सव दिवस। अतः हनुमान जयंती, परशुराम जयंती कहने में कोई दोष नही हैं।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

फर·	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
18	09:46	11:22	13:18	15:32	17:52	20:09	22:24	00:42	03:01	05:07	06:51	08:20
19	09:42	11:18	13:14	15:28	17:48	20:05	22:20	00:38	02:57	05:03	06:47	08:16
20	09:38	11:14	13:10	15:24	17:44	20:01	22:16	00:34	02:53	04:59	06:43	08:12
21	09:34	11:10	13:06	15:20	17:40	19:57	22:12	00:30	02:49	04:55	06:39	08:08
22	09:30	11:06	13:02	15:16	17:36	19:53	22:08	00:27	02:45	04:51	06:35	08:04
23	09:26	11:02	12:58	15:12	17:32	19:49	22:04	00:23	02:41	04:47	06:31	08:01
24	09:22	10:58	12:54	15:08	17:28	19:45	22:00	00:19	02:37	04:43	06:27	07:57
25	09:19	10:54	12:50	15:04	17:24	19:41	21:56	00:15	02:33	04:39	06:23	07:53
26	09:15	10:51	12:46	15:00	17:20	19:37	21:52	00:11	02:30	04:35	06:19	07:49
27	09:11	10:47	12:42	14:56	17:16	19:33	21:48	00:07	02:26	04:31	06:15	07:45
28	09:07	10:43	12:38	14:52	17:13	19:29	21:44	00:03	02:22	04:27	06:12	07:41
मार्च	09:03	10:39	12:34	14:48	17:09	19:25	21:40	23:59	02:18	04:23	06:08	07:37
2	08:59	10:35	12:30	14:44	17:05	19:21	21:36	23:55	02:14	04:19	06:04	07:33
3	08:55	10:31	12:26	14:41	17:01	19:17	21:32	23:51	02:10	04:15	06:00	07:29

फरवरी	卐 सर्वार्थसिद्धि, अमृत, रवि आदि योग 卐
18	**अमृत**·17:30 तक, **सिद्ध**·17:30 से
19	**अमृत**·16:43 से, **रवियोग**:21:50 से
20	**द·ति**·15:30 से, **अमृत**·15:30 से, **सर्वार्थ·रवियोग**:21:11 से
21	**द·ति**·13:55 तक, **सिद्ध**·13:55 तक, **रवियोग**:20:12 तक, **मृत्यु**·13:55 से
22	**द·न**·भ·18:55 से, **सर्वार्थ**·18:55 तक, **अमृत**·12:01 तक, **मृत्यु**·12:01 से, **रवियोग**:18:55 से
23	**सिद्ध**·09:53 तक, **रवियोग**:17:25 तक, **मृत्यु**·09:53 से
24	**सर्वार्थ**·15:47 तक, **अमृत**·07:35 तक, **त्रिपुष्कर**:07:02 से 07:35 तक, **सिद्ध**· 07:35 से
25	**सर्वार्थ**·14:07 तक, **सर्वार्थ**·14:07 से, **रवियोग**:14:07 से
26	**सिद्ध**·24:32 तक, **रवियोग**:अहोरात्र
27	**सिद्ध**·22:25 तक, **रवियोग**:10:57 तक, **सर्वार्थ**·10:57 से
28	**त्रिपुष्कर**: 06:58 से 09:38 तक
मार्च	**सर्वार्थ**·08:36 तक, **सिद्ध**·18:57 तक, **रवियोग**:08:36 से
2	**रवियोग**:07:54 तक, **अमृत**·17:45 से

होलिका पूजन– ढूंढा राक्षसी की तृप्ति के लिए और बाल रक्षा के लिए होलिका की पूजा करे। इसमें संकल्प लें– "मैं सपरिवार ढूंढा नामक राक्षसी के प्रीत्यर्थ, उसकी पीड़ा मुक्ति के लिए होलिका पूजन कर रहा हूँ।" उपला,कण्डा,लकड़ी एकत्रित कर पुष्पादि से पूजाकर अग्निदीपन करे। ***"होलिकायै नमः"***

अस्माभिर्भय संत्रस्तैः कृता त्वं होलिके यतः।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूति प्रदा भव।

बोलते हुए उसे प्रणाम कर तीन परिक्रमा करे। इसके बाद मन में जो भी आ रहा हो वह गाओ, हँसो, गप्प लड़ाओ, स्वेच्छ से निःशंक होकर अपना मत प्रकट करो। होलिका दहन के बाद होलिका की भस्म धारण करे। आम्र मञ्जरी का भक्षण करे। कच्चा अन्न भूनकर खाए। सायं काल नवीन वस्त्र धारण कर बड़ों, छोटों को अबीर गुलाल लगाकर प्रणाम, आशीर्वाद लिया दिया जाता है। चाण्डाल आदि को गले लगा ले। दूसरे दिन रंग खेले, फाग गाए, गीत नृत्य करे।

चैत्र कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 4 मार्च से 19 मार्च, 2026 ईस्वी

ग्रहस्थितिः 4:3:2026– वक्री गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, मार्गी शनिःपश्चिमास्त, मार्गी कुजःपश्चिमास्तः, वक्री बुधःपश्चिमास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
मार्च	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क1	घं:मि	क2	घं:मि	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	मार्च	4 मार्च से 19 मार्च, 2026
4	1 बु	२४:३२	16:43	पू·फा·	०२:१०	07:46	धृति	०५:४३	09:11	कौल	16:43	तैति	28:46	28:49	6:54	18:26	कं·17:27	13:53	प्रवर्द्ध	4	**वसन्तोत्सव**, मेला फूलडोल ब्यावर
5	2 गु	२५:१०	16:57	उ·फा·	०३:५०	08:25	शूल	०२:६०	08:05	गर	16:57	वणि	29:15	28:53	6:53	18:26	कन्या	अहोरात्र	मातङ्ग	5	**भैया दूज**, श्रीचित्रगुप्त पूजा, संत तुकाराम जयन्ती
6	3 शु	२७:०४	17:41	हस्त	०६:४६	09:34	गण्ड	०१:१६	07:22	विष	17:41	बव	30:15	28:57	6:52	18:27	तु·38:39	22:19	अमृत	6	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय घं·21:17**, कल्पादि
7	4 श	३०:१०	18:55	चित्रा	१०:५२	11:12	वृद्धि	००:३०	07:03	बाल	18:55	कौल	30:50	29:01	6:51	18:27	तुला	अहोरात्र	काण	7	
8	5 र	३४:२०	20:34	स्वाती	१६:०३	13:15	ध्रुव	००:३५	07:04	कौल	07:41	तैति	20:34	29:05	6:50	18:28	तुला	अहोरात्र	लुम्ब	8	**रंगपंचमी, श्रीपंचमी**
9	6 चं	३९:१५	22:30	विशा·	२२:०२	15:37	व्याघ·	०१:२३	07:22	गर	07:35	वणि	22:30	29:09	6:49	18:28	वृ·05:29	09:00	मित्र	9	**श्रीस्कन्द षष्ठी, श्रीवनचन्द्र जयन्ती**, श्रीएकनाथ षष्ठी
10	7 मं	४४:३५	24:37	अनु·	२८:३१	18:12	हर्षण	०२:४०	07:51	विष	11:32	बव	24:37	29:13	6:47	18:29	वृश्चिक	अहोरात्र	वज्र	10	रांधा पुआ
11	8 बु	४९:५२	26:43	ज्ये·	३५:०५	20:49	वज्र	०४:०८	08:26	बाल	13:40	कौल	26:43	29:17	6:46	18:30	ध·35:05	20:49	ध्वांक्ष	11	**श्रीकालाष्टमी, शीतलाष्टमी, बास्योड़ा**, श्रीऋषभदेव जयन्ती
12	9 गु	५४:४२	28:38	मूल	४१:१८	23:17	सिद्धि	०५:२९	08:57	तैति	15:42	गर	28:38	29:22	6:45	18:30	धनु	अहोरात्र	धूम्र	12	**भगवान श्री आदिनाथ जयन्ती व तपकल्याणक दिवस**
13	10 शु	५८:४४	30:14	पू·षा·	४६:४९	25:28	व्यति·	०६:२६	09:19	वणि	17:28	विष	30:14	29:26	6:44	18:31	धनु	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	13	दशामाता व्रत, व्यतीपात पुण्यम्, मुनि सुव्रतनाथ जयन्ती१३
14	11 श	६०:००	अहोरात्र	उ·षा·	५१:२०	27:15	वरी·	०६:४४	09:25	बव	18:51	बाल	60:00	29:30	6:43	18:31	म·03:04	07:57	राक्षस	14	
15	11 र	०१:४३	07:23	श्रवण	५४:४३	28:35	परिघ	०६:१२	09:11	बाल	07:23	कौल	19:47	29:34	6:42	18:32	मकर	अहोरात्र	गद	15	**श्रीपापविमोचनी एकादशी (सर्वेषाम्)**
16	12 चं	०३:२७	08:04	धनि·	५६:५१	29:25	शिव	०४:४४	08:34	तैति	08:04	गर	20:12	29:38	6:41	18:32	कु·25:57	17:04	शुभ	16	**सोम प्रदोष व्रतम्**, मेला कैलादेवी प्रारम्भ (करौली)
17	13 मं	०३:५३	08:13	शत·	५७:४४	29:45	सिद्ध साध्य	०२:१६ ५६:३१	07:34 30:10	वणि	08:13	विष	20:06	29:42	6:40	18:33	कुंभ	अहोरात्र	मृत्यु	17	**मासशिवरात्रि व्रतम्**
18	14 बु	०३:०३	07:52	पू·भा·	५७:२७	29:37	शुभ	५४:२३	28:24	शकु	07:52	चतु	19:31	29:46	6:39	18:33	मी·42:38	23:42	पद्म	18	**अमावस्या** (पितृकार्य), काम महोत्सव
19	30 गु 1 गु	०१:०१ ५६:५१	07:02 29:46	उ·भा·	५६:०५	29:04	शुक्ल	४९:०७	26:16	नाग	07:02	किं	18:27	29:50	6:38	18:34	मीन	अहोरात्र	छत्र	19	**अमावस्या** (देवकार्य), **नवरात्र घटस्थापना, गुड़ी पड़वा**

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	वक्री बुधः	वक्री गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
मार्च	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
4	1 बु	10:19:07:36	04:26:11:37	10:05:49:05	10:21:26:00	02:22:02:22	11:04:23:25	11:04:50:18	10:17:05:13	44:24:41	द·07:15:05	−13:22	19:26
5	2 गु	10:20:07:48	05:09:10:42	10:06:37:06	10:20:47:02	02:22:00:14	11:05:38:07	11:04:57:50	10:17:02:02	44:26:43	द·06:51:34	−13:09	20:22
6	3 शु	10:21:07:58	05:21:54:48	10:07:25:08	10:20:03:58	02:21:58:17	11:06:52:46	11:05:05:23	10:16:58:52	44:28:45	द·06:27:58	−12:55	21:17
7	4 श	10:22:08:06	06:04:25:13	10:08:13:12	10:19:17:40	02:21:56:32	11:08:07:24	11:05:12:57	10:16:55:41	44:30:47	द·06:04:15	−12:41	22:12
8	5 र	10:23:08:12	06:16:43:56	10:09:01:16	10:18:29:08	02:21:54:59	11:09:21:60	11:05:20:32	10:16:52:30	44:32:49	द·05:40:29	−12:27	23:07
9	6 चं	10:24:08:16	06:28:53:31	10:09:49:21	10:17:39:24	02:21:53:39	11:10:36:33	11:05:28:08	10:16:49:20	44:34:52	द·05:16:37	−12:12	24:02
10	7 मं	10:25:08:18	07:10:57:01	10:10:37:27	10:16:49:43	02:21:52:30	11:11:51:04	11:05:35:45	10:16:46:09	44:36:55	द·04:52:42	−11:57	24:54
11	8 बु	10:26:08:17	07:22:57:51	10:11:25:34	10:16:01:20	02:21:51:34	11:13:05:34	11:05:43:22	10:16:42:58	44:38:58	द·04:28:43	−11:41	25:47
12	9 गु	10:27:08:15	08:04:59:59	10:12:13:41	10:15:15:17	02:21:50:50	11:14:20:01	11:05:51:01	10:16:39:48	44:41:01	द·04:04:40	−11:25	26:36
13	10 शु	10:28:08:10	08:17:07:01	10:13:01:48	10:14:32:32	मार्गी 21:50:18	11:15:34:26	11:05:58:40	10:16:36:37	44:43:04	द·03:40:35	−11:09	27:23
14	11 श	10:29:08:03	08:29:22:08	10:13:49:56	10:13:53:58	02:21:49:58	11:16:48:49	11:06:06:19	10:16:33:26	44:45:07	द·03:16:27	−10:52	28:08
15	11 र	11:00:07:54	09:11:48:04	10:14:38:05	10:13:20:19	02:21:49:51	11:18:03:10	11:06:13:59	10:16:30:16	44:47:10	द·02:52:18	−10:35	28:47
16	12 चं	11:01:07:43	09:24:27:04	10:15:26:13	10:12:52:10	02:21:49:56	11:19:17:28	11:06:21:40	10:16:27:05	44:49:13	द·02:28:06	−10:18	29:27
17	13 मं	11:02:07:30	10:07:20:40	10:16:14:20	10:12:29:59	02:21:50:13	11:20:31:44	11:06:29:21	10:16:23:55	44:51:17	द·02:03:53	−10:01	30:02
18	14 बु	11:03:07:14	10:20:29:40	10:17:02:26	10:12:14:06	02:21:50:42	11:21:45:58	11:06:37:02	10:16:20:44	44:53:20	द·01:39:39	− 9:43	30:38
19	30 गु	11:04:06:57	11:03:54:08	10:17:50:32	10:12:04:41	02:21:51:24	11:23:00:10	11:06:44:44	10:16:17:33	44:55:23	द·01:15:24	− 9:25	07:15

7 मार्च सूर्योदयकालीन तिथि:**4**

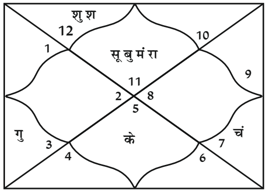

14 मार्च सूर्योदयकालीन तिथि:**11**

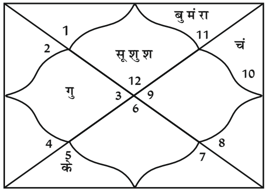

चैत्र कृष्णपक्षः सिद्धार्थ नाम संवत् 2082 शाके 1947, 4 मार्च से 19 मार्च, 2026 ईस्वी

पक्षान्तः– कालः दक्षिण । ऋतुः शिशिर मीनार्कतः ऋतुःवसन्त । उत्तरायणं । याम्यगोलः । ति·30 अयनांशः 22:53:21

दिनाङ्क मार्च	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
4	1 बु	आम्र पुष्प भक्षण, पूर्वभाद्रेरविः घं·27:47।
5	2 गु	**भद्रारंभः29:16 घं·**, कलमदान पूजा, शतभिषायांमङ्गलः घं·08:28।
6	3 शु	**भद्रांतः17:42**, छत्रपति शिवाजी जयन्ती (तिथि प्रमाण), शतभिषायांबुधः·09:07।
7	4 श	।
8	5 र	।
9	6 चं	**भद्रारंभः22:31 घं·**।
10	7 मं	**भद्रांतः11:34 घं·**, मेला शील की डूंगरी चाकसू।
11	8 बु	**गण्डान्तः14:10–27:27**, बुधाष्टमी, प्रेमभाया महोत्सव, केसरियाजी मेला मेवाड़।
12	9 गु	। (१) **पंचांग फलश्रवण**, चेटीचण्ड–श्रीझूलेलाल जयन्ती, हेडगेवार जयन्ती।
13	10 शु	**भद्रा 17:29–30:14 घं·**, मार्गी गुरुः घं·07:27।
14	11 श	**अभिजितः 20:50–28:57**, रेवत्यांशुक्रः घं·04:20।
15	11 र	**मीन संक्रान्ति पुण्यकाल 06:42–12:37**, मीनेरविः·03:32।
16	12 चं	**पंचकारंभः 17:04, महावारुणी योग 29:45 से।**
17	13 मं	**पंचक, भद्रा 8:14–20:07 घं·, महावारुणी योग 08:13 तक।**
18	14 बु	**पंचक**, प्रेतत्व मुक्ति हेतु शिवसन्निधि में स्नान, उत्तरभाद्रेरविः घं·11:47।
19	30 गु / 1 गु	**पंचक, चान्द्रवर्ष २०८२ सम्पूर्ण, विक्रम रौद्र नाम नववर्षारम्भः २०८२**, कल्पादि, (१)

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
1	12:14–13:48
30	12:09–13:46

❀ वास्तुखण्ड जीर्णोद्धार / तोड़ने की संक्षिप्त विधि ❀

अपने भवन वास्तु में किसी कारणवश तोड़फोड़ कराने से वास्तुभङ्ग का दोष लगता है। वास्तु में पहले से स्थित सूक्ष्म जीव, भूत आदि को अकस्मात् उस स्थान से हटाने पर वे अशुभ परिणाम देते देखे जाते हैं। इसलिए भवन में किसी बड़ी तोड़ फोड़ से पूर्व तत्तत् जीवों की प्रसन्नता हेतु बलि विधान वास्तुशास्त्र में बताया गया है। इसका सूक्ष्म रूप निम्न है।

2 इमरती, 2 केले, उड़द की सूखी साबुत दाल दही में मिलाकर भिगो लें, इसपर थोड़ा घी भी डाल दें व दूध, दही, अक्षत, जल, खिचड़ी, चावल, जौ अन्न, खीर आदि में से यथाशक्ति लेकर जिस वास्तु को तोड़ना है वहाँ जाएं और एक चार मुँह का दीपक जलाएं। इस सामग्री को तोड़े जाने वाले वास्तुखण्ड में सब स्थानों पर घुमाकर लाएं।

फिर निम्न मन्त्र पढ़कर प्रार्थना करे :-

भूताः पिशाचाः नागाश्च असुराः राक्षसाः ग्रहाः।
सर्वे ते व्यपगच्छन्तु बलितुष्टाः यथा तथम् ।।
देवानां च द्विजानां च स्थानं सम्यक् करोम्यहम्।
वासुदेवस्य देवस्य सर्व भूतात्मकस्य च ।।
यक्षाः पिशाचाः नागाश्च येऽत्र तिष्ठन्ति सर्वदा।
सर्वे प्रयांतु तेऽन्यत्र स्व स्थानं करोम्यहम् ।।
अपक्रामन्तु भूतानि देवताश्च सराक्षसाः।
वासान्तरं व्रजन्त्वस्मात् कुर्यां भूमिपरिग्रहम् ।।
उत्क्रामन्तु पिशाचाः ये भूताः भूमिभागगाः।
ये भूताः विघ्नकर्तारः ते गच्छन्त्वाज्ञया हरेः ।।
अपक्रमान्तु भूतानि पिशाचप्रेतगुह्यकाः।
सर्वेषां अविरोधेन वास्तु कर्म समारभे ।।

प्रार्थना करे - इस भूखंड वास्तु में निवास कर रहे सभी भूत प्रेत, पिशाच, शक्तियाँ डाकिनी शाकिनी, जीव जंतु, समस्त ज्ञात अज्ञात जीवों योनियों से सादर सविनय निवेदन है कि कृपया इस भूखंड वास्तु के इस भाग जिसे तोड़ा जाना है को छोड़कर अन्यत्र अन्य स्थान पर चले जाएं व वहाँ पर सुखपूर्वक निवास करें, व हमारे द्वारा प्रदान की जा रही इस बलि को स्वीकार करके तृप्त होकर जाएं व अशुभता की निवृत्ति करें ताकि इस भूखंड पर बने इस भाग को शान्तिपूर्वक तोड़ा जा सके। हाथ जोड़कर प्रणाम कर लें।

वास्तुखण्ड को तोड़ने हेतु पहला प्रहार सोने की किसी चीज से करें।

इसके बाद वह सब सामग्री और दीपक जलता हुआ ही वास्तु से दूर जाकर कहीं शान्त स्थान पर रख दें, व पीछे मुड़कर न देखें।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

मार्च	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
4	08:51	10:27	12:22	14:37	16:57	19:13	21:28	23:47	02:06	04:11	05:56	07:25
5	08:47	10:23	12:18	14:33	16:53	19:09	21:24	23:43	02:02	04:07	05:52	07:21
6	08:43	10:19	12:15	14:29	16:49	19:05	21:20	23:39	01:58	04:03	05:48	07:17
7	08:39	10:15	12:11	14:25	16:45	19:01	21:16	23:35	01:54	03:59	05:44	07:13
8	08:35	10:11	12:07	14:21	16:41	18:57	21:12	23:31	01:50	03:55	05:40	07:09
9	08:31	10:07	12:03	14:17	16:37	18:53	21:08	23:27	01:46	03:51	05:36	07:05
10	08:27	10:03	11:59	14:13	16:33	18:50	21:04	23:23	01:42	03:47	05:32	07:01
11	08:23	09:59	11:55	14:09	16:29	18:46	21:01	23:19	01:38	03:44	05:28	06:57
12	08:19	09:55	11:51	14:05	16:25	18:42	20:57	23:15	01:34	03:40	05:24	06:53
13	08:15	09:51	11:47	14:01	16:21	18:38	20:53	23:11	01:30	03:36	05:20	06:50
14	08:11	09:47	11:43	13:57	16:17	18:34	20:49	23:07	01:26	03:32	05:16	06:46
15	08:08	09:43	11:39	13:53	16:13	18:30	20:45	23:04	01:22	03:28	05:12	06:42
16	08:04	09:40	11:35	13:49	16:09	18:26	20:41	23:00	01:18	03:24	05:08	06:38
17	08:00	09:36	11:31	13:45	16:05	18:22	20:37	22:56	01:15	03:20	05:04	06:34
18	07:56	09:32	11:27	13:41	16:02	18:18	20:33	22:52	01:11	03:16	05:00	06:30
19	07:52	09:28	11:23	13:37	15:58	18:14	20:29	22:48	01:07	03:12	04:56	06:26

मार्च	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
4	**अमृत**·16:43 तक, **सिद्ध**·16:43 से
5	**अमृत**·16:57 से
6	**द·ति**·17:41 से, **अमृत**·17:41 से
7	**द·ति**·18:55 तक, **सिद्ध**·18:55 तक, **सर्वार्थ**·11:12 से, **मृत्यु**·18:55 से
8	**अमृत**·20:34 तक, **मृत्यु**·20:34 से
9	**सिद्ध**·22:30 तक, **सर्वार्थ·रवियोग**:15:37 से, **मृत्यु**·22:30 से
10	**अमृत**·24:37 तक, **रवियोग**:18:12 तक, **सिद्ध**·24:37 से
11	**मृत्यु**·26:43 तक
12	**मृत्यु**·28:38 तक, **सिद्ध**·28:38 से
14	**अमृत**·अहोरात्र, **सर्वार्थ**·27:15 से
15	**मृत्यु**·07:23 तक, द्विपुष्करः12+ध
16	**मृत्यु**·08:04 तक
17	**सिद्ध**·08:13 तक,
19	**सिद्ध**·07:02 तक, **सर्वार्थ**·29:04 से,

❀ नववर्षारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा क्षय होने से दोनों दिन उदयकाल में अव्याप्ति है अतः पूर्वदिन ही वर्षारम्भ होगा। यह चान्द्रवर्ष होता है– *तत्रौदयिकी प्रतिपद् ग्राह्या। दिनद्वये उदयव्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वा (धर्मसिन्धु, परिच्छेद २, वर्षनिर्णय)।*

❀ वासन्तिक नवरात्रि– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा मुहूर्तमात्र भी द्वितीयायुक्त ग्राह्य होती है– *''परयुता मुहूर्त्तमात्रापि प्रतिपद् ग्राह्या (धर्मसिन्धु)।''* पर प्रतिपदा क्षय होने से पूर्वदिन ही घटस्थापना संभव है। **घटस्थापना मुहूर्त्त - सूर्योदय/ प्रतिपदा से 10 घटी पर्यन्त श्रेष्ठ 07:02-10:38, अभिजित 12:11 - 12:59**

इस वर्ष चित्रा नक्षत्र एवं वैधृति योग नहीं है।

❀ अखण्ड दीप जलाने का मन्त्र -

अखण्डदीपकं देव्याः प्रीतये नवरात्रिकम्।
प्रज्वालयेद् अहोरात्रं एकचित्तं दृढव्रतः।।

❊ संवत् 2082 में चन्द्र नक्षत्र चरण प्रवेश काल, जन्माक्षर, राशि व पाया ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
29 मार्च	08:57	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	14:35	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	20:13	रेवती	1	दे	मीन	सोना
30 मार्च	01:49	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	07:25	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	13:01	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	18:36	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
31 मार्च	00:11	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	05:46	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	11:21	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	16:56	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	22:31	भरणी	2	लू	मेष	सोना
01 अप्रैल	04:06	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	09:41	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	15:16	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	20:52	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
02 अप्रैल	02:28	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	08:04	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	13:43	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
	19:22	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
03 अप्रैल	01:01	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	06:40	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	12:20	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	18:03	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	23:46	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
04 अप्रैल	05:29	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	11:13	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	17:01	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	22:49	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
05 अप्रैल	04:37	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	10:26	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	16:20	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	22:14	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
06 अप्रैल	00:09	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	06:24	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
06 अप्रैल	16:02	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	22:02	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
07 अप्रैल	04:02	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	10:05	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	16:13	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	22:21	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
08 अप्रैल	04:29	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	10:37	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	16:52	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	23:07	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
09 अप्रैल	05:22	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	11:39	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	18:01	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
10 अप्रैल	00:23	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	06:45	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	13:10	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	19:39	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
11 अप्रैल	02:08	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	08:37	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
	15:07	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	21:41	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
12 अप्रैल	04:15	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	10:49	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	17:26	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
13 अप्रैल	00:04	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	06:42	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	13:20	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	19:58	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
14 अप्रैल	02:37	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	09:16	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	15:55	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
	22:36	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
15 अप्रैल	05:13	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	11:51	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	18:28	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
16 अप्रैल	01:06	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	07:40	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	14:14	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	20:48	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
17 अप्रैल	03:22	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	09:50	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	16:18	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	22:46	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
18 अप्रैल	05:16	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	11:37	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	17:58	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	00:19	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
19 अप्रैल	06:42	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	12:56	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	19:10	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
20 अप्रैल	01:24	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
	07:40	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	13:46	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	19:52	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
21 अप्रैल	01:58	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	08:07	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	14:06	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	20:05	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
22 अप्रैल	02:04	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	08:05	धनिष्ठ	1	गा	मकर	ताम्बा
	13:58	धनिष्ठ	2	गी	मकर	ताम्बा
	19:51	धनिष्ठ	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
23 अप्रैल	01:44	धनिष्ठ	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	07:38	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	13:25	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	19:12	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
24 अप्रैल	00:59	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	06:47	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	12:29	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	18:11	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
24 अप्रैल	23:53	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
25 अप्रैल	05:38	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
	11:16	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	16:54	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	22:32	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
26 अप्रैल	04:13	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	09:49	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	15:25	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	21:01	रेवती	4	ची	मीन	सोना
27 अप्रैल	02:39	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	08:14	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	13:49	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	19:24	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
28 अप्रैल	00:59	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	06:34	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	12:09	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	17:44	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	23:19	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
29 अप्रैल	04:55	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
	10:31	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	16:07	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	21:44	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
30 अप्रैल	03:22	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	09:00	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	14:38	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	20:18	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
01 मई	02:00	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	07:42	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	13:24	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	19:08	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
02 मई	00:55	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	06:42	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	12:29	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	18:16	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
03 मई	00:08	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	06:00	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी

❊ संवत् 2082 में चन्द्र नक्षत्र चरण प्रवेश काल, जन्माक्षर, राशि व पाया ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
03 मई	11:52	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	17:46	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
04 मई	23:45	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	05:44	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	11:43	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	17:43	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	23:49	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
05 मई	05:55	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	12:01	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	18:08	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
06 मई	00:21	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	06:34	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	12:47	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	19:03	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
07 मई	01:24	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	07:45	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	14:06	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	20:28	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
08 मई	02:56	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	09:24	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	15:52	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
	22:20	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
09 मई	04:53	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	11:27	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	18:01	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
10 मई	00:35	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	07:12	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	13:49	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	20:26	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
11 मई	03:05	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	09:44	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	16:23	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	23:02	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
12 मई	05:42	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	12:19	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	18:56	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
13 मई	01:33	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	08:15	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	14:50	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	21:25	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
14 मई	04:00	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	10:36	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	17:05	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	23:34	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
15 मई	06:03	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	12:35	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	18:58	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
16 मई	01:21	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	07:44	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	14:08	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	20:24	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
17 मई	02:40	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	08:56	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
	15:13	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	21:21	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
18 मई	03:29	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	09:37	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	15:47	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	21:48	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
19 मई	03:49	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	09:50	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	15:53	धनिष्ठ	1	गा	मकर	ताम्बा
	21:47	धनिष्ठ	2	गी	मकर	ताम्बा
20 मई	03:41	धनिष्ठ	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	09:35	धनिष्ठ	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	15:31	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	21:19	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
21 मई	03:07	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	08:55	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	14:45	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	20:28	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
22 मई	02:11	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	07:54	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	13:40	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
	19:19	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
23 मई	00:58	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	06:37	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	12:19	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	17:55	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	23:31	रेवती	3	चा	मीन	सोना
24 मई	05:07	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	10:46	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	16:21	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	21:56	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
25 मई	03:31	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	09:08	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	14:42	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	20:16	भरणी	3	ले	मेष	सोना
26 मई	01:50	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	07:27	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	13:03	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
	18:39	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
27 मई	00:15	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	05:51	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
	11:29	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	17:07	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	22:45	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
28 मई	04:23	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	10:04	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	15:45	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	21:26	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
29 मई	03:09	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	08:55	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	14:41	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	20:27	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
30 मई	02:13	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
30 मई	08:04	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	13:55	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
	19:46	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
31 मई	01:38	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	07:35	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	13:32	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	19:29	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
01 जून	01:28	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	07:32	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	13:36	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	19:40	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
02 जून	01:47	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	07:59	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	14:11	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	20:23	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
03 जून	02:36	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	08:55	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	15:14	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	21:33	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
04 जून	0.1625	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	10:26	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	16:46	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	23:12	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
05 जून	05:40	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	12:12	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	18:44	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
06 जून	01:16	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	07:50	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	14:27	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	21:04	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
07 जून	03:41	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	10:18	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	16:57	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	23:36	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
08 जून	06:15	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी

❊ संवत् 2082 में चन्द्र नक्षत्र चरण प्रवेश काल, जन्माक्षर, राशि व पाया ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
08 जून	12:55	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	19:33	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
09 जून	02:11	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	08:49	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	15:30	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	22:06	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
10 जून	04:42	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	11:18	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	17:54	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
11 जून	00:25	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	06:56	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	13:27	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	19:59	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
12 जून	02:24	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	08:49	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	15:14	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	21:39	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
13 जून	03:57	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	10:15	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	16:33	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
	22:51	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
14 जून	05:01	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	11:11	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	17:21	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	23:32	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
15 जून	05:35	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	11:38	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	17:41	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	23:44	धनिष्ठा	1	गा	मकर	ताम्बा
16 जून	05:40	धनिष्ठा	2	गी	मकर	ताम्बा
	11:36	धनिष्ठा	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	17:32	धनिष्ठा	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	23:29	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
17 जून	05:18	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	11:07	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
17 जून	04:53 से	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	10:39 से	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
18 जून	04:33	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	10:18	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	16:03	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	21:48	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
19 जून	03:28	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	09:08	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	14:48	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	20:30	रेवती	1	दे	मीन	सोना
20 जून	02:07	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	07:44	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	13:21	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	19:00	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
21 जून	00:35	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	06:10	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	11:45	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	17:22	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	22:57	भरणी	2	लू	मेष	सोना
22 जून	04:32	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	10:07	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	15:42	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	21:17	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
23 जून	02:52	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	08:27	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	14:04	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
	19:41	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
24 जून	01:18	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	06:55	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	12:34	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	18:14	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	23:54	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
25 जून	05:34	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	11:17	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	17:01	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
25 जून	22:45	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
26 जून	04:29	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	10:16	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	16:06	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	21:56	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
27 जून	03:46	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	09:36	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	15:32	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	21:28	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
28 जून	03:24	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	09:20	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	15:23	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	21:26	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
29 जून	03:29	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	09:33	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	15:43	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	21:53	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
30 जून	04:03	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	10:14	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	16:32	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	22:50	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
01 जुलाई	05:08	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	11:26	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	17:51	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
02 जुलाई	00:16	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	06:41	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
	13:06	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	19:37	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
03 जुलाई	02:08	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	08:39	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	15:11	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	21:47	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
04 जुलाई	04:23	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	10:59	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	17:35	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
05 जुलाई	00:14	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	06:53	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	13:32	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
	20:11	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
06 जुलाई	02:50	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	09:29	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	16:08	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	22:48	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
07 जुलाई	05:24	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	12:01	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	18:38	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
08 जुलाई	01:15	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	07:47	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	14:19	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	20:51	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
09 जुलाई	03:25	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	09:51	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	16:17	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	22:43	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
10 जुलाई	05:11	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	11:30	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	17:49	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
11 जुलाई	00:08	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
	06:30	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	12:42	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	18:54	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
12 जुलाई	01:06	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	07:18	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	13:22	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	19:26	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
13 जुलाई	01:30	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	07:36	धनिष्ठा	1	गा	मकर	ताम्बा
	13:33	धनिष्ठा	2	गी	मकर	ताम्बा
	19:30	धनिष्ठा	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
14जुला	01:27	धनिष्ठा	4	गे	कुम्भ	ताम्बा

❊ संवत् 2082 में चन्द्र नक्षत्र चरण प्रवेश काल, जन्माक्षर, राशि व पाया ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
14 जुलाई	07:27	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	13:18	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	19:09	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
15 जुलाई	01:00	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	06:52	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	12:37	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	18:22	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
16 जुलाई	00:07	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	05:55	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
	11:36	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	17:17	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	22:58	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
17 जुलाई	04:40	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	10:18	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	15:56	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	21:34	रेवती	4	ची	मीन	सोना
18 जुलाई	03:13	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	08:49	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	14:25	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	20:01	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
19 जुलाई	01:37	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	07:12	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	12:47	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	18:22	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	23:57	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
20 जुलाई	05:32	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
	11:07	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	16:42	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	22:18	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
21 जुलाई	03:55	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	09:32	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	15:09	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	20:46	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
22 जुलाई	02:25	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	08:04	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
22 जुलाई	13:43	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	19:24	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
23 जुलाई	01:07	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	06:50	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	12:33	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	18:19	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
24 जुलाई	00:07	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	05:55	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
	11:43	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	17:34	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	23:28	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
25 जुलाई	05:22	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	11:16	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	17:12	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	23:13	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
26 जुलाई	05:14	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	11:15	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	17:18	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	23:26	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
27 जुलाई	05:34	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	11:42	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	17:52	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
28 जुलाई	00:08	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	06:24	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	12:40	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	18:57	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
29 जुलाई	01:20	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	07:43	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	14:06	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
	20:30	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
30 जुलाई	03:00	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	09:30	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	16:00	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	22:30	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
31जुला	05:05	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
31 जुलाई	11:40	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	18:15	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
01 अगस्त	00:50	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	07:28	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	14:06	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	20:44	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
02 अगस्त	03:24	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	10:03	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	16:42	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	23:21	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
03 अगस्त	06:01	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	12:38	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	19:15	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
04 अगस्त	01:52	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	08:31	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	15:04	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	21:37	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
05 अगस्त	04:10	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	10:46	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	17:13	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	23:40	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
06 अगस्त	06:07	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	12:37	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	18:58	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
07 अगस्त	01:19	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	07:40	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
	14:02	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	20:15	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
08 अगस्त	02:28	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	08:41	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	14:57	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	21:03	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
09 अगस्त	03:09	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	09:15	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	15:22	धनिष्ठ	1	गा	मकर	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
9अगस्त	21:21	धनिष्ठ	2	गी	मकर	ताम्बा
10 अगस्त	03:20	धनिष्ठ	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	09:19	धनिष्ठ	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	15:18	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	21:10	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
11 अगस्त	03:02	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	08:54	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	14:49	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	20:36	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
12 अगस्त	02:23	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	08:10	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	13:57	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
	19:39	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
13 अगस्त	01:21	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	07:03	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	12:46	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	18:24	रेवती	2	दो	मीन	सोना
14 अगस्त	00:02	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	05:40	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	11:20	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	16:56	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	22:32	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
15 अगस्त	04:08	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	09:45	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	15:20	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	20:55	भरणी	3	ले	मेष	सोना
16 अगस्त	02:30	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	08:05	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	13:40	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
	19:15	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
17 अगस्त	00:50	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	06:25	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
	12:01	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	17:37	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	23:13	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना

❊ संवत् 2082 में चन्द्र नक्षत्र चरण प्रवेश काल, जन्माक्षर, राशि व पाया ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
18 अगस्त	04:51	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	10:30	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	16:09	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	21:48	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
19 अगस्त	03:27	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	09:09	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	14:51	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	20:33	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
20 अगस्त	02:17	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	08:04	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	13:51	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
	19:38	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
21 अगस्त	01:27	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	07:20	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	13:13	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	19:06	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
22 अगस्त	00:59	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	06:58	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	12:57	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	18:56	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
23 अगस्त	00:58	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	07:04	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	13:10	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	19:16	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
24 अगस्त	01:25	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	07:39	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	13:53	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	20:07	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
25 अगस्त	02:23	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	08:44	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	15:05	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	21:26	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
26 अगस्त	03:49	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	10:17	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	16:45	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
26 अग	23:13	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
27 अगस्त	05:43	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	12:16	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	18:49	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
28 अगस्त	01:22	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	07:59	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	14:36	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	21:13	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
29 अगस्त	03:50	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
	10:30	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	17:09	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	23:48	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
30 अगस्त	06:27	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	13:07	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	19:45	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
31 अगस्त	02:23	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	09:01	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	15:39	ज्येष्ठा	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	22:13	ज्येष्ठा	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
01 सितंबर	04:47	ज्येष्ठा	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	11:21	ज्येष्ठा	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	17:58	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
02 सितंबर	00:27	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	06:56	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	13:25	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	19:55	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
03 सितंबर	02:17	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	08:39	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	15:01	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
	21:26	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
04 सितंबर	03:41	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	09:56	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	16:11	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	22:28	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
05	04:35	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
05 सितंबर	10:42	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	16:49	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	22:59	धनिष्ठा	1	गा	मकर	ताम्बा
06 सितंबर	04:59	धनिष्ठा	2	गी	मकर	ताम्बा
	10:59	धनिष्ठा	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	16:59	धनिष्ठा	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	23:02	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
07 सितंबर	04:56	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	10:50	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	16:44	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	22:38	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
08 सितंबर	04:26	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	10:14	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	16:02	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	21:50	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
09 सितंबर	03:33	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	09:16	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	14:59	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	20:43	रेवती	1	दे	मीन	सोना
10 सितंबर	02:22	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	08:01	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	13:40	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	19:20	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
11 सितंबर	00:56	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	06:32	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	12:08	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	17:47	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	23:22	भरणी	2	लू	मेष	सोना
12 सितंबर	04:57	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	10:32	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	16:08	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	21:42	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
13 सितंबर	03:16	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	08:50	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	14:27	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
13सित	20:03	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
14 सितंबर	01:39	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	07:15	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	12:51	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	18:29	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
15 सितंबर	00:07	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	05:45	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	11:23	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	17:04	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	22:45	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
16 सितंबर	04:26	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	10:10	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	15:56	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	21:42	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
17 सितंबर	03:28	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	09:15	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	15:06	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	20:57	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
18 सितंबर	02:48	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	08:41	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	14:39	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	20:37	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
19 सितंबर	02:35	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	08:33	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	14:38	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	20:43	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
20 सितंबर	02:48	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	08:54	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	15:06	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	21:18	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
21 सितंबर	03:30	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	09:44	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	16:04	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	22:24	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
22	04:44	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी

❊ संवत् 2082 में चन्द्र नक्षत्र चरण प्रवेश काल, जन्माक्षर, राशि व पाया ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
22 सितंबर	11:05	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	17:31	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	23:57	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
23 सितंबर	06:23	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	12:52	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	19:25	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
24 सितंबर	01:58	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	08:31	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	15:04	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	21:41	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
25 सितंबर	04:18	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	10:55	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
	17:32	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
26 सितंबर	00:11	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	06:50	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	13:29	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	20:08	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
27 सितंबर	02:46	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	09:24	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	16:02	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	22:43	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
28 सितंबर	05:18	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	11:54	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	18:29	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
29 सितंबर	01:05	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	07:35	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	14:05	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	20:35	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
30 सितंबर	03:08	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	09:32	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	15:56	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	22:20	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
01 अक्टूबर	04:45	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	11:02	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	17:19	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
1अक्ट	23:36	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
02 अक्टूबर	05:54	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	12:03	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	18:12	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
03 अक्टूबर	00:21	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	06:32	धनिष्ठा	1	गा	मकर	ताम्बा
	12:34	धनिष्ठा	2	गी	मकर	ताम्बा
	18:36	धनिष्ठा	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
04 अक्टूबर	00:38	धनिष्ठा	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	06:41	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	12:36	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	18:31	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
05 अक्टूबर	00:26	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	06:23	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	12:12	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	18:01	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	23:50	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
06 अक्टूबर	05:41	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
	11:25	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	17:09	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	22:53	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
07 अक्टूबर	04:38	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	10:18	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	15:58	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	21:38	रेवती	4	ची	मीन	सोना
08 अक्टूबर	03:18	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	08:55	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	14:32	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	20:09	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
09 अक्टूबर	01:47	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	07:22	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	12:57	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	18:32	भरणी	4	लो	मेष	सोना
10 अक्टूबर	00:08	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	05:43	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
10 अक्टूबर	11:18	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	16:53	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	22:28	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
11 अक्टूबर	04:03	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	09:38	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	15:13	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	20:50	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
12 अक्टूबर	02:27	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	08:04	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	13:41	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	19:20	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
13 अक्टूबर	01:00	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	06:40	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	12:20	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	18:03	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	23:48	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
14 अक्टूबर	05:33	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
	11:18	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	17:04	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	22:54	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
15 अक्टूबर	04:44	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	10:34	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	16:25	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	22:21	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
16 अक्टूबर	04:17	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	10:13	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	16:11	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	22:14	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
17 अक्टूबर	04:17	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	10:20	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	16:25	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	22:36	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
18 अक्टूबर	04:47	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	10:58	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	17:09	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
18 अक्ट	23:27	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
19 अक्टूबर	05:45	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	12:03	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
	18:23	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
20 अक्टूबर	00:48	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	07:13	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	13:38	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	20:04	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
21 अक्टूबर	02:35	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	09:06	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	15:37	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	22:11	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
22 अक्टूबर	04:47	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	11:23	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	17:59	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
23 अक्टूबर	00:36	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	07:15	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	13:54	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	20:33	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
24 अक्टूबर	03:12	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	09:51	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	16:30	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	23:09	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
25 अक्टूबर	05:48	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	12:24	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	19:00	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
26 अक्टूबर	01:36	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	08:14	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	14:46	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	21:18	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
27 अक्टूबर	03:50	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	10:22	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	16:47	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	23:12	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
28	05:37	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा

❊ संवत् 2082 में चन्द्र नक्षत्र चरण प्रवेश काल, जन्माक्षर, राशि व पाया ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
28 अक्टूबर	12:05	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	18:24	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
29 अक्टूबर	00:43	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	07:02	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	13:21	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	19:32	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
30 अक्टूबर	01:43	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	07:54	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	14:07	धनिष्ठ	1	गा	मकर	ताम्बा
	20:11	धनिष्ठ	2	गी	मकर	ताम्बा
31 अक्टूबर	02:15	धनिष्ठ	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	08:19	धनिष्ठ	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	14:23	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	20:20	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
01 नवंबर	02:17	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	08:14	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	14:11	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	20:01	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
02 नवंबर	01:51	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	07:41	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	13:34	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
	19:19	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
03 नवंबर	01:04	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	06:49	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	12:36	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	18:17	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	23:58	रेवती	3	चा	मीन	सोना
04 नवंबर	05:39	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	11:20	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	16:57	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	22:34	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
05 नवंबर	04:11	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	09:51	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	15:26	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	21:01	भरणी	3	ले	मेष	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
06 नवंबर	02:36	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	08:14	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	13:49	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
	19:24	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
07 नवंबर	00:59	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	06:34	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
	12:09	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	17:44	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	23:19	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
08 नवंबर	04:55	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	10:32	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	16:09	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	21:46	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
09 नवंबर	03:24	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	09:04	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	14:44	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	20:24	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
10 नवंबर	02:04	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	07:48	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	13:32	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
	19:16	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
11 नवंबर	01:00	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	06:49	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	12:38	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	18:27	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
12 नवंबर	00:17	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	06:12	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	12:07	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	18:02	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	23:57	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
13 नवंबर	05:59	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	12:01	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	18:03	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
14 नवंबर	00:05	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	06:14	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
14 नवंबर	12:23	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	18:32	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
15 नवंबर	00:42	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	06:58	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	13:14	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	19:30	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
16 नवंबर	01:49	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	08:13	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	14:37	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	21:01	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
17 नवंबर	03:25	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	09:55	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	16:25	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	22:55	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
18 नवंबर	05:27	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	12:02	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	18:37	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
19 नवंबर	01:12	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
	07:49	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	14:27	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	21:05	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
20 नवंबर	03:43	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	10:23	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	17:02	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	23:41	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
21 नवंबर	06:20	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	13:01	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	19:38	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
22 नवंबर	02:15	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	08:52	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	15:30	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	22:03	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
23 नवंबर	04:36	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	11:09	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	17:44	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
24 नवंबर	00:11	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	06:38	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	13:05	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
	19:34	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
25 नवंबर	01:54	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	08:14	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	14:34	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	20:56	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
26 नवंबर	03:09	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	09:22	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	15:35	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	21:49	धनिष्ठ	1	गा	मकर	ताम्बा
27 नवंबर	03:55	धनिष्ठ	2	गी	मकर	ताम्बा
	10:01	धनिष्ठ	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	16:07	धनिष्ठ	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	22:13	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
28 नवंबर	04:11	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	10:09	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	16:07	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	22:07	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
29 नवंबर	03:59	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	09:51	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	15:43	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	21:36	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
30 नवंबर	03:22	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	09:08	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	14:54	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	20:43	रेवती	1	दे	मीन	सोना
01 दिसंबर	02:25	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	08:07	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	13:49	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	19:31	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
02 दिसंबर	01:09	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	06:47	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	12:25	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना

❊ संवत् 2082 में चन्द्र नक्षत्र चरण प्रवेश काल, जन्माक्षर, राशि व पाया ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
02 दिसंबर	18:06	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	23:42	भरणी	2	लू	मेष	सोना
03 दिसंबर	05:18	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	10:54	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	16:30	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	22:05	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
04 दिसंबर	03:40	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	09:15	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	14:51	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
	20:26	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
05दिसंबर	02:01	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	07:36	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	13:12	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	18:48	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
06 दिसंबर	00:24	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	06:00	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	11:39	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	17:18	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	22:57	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
07 दिसंबर	04:36	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	10:16	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	15:59	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	21:42	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
08 दिसंबर	03:25	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	09:08	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	14:56	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	20:44	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
09 दिसंबर	02:32	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	08:20	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	14:13	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	20:06	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
10 दिसंबर	01:59	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	07:55	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	13:55	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	19:55	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
11 दिसंबर	01:55	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	07:57	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	14:04	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	20:11	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
12 दिसंबर	02:18	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	08:27	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	14:42	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	20:57	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
13 दिसंबर	03:12	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
	09:28	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	15:50	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	22:12	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
14 दिसंबर	04:34	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	10:58	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	17:27	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	23:56	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
15 दिसंबर	06:25	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	12:54	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	19:28	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
16 दिसंबर	02:02	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	08:36	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
	15:13	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
17 दिसंबर	21:51	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	04:29	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	11:07	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
18 दिसंबर	17:45	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	00:24	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	07:03	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	13:42	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	20:23	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
19 दिसंबर	03:01	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	09:39	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	16:17	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	22:55	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
20	05:29	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
20 दिसंबर	12:04	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	18:39	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
21 दिसंबर	01:14	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	07:43	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	14:12	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	20:41	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
22 दिसंबर	03:10	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	09:32	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	15:54	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	22:16	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	04:39	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
23दिसंबर	10:54	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	17:09	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	23:24	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
24 दिसंबर	05:39	धनिष्ठा	1	गा	मकर	ताम्बा
	11:46	धनिष्ठा	2	गी	मकर	ताम्बा
	17:53	धनिष्ठा	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
25 दिसंबर	00:01	धनिष्ठा	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	06:09	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	12:09	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	18:09	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
26 दिसंबर	00:09	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	06:11	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	12:04	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	17:57	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	23:50	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
27 दिसंबर	05:45	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
	11:33	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	17:21	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	23:09	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
28 दिसंबर	04:57	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	10:40	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	16:23	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	22:06	रेवती	4	ची	मीन	सोना
29	03:50	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
29 दिसंबर	09:29	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	15:08	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	20:47	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
30 दिसंबर	02:27	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	08:03	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	13:39	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	19:15	भरणी	4	लो	मेष	सोना
31 जनवरी	00:54	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	06:29	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
	12:04	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	17:39	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	23:15	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
01 जनवरी	04:50	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	10:25	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	16:00	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	21:35	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
02 जनवरी	03:11	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	08:47	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	14:23	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	20:00	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
03 जनवरी	01:38	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	07:16	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	12:54	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	18:35	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
04 जनवरी	00:17	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	05:59	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
	11:41	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	17:23	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	23:10	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
05 जनवरी	04:57	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	10:44	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	16:31	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	22:23	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
06 जनवरी	04:15	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	10:07	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी

❊ संवत् 2082 में चन्द्र नक्षत्र चरण प्रवेश काल, जन्माक्षर, राशि व पाया ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
06 जनवरी	16:00	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	21:58	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
07 जनवरी	03:56	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	09:54	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	15:55	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	22:01	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
08 जनवरी	04:07	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	10:13	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	16:19	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	22:32	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
09 जनवरी	04:45	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	10:58	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
	17:12	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	23:33	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
10 जनवरी	05:54	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	12:15	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	18:36	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
11 जनवरी	01:03	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	07:30	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	13:57	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	20:26	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
12 जनवरी	02:59	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	09:32	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	16:05	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
	22:40	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
13 जनवरी	05:17	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	11:55	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	18:32	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
14 जनवरी	01:10	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	07:49	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	14:28	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	21:07	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
15 जनवरी	03:48	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	10:26	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	17:04	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
15जन	23:42	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
16 जनवरी.	06:22	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	12:57	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	19:32	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
17 जनवरी	02:07	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	08:44	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	15:14	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	21:44	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
18 जनवरी	04:14	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
	10:46	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	17:10	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	23:34	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
19 जनवरी	05:58	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	12:22	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	18:38	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
20 जनवरी	00:54	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	07:10	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	13:28	धनिष्ठ	1	गा	मकर	ताम्बा
	19:37	धनिष्ठ	2	गी	मकर	ताम्बा
21 जनवरी	01:46	धनिष्ठ	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	07:55	धनिष्ठ	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	14:05	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	20:07	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
22 जनवरी	02:09	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	08:11	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	14:13	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	20:08	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
23 जनवरी	02:03	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	07:58	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	13:53	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
	19:42	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
24 जनवरी	01:31	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	07:20	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	13:10	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	18:54	रेवती	2	दो	मीन	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
25 जनवरी	00:38	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	06:22	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	12:06	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	17:46	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	23:26	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
26 जनवरी	05:06	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	10:46	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	16:23	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	22:00	भरणी	3	ले	मेष	सोना
27 जनवरी	03:37	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	09:14	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	14:49	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
	20:24	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
28 जनवरी	01:59	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	07:36	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
	13:11	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	18:46	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
29 जनवरी	00:21	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	05:56	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	11:31	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	17:06	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	22:41	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
30 जनवरी	04:19	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	09:57	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	15:35	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	21:13	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
31 जनवरी	02:51	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	08:32	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	14:13	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
	19:54	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
01 फरवरी	01:35	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	07:20	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	13:05	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	18:50	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
02	00:38	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
02 फरवरी	06:28	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	12:18	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	18:08	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
03 फरवरी	00:01	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	05:58	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	11:55	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	17:52	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	23:50	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
04 फरवरी	05:54	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	11:58	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	18:02	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
05 फरवरी	00:07	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	06:18	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	12:29	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	18:40	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
06 फरवरी	00:53	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	07:12	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	13:31	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	19:50	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
07 फरवरी	02:09	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	08:35	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	15:01	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	21:27	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
08 फरवरी	03:53	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	10:25	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	16:57	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	23:29	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
09 फरवरी	06:02	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	12:38	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	19:14	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
10 फरवरी	01:50	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	08:28	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	15:07	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	21:46	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
11	04:25	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा

❈ संवत् 2082 में चन्द्र नक्षत्र चरण प्रवेश काल, जन्माक्षर, राशि व पाया ❈

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
11 फरवरी	11:05	ज्येष्ठा	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	17:43	ज्येष्ठा	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
12 फरवरी	00:21	ज्येष्ठा	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	06:59	ज्येष्ठा	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	13:40	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	20:16	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
13 फरवरी	02:52	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	09:28	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	16:06	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	22:37	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
14 फरवरी	05:08	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	11:39	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
	18:12	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
15 फरवरी	00:37	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	07:02	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	13:27	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	19:54	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
16 फरवरी	02:12	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	08:30	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	14:48	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	21:07	धनिष्ठा	1	गा	मकर	ताम्बा
17 फरवरी	03:17	धनिष्ठा	2	गी	मकर	ताम्बा
	09:27	धनिष्ठा	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	15:37	धनिष्ठा	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	21:50	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
18 फरवरी	03:53	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	09:56	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	15:59	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	22:04	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
19 फरवरी	04:00	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	09:56	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	15:52	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	21:50	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
20 फरवरी	03:40	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	09:30	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
20 फरवरी	15:20	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	21:11	रेवती	1	दे	मीन	सोना
21 फरवरी	02:56	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	08:41	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	14:26	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	20:12	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
22 फरवरी	01:52	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	07:32	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	13:12	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	18:55	भरणी	1	ली	मेष	सोना
23 फरवरी	00:32	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	06:09	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	11:46	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	17:25	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	23:00	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
24 फरवरी	04:35	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	10:10	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	15:47	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
	21:22	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
25 फरवरी	02:57	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	08:32	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	14:07	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	19:42	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
26 फरवरी	01:17	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	06:52	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	12:28	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	18:05	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	23:42	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
27 फरवरी	05:19	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	10:57	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	16:37	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	22:17	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
28 फरवरी	03:57	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	09:38	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	15:22	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
28फर	21:06	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
01 मार्च	02:50	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	08:36	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	14:25	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	20:14	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
02 मार्च	02:03	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	07:54	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	13:49	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	19:44	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
03 मार्च	01:39	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	07:36	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	13:38	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	19:40	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
04 मार्च	01:42	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	07:46	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	13:55	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	20:04	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
05 मार्च	02:13	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
	08:25	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	14:42	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	20:59	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
06 मार्च	03:16	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	09:34	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	15:58	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	22:22	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
07 मार्च	04:46	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	11:12	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	17:42	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
08 मार्च	00:12	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	06:42	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
	13:15	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	19:50	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
09 मार्च	02:25	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	09:00	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	15:37	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
9 मार्च	22:15	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
10 मार्च	04:53	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	11:31	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	18:12	ज्येष्ठा	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
11 मार्च	00:51	ज्येष्ठा	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	07:30	ज्येष्ठा	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	14:09	ज्येष्ठा	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	20:49	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
12 मार्च	03:26	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	10:03	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	16:40	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	23:17	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
13 मार्च	05:49	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	12:22	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	18:55	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
14 मार्च	01:28	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	07:54	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	14:20	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	20:46	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
15 मार्च	03:15	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	09:35	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	15:55	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	22:15	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
16 मार्च	04:35	धनिष्ठा	1	गा	मकर	ताम्बा
	10:47	धनिष्ठा	2	गी	मकर	ताम्बा
	16:59	धनिष्ठा	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	23:11	धनिष्ठा	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
17 मार्च	05:25	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	11:30	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	17:35	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	23:40	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
18 मार्च	05:45	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	11:43	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	17:41	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	23:39	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा

पुरुष की जन्मकुण्डली में द्वादश भावों में स्थित ग्रहों के फल

ग्रह	तनु 1	धन 2	भ्राता 3	सुख 4	पुत्र 5	शत्रु 6	स्त्री 7	मृत्यु 8	धर्म 9	कर्म 10	लाभ 11	व्यय 12
सूर्य	अङ्गपीड़ा	धननाश	निरोगी	दुःखी	सुतहानि	शत्रुनाश	स्त्रीदुष्टा	अल्पायु	दुष्टमति	शूर	धनी	दुष्ट स्वभाव
चन्द्र	कान्तिसुख	सम्पत्तिवान्	कीर्तिमान्	सुखभोगी	धनी, पुत्रवान्	अल्पायु	सुभार्यावान्	योगी	धर्मात्मा	तेजयुक्त	धनी	कामी
मंगल	रक्तकोप	ऋणी	विक्रमी	दुःखी	पुत्रहीन	शत्रुनाश	स्त्रीनाश	शरीर पीड़ा	पापरत	तेजस्वी	धनी	पतितदार
बुध	सुखी	धनी, गुणी	अरिमर्दन	सुखी	अल्पपुत्र	रोगी	धर्मज्ञ	गुणी	सुखी	कीर्तिमान	धनी	दरिद्र
गुरु	विद्वान्	धनागम	पापी	सुखी	प्रतापी	कामी	सुभार्या	नीचस्व	धार्मिक	सम्पत्तिवान्	सुलाभ	खल
शुक्र	सुखी	धनी	पापी	सुखी	बुद्धिमान्	रोगी	कामी	नीच	तपस्वी	सम्पत्ति	सुमति	रोगी
शनि	दुःखी	धनहानि	पराक्रमी	दुःखी	पुत्रहीन	शत्रुजित्	स्त्रीकुलटा	नेत्ररोगी	दुष्टबुद्धि	पराक्रमी	धनवान्	दुःखी
राहु	रोगी	निर्धन	विक्रमी	मातृहानि	कुमति	सबल	स्त्री रोगी	रोगी	देन्ययुक्त	मानी	सुख्यात	पतित
केतु	सकाम	खल	शूर	दुःखी	मूर्ख	सबल	स्त्री हानि	क्लेशयुक्त	पापी	पितृहीन	धनी	दुर्जन

स्त्री की जन्मकुण्डली में द्वादश भावों में स्थित ग्रहों के फल

ग्रह	तनु 1	धन 2	भ्राता 3	सुख 4	पुत्र 5	शत्रु 6	स्त्री 7	मृत्यु 8	धर्म 9	कर्म 10	लाभ 11	व्यय 12
सूर्य	क्रोधनी	दरिद्रा	सुसुता	सपीड़ा	विपुत्रा	सुखिनी	दुःखार्ता	विधवा	धर्मज्ञा	सुकर्मा	सुलाभा	सरोगा
चन्द्र	अल्पायुषी	बहुधना	सुखिनी	सुभगा	सुपुत्रा	सरोगा	पतिप्रिया	रोगिणी	सुखिनी	धर्मज्ञा	गुणज्ञा	हीनांगी
मंगल	विधवा	बन्ध्या	विसहजा	सुःखार्ता	विपुत्रा	अरोगा	विधवा	नेत्ररोगणी	दुःखिनी	कुपुत्रा	सुलाभा	खला
बुध	सौभाग्या	धनाढ्य	पुत्रवती	सुगृहा	धीकान्तियुक्ता	सकोपा	पतिव्रता	कृतघ्ना	सुभोगा	सत्कर्मा	पतिव्रता	कृशाङ्गी
गुरु	सती	धनाढ्य	सुसहजा	सुखिनी	सुगुणा	सापदा	कीर्तियुक्ता	सरोगा	पुत्राढ्या	साधवी	सुपुत्रा	सुव्यया
शुक्र	ससुखा	सुभगा	धनाढ्य	सुखिनी	पुत्रवती	दरिद्रा	पतिप्रिया	विसुखा	धर्मरता	सधना	सुपुत्रा	सुव्यया
शनि	बन्ध्या	दुःखिनी	सुदक्षा	हृद्रोगा	विपुत्रा	गुणज्ञा	विधवा	दुःखनी	बन्ध्या	पापिनी	सुलाभा	मूढा
राहु	पुत्रहीना	दरिद्रा	सवित्ता	रोगार्त्ता	विपुत्रा	सधना	दुःखिता	विधवा	बन्ध्या	दुष्कर्मा	नीरोगा	दुष्टा
केतु	दुःखिनी	दुःखार्ता	रोगणी	मातृहानि	अपुत्रा	धनयुता	विधवा	दुःखिनी	शोकयुक्ता	पापिनी	सुभगा	रोगिणी

गोचर कुण्डली में द्वादश भावों में स्थित ग्रहों के फल

ग्रह	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पञ्चम्	षष्ठम्	सप्तम्	अष्टम्	नवम्	दशम्	एकादश	द्वादश
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धननाश	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धननाश
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

जयपुर के लग्न प्रवेश से प्रमुख शहरों के लग्न प्रवेश संस्कार

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
अजमेर	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५	+४	+४	+४	+४	+५
अलवर	−३	−४	−४	−४	−३	−३	−३	−२	−१	−२	−३	−३
बांसवाड़ा	+८	+११	+१३	+१३	+९	+६	+२	००	−१	−१	+३	+६
बारां	−१	+१	+१	००	−२	−३	−५	−६	−७	−७	−४	−२
बाड़मेर	+१९	+२०	+२०	+२०	+१८	+१७	+१६	+१५	+१५	+१५	+१७	+१९
भरतपुर	−७	−७	−७	−७	−७	−७	−७	−६	−६	−६	−६	−६
भीलवाड़ा	+७	+८	+८	+७	+६	+४	+३	+२	+१	+२	+४	+६
बीकानेर	+९	+८	+८	+७	+९	+१०	+११	+१२	+१२	+१२	+११	+१०
बूंदी	+२	+४	+४	+३	+२	००	−२	−२	−३	−२	००	+१
चित्तौड़	+६	+९	+९	+९	+७	+५	+३	+१	००	+१	+४	+६
चूरू	+३	+२	००	००	+१	+२	+३	+५	+६	+६	+६	+५
दौसा	−२	−२	−३	−३	−४	−४	−४	−४	−३	−३	−२	−२
धौलपुर	−७	−७	−८	−८	−९	−९	−९	−९	−९	−८	−७	−७
डूंगरपुर	+११	+१३	+१५	+१४	+१२	+९	+५	+३	+१	+२	+६	+१०
हनुमानगढ़	+४	+२	+१	+१	+२	+४	+७	+१०	+११	+१०	+१०	+८
जैसलमेर	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०
जालौर	+१४	+१६	+१६	+१५	+१४	+१२	+१०	+१०	+९	+९	+१०	+१२
झालावाड़	+१	+३	+४	+३	+१	−१	−४	−५	−७	−६	−३	००
झुंझुनूं	+१	००	−१	−१	००	+१	+२	+३	+३	+४	+४	+३
जोधपुर	+१३	+१३	+१३	+१३	+१२	+१२	+१२	+१२	+११	+११	+१२	+१२
करौली	−४	−४	−४	−४	−४	−५	−५	−६	−६	−५	−४	−४
कोटा	+१	+२	+४	+४	+३	+१	−१	−३	−५	−४	−२	−१
नागौर	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+९	+९	+९	+९	+९
पाली	+१०	+१२	+१२	+१२	+११	+१०	+८	+७	+७	+७	+९	+१०
प्रतापगढ़	+८	+१०	+११	+१०	+८	+५	+२	००	−१	−१	+२	+५
राजसमंद	+१०	+१२	+१२	+११	+९	+८	+५	+४	+३	+४	+६	+८
सवाईमाधोपुर	−१	००	−१	−१	−२	−३	−४	−४	−४	−४	−२	−१
सीकर	+२	+२	+१	+१	+१	+	+३	+३	+३	+४	+५	+४
सिरोही	+९	+११	+१२	+११	+१०	+८	+५	+५	+३	+३	+८	+६
टोंक	+१	+२	+१	+१	००	−१	−२	−२	−२	−२	००	+१
उदयपुर	+१०	+१३	+१४	+१३	+१२	+१०	+७	+५	+३	+३	+५	+८

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
अम्बाला	+७	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	−२	−४	−३	०	+३
अमृतसर	−१	−४	−८	−६	−३	+२	+६	+१०	+१४	+१३	+१०	+६
अलीगढ़	−१०	−१०	−१०	−१०	−९	−९	−९	−८	−७	−८	−३	−२
अयोध्या	−२६	−२५	−२४	−२४	−२६	−२५	−२५	−२५	−२५	−२६	−२६	−२६
अहमदाबाद	+१६	+२०	+२१	+२१	+१७	+१४	+१०	+६	+५	+५	+८	+१२
आगरा	−९	−९	−९	−९	−९	−९	−९	−९	−९	−८	−७	−८
अकोला	−१	+५	+८	−११	−८	−८	−८	−८	−८	−८	−८	−९
इंदोर	+३	+७	+९	+८	+५	००	−४	−७	−१०	−९	−४	००
इलाहाबाद	−२३	−२१	−२१	−२१	−२२	−२४	−२६	−२६	−२८	−२७	−२५	−२४
उज्जैन	+३	+७	+८	+७	+४	+१	−३	−६	−८	−७	−३	००
गुड़गाँव	−६	−७	−८	−८	−७	−५	−४	−२	−२	−२	−२	−३
गौरखपुर	−३१	−३०	−३०	−३०	−३०	−३०	−३१	−३१	−३०	−३१	−३०	−३१
गोहाटी	−५९	−५८	−५८	−५८	−५९	−६०	−६१	−६१	−६१	−६१	−६०	−६०
गोवा	+१६	+२६	+३१	+२९	+२१	+१०	+२	−१०	−१५	−१३	−४	+१
चण्डीगढ़	−८	−११	−१३	−१२	−९	−५	००	+३	+४	+३	+१	−३
जलगाँव	+४	+९	+११	+१०	+७	+४	−३	+७	+९	+९	+४	+१
डिब्रुगढ़	−७३	−७३	−७४	−७४	−७३	−७३	−७३	−७२	−७१	−७२	−७१	−७२
नासिक	+१३	+१९	+२२	+२१	+१६	+९	+२	−३	−७	−५	+१	+८
पटना	−३७	−३५	−३५	−३५	−३६	−३७	−३९	−३९	−४०	−४०	−३८	−३७
बड़ौदा	+१४	+१८	+२०	+२०	+१६	+११	+६	+३	००	+१	+६	+११
भोपाल	−४	०	+१	+१	−२	−६	−९	−११	−१५	−१४	−१०	−७
रतलाम	+६	+९	+१०	+१०	+७	+४	००	−३	−५	−४	००	+३
लखनऊ	−२१	−२०	−२०	−२०	−२०	−२१	−२१	−२०	−२१	−२१	−२०	−२०
वाराणसी	−२८	−२६	−२६	−२६	−२६	−२८	−३०	−३२	−३३	−३३	−३१	−३०
सूरत	+१६	+२२	+२४	+२३	+१९	+१३	+७	+३	००	+१	+६	+१२
दिल्ली	−७	−८	−९	−८	−७	−४	−४	−२	−१	−२	−४	−५
कोलकाता	−४७	−४३	−४०	−४१	−४४	−५०	−५४	−५७	−६०	−५९	−५६	−५०
चेन्नई	−७	+४	+१०	+८	−२	−१६	−२८	−४०	−४६	−४४	−३३	−२०
मुम्बई	+१८	+२५	+२९	+२७	+२१	+१३	+६	−१	−५	−४	+३	+११
बैंगलुरु	+३	+१५	+२०	+१८	+८	−४	−१७	−२९	−३४	−३२	−२२	−१०
देहरादून	−८	−११	−१३	−१३	−१०	−६	−३	+२	+३	+२	+१	+६

राजस्थान के प्रमुख नगरों की अक्षांश–रेखांश सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर

देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (–)

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
अजमेर				
अजमेर	२६–२७	७४–४०	३१–२०	–४/३६
किशनगढ़	२६–३४	७४–५२	३०–३२	–३/४८
केकड़ी	२५–५६	७५–१०	२९–२०	–२/३६
टॉडगढ़	२५–४२	७४–००	३४–००	–७/१६
नसीराबाद	२६–१८	७४–४४	३१–०४	–४/२०
पीसांगन	२६–२५	७४–२३	३२–२८	–५/४४
पुष्कर	२६–३०	७४–२३	३१–४८	–५/०४
ब्यावर	२६–०६	७४–२०	३२–४०	–५/५६
बांदनवाडा	२६–०९	७४–४२	३१–१२	–४/२८
विजयनगर	२५–५५	७४–३८	३१–२८	–४/४४
भिनाय	२६–०४	७४–४७	३०–५२	–४/०८
मसूदा	२६–०५	७४–३०	३२–००	–५/१६
रामसर	२६–१३	७४–५३	३०–२८	–३/४४
रूपनगर	२६–४८	७४–५४	३०–२४	–३/४०
सरवाड़	२६–०२	७४–५५	३०–२०	–३/३६
अलवर				
अलवर	२७–३४	७६–३८	२३–२८	–३/१६
कटूमर	२७–१८	७७–०२	२१–५२	–४/५२
किशनगढ़बास	२७–४५	७६–४९	२२–४४	–४/००
खैरथल	२७–४८	७६–३६	२३–३६	–३/०८
खेड़ली	२७–१२	७६–०६	२१–३६	–५/०८
कोटकासिम	२७–०३	७६–४४	२३–०४	–३/४०
तिजारा	२७–५५	७६–५०	२२–४०	–४/०४
थानागाजी	२७–२५	७६–१९	२४–४४	–२/००
बहरोड	२७–५४	७६–१८	२४–४८	–१/५६
बानसूर	२७–४१	७६–२२	२४–३२	–२/१२
मण्डावर	२७–५३	७६–३६	२३–३६	–३/०८
राजगढ़	२७–१५	७६–३८	२३–२८	–३/१६
रामगढ़	२७–३६	७६–४९	२२–४४	–४/००
लक्ष्मणगढ़	२७–२३	७६–५२	२२–३२	–४/१२

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
उदयपुर				
उदयपुर	२४–३५	७३–४१	३५–१६	–८/३२
एकलिंगजी	२४–४३	७३–४६	३४–५६	–८/१२
ऋषभदेव	२४–०४	७३–४२	३५–१२	–८/२८
कोटड़ा	२४–२०	७३–१०	३७–२०	–१०/३६
खेरवाड़ा	२४–००	७३–३५	३५–४०	–८/५६
गोगुंदा	२४–४४	७३–३५	३५–४०	–८/५६
झाड़ोल	२४–२४	७३–२९	३६–०६	–९/२२
धरियाबाद	२४–०७	७४–२७	३२–१२	–५/२८
परसाद	२४–११	७३–४२	३५–१२	–८/२८
फतेहनगर	२४–४८	७४–०६	३३–३६	–६/५२
भिंडर	२४–३०	७४–१२	३३–१२	–६/२८
मावली	२४–४७	७३–५८	३४–०८	–७/२४
मोदरी	२४–२५	७३–२५	३६–२०	–९/३६
वल्लभनगर	२४–४१	७४–०२	३३–५२	–७/०८
सलुम्बर	२४–०६	७४–०६	३३–३६	–६/५२
सराड़ा	२४–०८	७३–४८	३४–४८	–८/०४
करौली				
करनपुर	२६–१२	७६–५४	२२–२४	+४/२०
करौली	२६–३०	७७–०१	२१–५६	+४/४८
केलादेवी	२६–२१	७६–५४	२२–२४	+४/२०
टोड़ाभीम	२६–५४	७६–४८	२२–४८	+३/५६
नादौती	२६–४३	७६–४४	२३–०४	+३/४०
लसारड़ा	२६–०९	७७–०२	२१–५२	+४/५२
शहर	२६–३६	७६–४४	२३–०४	+३/४०
श्रीमहावीरजी	२६–४१	७६–५९	२२–०४	+४/४०
सपोटरा	२६–१७	७६–४५	२३–००	+३/४४
हिण्डौनसिटी	२६–४३	७७–०१	२१–५६	+४/४८

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
कोटा				
इन्द्रगढ़	२५–४४	७६–१२	२५–१२	+१/३२
कोटा	२५–१०	७५–५२	२६–३२	+०/१२
दीगोद	२५–१३	७४–०५	२५–४०	+१/०४
पीपलदाकला	२५–३३	७६–२७	२४–१२	+२/३२
मुकंदरा	२४–४९	७५–५९	२६–०४	+०/४०
रामगंज मंडी	२४–३६	७५–५४	२६–२४	+०/२०
रावतभाटा	२४–४५	७५–३५	२७–४०	–०/५६
सांगोद	२४–५५	७६–२१	२४–३६	+२/०८
गंगानगर				
अनूपगढ़	२९–०७	७३–०६	३७–३६	–१०/५२
केसरीसिंहपुर	२९–५८	७३–४५	३५–००	–८/१६
गंगानगर	२९–४९	७३–५०	३४–४०	–७/५६
गजसिंहपुर	२९–४२	७३–२४	३६–२४	–९/४०
घड़साना	२८–५९	७३–०१	३७–५६	–११/१२
जेतसर	२९–२२	७३–२३	३६–२८	–९/४४
पदमपुर	२९–३५	७३–३१	३५–५६	–९/१२
रामसिंहपुर	२९–१०	७३–२४	३६–२४	–९/४०
रायसिंह नगर	२९–३२	७३–२७	३६–१२	–९/२८
श्रीविजयनगर	२९–१३	७३–३०	३६–००	–९/१६
करणपुर	२९–५०	७३–५०	३४–४४	–८/००
सरूपसर	२९–२२	७३–३७	३५–३२	–८/४८
सूरतगढ़	२९–१९	७३–५७	३४–१२	–७/२८
हिन्दूमलकोट	३०–००	७३–५४	३४–२४	–७/४०
चित्तौड़गढ़				
अरनोद	२३–५३	७४–४९	३०–४४	–४/००
कपासन	२४–५४	७४–१८	३२–४८	–६/०४
गंगरार	२५–०३	७४–३८	३१–२८	–४/४४
चित्तौड़गढ़	२४–५४	७४–४०	३१–२०	–४/३६

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
छोटीसादड़ी	२४–२४	७४–४२	३१–१२	–४/२८
डूंगरा	२४–२९	७४–२१	३२–३६	–५/५२
देवलिया	२४–०३	७४–४३	३१–०८	–४/२४
निम्बाहेड़ा	२४–३७	७४–४५	३१–००	–४/१६
प्रतापगढ़	२४–०२	७४–४७	३०–५२	–४/०८
पिपलोदा	२३–३५	७४–५०	३०–४०	–३/५६
बड़ी सादड़ी	२४–२५	७४–२८	३२–०८	–५/२४
बेगूं	२४–५७	७५–०६	२९–३६	–२/५२
भदेसर	२४–३९	७४–३१	३१–५६	–५/१२
भैसरोड़गढ़	२४–४८	७५–३३	२७–४८	–१/०४
राशमी	२५–०४	७४–२३	३२–२८	–५/४४
चूरू				
चूरू	२८–१९	७५–०१	२९–५६	–३/१२
छापर	२७–५०	७४–२५	३२–२०	–५/३६
जोधासर	२८–०७	७३–५०	३४–४०	–७/५६
तारानगर	२८–४२	७५–०६	२९–३६	–२/५२
पुनरासर	२८–१२	७३–४७	३४–५२	–८/०८
बीदासर	२७–५०	७४–२५	३२–२०	–५/३६
रतनगढ़	२८–०५	७४–३७	३१–३२	–४/४८
रतननगर	२८–१३	७४–५७	३०–१२	–३/२८
राजगढ़	२८–३९	७५–२६	२८–१६	–१/३२
राजावास	२८–३४	७४–४४	३१–०४	–४/२०
राजलदेसर	२८–०२	७४–२८	३२–०८	–५/२४
रेनी	२८–४१	७५–०५	२९–४०	–२/५६
श्रीडूंगरगढ़	२८–०६	७४–०१	३३–५६	–७/२
सरदारशहर	२८–२७	७४–३०	३२–००	–५/१६
सार्दुलपुर	२८–३८	७५–२४	२८–२४	–१/४०
सालासर	२७–४३	७४–४०	३१–२०	–४/३६
साहवा	२८–५३	७४–४९	३०–४४	–४/००
सुजानगढ़	२७–४२	७४–३०	३२–००	–४/१६

राजस्थान के प्रमुख नगरों की अक्षांश–रेखांश सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर

देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (–)

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
जयपुर				
अचरोल	२७–०२	७५–५४	२६–२४	+०/२०
आमेर	२६–५९	७५–५२	२६–३२	+०/१२
आसलपुर	२६–५५	७५–२६	२८–१६	–१/३२
कालाडेरा	२७–११	७५–३८	२७–२८	–०/४४
कोटपूतली	२७–४२	७६–१२	२५–१२	+१/३२
चाकसू	२६–३६	७५–५९	२६–०४	+०/४०
चौमूँ	२७–०८	७५–४७	२६–५२	–०/०८
जयपुर	२६–५५	७५–४९	२६–४४	०/००
जमवारामगढ़	२७–०१	७६–०१	२५–५६	+०/४८
जोबनेर	२६–५७	७५–२४	२८–२४	–१/४०
दूदू	२६–४१	७५–१६	२८–५६	–२/१२
नरैना	२६–५०	७५–११	२९–१६	–२/३२
पावटा	२७–३७	७६–०६	२५–३६	+१/०८
फागी	२६–३४	७५–३५	२७–४०	–०/५६
फुलेरा	२६–५२	७५–१६	२८–५६	–२/१२
बस्सी	२६–५२	७६–०३	२५–४८	+०/५६
बगरू	२६–४७	७५–३३	२७–४८	–१/०४
बैराठ	२७–२७	७६–११	२५–१६	+१/२८
महलां	२६–५०	७५–३०	२८–००	–१/१६
वनस्थली	२६–२३	७५–५०	२६–४०	+०/०४
शाहपुरा	२७–२३	७५–५८	२६–०८	+०/३६
सामोद	२७–१२	७५–४८	२६–४८	–०/०४
सांगानेर	२६–४९	७५–४६	२६–५६	–०/१२
सांभरलेक	२६–५४	७५–१२	२९–१२	–२/२८
जालोर				
आहोर	२५–२३	७२–५२	३८–३२	–११/४८
जसवंतपुरा	२४–४९	७२–३०	४०–००	–१३/१६
जालोर	२५–२२	७२–३८	३९–२८	–१२/४४
बागरा	२५–१५	७२–२८	४०–०८	–१३/२४

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
बाकरा	२५–१२	७२–३२	३९–५२	–१३/०८
भीनमाल	२५–००	७२–१९	४०–४४	–१४/००
मोरसीम	२५–०९	७१–५४	४२–२४	–१५/४०
रानीवाड़ा	२४–४४	७२–१४	४१–०४	–१४/२०
सांचोर	२४–४५	७१–५०	४२–४०	–१५/५६
सीयाणा	२५–०९	७२–४०	३९–२०	–१२/२६
जैसलमेर				
किशनगढ़	२७–५२	७०–३४	४७–४४	–२१/००
खुड़ी	२६–४२	७०–४०	४७–२०	–२०/३६
खुईआला	२७–०६	७०–२५	४८–२०	–२१/३६
घोटारू	२७–१८	७०–०४	४९–४४	–२३/००
चांदन	२६–५९	७१–१९	४४–४४	–१८/००
जैसलमेर	२६–५५	७०–५४	४६–२४	–१९/४०
तनोट	२७–४८	७०–२१	४८–३६	–२१/५२
देओरा	२६–३०	७०–४२	४७–१२	–२०/२८
देधा	२६–५१	७०–४२	४७–१२	–२०/२८
देवीकोट	२६–४२	७१–१२	४५–१२	–१८/२८
नाचना	२७–२९	७१–४५	४३–००	–१६/१६
पोकरण	२६–५७	७१–५६	४२–१६	–१५/३२
मियालजर	२६–१८	७०–२२	४८–३२	–२१/४८
रामगढ़	२७–२२	७०–३०	४८–००	–२१/१६
रामदेवरा	२७–००	७१–५२	४२–३२	–१५/४८
लाठी	२७–०३	७१–३०	४४–००	–१७/१६
शाहगढ़	२७–०८	६९–५३	५०–२८	–२३/४४
श्रीभादरिया	२७–०५	७१–४१	४३–१६	–१६/३२
श्रीमोहनगढ़	२७–१८	७१–१५	४५–००	–१८/१६
सम	२६–५०	७०–३१	४७–५६	–२१/१२
जोधपुर				
आसोप	२६–४८	७३–३५	३५–४०	–८/५६
ओसियां	२६–४३	७२–५५	३८–२०	–११/३६
जोधपुर	२६–१७	७३–०३	३७–४८	–११/०४

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
देचूं	२६–४७	७२–२०	४०–४०	–१३/५६
पीपाड़ रोड़	२६–२७	७३–२७	३६–१२	–९/२८
फलौदी	२७–०९	७२–२२	४०–३२	–१३/४८
बाप	२७–२२	७२–२२	४०–३२	–१३/४८
बालेसर	२६–२२	७२–३१	३९–५६	–१३/१२
बिलाड़ा	२६–१०	७३–४२	३५–१२	–८/२८
भोपालगढ़	२६–३९	७३–३०	३६–००	–९/१६
भोजासर	२७–००	७२–५०	३८–४०	–११/५६
मथानियां	२६–३१	७२–५९	३८–०४	–११/२०
लूनी	२६–००	७२–५२	३८–३२	–११/४८
लोहावट	२६–५९	७२–३६	३९–३६	–१२/५२
शेरगढ़	२६–२५	७२–२१	४०–३६	–१३/५२
झालावाड़				
अकलेरा	२४–२३	७६–३६	२३–३६	+३/०८
खानपुर	२४–४४	७६–२३	२४–२८	+२/१६
गंगधार	२३–५७	७५–३८	२७–२८	–०/४४
झालावाड़	२४–३६	७६–०९	२५–२४	+१/२०
झालरापाटन	२४–३३	७६–१०	२५–२०	+१/२४
देवगढ़	२३–५९	७५–४५	२७–००	–०/१६
पचपहाड़	२४–२४	७५–४७	२६–५२	–०/०८
पिड़ावा	३४–१३	७६–०३	२५–४८	+०/५६
भवानीमण्डी	२४–२४	७५–४८	२६–४८	–०/०४
भवानीगंज	२४–२६	७५–४९	२६–४४	+०/००
मण्डावर	२४–३५	७६–१५	२५–००	+१/४४
मनोहरथाना	२४–१४	७६–४८	२२–४८	+३/५६
झुंझुनू				
अलसीसर	२८–१९	७५–१८	२८–४८	–२/०४
उदयपुरवाटी	२७–४३	७५–२९	२८–०४	–१/२०
खेतड़ी	२८–००	७५–४८	२६–४८	–०/०४

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
गुढ़ा	२७–५३	७५–३६	२७–३६	–०/५२
चिड़ावा	२८–१५	७५–३८	२७–२८	–०/४४
झुंझुनू	२८–०५	७५–२५	२८–२०	–१/३६
नवलगढ़	२७–५१	७५–१८	२८–४८	–२/०४
पिलानी	२८–२३	७५–३५	२७–४०	–०/५६
बगड़	२८–१२	७५–३०	२८–००	–१/१६
बबाई	२७–५३	७५–४५	२७–००	–०/१६
बिसाऊ	२८–१३	७५–०५	२९–४०	–२/५६
मण्डावा	२८–०३	७५–१०	२९–२०	–२/३६
मलसीसर	२८–२४	७५–१४	२९–०४	–२/२०
मुकुन्दगढ़	२७–५७	७५–१५	२९–००	–२/१६
सूरजगढ़	२८–१९	७५–४५	२७–००	–०/१६
टोंक				
अलीगढ़	२५–५८	७६–०७	२५–३२	+१/१२
उनियारा	२५–५४	७६–०६	२५–३६	+१/०८
गंगापुर	२६–२९	७६–३६	२३–३६	+३/०८
गनवर	२६–३०	७५–१५	२९–००	–२/१६
चाँदसेन	२६–१९	७५–२९	२८–०४	–१/२०
टोंक	२६–११	७५–५०	२६–४०	+०/०४
टोडारायसिंह	२६–००	७५–२९	२८–०४	–१/२०
डिग्गी	२६–२२	७५–२७	२८–१२	–१/२८
देवली	२५–४६	७५–२५	२८–२०	–१/३६
नगर (देवली)	२५–५५	७५–५०	२६–४०	+०/०४
नगर (मालपुरा)	२६–२७	७५–१४	२९–०४	–२/२०
निवाई	२६–२४	७५–५४	२६–२४	+०/२०
पचेवर	२६–२९	७५–२०	२८–४०	–१/५६
बम्बोर	२६–०९	७५–५२	२६–३२	+०/१२
मण्डावर	२६–१०	७५–५९	२६–०४	+०/४०
मालपुरा	२६–१८	७५–२५	२८–२०	–१/३६
लाम्बाहरिसिंह	२६–१६	७५–१०	२९–२०	–२/३६

राजस्थान के प्रमुख नगरों की अक्षांश–रेखांश सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर　　**देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (–)**

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
डूंगरपुर				
आसपुर	२३–५८	७४–०३	३३–४८	–७/०४
गलियाकोट	२३–३१	७४–०१	३३–५६	–७/१२
डूंगरपुर	२३–५०	७३–४३	३५–०८	–८/२४
पीठ	२३–३१	७३–४५	३५–००	–८/१६
बीछीवाड़ा	२३–५१	७३–३२	३५–५२	–९/०८
रामगढ़	२३–५८	७३–५७	३४–१२	–७/२८
सागवाड़ा	२३–४१	७४–०१	३३–५६	–७/१२
सिमलवाड़ा	२३–३४	७३–४७	३४–५२	–८/०८
दौसा				
गीजगढ़	२६–५६	७६–३८	२३–२८	+३/१६
दौसा	२६–५३	७६–२०	२४–४०	+२/०४
बसवा	२७–०६	७६–३२	२३–५२	+२/५२
बांदीकुई	२७–०३	७६–३४	२३–४४	+३/००
महवा	२७–०३	७६–५६	२२–१६	+४/२८
लालसोट	२६–३४	७६–२३	२४–२८	+२/१६
सिकराय	२६–५५	७६–४०	२३–०४	+३/४०
धौलपुर				
धौलपुर	२६–४२	७७–५३	१८–२८	+८/१६
बसईनवाब	२६–५५	७७–४८	१८–४८	+७/५६
बसेड़ी	२६–४५	७७–२३	२०–२८	+६/१६
बाड़ी	२६–३९	७७–३६	१९–३६	+७/०८
राजाखेड़ा	२६–५४	७८–१२	१७–१२	+९/३२
वनसराय	२६–४१	७७–२५	२०–२०	+६/२४
सरमथुरा	२६–३१	७७–२२	२०–३२	+६/१२
नागौर				
कुचामनसिटी	२७–०९	७४–५२	३०–३२	–३/४८
कुचेरा	२७–००	७३–५४	३४–२४	–७/४०
खाटू	२७–०७	७४–१७	३२–५२	–६/०८
गोटन	२६–३९	७३–४४	३५–०४	–८/२०

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
चान्दरूप	२६–५७	७४–२१	३२–३६	–५/५२
जसवन्तगढ़	२७–४९	७४–२७	३२–१२	–५/२८
जायल	२७–१५	७४–१२	३३–१२	–६/२८
डीडवाना	२७–२४	७४–३४	३१–४४	–५/००
डेगाना	२६–५०	७४–१८	३२–४८	–६/०४
नागौर	२७–११	७३–४४	३५–०४	–८/२०
नावां	२७–००	७५–०१	२९–५६	–३/१२
परबतसर	२६–५२	७४–४५	३१–००	–४/१६
पीपासर	२७–३३	७३–४१	३५–१६	–८/३२
बालसमन्द	२७–३६	७४–२८	३२–०८	–५/२४
बोरावड़	२७–०१	७४–३६	३१–३६	–४/५२
भदवासी	२७–१२	७३–४०	३५–२०	–८/३६
मकराना	२७–०३	७४–४३	३१–०८	–४/२४
मेड़ता सिटी	२६–३९	७४–०६	३३–३६	–६/५२
मेड़ता रोड़	२६–४३	७३–५५	३४–२०	–७/३६
लाडनू	२७–३९	७४–२३	३२–२८	–५/४४
पाली				
अटबड़ा	२६–०५	७३–४५	३५–००	–८/१६
ऐरनपुर	२५–०९	७३–०६	३७–३६	–१०/५२
खारची	२५–४३	७३–३६	३५–३६	–८/५२
घाणेराव	२५–१५	७३–३३	३५–४८	–९/०४
चंदावल	२६–००	७३–५०	३४–४०	–७/५६
जवाईबांध	२५–०४	७३–१५	३७–००	–१०/१६
जैतारन	२६–१३	७३–५६	३४–१६	–७/३२
टाडगढ़	२५–४२	७४–००	३४–००	–७/१६
देसुरी	२५–२०	७३–३७	३५–३२	–८/४८
निम्बाज	२६–१०	७४–००	३४–००	–७/१६
पाली	२५–४६	७३–२०	३६–४०	–९/५६
फालना	२५–१२	७३–१२	३७–१२	–१०/२८
बर	२६–०६	७४–०८	३३–२८	–६/४४

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
बाली	२५–०५	७३–१८	३६–४८	–१०/०४
बीजापुर	२५–०७	७३–१०	३७–२०	–१०/३६
भंवर	२५–४१	७३–०६	३७–३६	–१०/५२
मुण्डारा	२५–१२	७३–२३	३६–२८	–९/४४
राणावास	२५–३९	७३–४५	३५–००	–८/१६
रानी	२५–२२	७३–१८	३६–४८	–१०/०४
रायपुर	२६–०३	७४–०२	३३–५२	–७/०८
रोहट	२५–५७	७३–०८	३७–२८	–१०/४४
सरदारसमंद	२५–५८	७३–२३	३६–२८	–९/४४
साण्डेराव	२५–१८	७३–१०	३७–२०	–१/३६
सोजत	२६–५६	७२–४२	३५–१२	–८/२८
सेंदडा	२६–०५	७४–११	३३–१६	–६/३२
बाड़मेर				
आसोतरा	२५–४६	७२–१९	४०–४४	–१४/००
गडरा रोड	२५–४०	७०–३७	४७–३२	–२०/४८
गागरिया	२५–४४	७०–४५	४७–००	–२०/१६
गिराव	२६–०२	७०–३५	४७–४०	–२०/५६
गुढ़ामालानी	२५–१२	७१–४८	४२–४८	–१६/००४
गूंगा	२६–१५	७१–१३	४५–०८	–१८/२४
चौहटन	२५–२९	७१–०४	४५–४४	–१९/००
जसोल	३५–५०	७२–१४	४१–०४	–१४/२०
धोरीमना	२५–१२	७१–२५	४४–२०	–१७/३६
पचपदरा	२५–५५	७२–२१	४०–३६	–१३/५२
पाटोदी	२६–०५	७२–१६	४०–५६	–१४/१२
पुजांसर	२५–०९	७१–०२	४५–५२	–१९/०८
बनियासांडधोरा	२५–५३	७१–४१	४३–१६	–१६/३२
बंबोरा	२५–१९	७१–१८	४४–४८	–१८/०४
बाड़मेर	२५–४६	७१–२३	४४–२८	–१७/४४
बालोतरा	२५–४९	७२–१४	४१–०४	–१४/२०
बायतू	२५–५५	७१–४६	४२–५६	–१६/१२

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
मूनबाव	२५–४३	७०–१५	४९–००	–२२/१६
रामसर	२५–४५	७०–५४	४६–२४	–१९/४०
रावतसर	२५–३२	७०–५६	४६–१६	–१९/३२
शिव	२६–११	७१–१५	४५–००	–१८/१६
समदड़ी	२५–४९	७२–३५	३९–४०	–१२/५६
सिन्दरी	२५–३३	७१–५५	४२–२०	–१५/३६
सिवाना	२५–३६	७२–२७	४२–१२	–१३/२८
बारां				
अटरू	२४–५०	७६–३३	२३–४८	+२/५६
किशनगंज	२५–०६	७६–३९	२३–२४	+३/२०
छबड़ा	२४–४०	७६–५०	२२–४०	+४/०४
छीपाबड़ोद	२४–३६	७६–४३	२३–०८	+३/३६
थानाकस्बा	२५–१३	७७–२०	२०–४०	+६/०४
देवरी	२५–२२	७७–१२	२१–१२	+५/३२
बारां	२५–०६	७६–३१	२३–५६	+२/४८
भंवरगढ़	२५–०६	७६–५०	२२–४०	+४/०४
मनोहरथाना	२५–२२	७६–०९	२५–२४	+१/२०
मांगरोल	२५–२०	७६–३०	२४–००	+२/४४
शाहबाद	२५–२०	७७–०८	२१–२८	+५/१६
बांसवाड़ा				
अर्थुना	२३–३५	७४–०६	३३–३६	–६/५२
कलिंजरा	२३–२१	७४–१८	३२–४८	–६/०४
कुशलगढ़	२३–१०	७४–२७	३२–१२	–५/२८
खांटू	२३–२८	७४–२२	३२–३२	–५/४८
गढ़ी	२३–३६	७४–०८	३३–२८	–६/४४
घाटोल	२३–४६	७४–२४	३२–२४	–५/४०
दानपुर	२३–३२	७४–४४	३१–०४	–४/२०
परतापुर	२३–३६	७४–१०	३३–२०	–६/३६
बागीदौरा	२३–२५	७४–१८	३२–४८	–६/०४
बांसवाड़ा	२३–३०	७४–२४	३२–२४	–५/४०
लौहरिया	२३–४८	७४–१५	३३–००	–६/१६

राजस्थान के प्रमुख नगरों की अक्षांश-रेखांश सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर **देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (−)**

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
बीकानेर				
ककराला	२८–३८	७२–५९	३८–०४	–११/२०
कपुरीसर	२८–३९	७३–५६	३४–१६	–७/३२
कालू	२८–२२	७३–५२	३४–३२	–७/४८
कोलायत	२७–५०	७२–५७	३८–१२	–११/२८
गजनेर	२७–५८	७३–०४	३७–४४	–११/००
चारणवाला	२७–५३	७२–१०	४१–२०	–१४/३६
चीलो	२७–२२	७३–३०	३६–००	–९/१६
छतरगढ़	२८–४१	७३–०८	३७–२८	–१०/४४
जसरासर	२७–४५	७३–५०	३४–४०	–७/५६
जोधासर	२८–०७	७३–४०	३५–२०	–८/३६
दांतौर	२८–२६	७२–३१	३९–५६	–१३/१२
देशनोक	२७–४८	७३–२१	३६–३६	–९/५२
नापासर	२७–५८	७३–३३	३५–४८	–९/०४
नोखा	२७–३५	७३–२९	३६–०४	–९/२०
नोरंगदेसर	२८–०५	७३–३३	३५–४८	–९/०४
पूगल	२८–३१	७३–४७	३८–५२	–१२/०८
बज्जू	२७–५९	७३–३०	३६–००	–९/१६
बीकानेर	२८–०१	७३–२०	३४–४०	–९/५६
महाजन	२८–४८	७३–५३	३४–२८	–७/४४
लूणकसर	२८–३०	७३–४५	३५–००	–८/१६
धौलपुर				
धौलपुर	२५–२९	७५–५१	२६–३६	+०/०८
बसईनवाब	२५–२४	७६–०६	२५–३६	+१/०८
बसेड़ी	२५–१८	७५–५६	२६–१६	+०/२८
बाड़ी	२५–२७	७५–४०	२७–२०	–०/३६
राजाखेड़ा	२५–४५	७५–५७	२६–१२	+०/३२
वनसराय	२५–३६	७६–१२	२५–१२	+१/३२
सरमथुरा	२५–३४	७५–३०	२८–००	–१/१६
भरतपुर				
कामां	२७–४०	७७–१६	२०–५६	+५/४८
कुम्हेर	२७–१९	७७–२३	२०–२८	+६/१६
डीग	२७–२८	७७–२०	२०–४०	+६/०४
नदबई	२७–१४	७७–१२	२१–१२	+५/३२
नगर	२७–२६	७७–०६	२१–३६	+५/०८
पहाड़ी	२७–४१	७७–०६	२१–३६	+५/०८
बयाना	२६–५४	७७–१७	२०–५२	+५/५२
बल्लभगढ़	२६–५८	७७–०६	२१–३६	+५/०८
भरतपुर	२७–१५	७७–३०	२०–००	+६/४४
रूपवास	२७–००	७७–३५	१९–४०	+७/०४
वैर	२७–००	७७–१२	२१–१२	+५/३२
सिकरीपट्टी	२७–२५	७७–०६	२१–३६	+५/०८
हेलाना	२७–०७	७७–१०	२१–२०	+५/२४
भीलवाड़ा				
आकोला	२५–१७	७४–५३	३०–२८	–३/४४
आसीन्द	२५–४२	७४–१८	३२–४८	–६/०४
कोटड़ी	२५–२५	७४–५४	३०–२४	–३/४०
खमनोर	२५–४६	७४–४७	३०–५२	–४/०८
गंगापुर	२५–१४	७४–१७	३३–००	–६/१६
गुलाबपुरा	२५–५४	७४–४२	३१–१२	–४/२८
जहाजपुर	२५–३८	७५–१८	२८–४८	–२/०४
पाटन	२५–४५	७४–२३	३२–२८	–५/४४
पुरा	२५–१९	७४–३३	३१–४८	–५/०४
बनेड़ा	२५–३१	७४–४०	३१–२०	–४/३६
बिजोलिया	२५–१०	७५–२०	२८–४०	–१/५६
बिगोद	२५–१५	७५–००	३०–००	–३/१६
भीलवाड़ा	२५–२१	७४–२०	३१–२०	–४/३६
मांडल	२५–२७	७४–३६	३१–३६	–४/५२
माण्डलगढ़	२५–१२	७५–२४	२९–२४	–०/४०
रायपुर	२५–२५	७४–२४	३३–२४	–६/४०
लसाड़िया	२५–२२	७४–१२	३२–१२	–५/२८
शंभूगढ़	२५–५०	७४–२०	३२–२०	–५/३६
शाहपुरा	२५–४०	७४–५०	३०–४०	–३/५६
सहाड़ा	२५–१२	७४–१६	३२–५६	–६/१२
हुरड़ा	२५–५५	७४–४४	३१–०४	–४/२०
राजसमन्द				
आमेट	२५–२०	७३–५९	३४–०४	–७/२०
कांकरोली	२५–०४	७३–५४	३४–२४	–७/४०
कुम्भलगढ़	२५–०९	७४–३६	३५–३६	–८/५२
खेतश्वर	२५–५८	७३–५१	३४–३६	–७/५२
देवगढ़	२५–३०	७३–५४	३४–२४	–७/४०
नाथद्वारा	२५–५६	७३–५०	३४–४०	–७/५६
भीम	२५–३९	७४–०९	३३–२४	–६/४०
राजसमन्द	२५–०४	७३–५२	३४–३२	–७/४८
रेलमगरा	२५–०३	७४–१२	३३–१२	–६/२८
राजसमन्द				
खण्डार	२६–०१	७६–३७	२३–३२	+३/१२
गंगापुर	२६–२९	७६–४५	२३–००	+३/४४
बोनली	२६–१९	७६–१४	२५–०४	+१/४०
भगवतगढ़	२६–०९	७७–१५	२१–००	+५/४४
मलारनाडूंगर	२६–१७	७६–२९	२४–०४	+२/४०
रणथम्भौर	२६–०२	७६–२७	२४–१२	+२/३२
वामनवास	२६–३३	७६–३३	२३–४८	+२/५६
सवाईमाधोपुर	२५–५८	७६–२५	२४–२०	+२/२४
सिरोही				
अनादरा	२४–३५	७२–३८	३९–२८	–१२/४४
आबूरोड	२४–२९	७२–४७	३८–५२	–१२/०८
आबू	२४–३७	७२–४५	३९–००	–१२/१६
पिंडवाड़ा	२४–४९	७३–०५	३७–४०	–१०/५६
रेवदर	२४–३७	७२–३१	३९–५६	–१३/१२
शिवगंज	२५–०९	७३–०४	३७–४४	–११/००
स्वरूपगंज	२४–४०	७२–५६	३८–१६	–११/३२
सिरोही	२४–५३	७२–५४	३८–२४	–११/४०
सीकर				
अजीतगढ़	२७–२५	७५–४८	२६–४८	–०/०४
कावंट	२७–३६	७५–४२	२७–१२	–०/२८
कोछोर	२७–२६	७५–१६	२८–५६	–२/१२
खण्डेला	२७–३७	७५–३२	२७–५२	–१/०८
खाटूश्यामजी	२७–२२	७५–२५	२८–२०	–१/३६
दातारामगढ़	२७–१५	७५–१२	२९–१२	–२/२८
दातां	२७–१८	७५–१२	२९–१२	–२/२८
धोद	२७–२४	७५–०१	२९–५६	–३/१२
नीम का थाना	२७–४४	७५–४८	२६–४८	–०/०४
पलसाना	२७–२५	७५–२६	२८–१६	–१/३२
पाटन	२७–४८	७५–५९	२६–०४	–०/४०
फतेहपुर	२८–००	७५–००	३०–००	–३/१६
रामगढ़	२८–१०	७४–५९	३०–०४	–३/२०
रींगस	२७–२१	७५–३४	२७–४४	–१/००
लक्ष्मणगढ़	२७–४५	७५–०४	२९–४४	–३/००
लोसल	२७–२६	७४–५४	३०–२४	–३/४०
श्रीमाधोपुर	२७–२५	७५–३६	२७–३६	–०/५२
सीकर	२७–३६	७५–०९	२९–२४	–२/४०
हनुमानगढ़				
कानसर	२८–५८	७४–२५	३२–२०	–५/३६
टीबी	२९–३३	७४–३१	३१–५६	–५/१२
नोहर	२९–११	७४–४६	३०–५६	–४/१२
पल्लू	२८–५६	७४–१३	३३–०८	–६/२४
पीलबिंगा	२९–३६	७४–०६	३३–३६	–६/५२
बड़ोपल	२९–२१	७४–०५	३३–४०	–६/५६
भादरा	२९–०५	७५–१५	२९–००	–२/१६
मलसीसर	२८–४५	७५–०५	२९–४०	–२/५६
रावतसर	२९–१६	७४–२४	३२–२४	–५/४०
संगरिया	२९–४८	७४–२५	३२–२०	–५/३६
सादुलशहर	२९–५४	७४–१२	३३–१२	–६/२८
हनुमानगढ़	२९–३५	७४–२१	३२–३६	–५/५२

भारत के प्रमुख नगरों की अक्षांश–रेखांश सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर

देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (–)

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
अकोला	२०–४३	७७–०२	–२१/५२	+४/५२
अल्मोड़ा	२९–३७	७९–४०	–११/२०	+१५/२४
अलीगढ़	२७–५४	७८–०५	–१७/४०	+९/०४
अयोध्या	२६–४८	८२–१४	–१/०४	+२५/४०
अमेठी	२६–०८	८१–४८	–२/४८	+२३/५६
अम्बाला	३०–२१	७६–५२	–२२/३२	+४/१२
अगरतला	२३–४९	९१–१८	+३५/१२	+६१/५६
अहमदाबाद	२३–०२	७२–२७	–३९/३२	–१२/४८
आइजोल	२३–४५	९२–४५	+४१/००	+६७/४४
अमृतसल	३१–३७	७४–५३	–३०/२८	–३/४४
आगरा	२७–११	७८–०२	–१७/५२	+८/५२
आरा (बि·)	२५–३६	८४–४२	+८/४८	+३५/३२
आदिलाबाद	१९–४०	७८–३१	–१५/५६	+१०/४८
आसनसोल–बि·	२४–१४	८७–१५	+१९/००	+४५/४४
इटानगर	२६–५४	९३–३६	–४४/२४	+७१/०८
इन्दौर	२२–४३	७५–५३	–२६/२८	+०/१६
इम्फाल	२४–५४	९३–५४	+४५/३६	+७२/२०
इलाहाबाद	२५–२८	८१–५२	–२/३२	+२४/१२
एलोरा	२०–०५	७५–१०	–२९/२०	–२/३६
उज्जैन	२३–११	७५–४४	–२७/०४	–०/२०
उधमपुर	३२–५५	७५–०७	–२९/३२	–२/४८
ऊँझा	२३–४७	७२–२४	–४०/२४	–१३/४०
औरंगाबाद महा·	१९–५२	७५–१९	–२८/४४	–२/००
औरंगाबाद बि·	२४–४५	८४–२५	+७/४०	+३४/२४
कन्नौज	२७–०२	७९–५८	–१०/०८	+१६/३६
कन्याकुमारी	०८–०४	७७–३६	–१९/३६	+७/०८
करनाल	२९–४२	७७–०२	–२१/५२	+४/५२
कलकत्ता	२२–३५	८८–२४	+२३/३६	+५०/२०
कटक	२०–२८	८५–५४	+१३/३६	+४०/२०
कटनी	२३–५०	८०–२३	–८/२८	+१८/१६
कोण्णूर	११–५१	७५–२१	–२८/३६	–१/५२
कांगड़ा	३२–०९	७६–१८	–२४/४८	+१/५६
कांचिपुरम्	१२–५१	७९–५३	–१०/२८	+१६/१६
कानपुर	२६–२७	८०–२१	–८/३६	+१८/०८

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
कारगिल	३०–३०	७६–१३	–२५/०८	+१/३६
कालका	३०–४७	७६–५७	–२२/१२	+४/३२
कालीकट	११–१५	७५–४५	–२७/००	–०/१६
काशी	२५–२०	८३–००	+२/००	+२८/४४
कुरूक्षेत्र	३०–००	७६–४८	–२२/४८	+३/५६
कुम्भकोणम	१०–५८	७९–२३	–१२/२८	+१४/१६
कूचबिहार	२६–२०	८९–२५	+२७/४०	+५४/२४
कोचीन	१०–००	७६–१५	–२५/००	+१/४४
कोल्हापुर	१६–४१	७४–१३	–३३/०८	–६/२४
कोहिमा	२५–४१	९४–००	+४६/००	+७२/४४
कोन्नूर	११–२०	७६–४८	–२२/४८	+३/५६
खण्डवा	२१–५०	७६–२०	–२४/४०	+२/०४
खण्डाला	१८–४५	७३–२२	–३६/३२	–९/४८
खंभात	२२–१९	७२–३६	–३९/३६	–१२/५२
खडगपुर	२२–२०	८७–१९	+१९/१६	+४६/००
खेडब्रह्म	२४–०३	७३–०४	–३७/४४	–११/००
गुड़गांव	२८–२७	७७–०४	–२१/४४	+५/००
गयाजी	२४–४८	८५–०१	+१०/०४	+३६/४८
ग्वालियर	२६–१४	७८–१०	–१७/२०	+९/२४
गंगटोक	२७–२०	८८–२५	+२३/४०	+५०/२४
गुना	२४–४०	७७–३०	–२०/००	+६/४४
गुरूदासपुर	३२–०३	७५–२७	–२८/१२	–१/२८
गौहाटी	२६–११	९१–४५	+३७/००	+६३/४४
गौरखपुर	२६–४७	८३–२४	+३/३६	+३०/२०
गोवा	१५–२५	७३–४७	–३४/५२	–८/०८
चण्डीगढ़	३०–४०	७६–५२	–२२/३२	+४/१२
चिकमंगलूर	१३–१९	७५–४७	–२६/५२	–०/०८
चित्रकूट	२५–१२	८०–५४	–६/२४	+२०/२०
चेरापूंजी	२५–१६	९१–४५	+३७/००	+६३/४४
छपरा (बी)	२५–४७	८४–४७	+०९/०८	+३५/५२
छतपरपुर	२४–५५	७९–३६	–११/३६	+१५/०८
जगन्नाथपुरी	१९–४६	८५–५०	+१३/२०	+४०/०४
जबलपुर	२३–१८	७९–५८	–१०/०८	+१६/३६
जम्मूकश्मीर	३२–४४	७४–५४	–३०/२४	–३/४०

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
जलपाईगुड़ी	२६–३२	८८–४४	+२४/५६	+५१/४०
जलगांव	२१–०१	७५–३९	–२७/२४	–०/४०
जमशेदपुर	२२–५०	८६–१०	+१४/४०	+४१/२४
जामनगर	२२–२७	७०–०५	–४९/४०	–२२/५६
जालंधर	३१–१९	७५–३५	–२७/४०	–०/५६
जींद	२९–१९	७६–२३	–२४/२८	+२/१६
जूनागढ़	२१–३२	७०–२७	–४८/१२	–२१/२८
जोनपुर	२५–४३	८२–४३	+०/५२	+२७/३६
झाँसी	२५–२६	७८–३४	–१५/४४	+११/००
टाटानगर	२४–४६	८६–१३	+१४/५२	+४१/३६
टूंडला जं·	२७–१३	७८–१३	–१७/०८	+९/३६
टेहरी गढ़वाल	३०–२३	७८–३०	–१६/००	+१०/४४
डिबरूगढ़	२७–२९	९४–५६	+४९/४४	+७६/२८
तिरूपति	१३–४०	७९–२०	–१२/४०	+१४/०४
त्रिचनापल्ली	१०–५०	७८–४६	–१४/५६	+११/४८
त्रिवेन्द्रम	८–३०	७६–५७	–२२/१२	+४/३२
दरभंगा	२६–१०	८५–५५	+१३/४०	+४०/२४
दार्जिलिंग	२७–०३	८८–१७	+२३/०८	+४९/५२
दिल्ली	२८–३८	७७–१४	–२१/०४	+५/४०
दिसपुर	२६–२०	९२–१०	+३८/४०	+६५/२४
देवप्रयाग	३०–०९	७८–३७	–१५/३२	+११/१२
देहरादून	३०–१९	७८–०४	–१७/४४	+९/००
दौलताबाद	१९–५७	७५–१२	–२९/१२	–२/२८
धनबाद	२३–४७	८६–३०	+१६/००	+४२/४४
धारवाड़	१५–२८	७५–०२	–२९/५२	–३/०८
नडियावाद	२२–४१	७२–५२	–३८/३२	–११/४८
नागपुर	२१–०९	७९–०६	–१३/३६	+१३/०८
नारनौल	२८–०२	७६–०७	–२५/३२	+१/१२
नासिक	२१–००	७३–४७	–३४/५२	–८/०८
नीमच	२४–२८	७४–५१	–३०/३६	–३/५२
नैनीताल	२९–२५	७९–२७	–१२/१२	–१४/३२
पंचमढ़ी	२२–३०	७८–२२	–१६/३२	–१०/१२
पंचकूला	३०–४२	७६–५२	–२२/३२	+४/१२
पटना	२५–३७	८५–१३	+१०/५२	+३७/३६

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
पटियाला	३०–२२	७६–२५	–२४/२०	+२/२४
पठानकोट	३२–१८	७५–४२	–२७/१२	–०/२८
पणजी	१५–४१	७३–१०	–३७/२०	–१०/३६
प्रयागराज	२५–२५	८१–५३	–२/२८	+२४/१६
पाण्डिचेरी	११–५६	७९–४८	–१०/४८	+१५/५६
पानीपत	२९–२७	७६–५९	–२२/०४	+४/४०
पालनपुर	२४–११	७२–२७	–४०/१२	–१३/२८
पीलीभीत	२८–४२	७९–४८	–१०/४८	+१५/५६
पालमपुर	३२–०७	७६–३२	–२३/५२	+२/५२
पूर्णिया	२५–४९	८७–३१	+२०/०४	+४६/४८
पुरूलिया	२३–२०	८६–२४	+१५/३६	+४०/२०
पूंछ	३३–५१	७४–०८	–३३/२८	–६/४४
पूना	१८–३१	७३–५२	–३४/३२	–७/४८
पोर्टब्लेयर	११–५०	९२–४६	+४१/०४	+६७/४८
पोरबन्दर	२१–३८	६९–३६	–५१/३६	–२४/५२
फतेहपुरसिकरी	२७–०६	७७–४०	–१९/२०	+७/२४
फरीदकोट	३०–४०	७४–४५	–३१/००	–४/१६
फिरोजपुर	३०–५७	७४–३६	–३१/३६	–४/५२
फिरोजाबाद	२७–०९	७८–२४	–१६/२४	+१०/२०
फैजाबाद	२६–४७	८२–०८	–१/२८	+२५/१६
बक्सर	२५–३४	८३–५९	+५/५६	+३२/४०
बंगलौर	१२–५८	७७–३५	–१९/४०	+७/०४
बड़ौदा	२२–१८	७३–१२	–३७/१२	–१०/२८
बद्रीनाथ कर्ना·	१५–३४	७६–५२	–२२/३२	+४/१२
बद्रीनाथ उ·प्र·	३०–४४	७९–३२	–११/५२	+१४/५२
बरेली	२८–२२	७९–२४	–१२/२४	+१४/२०
बलिया	२४–४४	८४–०९	+६/३६	+३३/२०
बहराइच	२७–३४	८१–३७	–३/३२	+२३/१२
बागलकोट	१६–१२	७५–४२	–२७/१२	–०/२८
बाराबंकी	२६–५६	८१–१०	–५/२०	+२१/२४
बारामूला	३४–१०	७४–२०	–३२/४०	–५/५६
बिलासपुर म·प्र·	२२–०५	८२–१०	–१/२०	+२२/२४
बिलासपुर हि·प्र·	३१–१९	७६–५०	–२२/४०	+४/०४
बीजापुर	१६–५०	७५–४२	–२७/१२	–०/२८

भारत के प्रमुख नगरों की अक्षांश-रेखांश सारिणी

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
बुलन्दशहर	२८–२४	७७–५२	–१८/३२	+८/१२
बेलगाँव	१५–५५	७४–३१	–३१/५६	–५/१२
बेल्लारी	१५–११	७६–५४	–२२/२४	+४/२०
भटिंडा	३०–११	७४–५७	–३०/१२	–३/२८
भंडारा	२१–१०	७९–४०	–११/२०	+१५/२४
भद्रावती	१३–५२	७५–४०	–२७/२०	–०/३६
भागलपुर	२५–१३	८६–५९	+१७/५६	+४४/४०
भावनगर	२१–४७	७२–१०	+४१/२०	–१४/३६
भिवानी	२८–४८	७६–०८	–२५/२८	+१/१६
भुवनेश्वर	२०–५४	८५–५२	+१३/२८	+४०/१२
भोपाल	२३–१६	७७–२३	–२०/२८	+६/१६
मणिपुर	२४–२०	९३–५८	+४५/५२	+७२/३६
मथुरा	२७–२८	७७–४१	–१९/१६	+७/२८
मद्रास	१३–०५	८०–१७	–८/५२	+१७/५२
मुदरई	९–५५	७८–०७	–१७/३२	+९/१२
महेन्द्रगढ़	२८–१७	७६–०९	–२५/२४	+१/२०
मुम्बई	१८–५५	७२–५०	–३८/४०	–११/५६
मुगलसराय	२५–१७	८३–११	+२/४४	+२९/२८
मुजफ्फरपुर	२६–०७	८५–२७	+११/४८	+३८/३२
मुजफ्फरनगर	२९–३०	७७–४४	–१९/०४	+७/४०
मुजफ्फरबाद	३४–३३	७३–२७	–३६/१२	–९/२८
मेघालय	२५–५७	९२–००	+३८/००	+६४/४४
मेरठ	२९–०१	७७–४५	–१९/००	+७/४४
मैसूर	१२–२९	७६–४०	–२३/२०	+३/२४
मैनपुरी	२७–१३	७९–०२	–१३/५२	+१२/५२
रत्नागिरी	१६–५९	७३–१९	–३६/४४	–१०/००
रतलाम	२३–१९	७५–०६	–२९/४८	–३/०४
राँची	२३–२०	८५–२०	+११/२०	+३८/०४
राजकोट	२२–१८	७०–५०	–४६/४०	–१९/५६
रामेश्वरम्	९–१७	७९–१८	–१२/४८	+१३/५६
रायगढ़	२१–५८	८३–२६	+३/४४	+३०/२८
रायपुर	२१–१५	८१–३८	–३/२८	+२३/१६
रायबरेली	२६–१४	८१–१३	–५/०८	+२१/३६
रेवाड़ी जं.	२८–१२	७६–४०	–२३/२०	+३/२४
रोपड़	३०–५७	७६–३०	–२४/००	+२/४४
रोहतक	२८–५४	७६–३८	–२३/२८	+३/१६
लखनऊ	२६–५१	८०–५९	–६/०४	+२०/४०
लद्दाख	३३–००	७८–४८	–१४/४८	+११/५६
लुधियाना	३०–५५	७५–५३	–२६/२८	+०/१६
लेह	३४–१०	७७–४०	–१९/२०	+७/२४
लोहारू	२८–२६	७५–४७	–२६/५२	–०/०८
वर्धा	२०–४५	७८–३९	–१५/२४	+११/२०
वाराणसी	२५–२०	८३–००	+२/००	+२८/४४
विजयवाड़ा	१६–३०	८०–३६	–७/३६	+१९/०८
विशाखपट्टनम्	१७–४२	८३–१८	+३/१२	+२९/५६
शाजापुर	२३–२४	७६–१४	–२५/०४	+१/४०
शाहदरा	२८–४०	७७–२०	–२०/४०	+६/०४
शिमला	३१–०६	७७–१०	–२१/२०	+५/२४
शिलांग	२५–३४	९१–५४	+३७/३६	+६४/२०
श्रीनगर	३४–०६	७४–५१	–३०/३६	–३/५२
सिरसा	२९–३२	७५–०४	–२९/४४	–३/००
सिंहभूम	२२–२४	८५–३०	+१२/००	+३८/४४
सीतापुर	२७–३६	८०–४०	–७/२०	+१९/२४
सीतामढ़ी	२६–३५	८५–२९	+११/५६	+३८/४०
सूरत	२१–१२	७२–५०	–३८/४०	–११/५६
सेलम	११–३९	७८–१५	–१७/००	+९/४४
सोनपुर	२०–५१	८३–५५	+५/४०	+३२/२४
सोमनाथ	२१–०१	७०–२६	–४८/१६	–२१/३२
सोनीपत	२८–५९	७७–०१	–२१/५६	+४/४८
सोलन	३०–५५	७७–०९	–२१/२४	+५/२०
सोलापुर	१७–४०	७४–४८	–३०/४८	–४/०४
हजारीबाग	२४–००	८५–२३	+११/३२	+३८/१६
हरिद्वार	२९–५८	७८–१३	–१७/०८	+९/३६
हापुड़	२८–४३	७७–५०	–१८/४०	+८/०४
हिसार	२९–१४	७५–४४	–२७/०४	–०/२०
हुबली	१५–२०	७५–१२	–२९/१२	–२/२८
हैदराबाद	१७–२७	७८–३०	–१६/००	+१०/४४
होशंगाबाद	२२–४६	७७–४३	–१९/०८	+७/३६
होशियारपुर	३१–३२	७५–५५	–२६/२०	+०/२४

विश्व के कुछ देशों के अक्षांश आदि

विदेशी नगर का नाम कोष्ठक में देश का नाम	अक्षांश उत्तर / दक्षिण	रेखांश पूर्व / पश्चिम	क्षेत्रीय स्टैट से स्थानीय समयान्तर मि. सै.	ग्रीनवीच समय से क्षेत्रीय स्टे अन्तर घ. मि.	भारतीय स्टेट से क्षेत्रीय स्टैट समयान्तर घ. मि.
अंकारा (तुर्किस्तान)	३९–५२ उ.	३२–५९ पू.	+११/५६	+२/००	–३/३०
अर्जेन्टाइना (द.अमेरिका)	२६–१२ द.	६४–४५ प.	+४१/००	–५/००	–१०/३०
कोटावा (कनाडा)	४५–२६ उ.	७५–४१ प.	–२/४४	–५/००	–१०/३०
अदन (एडन)	१३–२५ उ.	४५–०० पू.	+००/००	+३/००	–२/३०
अमन (जोर्डन)	३१–५७ उ.	३५–५७ पू.	+२३/४८	+२/००	–३/३०
एडन (एडन)	१२–५८ उ.	४५–०१ पू.	+०/०४	+३/००	–२/३०
एथेन्स (ग्रीस)	३७–५९ उ.	२३–२० पू.	–२६/४०	+२/००	–३/३०
करांची (पाकिस्तान)	२४–५१ उ.	६७–०० पू.	–३२/००	+५/००	–०/३०
काबुल (अफगानिस्तान)	३४–३१ उ.	६९–१२ पू.	+६/४८	+४/३०	–१/००
काहिरा (मिश्र)	३०–०१ उ.	३१–१३ पू.	+४/५२	+२/००	–३/३०
ग्रीनविच (इंग्लैण्ड)	५१–२९ उ.	०–०० पू.	+०/००	+०/००	–५/३०
जकार्ता (इण्डोनेशिया)	७–५७ द.	११०–२० पू.	–८/४०	+७/३०	+२/००
जिनेवा (स्विट्जरलैण्ड)	४६–१२ उ.	६–०९ पू.	–३५/२४	+१/००	–४/००
टोकियो (जापान)	३५–३९ उ.	१३९–४५ पू.	+१९/००	+९/००	+३/३०
ढाका (बांग्लादेश)	२३–४३ उ.	९०–२५ पू.	+१/४०	+६/००	+०/३०
तेहरान (इरान)	३५–४४ उ.	५१–२७ पू.	–४/१२	+३/३०	–२/००
न्यूयार्क (अमेरिका)	४०–४३ उ.	७४–०० पू.	+४/००	–५/००	–१०/३०
पीकिंग (चीन)	३९–५० उ.	११६–२० पू.	–१४/४०	+८/००	+२/३०
पेरिस (फ्रांस)	४८–५० उ.	२–२० पू.	–५०/४०	+१/००	–४/३०
बगदाद (ईराक)	३३–१८ उ.	४४–३० पू.	–२/००	+३/००	–२/३०
बर्लिन (प. जर्मनी)	५२–३२ उ.	१३–२४ पू.	–६/२४	+१/००	–४/३०
बेल्ग्रेड (यूगोस्लाविया)	४४–५० उ.	२०–३७ पू.	+२२/२८	+१/००	–४/३०
बैंकाक (स्याम)	१३–४५ उ.	१००–३० पू.	–१८/००	+७/००	+१/३०
ब्रुसेल्स (बेल्जियम)	५०–५१ उ.	४–२१ प.	–४२/३६	+१/००	–४/३०
मैड्रिड (स्पेन)	४०–२५ उ.	३–४५ प.	–७५/००	+१/००	–४/३०
मास्को (रूस)	५५–४५ उ.	३७–३५ पू.	–२९/४०	+३/००	–२/३०
मांडले (बर्मा)	२२–०० उ.	९६–०५ पू.	–५/४०	+६/३०	+१/००
मैक्सिको (मैक्सिको)	१९–२५ उ.	९९–१७ प.	–३७/०८	–६/३०	–११/३०
रियादं (सऊदी अरब)	२४–५० उ.	४६–१८ पू.	+५/१२	+३/००	–२/३०
रोम (इटली)	४१–४५ उ.	१२–२९ पू.	–१०/०४	+१/००	–४/३०
रंगून (बर्मा)	१६–४८ उ.	९६–०८ पू.	–५/२८	+६/३०	+१/००
लंदन (इंग्लैण्ड)	५१–३२ उ.	०–०५ प.	–०/२०	–०/००	–५/३०
ल्हासा (तिब्बत)	२९–४० उ.	९१–०८ पू.	+३४/३२	+५/३०	+०/००
वाशिंगटन (अमेरिका)	३८–५३ उ.	७७–०४ प.	–८/१६	–५/००	–१०/३०
वैलिंगटन (न्यूजीलैण्ड)	४१–१९ द.	१७४–४६ पू.	–२०/५६	+१२/००	+६/३०
सिंगापुर (मलाया)	१–१६ उ.	१०३–४७ पू.	–३४/५२	+७/३०	+२/००
सियोल (द. कोरिया)	३७–४० उ.	१२७–०० पू.	–३२/००	+९/००	+३/३०
हांगकांग (हांगकांग)	२२–१८ उ.	११४–१० पू.	–२३/२०	+८/००	+२/३०

❊ राजस्थान के प्रमुख शहरों के सूर्योदय एवं सूर्यास्त का समय ❊

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

(सभी समय स्टैण्डर्ड टाइम घंटा मिनट में हैं)

महीना	दिनांक	अजमेर उदय	अजमेर अस्त	जोधपुर उदय	जोधपुर अस्त	बीकानेर उदय	बीकानेर अस्त	नागौर उदय	नागौर अस्त	कोटा उदय	कोटा अस्त	भरतपुर उदय	भरतपुर अस्त	उदयपुर उदय	उदयपुर अस्त	चित्तौड़गढ़ उदय	चित्तौड़गढ़ अस्त	स.माधोपुर उदय	स.माधोपुर अस्त	अलवर उदय	अलवर अस्त	श्रीगंगानगर उदय	श्रीगंगानगर अस्त	हनुमानगढ़ उदय	हनुमानगढ़ अस्त	दिनांक	महीना
जनवरी	1	07:20	17:48	07:26	17:56	07:29	17:50	07:26	17:51	07:12	17:45	07:11	17:35	07:22	17:55	07:17	17:52	07:12	17:42	07:15	17:38	07:31	17:44	07:29	17:43	1	जनवरी
	7	07:22	17:52	07:28	18:00	07:30	17:54	07:27	17:55	07:14	17:49	07:12	17:39	07:23	17:59	07:19	17:56	07:14	17:46	07:16	17:42	07:32	17:48	07:30	17:47	7	
	14	07:22	17:57	07:28	18:06	07:30	17:59	07:27	18:00	07:14	17:54	07:12	17:44	07:24	18:04	07:19	18:01	07:14	18:52	07:17	17:47	07:32	17:54	07:30	17:53	14	
	21	07:21	18:03	07:27	18:11	07:29	18:05	07:26	18:06	07:14	18:00	07:11	17:50	07:24	18:08	07:18	18:06	07:13	18:57	07:16	17:53	07:31	18:00	07:28	17:59	21	
	28	07:19	18:08	07:25	18:17	07:27	18:11	07:24	18:11	07:12	18:05	07:09	17:55	07:22	18:14	07:16	18:11	07:11	18:02	07:14	17:59	07:28	18:06	07:26	18:05	28	
फरवरी	1	07:18	18:11	07:23	18:20	07:25	18:14	07:22	18:15	07:11	18:08	07:08	17:59	07:21	18:17	07:15	18:14	07:09	18:05	07:12	18:02	07:26	18:09	07:24	18:08	1	फरवरी
	7	07:15	18:16	07:20	18:24	07:22	18:19	07:19	18:19	07:08	18:12	07:04	18:03	07:17	18:21	07:12	18:18	07:06	18:10	07:09	18:07	07:23	18:14	07:20	18:13	7	
	14	07:10	18:20	07:15	18:29	07:17	18:24	07:14	18:24	07:03	18:17	07:00	18:08	07:13	18:25	07:07	18:23	07:01	18:14	07:04	18:12	07:17	18:20	07:14	18:19	14	
	21	07:04	18:25	07:09	18:34	07:11	18:29	07:08	18:29	06:58	18:21	06:54	18:13	07:09	18:29	07:02	18:27	06:56	18:19	0658:	18:17	07:11	18:25	07:08	18:24	21	
	28	06:58	18:29	07:03	18:38	07:05	18:34	07:02	18:33	06:52	18:25	06:47	18:18	06:03	18:32	06:56	18:31	06:50	18:23	06:51	18:21	06:04	18:30	07:01	18:29	28	
मार्च	1	06:57	18:30	07:01	18:39	07:04	18:34	07:01	18:34	06:51	18:26	06:47	18:18	06:02	18:33	06:55	18:31	06:49	18:24	06:50	18:22	06:03	18:31	07:00	18:30	1	मार्च
	7	06:51	18:33	06:55	18:43	06:57	18:28	06:55	18:37	06:46	18:29	06:40	18:22	06:56	18:36	06:50	18:35	06:43	18:27	06:44	18:25	06:56	18:35	06:53	18:34	7	
	14	06:44	18:27	06:48	18:46	06:50	18:42	06:47	18:41	06:39	18:32	06:33	18:26	06:49	18:39	06:43	18:38	06:36	18:30	06:37	18:29	06:48	18:40	06:45	18:38	14	
	21	06:37	18:41	06:40	18:50	06:42	18:46	06:39	18:45	06:31	18:35	06:25	18:29	06:42	18:42	06:36	18:41	06:28	18:34	06:29	18:33	06:40	18:44	06:37	18:43	21	
	28	06:29	18:44	06:32	18:53	06:34	18:50	06:32	18:49	06:24	18:38	06:18	18:33	06:35	18:45	06:28	18:44	06:21	18:37	06:21	18:37	06:32	18:48	06:29	18:47	28	
अप्रैल	1	06:25	18:46	06:28	18:55	06:29	18:52	06:27	18:49	06:20	18:40	06:13	18:35	06:31	18:47	06:24	18:46	06:17	18:39	06:17	18:39	06:27	18:51	06:24	18:49	1	अप्रैल
	7	06:18	18:49	06:22	18:58	06:23	18:55	06:21	18:54	06:14	18:43	06:06	18:38	06:25	18:50	06:18	18:48	06:10	18:42	06:10	18:42	06:20	18:54	06:17	18:53	7	
	14	06:11	18:52	06:14	19:02	06:15	18:59	06:13	18:57	06:07	18:46	05:59	18:42	06:18	18:52	06:11	18:51	06:03	18:45	06:03	18:46	06:12	18:58	06:09	18:57	14	
	21	06:04	18:56	06:08	19:05	06:08	19:03	06:07	19:01	06:00	18:49	05:52	18:45	06:11	18:56	06:05	18:55	05:57	18:48	05:55	18:49	06:04	19:03	06:01	19:01	21	
	28	05:58	18:59	06:02	19:09	06:01	19:07	06:00	19:05	05:54	18:53	05:46	18:49	06:06	18:59	05:59	18:58	05:51	18:52	05:49	18:54	05:57	19:07	05:55	19:05	28	
मई	1	05:55	19:01	05:59	19:11	05:59	19:08	05:58	19:06	05:52	18:54	05:53	18:51	06:05	19:00	05:57	18:59	05:48	19:54	05:46	18:55	05:54	19:09	05:52	19:07	1	मई
	7	05:51	19:04	05:55	19:14	05:54	19:12	05:53	19:10	05:48	18:57	05:39	18:54	06:01	19:03	05:53	19:02	05:44	19:57	05:42	18:58	05:49	19:13	05:47	19:11	7	
	14	05:47	19:08	05:51	19:18	05:49	19:16	05:49	19:14	05:44	19:01	05:34	18:58	05:57	19:07	05:49	19:06	05:40	19:01	05:37	19:02	05:44	19:17	05:42	19:16	14	
	21	05:43	19:12	05:47	19:22	05:45	19:20	05:45	19:18	05:40	19:04	05:30	19:02	05:53	19:11	05:46	19:10	05:36	19:04	05:34	19:06	05:40	19:22	05:38	19:20	21	
	28	05:41	19:16	05:45	19:25	05:43	19:24	05:43	19:21	05:38	19:08	05:28	19:06	05:52	19:12	05:44	19:13	05:34	19:08	05:31	19:10	05:37	19:26	05:35	19:24	28	
जून	1	05:40	19:18	05:44	19:27	05:42	19:26	05:42	19:23	05:37	19:10	05:27	19:08	05:51	19:14	05:43	19:15	05:33	19:10	05:30	19:12	05:36	19:28	05:34	19:26	1	जून
	7	05:39	19:20	05:44	19:30	05:41	19:29	05:41	19:26	05:36	19:12	05:26	19:11	05:51	19:16	05:42	19:17	05:33	19:12	05:29	19:16	05:35	19:31	05:33	19:29	7	
	14	05:39	19:23	05:44	19:33	05:41	19:32	05:41	19:29	05:37	19:15	05:26	19:14	05:50	19:19	05:42	19:20	05:33	19:15	05:29	19:18	05:35	19:34	05:33	19:32	14	
	21	05:40	19:25	05:45	19:34	05:42	19:34	05:42	19:31	05:37	19:17	05:27	19:16	05:50	19:22	05:44	19:22	05:34	19:17	05:30	19:20	05:35	19:36	05:34	19:34	21	
	28	05:42	19:26	05:47	19:35	05:43	19:35	05:44	19:32	05:39	19:18	05:29	19:17	05:53	19:23	05:45	19:23	05:36	19:18	05:32	19:21	05:37	19:37	05:36	19:35	28	

❊ राजस्थान के प्रमुख शहरों के सूर्योदय एवं सूर्यास्त का समय ❊

(सभी समय स्टैण्डर्ड टाइम घंटा मिनट में हैं)

महीना	दिनांक	अजमेर		जोधपुर		बीकानेर		नागौर		कोटा		भरतपुर		उदयपुर		चित्तौड़गढ़		स.माधोपुर		अलवर		श्रीगंगानगर		हनुमानगढ़		दिनांक	महीना
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
जुलाई	1	05:43	19:26	05:48	19:36	05:44	19:35	05:45	07:32	05:40	05:40	05:30	07:17	07:54	19:23	05:46	19:23	05:37	19:18	05:33	19:21	05:38	07:37	05:37	19:35	1	जुलाई
	7	05:45	19:26	05:51	19:35	05:47	19:35	05:48	17:32	19:18	19:18	05:32	07:17	07:57	19:22	05:49	19:23	05:39	19:18	05:35	19:21	05:41	07:37	05:40	19:34	7	
	14	05:48	19:25	05:54	19:34	05:50	19:33	05:51	17:30	05:42	05:42	05:35	07:15	07:59	19:21	05:51	19:22	05:42	19:17	05:38	19:20	05:44	07:35	05:43	19:33	14	
	21	05:51	19:23	05:57	19:31	05:53	19:31	05:54	17:28	19:18	19:18	05:38	07:13	06:02	19:20	05:55	19:19	05:45	19:14	05:42	19:17	05:48	07:33	05:47	19:30	21	
	28	05:55	19:20	06:01	19:28	05:57	19:28	05:58	17:24	05:45	05:45	05:42	07:10	06:04	19:16	05:58	19:16	05:49	19:11	05:45	19:14	05:52	07:29	05:51	19:26	28	
अगस्त	1	05:57	19:17	06:03	19:25	05:59	19:25	06:00	17:22	19:17	19:17	05:44	07:07	06:07	19:14	06:00	19:14	05:51	19:09	05:47	19:12	05:54	07:26	05:53	19:23	1	अगस्त
	7	06:00	19:13	06:06	19:21	06:03	19:21	06:03	17:17	05:48	05:48	05:47	07:03	06:10	19:11	06:03	19:10	05:54	19:05	05:51	19:07	05:58	07:22	05:57	19:19	7	
	14	06:03	19:08	06:10	19:15	06:06	19:15	06:07	17:12	19:15	19:15	05:51	06:57	06:13	19:07	06:06	19:05	05:57	18:59	05:54	19:01	06:02	07:16	06:01	19:12	14	
	21	06:06	19:01	06:16	19:02	06:10	19:08	06:10	17:05	05:52	05:52	05:54	06:51	06:15	19:01	06:09	18:59	06:00	18:53	05:58	18:55	06:06	07:09	06:05	19:05	21	
	28	06:10	18:55	06:18	18:58	06:13	19:01	06:13	18:58	19:12	19:12	05:58	06:44	06:19	18:55	06:11	18:52	06:03	18:46	06:01	18:48	06:10	07:01	06:09	18:58	28	
सितंबर	1	06:11	18:50	06:20	18:51	06:15	18:57	06:15	18:54	05:54	05:54	05:59	06:40	06:20	18:51	06:13	18:48	06:05	18:42	06:03	18:44	06:12	18:56	06:11	18:53	1	सितंबर
	7	06:14	18:44	06:23	18:43	06:18	18:50	06:18	18:47	19:10	19:10	06:02	06:33	06:21	18:45	06:15	18:42	06:07	18:35	06:06	18:37	06:15	18:49	06:14	18:46	7	
	14	06:17	18:36	06:26	18:35	06:21	18:42	06:21	18:39	05:57	05:57	06:05	06:25	06:24	18:37	06:18	18:35	06:10	18:28	06:09	18:29	06:19	18:41	06:18	18:38	14	
	21	06:20	18:28	06:29	18:27	06:25	18:34	06:24	18:31	19:06	19:06	06:08	06:17	06:27	18:30	06:20	18:27	06:13	18:20	06:12	18:21	06:23	18:32	06:21	18:29	21	
	28	06:23	18:21	06:31	18:24	06:28	18:26	06:27	18:23	06:00	06:00	06:12	06:09	06:30	18:22	06:23	18:20	06:16	18:12	06:15	18:13	06:26	18:23	06:25	18:20	28	
अक्टूबर	1	06:24	18:17	06:33	18:18	06:30	18:22	06:29	18:20	19:01	19:01	06:13	06:06	06:31	18:19	06:24	18:17	06:17	18:09	06:17	18:09	06:28	18:20	06:27	18:17	1	अक्टूबर
	7	06:27	18:11	06:37	18:10	06:33	18:15	06:32	18:13	06:03	06:03	06:16	05:59	06:33	18:13	06:27	18:10	06:20	18:03	06:20	18:03	06:32	18:13	06:30	18:10	7	
	14	06:30	18:04	06:41	18:04	06:37	18:08	06:35	18:06	18:55	18:55	06:20	05:52	06:36	18:06	06:30	18:04	06:23	17:56	06:24	17:55	06:36	18:05	06:34	18:02	14	
	21	06:34	17:57	06:45	17:58	06:41	18:01	06:39	17:59	06:06	06:06	06:24	05:45	06:39	18:00	06:33	17:57	06:27	17:49	06:28	17:48	06:41	17:57	06:39	17:54	21	
	28	06:38	17:51	06:48	17:55	06:45	17:54	06:44	17:53	18:48	18:48	06:28	05:39	06:43	17:55	06:37	17:52	06:31	17:44	06:32	17:42	06:45	17:50	06:44	17:48	28	
नवंबर	1	06:41	17:48	06:52	17:51	06:48	17:51	06:46	17:50	06:07	06:07	06:31	05:36	06:45	17:53	06:40	17:49	06:34	17:41	06:35	17:39	06:48	17:47	06:47	17:45	1	नवंबर
	7	06:45	17:44	06:57	17:48	06:52	17:47	06:51	17:46	18:44	18:44	06:35	05:32	06:49	17:49	06:43	17:46	06:38	17:37	06:39	17:35	06:53	17:42	06:52	17:40	7	
	14	06:50	17:40	07:02	17:46	06:58	17:43	06:56	17:43	06:09	06:09	06:40	05:28	06:53	17:46	06:48	17:42	06:43	17:34	06:44	17:31	06:59	17:38	06:57	17:36	14	
	21	06:55	17:38	07:07	17:45	07:03	17:40	07:01	17:40	18:38	18:38	06:45	05:25	06:59	17:43	06:53	17:40	06:48	17:31	06:49	17:28	07:05	17:35	07:03	17:55	21	
	28	07:00	17:37	07:10	17:45	07:09	17:39	07:06	17:39	06:12	06:12	06:50	05:24	07:03	17:43	06:58	17:40	06:53	17:30	06:55	17:27	07:10	17:33	07:09	17:32	28	
दिसंबर	1	07:03	17:37	07:14	17:45	07:11	17:39	07:09	17:39	18:31	18:31	06:53	05:24	07:05	17:43	07:00	17:40	06:55	17:31	06:57	17:27	07:13	17:33	07:11	17:32	1	दिसंबर
	7	07:07	17:37	07:18	17:47	07:15	17:39	07:13	17:40	06:15	06:15	06:57	05:24	07:09	17:44	07:04	17:40	06:59	17:33	07:02	17:27	07:17	17:33	07:16	17:32	7	
	14	07:12	17:39	07:22	17:50	07:20	17:41	07:18	17:41	18:23	18:23	07:02	05:26	07:14	17:46	07:09	17:45	07:04	17:33	07:06	17:29	07:22	17:35	07:20	17:34	14	
	21	07:16	17:41	07:25	17:54	07:24	17:43	07:22	17:44	06:17	06:17	07:06	05:29	07:19	17:47	07:13	17:45	07:08	17:36	07:10	17:32	07:26	17:37	07:24	17:36	21	
	28	07:19	17:45	05:48	17:36	07:28	17:47	07:25	17:48	18:15	18:15	07:09	05:32	07:22	17:52	07:16	17:49	07:11	17:40	07:14	17:35	07:30	17:41	07:28	18:40	28	

❊ देश के प्रमुख शहरों के सूर्योदय एवं सूर्यास्त का समय ❊

(सभी समय स्टैण्डर्ड टाइम घंटा मिनट में हैं)

महीना	दिनांक	मुंबई		दिल्ली		अहमदाबाद		वाराणसी		पटना		बैंगलोर		हैदराबाद		कोलकाता		मथुरा		ऋषिकेश		अमृतसर		उज्जैन		दिनांक	महीना
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
जनवरी	1	07:13	18:11	07:15	17:34	07:22	18:04	06:43	17:19	06:37	17:08	06:41	18:04	06:46	17:52	06:18	17:02	07:11	17:34	7:12	17:27	07:31	17:36	07:09	17:51	1	जनवरी
	7	07:15	18:16	07:16	17:38	07:23	18:08	06:44	17:23	06:38	17:12	06:43	18:07	06:48	17:56	06:19	17:06	07:12	17:39	7:13	17:32	07:32	17:41	07:11	17:55	7	
	14	07:16	18:19	07:16	17:43	07:24	18:12	06:45	17:28	06:38	17:18	06:45	18:11	06:49	18:00	06:20	17:11	07:12	17:44	7:13	17:38	07:32	17:46	07:11	18:00	14	
	21	07:16	18:24	07:15	17:49	07:23	18:17	06:44	17:33	06:38	17:23	06:46	18:15	06:49	18:05	06:20	17:16	07:11	17:50	7:09	17:50	07:30	17:53	07:22	18:05	21	
	28	07:15	18:28	07:13	17:55	07:22	18:22	06:42	17:39	06:36	17:28	06:46	18:18	06:49	18:09	06:18	17:20	07:09	17:55	7:07	17:53	07:27	17:59	07:09	18:09	28	
फरवरी	1	07:14	18:30	07:11	17:58	07:20	18:25	06:41	17:42	06:34	17:31	06:45	18:20	06:48	18:11	06:17	17:23	07:07	17:58	7:03	17:58	07:25	18:03	07:08	18:12	1	फरवरी
	7	07:12	18:33	07:07	18:03	07:18	18:29	06:38	17:46	06:31	17:35	06:44	18:22	06:46	18:14	06:14	17:27	07:03	18:03	6:57	18:04	07:20	18:08	07:05	18:16	7	
	14	07:09	18:37	07:02	18:09	07:14	18:33	06:33	17:50	06:26	17:40	06:42	18:25	06:43	18:17	06:10	17:31	06:58	18:08	6:51	18:09	07:15	18:14	07:01	18:20	14	
	21	07:05	18:40	06:56	18:14	07:09	18:37	06:28	17:55	06:21	17:44	06:39	18:26	06:39	18:20	06:06	17:35	06:53	18:13	6:44	18:14	07:08	18:20	06:56	18:24	21	
	28	06:00	18:42	06:49	18:18	07:03	18:40	06:22	17:59	06:15	17:49	06:36	18:28	06:35	18:22	06:00	17:38	06:46	18:17	6:41	18:16	07:00	18:25	06:51	18:28	28	
मार्च	1	06:59	18:43	06:48	18:19	07:02	18:41	06:20	18:00	06:14	17:49	06:35	18:28	06:34	18:22	05:59	17:38	06:45	18:18	6:35	18:20	06:59	18:26	06:50	18:28	1	मार्च
	7	06:55	18:44	06:41	18:23	06:57	18:43	06:14	18:03	06:08	17:52	06:31	18:29	06:29	18:24	05:54	17:41	06:39	18:22	6:26	18:24	06:52	18:31	06:44	18:31	7	
	14	06:49	18:46	06:34	18:27	06:51	18:46	06:07	18:06	06:01	17:56	06:27	18:30	06:24	18:26	05:58	17:44	06:31	18:25	6:18	18:29	06:43	18:36	06:38	18:34	14	
	21	06:43	18:48	06:25	18:31	06:44	18:49	06:00	18:09	05:53	17:59	06:22	18:30	06:18	18:27	05:41	17:46	06:23	18:29	6:09	18:33	06:34	18:41	06:31	18:36	21	
	28	06:37	18:50	06:17	18:35	06:37	18:52	05:52	18:13	05:46	18:02	06:17	18:31	06:13	18:28	05:35	17:49	06:16	18:33	6:05	18:36	06:25	18:45	06:24	18:39	28	
अप्रैल	1	06:34	18:51	06:12	18:37	06:33	18:53	05:48	18:14	05:42	18:04	06:15	18:31	06:10	18:29	05:31	17:50	06:11	18:35	5:57	18:39	06:20	18:48	06:20	18:41	1	अप्रैल
	7	06:29	18:52	06:06	18:41	06:27	18:55	05:42	18:17	05:36	18:07	06:11	18:31	06:05	18:30	05:25	17:52	06:05	18:38	5:50	18:43	06:13	18:52	06:15	18:43	7	
	14	06:24	18:54	05:58	18:45	06:21	18:58	05:35	18:20	05:29	18:10	06:07	18:32	06:00	18:32	05:19	17:55	05:57	18:42	5:42	18:48	06:04	18:57	06:08	18:46	14	
	21	06:19	18:56	05:51	18:49	06:15	17:01	05:29	18:23	05:22	18:13	06:03	18:33	05:55	18:33	05:13	17:58	06:50	18:46	5:35	18:52	05:57	19:01	06:02	18:48	21	
	28	06:14	18:58	05:44	18:53	06:10	17:04	05:23	18:27	05:16	18:17	05:59	18:34	05:51	18:35	05:08	18:00	06:44	18:49	5:33	18:54	05:49	19:06	05:57	18:51	28	
मई	1	06:12	18:59	05:42	18:55	06:07	17:05	05:21	18:28	05:14	18:18	05:58	18:34	05:49	18:36	05:06	18:02	06:41	18:51	5:28	18:58	05:46	19:08	05:55	18:53	1	मई
	7	06:09	19:01	05:37	18:58	06:04	17:08	05:17	18:31	05:10	18:22	05:56	18:35	05:46	18:38	06:02	18:04	06:37	18:55	5:23	19:03	05:41	19:12	05:51	18:55	7	
	14	06:06	19:04	05:32	19:03	06:00	17:11	05:13	18:35	05:06	18:25	05:54	18:37	05:44	18:40	04:58	18:07	06:32	18:59	5:19	19:07	05:36	19:17	05:47	18:59	14	
	21	06:04	19:07	05:28	19:07	05:57	17:14	05:10	18:39	05:02	18:29	05:52	18:39	05:42	18:43	04:55	18:11	06:29	19:02	5:16	19:11	05:32	19:22	05:44	19:02	21	
	28	06:02	19:09	05:26	19:11	05:55	17:18	05:08	18:42	05:00	18:32	05:52	18:41	05:41	18:45	04:54	18:14	06:26	19:06	7:12	17:27	05:28	19:26	05:42	19:05	28	
जून	1	06:02	19:11	05:25	19:13	05:55	17:19	05:07	18:44	04:59	18:34	05:52	18:42	05:40	18:47	04:53	18:15	06:25	19:08	7:13	17:32	05:27	19:29	05:42	19:07	1	जून
	7	06:02	19:13	05:24	19:16	05:54	17:22	05:07	18:47	04:59	18:37	05:52	18:44	05:41	18:49	04:53	18:18	06:25	19:11	7:13	17:38	05:26	19:32	05:41	19:09	7	
	14	06:02	19:15	05:24	19:19	05:55	17:24	05:07	18:49	04:59	18:39	05:53	18:46	05:41	18:51	04:53	18:20	06:25	19:14	7:09	17:50	05:26	19:34	05:42	19:12	14	
	21	06:03	19:17	05:25	19:20	05:56	17:26	05:08	18:51	05:00	18:41	05:54	18:48	05:43	18:53	04:54	18:22	06:26	19:16	7:07	17:53	05:27	19:36	05:43	19:13	21	
	28	06:05	19:18	05:27	19:21	05:57	17:27	05:10	18:52	05:02	18:42	05:56	18:49	05:44	18:54	04:56	18:23	06:28	19:17	7:03	17:58	05:29	19:37	05:45	19:15	28	

❊ देश के प्रमुख शहरों के सूर्योदय एवं सूर्यास्त का समय ❊

(सभी समय स्टैण्डर्ड टाइम घंटा मिनट में हैं)

महीना	दिनांक	मुंबई		दिल्ली		अहमदाबाद		वाराणसी		पटना		बैंगलोर		हैदराबाद		कोलकाता		मथुरा		ऋषिकेश		अमृतसर		उज्जैन		दिनांक	महीना
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
जुलाई	1	06:06	19:18	05:28	19:21	05:58	19:27	05:11	18:52	05:03	18:42	05:57	18:49	05:45	18:54	04:57	18:23	05:29	19:17	05:19	19:22	05:30	19:37	05:45	19:15	1	जुलाई
	7	06:08	19:18	05:30	19:21	06:01	19:27	05:13	18:52	05:05	18:42	05:59	18:50	05:47	18:55	04:59	18:23	05:31	19:16	05:22	19:21	05:33	19:37	05:48	19:15	7	
	14	06:10	19:18	05:34	19:19	06:03	19:26	05:16	18:51	05:08	18:41	06:00	18:50	05:49	18:54	05:02	18:22	05:34	19:15	05:25	19:20	05:36	19:35	05:50	19:14	14	
	21	06:13	19:16	05:37	19:17	06:06	19:24	05:20	18:48	05:11	18:39	06:02	18:49	05:52	18:53	05:05	18:21	05:38	19:12	05:29	19:17	05:40	19:32	05:53	19:12	21	
	28	06:15	19:14	05:41	19:13	06:09	19:21	05:23	18:45	05:15	18:36	06:04	18:47	05:54	18:51	05:08	18:18	05:42	19:09	05:33	19:12	05:45	19:28	05:56	19:09	28	
अगस्त	1	06:17	19:12	05:43	19:10	06:11	19:19	05:25	18:43	05:17	18:33	06:05	18:46	05:55	18:49	05:09	18:16	05:44	19:06	05:36	19:10	05:47	19:25	05:58	19:07	1	अगस्त
	7	06:18	19:09	05:47	19:06	06:13	19:16	05:28	18:39	05:20	18:29	06:06	18:44	05:57	18:46	05:12	18:12	05:47	19:02	05:39	19:05	05:51	19:20	06:01	19:03	7	
	14	06:20	19:05	05:51	19:00	06:16	19:11	05:31	18:33	05:23	18:24	06:07	18:41	05:59	18:42	05:14	18:07	05:50	18:56	05:44	18:58	05:55	19:13	06:03	18:58	14	
	21	06:22	19:00	05:54	18:53	06:19	19:05	05:34	18:27	05:26	18:18	06:08	18:37	06:00	18:37	05:17	18:02	05:54	18:50	05:48	18:51	06:00	19:05	06:06	18:53	21	
	28	06:24	18:55	05:58	18:45	06:21	18:59	05:37	18:20	05:29	18:11	06:08	18:32	06:01	18:32	05:19	17:56	05:57	18:43	05:52	18:43	06:04	18:57	06:08	18:46	28	
सितंबर	1	06:25	18:52	06:00	18:41	06:22	18:55	05:38	18:16	05:30	18:07	06:08	18:30	06:02	18:29	05:20	17:52	05:59	18:38	05:54	18:39	06:07	18:52	06:10	18:43	1	सितंबर
	7	06:26	18:47	06:03	18:34	06:24	18:49	05:41	18:10	05:33	18:00	06:08	18:26	06:03	18:24	05:22	17:46	06:02	18:32	05:57	18:31	06:10	18:45	06:12	18:37	7	
	14	06:27	18:40	06:06	18:26	06:26	18:42	05:43	18:03	05:36	17:53	06:08	18:21	06:04	18:19	05:24	17:39	06:05	18:24	06:01	18:23	06:15	18:36	06:14	18:30	14	
	21	06:28	18:34	06:10	18:17	06:29	18:35	05:46	17:55	05:38	17:45	06:08	18:16	06:05	18:13	05:26	17:32	06:08	18:15	06:05	18:14	06:19	18:27	06:16	18:22	21	
	28	06:30	18:28	06:13	18:09	06:31	18:28	05:49	17:47	05:41	17:38	06:08	18:11	06:06	18:07	05:28	17:26	06:11	18:07	06:09	18:05	06:23	18:18	06:18	18:15	28	
अक्टूबर	1	06:30	18:25	06:15	18:05	06:32	18:25	05:50	17:44	05:42	17:34	06:08	18:09	06:06	18:04	05:29	17:23	06:13	18:04	06:10	18:01	06:25	18:14	06:19	18:12	1	अक्टूबर
	7	06:32	18:21	06:18	17:59	06:34	18:19	05:53	17:38	05:45	17:28	06:09	18:05	06:07	18:00	05:31	17:17	06:16	17:57	06:14	17:54	06:29	18:06	06:21	18:07	7	
	14	06:33	18:15	06:22	18:51	06:37	18:13	05:56	17:31	05:48	17:21	06:09	18:01	06:09	17:55	05:34	17:11	06:20	17:50	06:18	17:46	06:34	17:58	06:24	18:00	14	
	21	06:36	18:10	06:31	18:44	06:40	18:07	05:59	17:25	05:52	17:15	06:10	17:57	06:11	17:50	05:37	17:05	06:24	17:43	06:23	17:39	06:39	18:50	06:27	17:54	21	
	28	06:38	18:06	06:27	18:38	06:43	18:02	06:03	17:19	05:56	17:09	06:12	17:54	06:13	17:46	05:40	17:00	06:28	17:37	06:28	17:32	06:44	18:43	06:31	17:49	28	
नवंबर	1	06:40	18:04	06:31	18:34	06:45	18:00	06:06	17:17	05:58	17:06	06:13	17:52	06:14	17:44	05:42	16:58	06:31	17:34	06:31	17:29	06:47	18:39	06:33	17:47	1	नवंबर
	7	06:43	18:01	06:34	18:30	06:49	17:56	06:10	17:13	06:02	17:03	06:15	17:51	06:17	17:42	05:45	16:55	06:35	17:30	06:36	17:25	06:52	18:35	06:36	17:44	7	
	14	06:47	17:59	06:39	18:26	06:53	17:54	06:14	17:10	06:07	16:59	06:18	17:50	06:20	17:40	05:50	16:52	06:40	17:26	06:41	17:21	06:58	18:30	06:41	17:41	14	
	21	06:51	17:58	06:44	18:24	06:59	17:52	06:19	17:08	06:12	16:57	06:21	17:50	06:24	17:39	05:54	16:50	06:46	17:24	06:47	17:18	07:05	18:27	06:45	17:39	21	
	28	06:55	17:58	06:55	18:22	07:03	17:51	06:24	17:07	06:17	16:56	06:24	17:50	06:28	17:39	05:59	16:50	06:51	17:23	06:53	17:16	07:11	18:25	06:50	17:38	28	
दिसंबर	1	06:57	17:58	06:58	18:22	07:05	17:51	06:27	17:07	06:20	16:56	06:26	17:51	06:30	17:40	06:01	16:50	06:53	17:23	06:55	17:16	07:13	18:25	06:52	17:38	1	दिसंबर
	7	07:00	18:59	07:02	18:22	07:09	17:52	06:31	17:08	06:24	16:57	06:29	17:53	06:34	17:41	06:05	16:51	06:58	17:23	07:00	17:16	07:18	18:25	06:56	17:39	7	
	14	07:04	18:02	07:07	18:24	07:13	17:54	06:35	17:10	06:28	16:59	06:33	17:55	06:38	17:44	06:09	18:53	07:02	17:25	07:05	17:18	07:23	18:26	07:01	17:41	14	
	21	07:08	18:05	07:11	18:27	07:17	17:57	06:39	17:13	06:32	17:02	06:37	17:58	06:41	17:47	06:13	18:56	07:06	17:28	07:09	17:21	07:27	18:29	06:05	17:44	21	
	28	07:11	18:09	07:14	18:31	07:20	18:01	06:42	17:17	06:35	17:06	06:40	18:02	06:45	17:51	06:16	17:00	07:09	17:32	07:11	17:25	07:30	18:33	06:08	17:48	28	

❊ शास्त्रानुसार व्रतोपवासादि में सूर्यसिद्धान्तपक्षीय पञ्चाङ्गों की ग्राह्यता ❊

पण्डित गङ्गाधर पाठक 'वेदाद्याचार्य' (मुख्याचार्य- श्रीरामजन्मभूमिशिलापूजन, अयोध्या)

साङ्गोपाङ्गाय वेदाय ज्योतिषां ज्योतिषे नमः ।
सूर्याय सूर्यसिद्धान्तज्योतिर्विद्भ्यो नमो नमः ।।

व्रतोत्सवादि सम्पादनार्थ एवं यज्ञोपनयनादि धार्मिककृत्यों के लिये सम्यक् कालपरिज्ञानार्थ तिथि-वार-नक्षत्र-योग-करणात्मक विशुद्ध **आर्षपञ्चाङ्ग** की आवश्यकता होती है। परन्तु विविध भारतीय पञ्चाङ्गों में भी व्रतोपवासादि के वैमत्य से प्रायः सर्वत्र कोलाहलश्रवण होता रहता है, एतदर्थ किञ्चिच्चिन्तन अपेक्षित है।

सम्प्रति कई प्रकार के पञ्चाङ्ग उपलब्ध होते हैं- **सूर्यसिद्धान्तपक्षीय, आर्यसिद्धान्तपक्षीय (वाक्यविधि), ब्राह्मसिद्धान्तपक्षीय, दृग्गणितपक्षीय** आदि। मकरन्द-ग्रहलाघवादि के भेद से सूर्यसिद्धान्तपक्षीय पञ्चाङ्ग का भी वैविध्य है तथा चित्रा-रैवतादिपक्षीय गणित के भेद से दृक्पञ्चाङ्ग भी कई प्रकार के हैं। कोई सूर्य-चन्द्रान्तरलक्षण से तथा कोई कलालक्षणभेद से तिथियों का द्वैविध्य वर्णन करते हैं।

भारत में ही कुछ पञ्चाङ्ग चैत्रशुक्लप्रतिपत् से, कुछ आषाढ़शुक्लप्रतिपत् से, कुछ श्रावणकृष्णप्रतिपत् से और कुछ कार्तिकशुक्लप्रतिपत् से प्रारम्भ किये जाते हैं। कोई विक्रमसंवत्, कोई शकसंवत् तथा कोई अन्य स्थानीय लौकिकसंवत् का उपयोग करते हैं। कहीं पूर्णिमान्त तो कहीं अमान्तमास ग्रहण किये जाते हैं। सम्प्रदायभेदवाले पञ्चाङ्गों की तो इयत्ता ही नहीं है। परिणामत: भारत के सार्वभौम व्रतोत्सवादि भी दो या तीन विभिन्न दिनों में सम्पादित होते हैं तथा कुछ कृत्य तो पूर्णिमान्त-अमान्तमास के भेद से पक्ष-मासपर्यन्त भी आगे- पीछे हो जाते हैं।

वर्त्तमान में आर्षज्ञानविहीन नवीनों के द्वारा दृक्पञ्चाङ्ग के रूप में एक बड़ी समस्या खड़ी कर दी गई है, जो नाविकपञ्चाङ्ग (नॉटिकल एल्मानैक) पर आधारित है, जहाँ ग्रहण जैसी घटनायें मांसचक्षुर्दृष्ट ही मान्य हैं।

शास्त्रनिष्ठ प्रामाणिक सनातनियों के लिये तो दृक्पञ्चाङ्ग सर्वथा अग्राह्य है। प्रत्येक धार्मिककृत्य के संकल्प में कल्प मन्वन्तर आदि का स्मरण करने के लिये प्राचीन आर्षसिद्धान्तपक्षीय पञ्चाङ्गों की ही उपयोगिता सिद्ध होती है।

दृग्गणितके पक्षपाती विद्वान् तिथ्यादिनिर्णय में इस पद्धति की उपयोगिता सिद्ध करते हैं- **यस्मिन्पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यम् । दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम् ।।**

परन्तु महान् दैवज्ञ ब्रह्मगुप्त तो पैर से भी दृग्गणितके पादमात्र का स्पर्श नहीं करना चाहते- **प्रतिदिवसविसंवादात्तिथिकरणर्क्षदिवसमासानाम्। ग्रहणग्रहयोगादिषु पादं पादेन कः स्पृशेत् ।।**

ग्रहलाघवकार ने भी **'सौरार्कोऽपि..'** में इसपर विचार किया है।

स्थूल दृग्गणित का भी जनक भारतीय ज्योतिषशास्त्र ही है। मल्लारि एवं सूर्यसिद्धान्तादि ने भी किञ्चित् कार्यभेद से दृक्पक्ष को ग्रहण किया है। भास्कराचार्य ने-

यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम् ।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैककृद्या ।।

यद्यपि कतिपयमतेन सूर्यसिद्धान्त का बीजोपनयनाध्याय सूर्यांशोक्तापेक्षया प्रक्षिप्त है, तथापि मयरचित सूर्यसिद्धान्त में इसे अप्रक्षिप्त और यात्रादि में प्रशस्त माना गया है-

कालेन दृक्समो यः स्यात्ततो बीजक्रियोच्यते ।
बीजं विशेषसिद्धान्तरहस्यं परमं स्फुटम् । यात्रापाणिग्रहादीनां कार्याणां शुभसिद्धिदम् ।।

वराहमिहिर ने भी बीजसंस्कार को ग्रहण किया है-

पूर्वाचार्यमतेभ्यो यद्यच्छ्रेष्ठं लघु स्फुटं बीजम् । तत्तदिहाविकलमहरहरस्म्यभ्युद्यतो वक्तुम् ।।

मकरन्दानुसारि पञ्चाङ्गों में भी बीजसंस्कार किया जाता है, जिसपर विचारकों ने नित्य-नैमित्तिक-काम्यकर्मों में तत्तत् सिद्धान्तों के ग्रहण की चर्चा की है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए महामहोपाध्याय श्रीसुधाकर द्विवेदी ने ब्रह्मगुप्त के तन्त्रभ्रंश की व्याख्या में कहा है कि जिस तन्त्र में दृग्गणित इष्ट है, वहीं वह आदरणीय है-

''यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्''
इति विषयविषयेण वाक्येन दृग्गणितैक्यकृत्स्फुटक्रिया
यात्राविवाहोत्सरवविशेषविषयेष्वेव ग्राह्या, न तु धर्मशास्त्रोपयोगितिथ्यानयने ।

अर्थात् कदाचित् यात्रा - विवाहोत्सव आदि में ही दृग्गणित की ग्राह्यता हो सकती है, धर्मशास्त्रोपयोगी तिथ्यानयन में नहीं। **इस विवेचन से सर्वविध धर्मकृत्यों में दृग्गणित की ग्राह्यता निरस्त हो गई।**

सिद्धान्ततत्त्वविवेककार ने भी अदृष्ट फलसिद्ध्यर्थ सूर्योक्तप्रमाण की ही श्रुतिवद् ग्राह्यता सिद्ध की है- **अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं निर्बीजार्कोक्तमेव हि ।**
प्रमाणं श्रुतिवद् ग्राह्यं कर्मानुष्ठानतत्परैः ।।

शाकल्य संहिता में भी **'दृक् सिद्धा नेष्यते तिथि:'** से यही कहा है।

कालनिर्णय में भी **'तिथिनक्षत्रयोगानयनेऽबीजसंस्कृतो ग्राह्यः'** से यही बात कही है ।

भास्कराचार्यादि ने दृग्गणित को स्थूल और पुलस्त्य-वसिष्ठ-गर्गादि मुनिप्रणीत गणित को सूक्ष्म कहा है- **स्थूलं कृतं भानयनं यदेतज्ज्योतिर्विदां संव्यवहारहेतोः ।**
सूक्ष्मं प्रवक्ष्येऽथ मुनिप्रणीतं विवाहयात्रादिफलप्रसिद्ध्यै ।।

वासनाकार ने भी यही पक्ष ग्रहण किया है-

स्थूलं लोकव्यवहारमात्रम्, यात्राविवाहादावपि सम्यक्फलसिद्ध्यर्थं मुनिप्रणीतं सूक्ष्ममेव ग्राह्यम्।

कथञ्चित् लोकव्यवहारमात्र के लिये ग्रहणास्तोदयादि में आवश्यकतानुसार स्थूल दृक्पक्ष को ग्रहण किया जा सकता है, परन्तु यात्रा-विवाहादि में भी अज्ञातज्ञापक सम्यक् फल की सिद्धि के लिये प्रत्यक्षानुमानागम्य और 'अज्ञातज्ञापकं शास्त्रम्'' के और अनुसार शास्त्रैकसमधिगम्य मुनिप्रोक्त सिद्धान्तपक्षीय सूक्ष्म गणित को ही ग्रहण करना उत्तम पक्ष है।

नृसिंह दैवज्ञ ने भी- **'भास्कराचार्याणामयमेवाशयः'** से इसी पक्ष को ग्रहण किया है।

तिथिस्वरूपनिर्णय में तो स्पष्ट घोषणा की गई है-

ततो धर्मशास्त्राद्युपयुक्ततिथिसाधनं नक्षत्रयोगकरणज्ञानं चोक्तम् ।

मत्स्यमहापुराण में **भगवान् वेदव्यास** का स्पष्ट उद्घोष है-

नैष शक्यः परिज्ञातुं याथातथ्येन केनचित् ।
गतागतं मनुष्येण ज्योतिषां मांसचक्षुषा ।।

ग्रहों की सूक्ष्म गति मनुष्यों के द्वारा अदृश्य है, एतदर्थ प्रत्यक्षातिरिक्त सभी व्रत-पर्व श्रौत-स्मार्तानुष्ठानार्थ आर्षसिद्धान्त की ही उपयोगिता सिद्ध है। **सनातनधर्मानुयायियों के सभी सिद्धान्त श्रुति-स्मृति-पुराण-तन्त्रागमादिमूलक ही हैं, इसलिये अनार्ष दृग्गणितमात्रदुराग्रही प्रत्यक्षवादियों के द्वारा धर्म-व्रताद्यनुष्ठानों का सूक्ष्म निर्णय असम्भव है।** ऋषिगण तपो-योगजसामर्थ्यातिशय के कारण अतीन्द्रियार्थदर्शी होते थे, यन्त्रादिनिर्माण-प्रयोगकुशल वैज्ञानिक सूक्ष्मज्ञ होते हुए भी ऋतम्भराप्रज्ञायुक्त अदृश्यदर्शी ऋषि नहीं हो सकते।

विष्णुधर्मोत्तर, कालार्क, ज्योतिःसिद्धान्तसंग्रह, लल्ल, मुञ्जाल, श्रीनिवासीय धर्मशास्त्रादि में उपर्युक्त आर्ष पक्ष ही सम्मानित है।

स्कन्दमहापुराण के कलिमाहात्म्य में तो सिद्धान्तपक्ष के त्याग का भयावह फल और सिद्धान्तपक्ष के ग्रहण का सुखद फल भी बता दिया गया है-

दृक्सिद्धखेटग्रहसाधितासु कुर्वन्ति केचित्तिथिषु प्रमादात् ।
श्राद्धादिकं तत्पितृशापतस्ते पुण्यक्षयं दुर्गतिमाप्नुवन्ति ।।
तथापि सन्तो बहवोऽत्र धार्मिकाः पुरातनाचारमथाजहन्तः ।
सूर्यांशजोक्तार्जितकाल एव कर्माणि कुर्वन्ति सुखं लभन्ते ।।

भगवान् वेदव्यास पुनः दृढ़ता से सूर्यसिद्धान्तारिक्त सिद्धान्त को अग्राह्य बताते हैं-

सौरोपनिषदेवाद्या कल्पे त्वस्मिन् सनातनी ।
यामादित्यः स्वयं प्राह मयाय परिपृच्छते ।।
कालज्ञानं तु तत्सिद्धं विशुद्धं नान्यदुच्यते ।
तद्विरुद्धं तु यत्सर्वमपरिग्राह्यमेव तत् ।।

जब दृग्गणितवादियों के यहाँ भी चित्रा- रेवत्यादि के भेद से अयनांशभेद होता है तब तदनुसार पञ्चाङ्गीय तिथ्यादिकों में भी भेद का होना स्वाभाविक ही है। ऐसी परिस्थिति में निर्दुष्ट शास्त्रीय आर्षपक्ष का आश्रय ग्रहणकर एक स्थिर पञ्चाङ्गनिर्माण की महती उपयोगिता सिद्ध होती है।

सम्प्रति दक्षिणदेश में भी तिथि-नक्षत्र-मुहूर्त्तादि वैदिक विषयों में आर्षग्रन्थसिद्ध ग्रहस्थिति को ही ग्रहण करने की परम्परा है और ग्रहण तथा जातकर्मादि लौकिक विषयों में दृक्सिद्ध ग्रहों को ग्रहण किया जाता है।

सम्पूर्ण ज्योतिर्मण्डल गतिशील है, कालान्तर में अथवा देशभेदादि से गत्यादिमूलक गणितीय भेद हो सकते हैं; परन्तु कालान्तर या देशभेदादि के भी गणितीय भेद की उपपत्ति मुनिप्रणीत सूक्ष्म ज्योतिषीय सिद्धान्तों में ही बता दी गई है। इसलिये नवीन-प्राचीन का मानापमान अत्यन्त उपहासास्पद है। सम्प्रदायादि के भेद से भी व्रत-पर्वों का भेद दूषण नहीं, अपितु अमुकामुक सम्प्रदायनिष्ठों के लिये सम्मान्य है।

सभी प्राचीन आप्त आचार्यों और 'कुम्भतिथ्यादिनिर्णयः' आदि धर्मशास्त्रपरक ज्योतिषीय निबन्धों में सर्वभूतहृदय धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाभाग आदि ने भी समारोहपूर्वक इसी पक्ष को समुत्थापित किया है। मौलिक अध्येताओं के लिये भारतीय सूक्ष्म गणितसिद्धान्त सर्वकाल में मान्य रहेंगे।

वर्तमान में अतिशय चिन्ता का विषय यह है कि विविधपक्षीय पञ्चाङ्गनिर्माण के लिये अगणित सॉफ्टवेयर्स उपलब्ध हैं, जिनसे अल्प प्रयास में ही पञ्चाङ्ग तो तैयार हो जाते हैं; परन्तु पञ्चाङ्गों का सम्मान व्रतोपवासादि के मीमांसामूलक धर्मशास्त्रीय सूक्ष्मविचार से ही होता है, जिसकी सम्पूर्ति पारम्परिक शास्त्राध्ययन के अत्यन्ताभाव में प्रायः नहीं हो रही है।

अन्यों के लिये भी, विशेषतः ज्योतिषियों के लिये तो सन्ध्या-गायत्र्यादि के माध्यम से ज्योतिःशास्त्र के प्रथम प्रवर्तक भगवान् श्रीसूर्यनारायण की सम्यक् उपासना अत्यन्त अनिवार्य है। मैं पञ्चाङ्गविभाग के प्रबुद्ध प्रणेतृमण्डल एवं प्रयोक्ताओं से इस कमी को सदा के लिये दूर करने की महती अपेक्षा रखता हूँ और पञ्चाङ्ग किसी सम्प्रदायविशेष में बँधकर अल्पोपयोगी न हो जाय, इसका भी ध्यान रखना आवश्यक है।

श्रीनिम्बार्कपरिषद्, जयपुर, राजस्थान के द्वारा **सूर्यसिद्धान्तपक्षीय श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्गम्** का प्रकाशन शास्त्रवादी सनातनियों के लिये अत्यन्त ही हर्ष का विषय है । सर्वेश्वर भगवान् श्रीराधाकृष्ण की अहैतुकी कृपा से पञ्चाङ्गप्रणेता, पञ्चाङ्गप्रयोक्ता एवं एतत्सिद्धान्तानुसार व्रत पर्वादि श्रौत-स्मार्तधर्मों के अनुष्ठाता के दृश्यादृश्य लोकद्वय मङ्गलमय हों।

शुभमिति दिक्

❇ अवकहडाचक्रम् -- शतपदचक्रम् ❇

नक्षत्र अक्षर	चू.चे. चो.ला.	ली.लू. ले.लो.	अ.ई. उ.ए.	ओ.वा. वी.वू.	वे.वो. का.की.	कू.घ. ङ.छ.	के.को. हा.ही.	हू.हे. हो.डा.	डी.डू. डे.डो.
नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
राशि	मेष	मेष	मेष1, वृष3	वृष	वृष2, मिथु2	मिथुन	मिथु3, कर्क1	कर्क	कर्क
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि1 वैश्य3	वैश्य	वैश्य2 शूद्र2	शूद्र	शूद्र3 विप्र1	विप्र	विप्र
वश्य	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतु2 मान2	मानव	मान3 जल1	जलचर	जलचर
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार
यो.वै.	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक
राशीश	भौम	भौम	भौम1,शुक्र3	शुक्र	शुक्र2,बुध2	बुध	बुध3,चन्द्र1	चन्द्र	चन्द्र
गण	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

नक्षत्र अक्षर	मा.मी. मू.मे.	मो.टा. टी.टू.	टे.टो. पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.	पे.पो. रा.री.	रू.रे. रा.ता.	ती. तू. ते.तो.	ना.नी. नू.ने.	नो.या. यी.यू.
नक्षत्र	मघा	पू.फा.	उ.फा	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनु.	ज्येष्ठा
राशि	सिंह	सिंह	सिंह1, कन्या3	कन्या	कन्या2, तुला2	तुला	तुला3, वृश्चि1	वृश्चिक	वृश्चिक
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि1 वैश्य3	वैश्य	वैश्य2 शूद्र2	शूद्र	शूद्र3 विप्र1	विप्र	विप्र
वश्य	वनचर	वनचर	वन1 मान3	मानव	मानव	मानव	मान3 कीट1	कीट	कीट
योनि	मूषक	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग
यो.वै.	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गौ	अश्व	गौ	श्वान	श्वान
राशीश	सूर्य	सूर्य	सूर्य1,बुध3	बुध	बुध2,शुक्र2	शुक्र	शुक्र3,भौम1	भौम	भौम
गण	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस
नाडी	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि

नक्षत्र अक्षर	ये.यो. भा.भी.	भू.ध, फ.ढ.	भे.भो. जा.जी.	खी.खू. खे.खो.	गा.गी. गू.गे.	गो.सा. सी.सू.	से.सो. दा.दी	दू.थ. झ.ञ	दे.दो. चा.ची.
नक्षत्र	मूल	पू.षा	उ.षा	श्रवण	धनिष्ठा	शत	पू.भा	उ.भा	रेवती
राशि	धनु	धनु	धनु1, मक3	मकर	मक.2, कुंभ2	कुम्भ	कुम्भ3, मीन1	मीन	मीन
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि1 वैश्य3	वैश्य	वैश्य2 शूद्र2	शूद्र	शूद्र3 विप्र1	विप्र	विप्र
वश्य	मानव	मान1 चतु3	चतुष्प	चतु1जल3	जल2 मान2	मानव	मान3 जल1	जलचर	जलचर
योनि	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
यो.वै.	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश	गुरु	गुरु	गुरु1,शनि3	शनि	शनि	शनि	शनि3,गुरु1	गुरु	गुरु
गण	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य		मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

❇ नवग्रह स्तोत्रम् ❇

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महद्द्युतिम् ।
तमोऽरिंसर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम् ।।
धरणीगर्भ संभूतं विद्युत्कांति समप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणाम्यहम् ।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रुपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ।।
हिमकुंद मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ।।
नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ।।
अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्य विमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रह मस्तकम् ।
रौद्रंरौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ।।
नरनारीनृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।।

❇ नवग्रहों के बीजमंत्र ❇

ग्रह	बीज मन्त्र	जपसंख्या
सूर्य -	ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः।	7500
चन्द्र -	ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।	19000
मंगल-	ॐ हूं श्रीं भौमाय नमः।	10500
बुध -	ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।	21000
गुरु -	ॐ ह्रीं क्लीं हूं बृहस्पतये नमः	24000
शुक्र -	ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।	26000
शनि -	ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।	15000
राहु -	ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः।	15000
केतु -	ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः।	15000

❇ नवग्रहपीडाहर स्तोत्रम् ❇

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः ।
विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु मे रविः ।।
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः ।
विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु मे विधुः ।।
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत् सदा ।
वृष्टिकृद् वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु मे कुजः ।।
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः ।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु मे बुधः।।
देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः ।
अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः।।
दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः ।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः।।
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः ।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः।।
महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः ।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी ।।
अनेकरूपवर्णैश्च शतशोऽथ सहस्रशः ।
उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः ।।

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात
काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रि का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात
चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत
काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ

❊ नवग्रहों के वैदिक मन्त्र ❊

❊ सूर्य- **जपसंख्या** - 7000

विनियोगः- अस्य श्रीआकृष्णेनमंत्रस्य हिरण्यस्तूपऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सवितादेवता श्रीसूर्यप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।

❊ चन्द्र- **जपसंख्या** - 11000

विनियोगः- अस्य श्रीइमन्देवामंत्रस्य गौतमऋषिः द्विपदाविराट् छन्दः सोमोदेवता, श्रीचन्द्रप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

इमं देवा ऽअसपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते
जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश
एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा ।।

❊ भौम- **जपसंख्या** - 10000

विनियोगः- अस्य श्रीअग्निमूर्धामंत्रस्य विरुपाक्षअङ्गिरस ऋषिः अग्निर्देवता गायत्री छन्दः श्रीभौमप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअय्यम् ।
अपा ँ रेता ँ सिजिन्वति ।।

❊ बुध- **जपसंख्या** - 9000

विनियोगः- अस्य श्रीउद्बुध्यस्वाग्नेमंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिः बुधोदेवता त्रिष्टुप् छन्दः श्रीबुधप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँसृजेथामयञ्च।
अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च च सीदत।।

❊ गुरु- **जपसंख्या** - 19000

विनियोगः - अस्य श्रीबृहस्पतेमंत्रस्य गृत्समदऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मादेवता श्रीबृहस्पतिप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

❊ शुक्र- **जपसंख्या** - 16000

विनियोगः- अस्य श्रीअन्नात्परिस्रुतो मन्त्रस्य अश्विसरस्वतीन्द्रा देवताः प्रजापतिऋषिः जगतीछन्दः श्रीशुक्रप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियंविपान ँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधु।।

❊ शनि- **जपसंख्या** - 23000

विनियोगः- अस्य श्रीशन्नोदेवीमंत्रस्य दध्यङ्ङथर्वणऋषिः गायत्रीछन्दः आपो देवताः श्रीशनिप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि स्त्रवन्तु नः।।

❊ राहु- **जपसंख्या** - 18000

विनियोगः- अस्य श्रीकयानश्चित्रमंत्रस्य वामदेवऋषिः गायत्रीछन्दः राहुर्देवता श्रीराहुप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृता।।

❊ केतु- **जपसंख्या** - 17000

विनियोगः- अस्य श्रीकेतुंकृण्वन्नमन्त्रस्य मधुच्छन्दाऋषिः गायत्री छन्दः केतुर्देवता श्रीकेतुप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे।
समुषद्भिरजायथाः।।

❊ श्रीसर्वेश्वर अष्टकम् ❊

(श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज विरचित)

सनन्दनाद्यैः परिसेविताय, युग्मस्वरूपेण विराजिताय ।
चक्राङ्कितायाऽतिमनोहराय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
श्रीनारदान्तर्हृदि संस्थिताय, मुनीन्द्रनिम्बार्कसुपूजिताय ।
सौन्दर्यलावण्यगुणार्णवाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
केशेन्द्रदेवैरभिवन्दिताय, गोपाङ्गनागोकुलजीवनाय ।
निजाश्रिताऽतङ्कनिवर्तकाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
राधाहृदागारनिमज्जिताय, निकुञ्जलीलारतिवर्द्धकाय ।
कालिन्दिकूले रसलासिताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
वृन्दावनश्रीक्षणहर्षिताय, कदम्बकुञ्जान्तशोभिताय ।
सखीसहस्रैरनुरञ्जिताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
नन्दात्मजायाऽखिलमोहनाय, सर्वैः समाराध्यशुचिस्मिताय।
कृष्णाय पूर्णाय सुकोमलाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
वंशीरवाऽकर्षितश्रीवनाय, हैवङ्गीवीनाऽशननिर्गताय ।
श्रीरासलीलारससंप्लुताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
गोचारणाऽनारतनैपुणाय, वेदान्तवेद्याय सुलोचनाय ।
संसारदावानलमोचनाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
सर्वेश्वराष्टकं स्तोत्रं भक्ताभीष्टप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराख्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

❊ श्री जयादित्य अष्टकम् ❊

(श्रीस्कन्द महापुराणे)

न त्वं कृतः केवलसंश्रुतश्च यजुष्येवं व्याहरत्यादिदेव! ।
चतुर्विधा भारती दूरदूरं धृष्टः स्तौमि स्वार्थकामः क्षमैतत् ।।
मार्तण्डसूर्यांशुरविस्तथेन्द्रो भानुर्भगश्चाऽर्यमा स्वर्णरेताः ।
दिवाकरो मित्रविष्णुश्च देव! ख्यातस्त्वं वै द्वादशात्मा नमस्ते ।।
लोकत्रयं वै तव गर्भगेहं जलाधारः प्रोच्यसे खं समग्रम् ।
नक्षत्रमाला कुसुमाभिमाला तस्मै नमो व्योमलिङ्गाय तुभ्यम् ।।
त्वं देवदेवस्त्वमनाथनाथस्त्वं प्राप्यपालः कृपणे कृपालुः ।
त्वं नेत्रनेत्रं जनबुद्धिबुद्धिराकाशकाशो जय जीवजीवः ।।
दारिद्र्यदारिद्र्य निधे निधीनाममङ्गलामङ्गल शर्मशर्म ।
रोगप्ररोगः प्रथितः पृथिव्यां चिरं जयाऽऽदित्य! जयाऽऽप्रमेय! ।।
व्याधिग्रस्तं कुष्ठरोगाभिभूतं भग्नप्राणं शीर्णदिहं विसंज्ञम् ।
मातापिताबान्धवाः सन्त्यजन्ति सर्वैस्त्यक्तं पासि कोऽस्तित्वदन्यः।।
त्वं मे पिता त्वं जननी त्वमेव त्वं मे गुरुर्बान्धवाश्च त्वमेव ।
त्वं मे धर्मस्त्वञ्च मे मोक्षमार्गो दासस्तुभ्यं त्यज वा रक्ष देव! ।।
पापोऽस्मि मूढोऽस्मि महोग्रकर्मा रौद्रोऽस्मि नाऽऽचारनिधानमस्मि।
तथापि तुभ्यं प्रणिपत्य पादयोर्जयं भक्तानामर्पयं श्रीजयार्क! ।।
।। इति श्रीस्कन्दमहापुराणे श्रीजयादित्य अष्टकम् ।।

विश्वरूप जयादित्य जय विष्णो जयाच्युत।
जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते।।
-- वराहपुराणम्, अध्यायः 169/ श्लोकः 23

जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल।
जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते।।
-- स्कन्दपुराणम्/खण्डः1/अध्यायः51/श्लोकः54

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

❊ तंत्रसारोक्त (तांत्रिक) नवग्रह मंत्र ❊

सूर्य- ॐ घृणिः सूर्याय नमः **चन्द्र-** ॐ सों सोमाय नमः
मंगल- ॐ अं अंगारकाय नमः
बुध- ॐ बुं बुधाय नमः **गुरु-** ॐ बृं बृहस्पतये नमः
शुक्र- ॐ शुं शुक्राय नमः
शनि- ॐ शं शनैश्चराय नमः **राहु-** ॐ रां राहवे नमः
केतु- ॐ कें केतवे नमः

❊ श्रीसुदर्शन कवचम् ❊

श्रीसर्वेश्वर
जयादित्य पञ्चांगम्

विनियोग :- ॐ अस्य श्री सुदर्शनकवच-महामन्त्रस्य अहिर्बुध्न्यो भगवान् ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीसुदर्शनमहापुरुषो विष्णुर्देवता, ॐ बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, श्री सुदर्शन-प्रसाद-सिद्धि-पुरस्सरं ममाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासा :- ॐ अहिर्बुध्न्याय भगवते ऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुम्-छन्दसे नमो मुखे। ॐ श्रीसुदर्शन-महापुरुष-विष्णु-देवतायै नमो हृदये। ॐ ॐ बीजाय नमो गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ क्रौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

दिग्बन्धनम् :-

ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, प्राचीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, आग्नेयीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, याम्यां दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, नैर्ऋतिं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, वारुणीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, वायवीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, कौबेरीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, ऐशानीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, ऊर्ध्वां दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, अधो दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, सर्वां दिशं चक्रेण बध्नामि।

विनियोग :- अस्य श्रीसुदर्शन-षडक्षर-महामन्त्रस्य अहिर्बुध्न्यो भगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री सुदर्शन-देवता, ॐ बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, श्रीसुदर्शन-प्रसाद-सिद्धि- पुरस्सरं ममाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासा :- ॐ अहिर्बुध्न्याय भगवते ऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप्-छन्दसे नमो मुखे। ॐ सुदर्शन-देवतायै नमो हृदये। ॐ ॐ बीजाय नमो गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ क्रौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-न्यासाः- ॐ सं आचक्राय स्वाहा अङ्गुष्ठभ्यां नमः। ॐ हं विचक्राय स्वाहा तर्जनीभ्यां नमः। ॐ स्रां सुचक्राय स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः। ॐ रं त्रैलोक्य-रक्षण-चक्राय स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः। ॐ हुं ज्वाला-चक्राय स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ फट् असुरान्तक-चक्राय स्वाहा करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि-न्यासा :- ॐ सं आचक्राय स्वाहा ज्ञानाय हृदयाय नमः। ॐ हं विचक्राय स्वाहा ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा। ॐ स्रां सुचक्राय स्वाहा शक्तये शिखायै वषट्। ॐ रं त्रैलोक्य-रक्षण-चक्राय स्वाहा बलाय कवचाय हुम्। ॐ हुं ज्वाला-चक्राय स्वाहा तेजसे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ फट् असुरान्तक- चक्राय स्वाहा वीर्याय अस्त्राय फट्।

अक्षर-न्यासा :- ॐ नमो मस्तके। ॐ सं नमो भ्रुवोर्मधये। ॐ हं नमो मुखे। ॐ स्रां नमो हृदि। ॐ रं नमो गुह्ये। ॐ हुं नमो जान्वोः। ॐ फट् नमः पादयोः। ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति सर्वाङ्गे।

ध्यानम्-

सुदर्शन महाज्वाल सूर्य-कोटि-सम-प्रभ।
अज्ञानान्धस्य मे देव विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय।।1।।
यस्य स्मरणमात्रेण विद्रवन्ति सुरारयः।
सहस्रार नमस्तुभ्यं विष्णु-पाणि-तलाश्रय।।2।।
क्षिप्रं सुदर्शन-चक्र ज्वाला-मालातिभीषण।
सर्व-रोग-प्रशान्तिं त्वं कुरु देववराऽच्युत।।3।।
सुदर्शन-महाज्वाल गोविन्द-स्वकरायुध।
तीक्ष्ण-धारमहावेग कोटि-सूर्य-सम-प्रभ।।4।।
त्रैलोक्यं रक्ष रक्ष त्वं दुष्ट-दानव-मर्दन।
सुदर्शन महाज्वाल छिन्धि छिन्धि महागदम्।।5।।
छिन्धि वातं च पित्तं च छिन्धि घोरं महाविषम्।
रुजं दाहं च शूलं च निमिषं जाल-गर्दभम्।।6।।
सुदर्शनस्य मन्त्रेण ग्रहा यान्तु दिशो दश।
चौर-व्यालादयो यान्तु सर्वबाधा प्रशाम्यतु।।7।।

(इति ध्यात्वा षड्शोपचारैः सम्पूज्य सुदर्शन-षडक्षरमन्त्रमष्टोत्तर- शतं सुदर्शन गायत्रीं च द्वादशवारं जपित्वा सुदर्शन-कवच-पाठं कुर्यात्।)

श्रीसुदर्शन-षडक्षर-मन्त्र :- "ॐ सहस्रार हुँ फट्"

श्रीसुदर्शन-गायत्री-मन्त्र :- ॐ सुदर्शनाय विद्महे, हेतिराजाय धीमहि, तन्नश्चक्रं प्रचोदयात्।

श्री सुदर्शन-कवचम् :- ॐ नमो भगवते भो भो सुदर्शन दुष्ट-दारिद्र्यं दुरितं हन हन जहि जहि पापं मथ मथ ममाऽऽरोग्यं कुरु कुरु ठः ठः ह्रीं ह्रीं ह्रां हुं ॐ सहस्त्रार हुं फट् स्वाहा।

ॐ त्रैलोक्याभयकर्ता त्वमाज्ञापय जनार्दन।
सर्व-दुःखानि रक्षांसि क्षयं नय च सत्वरम्।।
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च दक्षिणोत्तरयोस्तथा।
रक्षां करोतु सर्वत्र नृसिंहस्य स्व-गर्जनैः।।
श्रीमहावैष्णव रक्ष, दुष्टान् हन हन फट् स्वाहा।।

ॐ सहस्रादित्य-संकाशं सहस्र-वदनं परम्।
सहस्रदोः सहस्रारं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्।।1।।
हसन्तं हार-केयूर-मुकुटाऽङ्गद-भूषणम्।
भूषणोद्भासिताङ्गं च प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्।।2।।
स्राकारसहितं मन्त्रं जपता शत्रु-निग्रहम्।
सर्व-दोषस्य हर्त्तारं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्।।3।।
रणत्किङ्किणीजालेन राक्षसघ्नं महाद्भुतम्।
व्याप्तकेशं विरूपाक्षं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्।।4।।
हुङ्कारं भैरवं भीमं प्रपन्नार्त्तिहरं प्रभुम्।
धन-धान्य-प्रदातारं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्।।5।।
फट्-कारान्तमनिर्देश्यं महामन्त्रेण संयुतम्।
शिवं प्रसन्न-वक्त्रं च प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्।।6।।
एतैः षड्भिः स्तुतो देवो भगवान् श्रीसुदर्शनः।
रक्षां करोतु सर्वत्र सर्वत्र विजयी भवेत्।।7।।

सर्वस्मिन् वैष्णवे धर्मे प्रीतिं वर्द्धयतां सदा।
सर्व-विघ्नान् समान् दोषान् विनाशयतु सत्वरम्।।8।।
ब्रह्मादिदेव - मुनि - वन्दित - पादपद्मं।
चक्रादि - षोडशभुजं - ज्वलन - प्रकाशम्।।
नानाविद्याभरण - भूषित - चारुगात्रं।
चक्रादिदेवमनिशं हृदि भावयामि।।9।।

शङ्खं चक्रं गदाब्जे शरमसिमिषुधिंचाप-पाशाङ्कुशाब्जान्
बिभ्राणं वज्र-खेटं-हल-मुसल-लसत्कुन्तमत्युग्रदंष्ट्रम्।
ज्वाला-केशं त्रिनेत्रं ज्वलदनलनिभं हार-केयूर-भूषं
ध्याये षट्कोण-संस्थं सकल-रिपु-जन-प्राण-
संहार-चक्रम्।।10।।

ॐ नमो भगवते महासुदर्शनाय महोग्राय महाचक्राय महामन्त्र-महावीर-महातेजो भयङ्कराय सर्वदुष्ट-भयङ्कराय सर्वशत्रून् ग्रस ग्रस भक्ष भक्षं, परमन्त्रान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, परतन्त्रान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्षं, पर-विद्यां ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, दैत्यान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, पर-शक्तिं ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, मूढान् ग्रहान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, दैत्य-दानव-राक्षसान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष।

गन्धर्व-यक्ष-भूत-प्रेत-पिशाचान् ब्रह्मराक्षसादीन् ग्रहान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, दह दह, मर्दय मर्दय, छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि, खादय खादय कालय कालय, कुरु कुरु, हूँ फट् स्वाहा। ॐ श्रीचक्राय सुदर्शनाय स्वाहा।

प्रार्थना :-

भूम्यां च ह्यन्तरिक्षे च पार्श्वतः पृष्ठतोऽग्रतः।
रक्षां करोतु भगवान् विश्वरूपी जनार्दनः।।
यथा विष्णोः स्मृतेः सद्यः संक्षयं याति पातकम्।
तथैव सकलं दुःखं प्रशाम्यतु सुदर्शनः।।

फल-स्तुति :-

इदं वर्म पवित्रं वै सर्वथा भय-नाशनम्।
सर्वाभीष्ट-प्रदं सद्यः सर्व-रोग-निवारणम्।।

इति श्रीसुदर्शन-संहितान्तर्गतं सुदर्शन-कवचं सम्पूर्णम्।

✻ गृहप्रवेश से भी महत्त्वपूर्ण है गृहारम्भ मुहूर्त्त ✻

गृहारम्भ यानि नींव का मुहूर्त्त भूमि का गर्भ धारण कहा गया है। जिस प्रकार जितना उत्तम गर्भ होता है उतनी ही उत्तम सन्तान होती है, उसी प्रकार भूमि का नींव रूपी गर्भाधान जितना उत्तम होता है वह गृह भी उतना ही उत्तम व शुभदायक बनता है। गर्भकाल में जिस तरह सुभद्रा ने अभिमन्यु को संस्कृत किया था, उसी तरह भूमि को नींव मुहूर्त्त से गृहप्रवेश के मध्य गर्भकाल में संस्कृत करना चाहिए। गृहारम्भ/नींव मुहूर्त्त रूपी भूमि के गर्भाधान के लिए वास्तुशास्त्र में बताए गए विधान को जितना समग्रता से किया जाए वह गृह उतना महान् बनता है। विश्वकर्मावास्तुशास्त्र 6.16-17 में कहा गया है,

स्त्रीगर्भेण यथा जीवो वर्धते भुवि नित्यशः । तथा भूगर्भमाहात्म्यात् जीवराशिस्तु वर्धते ।।
तत्रत्यानां सुखं दिव्यं यावद्गर्भो न नश्यति । तस्माद्गर्भं शिल्पिवरैश्शाश्वतं कारयेद्भुवि ।।

1. नींव मुहूर्त्त श्रेष्ठतम शुभ मुहूर्त्त में, उचित दिशा में करना चाहिए। मुहूर्त्त जितना ही शुद्ध होगा भवन निर्माण उतनी ही निर्विघ्नता से होगा व उस भवन में सदा शुभता भी बनी रहेगी, क्योंकि गृहारम्भ की कुण्डली ही उस भवन की कुण्डली वास्तुशास्त्र में बताई गई है। हमने देखा है क्षयतिथि में जिसने मुहूर्त्त किया उनके निर्माण कार्य का भी क्षय हो गया।

2. शास्त्र में बताए गए श्रेष्ठ, शुभ, मंगल पदार्थों की नींव में प्रयत्नपूर्वक स्थापना करनी चाहिए। नींव मूहूर्त्त से पहले इन्हें परिश्रम करके इकट्ठा करना चाहिए। नींव में डाली गई शुभ वस्तुएं तब तक रहती हैं जब तक वह भवन रहता है, इन्हें कोई चोरी नहीं कर सकता, पर भवन की कोख में रहकर यह उस भूमि को ऊर्जावान कर देती हैं। नींव का गर्त रूपी यह गर्भ अटल सम्पदा होती है, व किसी पदार्थ के कम रहने पर या गर्भन्यास न होने पर यह उस निर्मित भवन व उसके निवासियों के लिए विपत्तियों का कारण बनता है। मयमतम् 12.2-3 में मयाचार्य ने कहा है, *सर्वद्रव्यैस्तुसम्पन्नं गर्भं तत्सम्पदां पदम् ।*
द्रव्यहीनमसम्पन्नं गर्भं सर्वविपत्करम् ।। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गर्भं सम्यग् विनिक्षिपेत् ।

यहाँ मयाचार्य द्वारा बताए गए नींव में डालने योग्य शुभपदार्थों की सूचि दी जा रही है:-

धान्य- गेंहू, चावल, मूंग, उड़द, जौ, तिल, सावाँ, तिन्नी, कुलथी, लाल मसूर, चना, कुल्थी, **रत्न**-पंच, सप्त या नवरत्न मोती, माणिक्य, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा/जर्कन, गोमेद, नीलम, लहसुनिया, **धातु**-पंचधातु आदि, सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, राँगा, काँसा, सीसा, पारा, अभ्रक, **मिट्टियाँ**- राजद्वार की, हाथीशाला की, हाथीदाँत के अग्रभाग से खोदी हुई, साँड़ की खोदी हुई, गौशाला की, पर्वतशिखर की, वराह की खोदी हुई, अपने कुलदेवी-देवता के स्थान की, अपने इष्ट तीर्थस्थानों की, नदीतट-नदियों की, घोड़ाशाला की, चौराहे की, कमलसमूह के नीचे की/जड़, बिमौट दीमक की, अपने नगर के प्रमुख मंदिरों, तीर्थस्थानों की, खेत की, खस, **शुभ जल**- तीर्थों का जल, गंगाजल, नदियों के जल, सुगंधित जल, सर्वऔषधि जल, पंचामृत, शस्यपुष्पमिश्रित जल, स्वर्ण-रत्न मिश्रित, गाय के सींग से छुआ हुआ जल, पंचगव्य, गौमूत्र, अपराजिता, रक्तचन्दन, अगरु, श्रीखण्ड, सर्वौषधि, समुद्री शैवाल, लाल-कमल, नीलकमल, दूर्वा, इलायची, लौंग, शुभ वृक्षों की गोंद, पत्र, लकड़ी आदि, 12 अंगुल खैर की लकड़ी, बरगद, गूलर, पीपल, आम, जामुन, नवग्रह समिधा, सोने/चांदी का सर्प, चाँदी का कछुआ, शंख, चाँदी का सुअर, चाँदी का सिक्का, तांबे का लोटा। अधिक शुभता के लिए सामर्थ्यानुसार और भी वस्तुएं बताई गई हैं- चाँदी का सांड, चाँदी का घोड़ा, लोहे का सिंह, चाँदी का हाथी, स्वस्तिक, लोहे का हल, तांबे का केकड़ा, तलवार, धनुष, दण्ड, चक्र आदि।

गृहारम्भ नींव मूहूर्त्त से पूर्व भूमि की शुद्धि व पवित्रता भी आवश्यक है। भूमि शुद्धि के लिए मनुस्मृति 5.124 में कहा है कि, भूमि पर झाडू लगाना, गोमूत्र, गङ्गाजल आदि का अच्छे से छिड़काव कर गोबर से लीपना-पोतना, सींचना, और गायों को लाकर बान्धना, इन पाँच प्रकारों से भूमि की शुद्धि होती है।

सम्मार्जनोपाञ्जनेन सेकेनोल्लेखनेन च। गवां च परिवासेन भूमिः शुद्ध्यति पञ्चभिः।।

भूमि शुद्धि के लिए गायों का महत्त्व सर्वोपरि है। **मयमतम् में मयाचार्य कहते हैं**, ''वास्तुनिर्माण हेतु ग्रहण की जा रही भूमि में खुदाई कर अनेक प्रकार के गोबरमिश्रित बीजों को उसमें बो देना चाहिये। उन बीजों के उग जाने और उनमें पके हुए फल देखकर सांड़ एवं बछड़ों के साथ गायों को वहाँ बसा देना चाहिए, क्योंकि गायों के वहाँ चलने एवं सूँघने से वह भूमि पवित्र हो जाती है। प्रसन्न वृषों के नाद से एवं बछड़ों के मुख से गिरे हुये फेन से भूमि परिष्कृत हो जाती है एवं उसके सभी दोष धुल जाते हैं। गोमूत्र से सींची गई तथा गोबर से लीपी हुई, गायों के शरीर रगड़ने से गिरे हुये रोमों से युक्त, तथा गायों के पैरों द्वारा किये गये खेल से भूमि शुद्ध हो जाती है। गाय के गन्ध से युक्त, इसके पश्चात् पुण्यजल से पुनः पवित्र की गई भूमि पर निर्माणकार्य के लिये शुभ तिथि नक्षत्र से युक्त मूहूर्त्त का विचार करना चाहिए।''

कृष्ट्वा गोमयमिश्राणि सर्वबीजानि वापयेत् । दृष्ट्वा तानि विरूढानि फलपक्वगतानि च ।।
सवृषाश्च सवत्साश्च ततो गास्तत्र वासयेत् । यतो गोभिः परिक्रान्तमुपघ्राणैश्च पूजितम् ।।
संहृष्टवृषनादैश्च निर्धौतकलुषीकृतम् । वत्सवक्त्रच्युतैः फेनैः संस्कृतं प्रस्नवैरपि ।।
स्नातं गोमूत्रसेकैश्च गोपुरीषैः सलेपनम्। च्युतरोमन्थनोहारैर्गोष्पदैः कृतकौतुक ।।
गोगन्धेन समाविष्टं पुण्यतोयैः शुभं पुनः। पुण्यतिथोपेते नक्षत्रविषये शुभे।। - *मयमतम् 4.4-8*

गृहारम्भ कालिक कुंडली में विभिन्न राशियों, भावों, नक्षत्रों में स्थित ग्रहों के आधार पर भवन का विस्तृत फल वास्तुशास्त्र में बताया गया है। वर-वधु के विवाहार्थ मेलापक की तरह गृहारम्भ नक्षत्र के साथ गृहस्वामी के जन्मनक्षत्र का मेलापक देखने का भी निर्देश है। अतः गृहारम्भ कालिक कुंडली, नवांश आदि की शुद्धि करवाकर श्रेष्ठ मूहूर्त्त में गृहारम्भ (नींव मुहूर्त्त) करना चाहिए। भगवान् विश्वकर्मा कहते हैं-

न दोषो यत्र वेधादिर्नवं यत्राखिलं गृहम् । बहु द्वाराणि नो यत्र यत्र स्याद् धान्यसंचयम् ।।
पूज्यन्ते देवता यत्र यत्रान्वेक्षणमादरात् । रक्ता च जनिका यत्र यत्र स्यान्मार्जनादिकम् ।।
यत्र ज्येष्ठ-कनिष्ठादिव्यवस्था सुप्रतिष्ठिता । मा स्वीयपरजो भावो यत्र स्यात्समतीर्थता ।।
दीप्यते कोषको यत्र पालनं यत्र रोगिणाम् । श्रान्तसंवाहना यत्र तत्र स्यात्कमला गृहे ।।

जिस घर में यह 13 गुण होते हैं, उस गृह में चिरकाल तक लक्ष्मी निवास करती है :-

1. नवनिर्मित भवन की वास्तु का परिपूर्ण होना।
2. भवन का वास्तुशास्त्रोक्त वेधादि दोष से रहित होना।
3. घर में बहुत अधिक द्वारों का न होना।
4. देवताओं, गुरु में श्रद्धा, और उनका पूजन।
5. आपस में अपने पराए के भेद-भाव से रहित व्यवहार।
6. गृहस्वामी का दीन-हीनता से मुक्त होकर हर्षित रहना।
7. गाय घोड़ों यानि पशुओं को भी विश्राम देना।
8. अतिथियों का आदर सत्कार।
9. घर की उत्तम स्वच्छ्ता।
10. बालकों की प्रसन्नता।
11. छोटे-बड़ों का दूसरे के प्रति कर्त्तव्य।
12. घर में कोई रोगी हो तो उसकी सेवा।
13. जन्म देने वाली माताओं की सेवा।

श्रीमद्भागवत महापुराण 4.22.11 में कहा गया है,

व्यालालयद्रुमा वै तेऽप्यरिक्ताखिलसम्पदः। यद्गृहास्तीर्थपादीय-पादतीर्थविवर्जिताः।।

जिन घरों में तीर्थपाद महाभागवतों के चरणामृत का छिड़काव नहीं हुआ हैं, वे घर सम्पूर्ण समृद्धियों से परिपूर्ण होने पर भी सर्पों से भरे हुए वृक्षों के समान मृत्यु का भय प्रदान करने वाले होते हैं।

गृहवास्तु जितना शुभ होगा, भवनवासियों की बुद्धि और जीवन भी उतना ही शुभ होगा, व जिन्हें देवताओं, गुरुजनों में श्रद्धा होती है, उनका वास्तु भी शुभ हो ही जाता है, क्योंकि वह सभी सुखों का आधार है।

- **मुदित मित्तल**, ज्योतिष एवं वास्तु

✻ ✻ श्री लक्ष्मी जी की आरती ✻ ✻

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशदिन सेवत हर-विष्णू-धाता ।।1।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।।1।।
दुर्गारूप निरञ्जनि, सुख-सम्पति दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋधि सिधि-धन पाता ।।3।।
तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभदाता ।
कर्म-प्रभाव - प्रकाशिनि, भवनिधिकी त्राता ।।4।।
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता ।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता ।।5।।
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता ।
खान-पानका वैभव सब तुमसे आता ।।6।।
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता ।।7।।
महालक्ष्मी जी की आरति, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ।।8।।

✻ ✻ श्रीसूक्त विधान ✻ ✻

दीपावली का पंचदिवसीय पर्व भगवती लक्ष्मी का प्रबोधकाल है, 'अमावस्यां तुलादित्ये लक्ष्मीर्निद्रां विमुंचति', तुला राशि के सूर्य में अमावस्या पर लक्ष्मी जी निद्रा को छोड़ देती हैं। शास्त्रों में लक्ष्मी जी को श्रीसूक्त से की गई उपासना सर्वाधिक प्रिय बताई गई है, 'भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत्' निरंतर श्रीसूक्त का भक्तिपूर्वक जप करने वाला लक्ष्मीजी की कृपा का पात्र बनता है। कार्तिक मास में या धनत्रयोदशी से दीपावली तक यथाशक्ति 1200, 108, 54, 27, 16, की संख्या में श्रीसूक्त का पाठ और हवन करना चाहिए। बिल्ववृक्ष के मूल में बैठकर या बिल्व वृक्ष को गोद में रखके पाठ करने वाला एक वर्ष में धनाढ्य व प्रभावशाली हो जाता है।

श्रीसूक्त के पाठ हवन से अक्षय समृद्धि होती है, दरिद्रता आदि अलक्ष्मी दूर हो जाती है। श्रीसूक्त की पहली ऋ चा के जप से संपदा, दूसरी से पशुलाभ, तीसरी से धान्य, चौथी से पृथ्वी, पांचवी से नौकर-चाकर, छठी से महायश, सातवीं से राजसम्मान, आठवीं से धृति स्थिरता, नवीं से घोड़े, दसवीं से हाथी, ग्यारहवीं से वस्त्र, बारहवीं से पुत्र, तेरहवीं से नानारत्न, चौदहवीं से महामान, पन्द्रहवीं से शस्यसम्पन्न पृथ्वी और श्री की प्राप्ति होती है।

✻ ✻ श्रीसूक्त ✻ ✻

विनियोग :- अस्य श्रीसूक्तस्य आनन्दकर्दम चिक्लीतेन्दिरा सुता ऋषयः अनुष्टुब् - प्रस्तार - त्रिष्टुब - नानाछन्दांसि श्री विश्वावसुर्देवता स्थिरां लक्ष्मींप्राप्तये पाठे (होमे) विनियोगः ।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ 1॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ 2॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ 3॥
कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ 4॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ 5॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु ममान्तरा याश्च बाह्या
अलक्ष्मीः॥6॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥7॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥8॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥9॥
मनसः काममाकूतं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥10॥
कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥11॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥12॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥13॥
आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥14॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥15॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चञ्च च श्रीकामः सततं जपेत् ॥16॥
पद्मानने पद्मनिपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षिः ।
विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्म मयिसन्निधत्स्व ॥17॥
पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षी पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माकक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥18॥
अश्वदायी गोदायी धनदायि महाधने ।
धनं मे जुषतां देवि सर्वान् कामांश्च देहि मे ॥19॥
पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वादिगवेरथम् ।
प्रजानां भवसी माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥20॥
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमस्तु मे॥21॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः॥22॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः॥
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत्॥23॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक गन्धमाल्यशुभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरिप्रसीद मह्यम्॥24॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीप्रियसखीदेवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्॥25॥
महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्॥26॥
श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥27॥

❊ संवत् 2082 का राशिफल ❊

(30 मार्च 2025 से 19 मार्च 2026 तक)

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो अ)

मेष राशि वालों के लिए यह वर्ष चुनौतियों से भरा रहेगा। शनि की साढ़ेसाती के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बनी रहेंगी। मानसिक तनाव और घरेलू विवाद परेशान कर सकते हैं। आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव रहेगा। वाहन चलाने में सतर्कता जरूरी है। व्यापार में सुधार के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। शत्रुओं से सावधान रहें। दांपत्य जीवन में मतभेद हो सकते हैं। सरकारी नौकरी करने वालों के लिए कार्यभार अधिक रहेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधित रह सकता है। संतान से असहमति होगी। निरर्थक भागदौड़ के बावजूद सगे-संबंधियों से सहयोग मिलेगा। भाग्य धीरे-धीरे प्रबल होगा। हनुमान चालीसा और सुंदरकांड का पाठ लाभदायक रहेगा। 2, 3, 9 माह चुनौतीपूर्ण होंगे।

वृष (ई उ ए ओ वा वी वु वे वो)

वृष राशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्यत: शुभ रहेगा। स्वास्थ्य को लेकर सतर्क रहें। मानसिक शांति के लिए ध्यान आवश्यक होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, और धन संग्रह बढ़ेगा। वाहन खरीदने की योजना बनेगी। पारिवारिक संपत्ति विवाद हो सकता है। व्यापार में सामान्य लाभ होगा। कार्य क्षेत्र में प्रगति के योग हैं। दांपत्य जीवन में खटास आ सकती है। वर्ष के उत्तरार्ध में संतान से शुभ समाचार मिलेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए सफलता का योग है। घर में मांगलिक कार्य होंगे। 2, 4, 7 माह कष्टदायक हो सकते हैं।

मिथुन (का की कु घ ङ छ के को हा)

मिथुन राशि वालों के लिए यह वर्ष उन्नति का रहेगा। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। धन का आगमन बना रहेगा, लेकिन अनावश्यक खर्चे भी होंगे। संपत्ति और वाहन खरीदने के योग हैं। संतान से सुख और उनकी उन्नति के संकेत हैं। शत्रुओं से सावधान रहें। दांपत्य जीवन सुखमय रहेगा। नौकरी में पदोन्नति और व्यवसाय में लाभ मिलेगा। विद्यार्थी मेहनत से सफलता प्राप्त करेंगे। नए कार्यों की शुरुआत होगी। माता-पिता का स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। 1, 5, 9 माह कष्टकारी हो सकते हैं।

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो)

कर्क राशि वालों के लिए यह वर्ष शुभ रहेगा। कई उन्नति कारक योग बनेंगे। स्वास्थ्य बाधाओं के बावजूद आर्थिक प्रयास सफल होंगे। रुका हुआ धन मिलेगा। संपत्ति खरीदने के योग हैं। व्यापार में लाभ होगा। नौकरी में पदोन्नति के अवसर हैं। संतान से सुख मिलेगा। माता को स्वास्थ्य संबंधी कष्ट हो सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे। विद्यार्थी वर्ग को सफलता मिलेगी। माता-पिता तीर्थ यात्रा पर जा सकते हैं। 2, 8, 10 माह चुनौतीपूर्ण रहेंगे।

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे)

सिंह राशि वालों के लिए यह वर्ष कष्टकारी रहेगा। मई 2025 से शनि की तैया प्रारंभ होने से स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ सकती हैं। संपत्ति विवाद हो सकता है। निर्णय लेने में जल्दबाजी से बचें। वाहन चलाने में सावधानी रखें। मित्रों का सहयोग रहेगा। मानसिक कष्ट और निरर्थक भागदौड़ हो सकती है। आयात-निर्यात में नुकसान संभावित है। सरकारी नौकरी वालों को संघर्ष करना पड़ सकता है। कोर्ट-कचहरी से जुड़े कार्य बढ़ेंगे। संतान से सुख मिलेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधित रह सकता है। हनुमान चालीसा और सुंदरकांड का पाठ लाभ देगा। 2, 4, 8 माह कष्टकारी होंगे।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो)

कन्या राशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्यत: शुभ रहेगा। कुछ कार्यों में संघर्ष बढ़ सकता है। पेट और हड्डी से जुड़े रोगों से सावधान रहें। आर्थिक सफलता प्राप्त होगी। धन बचाने पर ध्यान दें। अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है। संपत्ति खरीदने के योग हैं। व्यापार में मेहनत के बावजूद अपेक्षित लाभ नहीं मिलेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। संतान की उन्नति होगी। दांपत्य जीवन सुखद रहेगा। राजनीतिक व्यक्तियों के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को सफलता मिलेगी। 1, 9, 12 माह कष्टकारी हो सकते हैं।

तुला (रा री रू रे रो ता ती तू ते)

तुला राशि वालों के लिए यह वर्ष मिश्रित फल देगा। स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। व्यापार में मंदी रहेगी। सरकारी कर्मचारियों को अधिक व्यस्तता का सामना करना पड़ेगा। मित्रों के सहयोग से कार्यक्षेत्र की समस्याएं कम होंगी। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। वाहन या संपत्ति खरीदने की योजना बनेगी। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधित रह सकता है। संतान को लेकर चिंता बनी रहेगी। दांपत्य जीवन में मतभेद हो सकते हैं। जल और अग्नि से सावधानी बरतें। सर्राफा व्यापारियों को मंदी का सामना करना पड़ेगा। विद्यार्थी सफल होंगे। नौकरीपेशा लोगों का स्थानांतरण संभव है। 4, 6, 9 माह कष्टदायक रहेंगे।

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो या यी यू)

वृश्चिक राशि वालों के लिए यह वर्ष प्राय: सकारात्मक रहेगा। रुके हुए कार्य बनेंगे। शत्रु पक्ष से प्रतिस्पर्धा होगी। मित्रों का सहयोग मिलेगा। संपत्ति की खरीद-बिक्री लाभकारी रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यापार और कृषि में लाभ होगा। घर में मांगलिक कार्य होंगे। नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। संतान को कष्ट हो सकता है। किसी विशिष्ट व्यक्ति का निधन संभावित है। माता-पिता का स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। विद्यार्थी मेहनत से सफलता पाएंगे। 8, 10, 12 माह कष्टकारी होंगे।

धनु (ये यो भा भी भू घा फा ढा भे)

धनु राशि वालों के लिए मई से शनि की ढैया का आरंभ होगा। कार्यों में व्यवधान रहेगा। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव आएगा। संपत्ति से जुड़े निर्णय सोच-समझकर लें। अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं। मानसिक तनाव रहेगा। व्यापार में उतार-चढ़ाव रहेगा। वाहन चलाने में सावधानी रखें। दूरगामी यात्रा का योग है। संतान सुख मिलेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। दांपत्य जीवन में सामंजस्य की कमी रह सकती है। हनुमान चालीसा और सुंदरकांड का पाठ लाभकारी रहेगा। 5, 7, 11 माह कष्टकारी होंगे।

मकर (भी जा जी खी खू खे खो गा गी)

मकर राशि वालों के लिए यह वर्ष उतार-चढ़ाव भरा रहेगा। शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव जनवरी 2026 तक रहेगा। स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। मानसिक तनाव रहेगा। आर्थिक लेन-देन में सावधानी बरतें। धन हानि संभव है। कार्यक्षेत्र में बाधाएं आएंगी। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधित रह सकता है। संतान संबंधी समस्याएं हल होंगी। दूरस्थ यात्रा का योग है। वाहन चलाने में सतर्क रहें। मुकदमों में परेशानी हो सकती है। हनुमान चालीसा और सुंदरकांड का पाठ करना चाहिए। 3, 4, 8 माह कष्टकारी होंगे।

कुम्भ (गू गे गो सा सी सू से सो दा)

कुंभ राशि वालों के लिए यह वर्ष शनि की साढ़ेसाती के प्रभाव वाला रहेगा। शनि की अपनी राशि होने से ज्यादा नुकसान नहीं होगा। संघर्ष और परिश्रम बढ़ेगा। स्वास्थ्य को लेकर चिंता हो सकती है। मानसिक तनाव से बचें। व्यर्थ विवाद से दूर रहें। धन का सही निवेश करें। रुका हुआ धन मिलेगा। नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। विद्यार्थी सफल होंगे। व्यापार में उन्नति होगी। नए कार्यों की शुरुआत होगी। 2, 3, 11 माह कष्टकारी होंगे।

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची)

मीन राशि वालों के लिए इस वर्ष शनि की साढ़ेसाती का उग्र प्रभाव रहेगा। कार्य बनने के बाद बिगड़ सकते हैं। मानसिक तनाव बढ़ेगा। कोर्ट-कचहरी के कार्यों में देरी हो सकती है। नए विरोधियों से विवाद होगा। स्वास्थ्य में परेशानी होगी। आर्थिक प्रयासों में सफलता कम मिलेगी। लेन-देन में सतर्कता जरूरी है। संपत्ति क्रय-विक्रय के योग हैं। आजीविका क्षेत्र में मेहनत से सफलता मिलेगी। नौकरीपेशा लोगों का स्थानांतरण हो सकता है। दांपत्य जीवन में सामंजस्य रहेगा। संतान पक्ष से निराशा मिल सकती है। विद्यार्थी सफल होंगे। हनुमान चालीसा और सुंदरकांड का पाठ लाभकारी रहेगा। 1, 7, 11 माह कष्टकारी होंगे।

✻ गोरख-पतरा (यात्रा मुहूर्त्त) श्रीगोरक्षनाथ जी का वचनामृत ✻

पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्ग.	मासों की तिथियों का फल	प्रहर1	प्रहर2	प्रहर3	प्रहर4	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	बहुत सुख और अर्थ पूर्ण हो, क्लेश न हो।	अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्रव्यलाभ
2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	महाभय और जीव-नाश हो, पछतावा हो।	भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्रय	चिन्ता
3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	कामना सिद्ध हो, अर्थपूर्ण हो।	लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दु:ख	इष्टलाभ	धनप्राप्ति
4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	क्लेश व जीव नाश हो, कुशल से घर न आवे।	क्लेश	लाभ	क्लेश	विनाश	लाभ	सुख	मंगल	वित्तलाभ
5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	वस्तुलाभ हो, व्याधि व संकट मिटें, मित्र मिले।	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्यलाभ	धन	सुख
6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	घर की चिन्ता, मित्र संकट हो, कदाचित् घर आवे।	संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थागम
7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	भाग्योदय, मित्र और साधनों की प्राप्ति हो, रत्नादि सहित घर आवे।	विनाश	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यलाभ	सुख
8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीव-नाश हो।	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	कामना सिद्ध हो, सौभाग्य का उदय हो।	लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	कार्यसिद्धि	कष्ट
10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगे, किन्तु कुशल से घर आवे।	लाभ	सम्पूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	धनप्राप्ति
11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	क्लेश हो, किन्तु जीव नाश नहीं, सौभाग्य पावें नहीं।	मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्रव्यलाभ	शून्य
12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	मार्ग में सिद्धि, मित्र मिले, विघ्न मिटे, धन-लाभ हो।	मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिकष्ट

श्री गोरखनाथ के पूछने पर गुरु मत्स्येन्द्रनाथ ने कहा था कि उपरोक्त यात्रा मुहूर्त्त के अनुसार यात्रा करने वाला कुशल पावेगा। यह मुहूर्त्तराज है। उसे चन्द्रदोष, भद्रा, दिशाशूल, योगिनी, काल, घातवार इत्यादि किसी कुयोग का दोष नहीं लगेगा, यह स्वयं सत्यसिद्ध भी है। वे लगभग सभी शतप्रतिशत सत्यसिद्ध हुए हैं। पंचांग प्रेमी पाठकों की विशेष जानकारी हेतु पूरे विवरण सहित यहाँ प्रकाशित किया जाता है। इससे प्रत्येक माह की, प्रत्येक तिथि और प्रत्येक प्रहर में एक दिशा की यात्रा का फल निर्दिष्ट किया गया है। प्रत्येक मासों के नीचे दी गई तिथियों का उस मास के कृष्ण व शुक्ल पक्ष दोनों की समझनी चाहिए इसमें 13।14।15 और 30 तिथियों का उल्लेख नहीं है। सो 13 तिथि का फल 3 तीज तिथि के समान, 14 का फल 4 चतुर्थी के समान और 15 का फल 5 पंचमी तिथि के समान समझना चाहिए। 30(अमावस्या) वर्ज्य है। इसी तरह 1 से 4 तक के प्रहरों को दिन और रात दोनों के लिए समान समझे।

****

नोट :- दिनमान का चतुर्थांश दिन के एक प्रहर का मान होता है तथा रात्रिमान का चतुर्थांश रात्रि के एक प्रहर का मान होता है। प्रत्येक प्रहर लगभग तीन घण्टे का होता है।

✻ चन्द्रवासचक्रम् ✻

पूर्व: मेष सिंह धनु

दक्षिण: वृष कन्या मकर

पश्चिम: मिथुन तुला कुंभ

उत्तर: मीन वृश्चिक कर्क

सन्मुखेचार्थलाभ:
स्याद्दक्षिणे
सुखसम्पद:। पृष्ठे च
शोकसन्तापौ वामे चन्द्रे
धनक्षति:।। सर्वेदोषा
लयंयान्ति पूर्वचन्द्रे हि
सम्मुखे।।

✻ दिशाशूलदोषचक्रम् ✻

पूर्व: चन्द्र शनि

दक्षिण: गुरुवार

पश्चिम: रवि शुक्र

उत्तर: बुध मंगल

दिशाशूल ले
जावो वामे
राहु योगिनी पूठ।
सम्मुख लेवे चन्द्रमा
ल्यावे लक्ष्मी लूट।।

✻ योगिनीवासचक्रम् ✻

ईशान 8/30 | पूर्व 1/9 | आग्नेय 3/11

उत्तर 2/10 | दक्षिण 5/13

वायव्य 7/15 | पश्चिम 6/14 | नैऋत्य 4/12

योगिनी सुखदा वामे
पृष्ठे वांछिततदायिनी
दक्षिणे धन हंत्री च
सम्मुखे मरणाप्रदा।।

✻ कालराहुचक्रम् ✻

ईशान रवि | पूर्व शनि | आग्नेय शुक्र

उत्तर रवि | दक्षिण गुरु

वायव्य सोम | पश्चिम मंगल | नैऋत्य बुध

अर्कोत्तरे वायुदिशांच
सोमेभौमेप्रतीच्यां
बुधनैर्ऋते च याम्ये
गुरौवन्हिदिशां
च शुक्रे
मंदे च पूर्वे
प्रवदंतिकाल:।।

✻ नक्षत्रशूलचक्रम् ✻

पूर्व: ज्ये. पूषा. उषा

दक्षिण: ध. श., पूभा. उभा. रे.

पश्चिम: रो. पुष्य. मृ.

उत्तर: पूफा. उफा. हस्त विशा.

आग्नेय पूर्वदिग्ज्ञेया
दक्षिणादिक् च
नैर्ऋती।
वायवी
पश्चिमादिक्
स्वादेशानी च
तथोत्तरा।।

✻ समयशूलचक्रम् ✻

पूर्व: उषा काल

दक्षिण: मध्य दिवस

पश्चिम: गोधूली

उत्तर: मध्यरात्रि

उष: प्रशस्यते गर्ग:
शकुनं च बृहस्पति:।
अंगिराचणां
मनोत्साह:
विप्र वाक्यं
जनार्दन:।।

दिशाओं के स्वामी - पूर्व के सूर्य, आग्नेय के शुक्र, दक्षिण के मंगल, नैर्ऋत्य के राहु, पश्चिम के शनि, वायव्य के चन्द्र, उत्तर के बुध और ईशान के स्वामी गुरु है।

✻ श्रीराम शलाका प्रश्नावली ✻

सु	प्र	उ	बि	हो	मु	ग	ब	सु	नु	वि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रे	बस	हि	मं	ल	न	ल	य	न	अं
सुज	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	इ	ल	धा	बे	नो
त्य	र	न	कु	जो	म	रि	र	र	अ	की	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सी	जे	इ	ग	म	सं	क	रे	हो	स	स	नि
त	र	त	र	स	हुँ	ह	ब	ब	प	चि	स	हि	स	तु
म	का	ा	र	र	म	मि	मी	म्हा	ा	जा	हु	हीं	ा	ा
ता	रा	रे	री	ह	का	फ	खा	जू	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	को	जो	गो	न	मु	जि	यँ	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
हि	रा	मि	स	रि	ग	द	न्मु	ख	म	खि	जि	म	त	जं
सिं	ख	नु	न	को	मि	निज	क	ग	धु	ध	सु	का	स	र
गु	ब	म	अ	रि	नि	म	ल	ा	न	ढ़	ती	न	क	भ
ना	पु	व	अ	ा	र	ल	ा	ए	तु	र	न	नु	वै	थ
सि	ह	सु	म्ह	रा	र	स	स	र	त	न	ख	ा	जा	ा
र	ा	ा	ला	धी	ा	री	ज	हू	हीं	खा	जू	ई	रा	रे

विधि-श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान कर अपने प्रश्न को मन में दोहरायें। फिर ऊपर दी गई सारणी में से किसी एक अक्षर पर अंगुली रखें। अब उससे अगले अक्षर से क्रमशः नौवां अक्षर लिखते जायें जब तक पुनः उसी जगह नहीं पहुँच जायें। इस प्रकार एक चौपाई बनेगी, जो अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगी।

सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी।

यह चौपाई बालकाण्ड में श्रीसीताजी के गौरीपूजन के प्रसंग में है। गौरीजी ने श्रीसीताजी को आशीर्वाद दिया है। **फलः**- प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा।

प्रबिसि नगर कीजै सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा।

यह चौपाई सुन्दरकाण्ड में हनुमानजी के लंका में प्रवेश करने के समय की है।
फलः-भगवान् का स्मरण करके कार्यारम्भ करो, सफलता मिलेगी।

उघरें अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू।।

यह चौपाई बालकाण्ड के आरम्भ में सत्संग-वर्णन के प्रसंग में है।
फलः-इस कार्य में भलाई नहीं है। कार्य की सफलता में सन्देह है।

बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं।।

यह चौपाई बालकाण्ड के आरम्भ में सत्संग-वर्णन के प्रसंग में है।
फलः-खोटे मनुष्यों का संग छोड़ दो। कार्य की सफलता में सन्देह है।

होइ है सोई जो राम रचि राखा। को करि तरक बढ़ावहि साषा।।

यह चौपाई बालकाण्डान्तर्गत शिव और पार्वती के संवाद में है।
फलः-कार्य होने में सन्देह है, अतः उसे भगवान् पर छोड़ देना श्रेयष्कर है।

मुद मंगलमय संत समाजू। जिमि जग जंगम तीरथ राजू ।।

यह चौपाई बालकाण्ड में संत-समाजरुपी तीर्थ के वर्णन में है।
फलः-प्रश्न उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

गरल सुधा रिपु करय मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई ।।

यह चौपाई श्रीहनुमान जी के लंका प्रवेश करने के समय की है।
फलः-प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है। कार्य सफल होगा।

बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सनमुख धरि काह न धीरा।।

यह चौपाई लंकाकाण्ड में रावन की मृत्यु के पश्चात् मन्दोदरी के विलाप के प्रसंग में है। **फलः**-कार्य पूर्ण होने में सन्देह है।

सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। राम लखनु सुनि भए सुखारे।।

यह चौपाई बालकाण्ड पुष्पवाटिका से पुष्प लाने पर विश्वामित्रजी का आशीर्वाद है।
फलः-प्रश्न बहुत उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

✻ श्रीनिम्बार्क परिषद के प्रकाशन ✻

श्रीमद्भगवद्गीता तत्वप्रकाशिका टीका
(निम्बार्काचार्य श्रीकेशव कश्मीरी भट्टाचार्य जी द्वारा रचित)
श्री सरस पद माधुरी
श्रीमाधव रस माधुरी
श्री मंत्रराज जप विधि
श्री सुदर्शन कवच
श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पंचांग, जयपुर

✻ बैंक अकाउंट विवरण ✻

Acc. Name - SHRI NIMBARK PARISHAD
Account Number - 19650210006467
Bank Name - UCO BANK
Branch - VISWAKARMA JAIPUR
IFSC Code - UCBA0001965

ज्योतिषीय समस्याओं के समाधान व फलादेश हेतु निम्न WhatsApp पर नाम, जन्मदिनांक, जन्मसमय, जन्मस्थान, प्रश्न लिखकर भेजें व प्रतीक्षा करें, समयानुसार समाधान किया जाएगा।

7425824413, 7976006514

श्रीनिम्बार्क परिषद्

मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी गढ़ के सामने,
कलवाड़ा, जयपुर, राजस्थान - 302037
ssjayadityapanchang@gmail.com
Website- www.nimbarkparishad.com
Facebook- @SSJPanchang
Instagram- @Jayaditya_Panchang
Twitter- @SSJ_Panchang

✻ अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् के प्रकाशन ✻

आचार्य डॉ. कामेश्वर उपाध्याय
(राष्ट्रीय महासचिव, अ.भा.विद्वत् परिषद्)
द्वारा विरचित एवं संपादित सद्ग्रन्थ

श्रीसप्तशती	....	100/-
ज्योतिषशास्त्र	....	500/-
स्वप्नविद्या	....	250/-
हिन्दू जीवन पद्धति	....	200/-
नवग्रह-विज्ञान	....	200/-
श्रीसप्तशती पूजाविधानम्	....	100/-
कात्यायनी तन्त्रम्	....	100/-
देवल स्मृतिः	....	100/-
अथ कवच संग्रहः	....	100/-
वास्तु विद्या	....	100/-
राजनीतिक मार्गदर्शिका श्रीमद्भागवद्गीता		100/-
देवीकवचार्गलाकीलकस्तोत्राणि	....	100/-
प्रपा (निबन्धसंग्रह)	....	100/-
हिन्दू अंक प्रतीक	....	50/-
सूर्य आराधना	....	50/-
श्रीमहामृत्युञ्जय-मंत्रसाधना	....	25/-
प्राग्जन्मसंस्कार	....	25/-
कालसर्प/नागशापशांति	....	25/-
नारायणकवच	....	10/-
बजरंगबाण	....	10/-
मंगलागौरीस्तोत्र	....	10/-
वंशवृद्धिकरवंशकवच	....	10/-
अभिलाषाष्टकस्तोत्र	....	10/-
भारतवर्ष	....	25/-
ध्वज का इतिहास	....	25/-
शतपथ जीवन	....	25/-
उपनिषत् त्रयी	....	25/-
कुम्भ-विवाह	....	50/-
तत्त्वसमासः	....	50/-
दाल्भ्यस्मृतिः	....	50/-
इतिहास का उपहास(आचार्य विनय झा)		25/-

देवतायन, 96, जानकीनगर, बजरडीहा, वाराणसी, उत्तरप्रदेश-221006, मोबाइल नं.- 9451383051

✻ पर्व-त्यौहारों की प्रामाणिकता व एकरूपता के लिए सूर्यसिद्धान्त की अनिवार्यता ✻

गत 2 दशकों से पर्वो की एकरूपता में भयावह संकट की स्थिति उत्पन्न हुई है। एकादशी आदि अनेक पर्व दो या तीन दिन हो जा रहे हैं। यदि पर्वों की तिथि में यह वैषम्य सिद्धान्तगत हो तो यह माननीय है परन्तु गणितागत दोष से पर्वों में विखण्डन की स्थिति धर्मशास्त्रीय फल की नाशक है। ध्यातव्य है कि एकादशी को लेकर विभिन्न सिद्धान्त सम्प्रदाय परम्परा के भेद से शास्त्रों द्वारा कथित हैं। स्मार्त्त परम्परा में एकादशी तिथि होने पर दशमी विद्धा एकादशी में भी व्रत होता है। परन्तु वैष्णव परम्परा में एकादशी यदि दशमी विद्धा हो तो वह त्यागकर द्वादशी में व्रत होता है। रामानन्द, गौड़ीय, वल्लभ एवं अन्य वैष्णव सम्प्रदायों में 55 घटी से अधिक की दशमी का वेध माना जाता है, अर्थात् दशमी मान यदि 55 घटी से अधिक हो, सूर्योदय से दो घण्टे पूर्व एकादशी प्रारम्भ न हो तो ऐसी एकादशी विद्धा होकर व्रत के लिए त्याज्य होती है। निम्बार्क सम्प्रदाय में मध्यरात्रि का वेध माना जाता है, अर्थात् मध्यरात्रि में एकादशी उपस्थित हो तभी अगले दिन व्रत होता है। यह शास्त्र आधारित भेद परम्परा से पालनीय होता है।

आज से 2 दशक पूर्व जब अधिकांश पञ्चाङ्ग सूर्यसिद्धान्तीय रीति से प्रकाशित होते थे तब पर्वों में ऐसा सिद्धान्तगत भेद बहुत कम हुआ करता था व समाज में पर्व की दिनांक को लेकर भ्रम नहीं रहता था। परन्तु जब से '**बाणवृद्धिरसक्षयः**' सिद्धान्त का अपलाप करने वाले दृश्य गणित आधारित पञ्चाङ्ग बढ़े तब से पर्वो का यह सरस संयोग भी टूट गया व एक ही पर्व दो दो दिन होने लग गया।

व्रतपर्वों के काल निर्धारण का सर्वमान्य ग्रन्थ निर्णयसिंधु है, जिसे सभी पञ्चाङ्ग मानते हैं। निर्णयसिन्धुकार आचार्य कमलाकर भट्ट ने पर्व निर्णय हेतु अदृष्ट सूर्यसिद्धान्तीय गणित को वेद के समान कहकर स्वीकार किया है। स्पष्ट है कि व्रत पर्व का सटीक निर्धारण इसी गणित से हो सकता है। पर जब आचार्य कमलाकर के इस निर्णय को नकारकर सूर्यसिद्धान्त को छोड़ दिया जाएगा व भौतिक स्थूल दृश्य गणित अपनाकर उन्हीं के ग्रन्थ से व्रत पर्वों का निर्णय किया जाएगा तो वह निर्णय शास्त्रसम्मत कैसे हो सकेगा?

अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं यथार्काद् युक्तितः कुरु।
गणितं यद्वि दृष्टार्थं तद्दृष्ट्युद्भवतः सदा।

– आचार्य कमलाकर भट्ट, सिद्धान्ततत्त्वविवेक, मध्य0 326

अर्थात् एकादशी आदि व्रत अदृष्टफल के जनक हैं, इनका निर्णय सूर्यसिद्धान्त-साधित ग्रहों द्वारा करे और जो सूर्यग्रहण आदि प्रत्यक्ष आकाश में दर्शनीय हैं, उनका दृश्यगणित से करे।

आचार्य आनन्दगिरि ने स्मृतिसमुच्चय में कहा है,

सूर्यसिद्धान्तशास्त्रेण सम्मानीता ग्रहाः सदा ।
नित्ये कर्मण्युपादेया न तु दृग्गणितागताः ।।
सूर्यसिद्धान्तपंचांगं विलोक्यैव प्रवर्तयेत् ।
प्रमाणं तदिति ज्ञेयमन्यथा व्याकुलं भवेत् ।।

अर्थात् सूर्यसिद्धान्तीय रीत्या प्राप्त ग्रह ही सदा सम्माननीय व नित्यकर्म में उपादेय हैं, दृग्गणित के ग्रह नहीं। सूर्यसिद्धान्त पञ्चाङ्ग का अवलोकन करके ही व्रत उपवसादि शास्त्रीय कर्मों को करना चाहिए। यह पञ्चाङ्ग ही (कालनिर्णय के लिए) प्रमाण है, ऐसा जानना चाहिए अन्यथा किया गया कर्मानुष्ठान व्याकुल (निष्फल या अल्पफल वाला) ही होता है।

सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चाङ्ग में व्रत पर्वों का भेद केवल साम्प्रदायिक सिद्धान्त के भेद के कारण आता है अतः बहुत ही कम दृष्टिगोचर होता है, व पर्वों में एकरूपता रहती है। सूर्यसिद्धान्तीय गणित के पञ्चाङ्ग में कभी गणित के दोष से व्रत त्यौहार का विखण्डन नहीं होता। उदाहरणतया

संवत्	वर्ष में स्मार्त्त वैष्णव में विभक्त एकादशियों की संख्या (जयपुर)		
	सूर्यसिद्धान्तीय पंचांग	दृग्गणितीय पंचांग	कुल एकादशी
2082	1	5	24
2081	1	4	24
2080	0	3	26
2079	1	6	24
2078	2	6	24

दृश्य पंचांगों में जितनी भी अतिरिक्त एकादशियाँ गणितभेद से वैष्णव-स्मार्त्त में विभक्त हुई हैं, उसमें त्रुटिपूर्ण तिथि पर बिना पर्व के व्रत करने पर व्रती को कैसे पुण्यफल प्राप्त होगा? अन्य व्रत पर्वों की भी ऐसी ही स्थिति है। स्वयं विचार कीजिए, क्या ऐसा पर्व विखण्डन का कुचक्र शास्त्रसम्मत है? शास्त्रों के स्वानुकूल अंशों को ले लेना, मोहवश अन्यांशों का प्रतिकूलता के कारण छोड़ देना पतन का कारण है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चन्द्रयान के वैज्ञानिकों से की सूर्यसिद्धान्त के महत्त्व पर बात

इस वर्ष ISRO द्वारा चन्द्रयान-3 मिशन की सफलता से राष्ट्र गौरवांवित है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 26 अगस्त 2023 को इसरो केन्द्र में इसरो वैज्ञानिकों को दिए अपने संदेश में भारतीय ज्योतिषशास्त्र के मूलभूत महान गणित ग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त के प्रति अपना सम्मान प्रकट करते हुए सूर्यसिद्धान्त से श्लोक उद्धृत किए व युवाओं को भारतीय शास्त्रों में बताए गए गणितीय फार्मूलाज़ के शोध के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर चन्द्रयान के वैज्ञानिकों के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी ने कहा,

"हमारे यहां सदियों पहले अनुसंधान परंपरा के आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, वराह मिहिर और भास्कराचार्य जैसे ऋषि मनीषी हुए थे। जब धरती के आकार को लेकर भ्रम था, तब आर्यभट्ट ने अपने महान ग्रंथ आर्यभट्टीयम में धरती के गोलाकार होने के बारे में विस्तार से लिखा था। उन्होंने एक्सिस पर पृथ्वी के रोटेशन और उसकी परिधि की गणना भी लिख दी थी। इसी तरह सूर्यसिद्धान्त, सूर्यसिद्धान्त जैसे ग्रन्थों में भी कहा गया है,

सर्वत्रैव महीगोले, स्वस्थानम् उपरि स्थितम् ।
मन्यन्ते खे यतो गोलस् तस्य क्व ऊर्ध्वम क्व वाधः।।

– सूर्यसिद्धान्त, भूगोलाध्याय, 53

अर्थात् पृथ्वी पर कुछ लोग अपनी जगह को सबसे ऊपर मानते हैं लेकिन यह गोलाकार पृथ्वी तो आकाश में स्थित है। उसमें ऊपर और नीचे क्या हो सकता है ? यह उस समय लिखा गया था। यह तो मैंने सिर्फ एक श्लोक आपको बताया है। ऐसी अनगिनत रचनाएं हमारे पूर्वजों ने लिखी हुई हैं। सूर्य चन्द्रमा और पृथ्वी के एक दूसरे के बीच में आने से ग्रहण की जानकारी हमारे कितने ही ग्रन्थों में लिखी हुई पाई जाती है। पृथ्वी के अलावा अन्य ग्रहों के आकार की गणनाएं, उनके मूवमेंट से जुड़ी जानकारी भी हमारे प्राचीन ग्रन्थों में मिलती है।"

अपराकाशी अपरावृन्दावन धर्मनगरी जयपुर के आराध्य देव

श्रीमोती डूंगरी गणेश जी

श्रीसूर्यनारायण जी, गलताजी

श्रीराधागोविन्ददेव जी

श्रीताड़केश्वर महादेव जी

श्रीशिला माता, आमेर

श्रीखोले के हनुमान जी

संरक्षक - मार्गदर्शक - संपादक

श्रीमहन्त
श्रीवृन्दावन बिहारीदास जी
महाराज 'काठिया बाबा'
सुखचर

महन्त
श्रीबनवारीशरण जी
महाराज, प्रन्यासी
अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठ

महन्त श्रीवृन्दावनदास जी
महाराज, महामंत्री अ.भा.
श्रीनिम्बार्क महासभा, प्रन्यासी
अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठ

आचार्य महामण्डलेश्वर
श्रीमहन्त स्वामी
श्रीपद्मनाभशरणदेवाचार्य
जी महाराज, परमाध्यक्ष
श्रीनिम्बार्क परिषद्

आचार्य श्री विनय झा
गणितज्ञ
श्रीत्सर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग

प्रो. श्री मोहनलाल शर्मा
पूर्व प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष
रा.महाराज.आ.सं.म.वि.

डॉ. श्री कामेश्वर उपाध्याय
राष्ट्रीय महासचिव
अ.भा. विद्वत्परिषद्

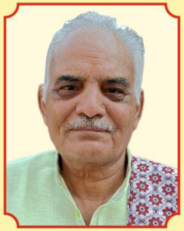

पं. श्री आदित्यमोहन शर्मा
प्रधान सम्पादक
जयविनोदी जयपुर पञ्चाङ्ग

पं. श्री गंगाधर पाठक
मुख्याचार्य श्रीरामजन्मभूमि
शिलापूजन, अयोध्या

पं. अमित शर्मा
प्रधान संपादक
श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग

श्री मुदित मित्तल
प्रबन्ध संपादक
श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग

श्री सुराचार्यः

श्री भूमिपुत्रः

श्री जयादित्यः

श्री भार्गवः

श्री सौम्यः

श्री सूर्यनन्दनः

श्री सोमः

यह श्रीसूर्यसिद्धान्त पर आधारित राजस्थान का एकमात्र श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग,
श्रीनिम्बार्क परिषद्, जयपुर ने भगवती प्रिन्टर्स जयपुर से छपवाकर प्रकाशित किया।
सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

-: पञ्चाङ्ग प्राप्ति स्थल :-

श्रीसर्वेश्वर निम्बार्क सेवाधाम
36 ई (डी), बालाजी ब्लैसिंग 20, श्रीमंगलम गार्डन
से पहले, गणतपुरा रोड़, भांकरोटा, जयपुर-26
मो.: 9829304527

मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी
गढ़ के सामने, कलवाड़ा,
तह. सांगानेर जयपुर-302027
मो: 7425824413, 7976006514

पंडित मोहित शर्मा
शिवशक्ति ज्योतिष केन्द्र, 22,
कैलाशपुरी न्यू सांगानेर रोड़, सोड़ाला,
जयपुर-302019मो.: 9829486839

ईश्वरलाल बुक सैलर
त्रिपोलिया बाजार जयपुर-302002
फोन : 0141-2575532

श्री सिंहिकासुतः

श्री ध्वजाकारः

E-mail: ssjayadityapanchang@gmail.com
Website: www.nimbarkparishad.com

मुद्रकः भगवती प्रिन्टर्स
68 शॉपिंग सेन्टर, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर
मो.: 9829789503

₹120/-